# अमेरिकी सभ्यता

•



1963

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-6

AMERICI SABHAYATA
(Hindi Version of America As A Civilization)
by
Max Lerner
Translated by
R. P. N. Sinha
Rs. 10.00



प्रकाशक
रामलाल पुरी संचालक
आत्माराम एण्ड संस
कश्मीरी गेट दिल्ली-6
शाखाएँ
हौज खास नई दिल्ली
चौड़ा रास्ता जयपुर
माई हीरां गेट जालन्धर
बेगमपुल रोड मेरठ
विश्वविद्यालय क्षेत्र चण्डीगढ़
महानगर, लखनऊ-6

मूल्य दस रुपए
प्रथम संस्करण 1963

मुद्रक
एवरेस्ट प्रेस
4 चमेलियान रोड
दिल्ली-6

# प्रस्तावना

आज अमेरिका के लोग स्वयं अपने और अपनी सभ्यता के सम्बन्ध में प्रकाश डालने लगे हैं और संसार के सम्मुख दोनों का स्वरूप उद्घाटित कर रहे हैं। प्रस्तुत पुस्तक इस दिशा में एक परीक्षा-प्रबन्ध है।

मैंने प्रस्तुत पुस्तक में न तो अमेरिकी सभ्यता के इतिहास का वर्णन किया है और न ही अमेरिकी प्रदेशों राज्यों और नगरों के आधुनिक जीवन का वर्णन किया है। इन दोनों विषयों पर अनेक विद्वानों और पत्रकारों ने विस्तार से प्रकाश डाला है। न तो मैंने यहाँ दोषारोपण किया है और न ही क्षमा याचना । न तो मैंने "अमेरिकी जीवन-पद्धति' की प्रशंसा की है और न ही उस पर करुणा के आँसू बहाये हैं। अन्ततः, यह कोई ऐसी पुस्तक नहीं है जिससे 'अमेरिका किधर ? अमेरिका किधर ?" यह कहते हुए विनाश की भविष्यवाणी की गई हो। संक्षेप में मैं यह कहना चाहूँगा कि जो लोग इस पुस्तक से किन्हीं ऐतिहासिक वर्णनात्मक दार्शनीय या दैवीय तथ्यों के उद्घाटन की आशा लगाए बैठे हैं उन्हें अन्यत्र खोजबीन करनी चाहिए।

मैंने तो अपने ही तरीके से भले ही यह कितना विचित्र हो—समकालीन अमेरिकी सभ्यता के अनूठे और आन्तरिक अर्थ का हृदयंगम करने और इसका आज की दुनिया से सम्बन्ध बताने का प्रयत्न किया है।

अपने सम्बन्ध में दो शब्द कहना अनुचित न होगा। आप कोई पुस्तक इस कारण नहीं लिखते कि आपने किन्हीं विशेष उद्देश्यों का प्रस्ताव किया है। आपके पुस्तक लिखने का मुख्य कारण यह होता है कि आप उसे लिखे बिना रह नहीं सकते। मैंने मूल में जो कुछ भी लिखा हो सोचा है या अनुभव किया है वह सब अमेरिकी अनुभव की प्रकृति और अर्थ के विशाल विषय पर केन्द्रित है। जब कभी मैंने अमेरिकी सरकार पर, सत्तावाद पर, विदेश नीति पर, नैतिकता पर—अलग-अलग लिखने का प्रयास किया है मुझे ऐसा लगा है कि इसे दूसरों से अलग करने से इसका कुछ अर्थ ही खो गया है। लेकिन इतने व्यापक विषय पर कलम उठाना बहुत ही बड़ा और अहंकारपूर्ण कार्य था। अन्ततः सन् 1948 में मैंने अपनी झिझक पर विजय प्राप्त की और पुस्तक को वर्तमान

रूप में प्रारम्भ किया। इस पुस्तक के लिखने में दस वर्ष से भी अधिक समय लगा है।

कोई भी अमेरिकी संभवतः हमारे युग का कोई अमेरिकी अमेरिकी सभ्यता को नृवंशशास्त्रीय अनासक्त भाव से देखने का दावा नहीं कर सकता। "नृवंशशास्त्रीय वृत्ति" (बोअर) और सांस्कृतिक आघात की भावना" (मैनेरिस्ट) उसी समय हम में पैदा होती है, जब हम अपनी संस्कृति से अलग पूर्णतः असमान संस्कृति में मूल्यों की परख करते हैं। अमेरिका का अध्ययन करते हुए कोई भी अमेरिकी अनासक्त नहीं रह सकता और मुझे इस बारे में भी सन्देह है कि कोई यूरोपियन या एशियाई अनासक्त रह सकता है। लार्ड ऐक्टन के शब्दों में अमेरिकी सभ्यता का अनासक्त भाव से अध्ययन करने वाला विद्यार्थी कोई निर्जीव ही होगा क्योंकि वह सर्वथा प्रभावशून्य होगा। अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए आप अधिक-से-अधिक यही कर सकते हैं कि आप अपने विषय से एक निश्चित भावनात्मक दूरी रखें। जब आप अपने ही लोगों और सभ्यता की चर्चा कर रहे हैं तब तो यह दूरी रखना और भी मुश्किल हो जाता है। अमेरिका के सम्बन्ध में आपकी आशाएँ और भय बीच में आ पड़ते हैं और आपके विश्लेषण पर कुछ और ही रंग चढ़ जाता है।

यह तो सर्वथा स्पष्ट है कि अन्तर्राष्ट्रीय कलह और विश्व-अशान्ति के समय अमेरिका के सम्बन्ध में प्रकाशित किसी भी पुस्तक की व्याख्या आज की कलह कथा से भरी दुनिया के सन्दर्भ में ही होगी और अनिवार्यतः यह प्रश्न पूछा जाएगा कि क्या यह पुस्तक अमेरिका के 'पक्ष' में है या 'विपक्ष' में, यह भविष्य का एक आशामय चित्र प्रस्तुत करती है या दोषारोपण का निराशा-भरा चित्र।

मैंने इन दोनों ही अपराधों से बचने का प्रयास किया है—एक अमेरिकी के लिए आत्म-गौरव का अपराध और आत्म-घृणा का अपराध। मुझे अपने देश और अपनी संस्कृति दोनों से प्रेम है, मगर मैं अमेरिकी जीवन के अन्धकारमय पक्ष पर मुलम्मा चढ़ाने की कोशिश करूँगा तो न तो यह स्वदेश और संस्कृति की सेवा होगी और न ही प्रमाणिकता की। इसी प्रकार मैंने यूरोप और अमेरिका में बहुत भ्रमण किया है और मार्क्स और वैबलेन का अध्ययन किया है—और अगर कहीं अमेरिका-विरोधी दोषारोपण करने में मैं चूक गया हूँ ऐसा भय या सच्चाई के प्रभाव के कारण नहीं हुआ। लेकिन अमेरिका के कटु आलोचकों की भी यह कोई सेवा नहीं होगी अगर मैं उनकी तुष्टि के लिए अमेरिकी सभ्यता का एक विकृत चित्र प्रस्तुत कर दूँ। अमेरिका के बारे में विश्व-विवाद तो चलता ही रहेगा। मेरे नाम के साथ किसी प्रकार का कोई राजनीतिक सम्बन्ध नहीं जुड़ा हुआ है।

किसी भी मापदण्ड से देखें अमेरिका तकनीकी ज्ञान सांस्कृतिक तथा आर्थिक सैनिक और राजनैतिक शक्ति की दृष्टि से विश्व की एक महान् शक्ति है, इसका एक मात्र प्रतिद्वन्द्वी केवल रूस है। किसी भी मानव-समाज में इतनी अधिक शक्ति का पाया जाना इस बात का प्रमाण है कि उसका इतिहास परिस्थितियाँ भौतिक जीवन मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ, संस्थात्मक नमूने सामूहिक संकल्प और आन्दोलक शक्ति—ये सब गुण एक अद्भुत मिश्रण में उस समाज में विद्यमान हैं। जब इस प्रकार का अद्भुत मिश्रण विश्वकल्पना को अभिभूत कर लेता है और मनुष्यों की भावनात्मक शक्तियों को प्रेम या घृणा के लिए उन्मुक्त कर देता है तब एक अविस्मरणीय सभ्यता का जन्म होता है।

इतने व्यापक विषय पर कलम चलाते हुए स्थायी तत्त्वों को भूल जाना और क्षणिक के वशीभूत हो जाना बहुत आसान है। मैंने हमेशा यह याद रखने की कोशिश की है कि राजनीतिक उहापोह और आर्थिक कार्यक्रमों का रंग फीका पड़ जाता है। आज अखबारों में जिन चीज़ों की चर्चा है कल लोग उन्हें बकवास समझने लगते हैं और पार्टी-नेताओं के नाम इतिहास की किताबों में धुंधले पड़ जाते हैं। अमेरिका केवल परिवर्तनों और आकस्मिकताओं का नाम ही नहीं है यह स्थिरता भी है।

यही कारण है कि मैंने अमेरिकियों के सम्बन्ध में वही सवाल रखे हैं जो हर व्यक्ति किसी महान् सभ्यता के लोगों के बारे में पूछना चाहेगा। उनकी परम्पराएँ क्या हैं उनका भौतिक जीवन क्या है और उनकी परिस्थितियाँ क्या हैं? वे किस प्रकार अपनी आजीविका अर्जित करते हैं अपना शासन चलाते हैं और शक्ति तथा स्वतन्त्रता की अनिवार्य समस्याओं का समाधान करते हैं? वे किस प्रकार जातीय और श्रेणी-समूहों में विभक्त हैं? अनवरत श्रम के क्षणों में वे कैसे लगते हैं? जन्म से लेकर मृत्यु के विभिन्न क्षणों में उनकी जीवन-धारा कैसी होती है? किस प्रकार वे प्रेम करते हैं, विवाह करते हैं अपने बच्चों का पालन-पोषण करते और उन्हें शिक्षित करते हैं? वे किस प्रकार काम करते हैं खेलते हैं और कला और साहित्य के माध्यम से अपनी सृजनात्मक शक्ति की अभिव्यक्ति करते हैं? वे कौन-से *संयोजक और संगठक सिद्धान्त* हैं जो उनकी सभ्यता को जोड़े हुए हैं? वे कौन-से देवताओं की पूजा करते हैं कौन-से विश्वास उन्हें बन्धन में जकड़े हुए हैं या उन्हें शक्ति प्रदान करते हैं उनकी धारणाएँ किस प्रकार की हैं, कौन-से विश्वास उन्हें अनुप्राणित करते हैं किस प्रकार के सांस्कृतिक आदर्शों में वे आचरण करते हैं किस प्रकार के स्वप्नों से वे आन्दोलित होते हैं कौन-सी पौराणिक कथाएँ उनमें प्रचलित हैं उनकी प्रेरक भावनाएँ कौन-सी हैं कौन-से भय उनका मार्ग अवरुद्ध किये हैं, अपने प्रयत्नों

में वे किस प्रकार की शक्तियों का प्रयोग करते हैं, कौन-से तनाव और विभाग उन्हें पृथक किये हैं, किस प्रकार की सामाजिक भावना उन्हें एकता के सूत्र में पिरोये है।

संक्षेप में, कौन-सी चीज है जो अमेरिका को व्यक्तिगत इच्छाओं, लालसाओं और सामूहिक शक्ति से सम्पन्न 'स्वामियों और सेवकों का समूह' नहीं बनाती बल्कि एक सभ्यता बनाती है।

—एम० एल०

# अनुक्रम

# 1

# जनता और देश

१ क्या कोई अमेरिकी स्टाक (Stock=वंश) भी है ?

शीतोष्ण कटिबंध में घूमने वाला प्रत्येक यात्री वहाँ के फैले हुए विस्तृत जंगल की बात नहीं भूल सकता। अमेरिका का जनगण एक ऐसा ही एथनिक (Ethnic=जाति) जंगल (अनेक जाति के लोगों का अपना जातीय पर्यावरण) है। इस कटिबंध के ऐसे समृद्ध प्रदेश में प्रत्येक प्रकार की एथनिक (जातीयता) विद्यमान है। यहाँ प्रत्येक वस्तु बड़ी तेजी से बढ़ती है और शीघ्र ही दूसरी अन्य वस्तुओं से घुलमिल जाती है। एथनिक दृष्टि से अमेरिका में सभी कुछ सम्भव है।

अमेरिका की जातीय विविधता का निरीक्षण करना चाहें तो सबसे अधिक सुविधाजनक स्थान है—न्यूयार्क का अन्तर्भूमाग (Subway) या सानफ्रांसिस्को का कोई बाजार अथवा सैनिक-कैम्प। हर स्थान एक ऐसी धारा है जहाँ अमेरिका की मानवीय सामग्री का स्रोत उमड़ा पड़ता है। संसार के जातीय मानचित्र में विरला ही कोई ऐसा देश होगा जिसका प्रतिनिधित्व अमेरिका में न पाया जाए। यूरोप की प्रत्यक जाति यूरोपीय और एशियाई रूस के अनेक स्टाक (वंश) इजरायल के लोग तथा मध्यपूर्व के अरबी चीन और दक्षिण-पूर्वी एशिया के लोग फिलिपाइन हवाई आस्ट्रेलिया तथा भारत के दूरतम प्रदेशों के लोग लाइबेरिया और नाइजीरिया के गोल्ड कोस्ट तथा आइवरी कोस्ट के काफिरलैंड और विटवाटर्सरैंड के दक्षिण और मध्य अमेरिका के कैरेबियन के प्रत्येक द्वीप के ब्रिटिश और फ्रांसीसी कनाडा के फिनलैंड तथा आइसलैण्ड के लोग यहाँ आये।

मैंने अपने इस ग्रंथ में रेस (Race=जाति) शब्द की अपेक्षा स्टाक (Stock=वंश) शब्द का तथा रेशियल (Racial) के स्थान पर एथनिक (Ethnic) शब्द का प्रयोग किया है। इसका स्पष्टीकरण करने के लिए मैं केवल यह बतलाना चाहता हूँ कि दोनों जगहों पर रेस शब्द मेरे अभिप्रेत आशय का केवल एक अंश मात्र है। इस शब्द से मेरा तात्पर्य मूल वंश राष्ट्रीयता भाषा धर्म प्रदेश और उपप्रदेश से उद्भूत प्रभावों का सम्मिश्रण (संसृष्टि) है, जो न केवल समान कुल में उत्पन्न होने के कारण बल्कि एक ही भूमि पर, एक ही आकाश के नीचे और एक ही समुदाय में दीर्घकाल तक रहने के कारण

जीवमनोविज्ञान और संस्कृति का अपेक्षाकृत एक स्थायी प्रकार बन गया है।

इन एथनिक स्टाकों (जातीय वर्गों) में से क्या कोई एक दूसरों की अपेक्षा अधिक अमरिकी है। किसी के विषय में यह कहना 'वह अमेरिकी स्टाक (वंश) का है" यह आशय प्रकट करता है कि वह श्वेतांग है एंग्लोसैक्सन वंश का है सम्भवत प्रोटेस्टेंट हो और इसके बाप-दादा कई पीढ़ी पहले अमेरिका में आकर बस गए होंगे किन्तु विवेकी जिज्ञासुओं का इससे सन्तोष नहीं होता। अनेक सभ्यताओं म यह देखा गया है कि विजेता जाति के लोगों ने एक ओर तो पराजित भूमि के मूल निवासियों से और दूसरी ओर उन नवागन्तुकों से अपने आपको पृथक (उत्कृष्ट) रखने का प्रयत्न किया है जो शक्ति और पद हथियाना चाहते थ। अमेरिका म कई कारणों स ऐसा करना कठिन था। मूल निवासी एक तो सख्या में बहुत ही कम थे और साथ ही उन्हें भूमि घर-बार और जीविका से इतनी नृशंसता से वंचित किया गया कि इस दृश्य से उनकी कोई उपलब्धी शेष न रही। यदि 'अमेरिकी वंश' (American Stock) का अर्थ उन लोगों क वंशज लगाएँ, जो तुरन्त ही शिकार पर टूट पड़े तो अधिकांश अमेरिकी आज इस वंशानुक्रम को याद कर गर्वित न होंगे क्योंकि इसमें एक अपराध की भावना निहित है। अमरिका की वास्तविक विजय कोई सैनिक विजय न थी जिससे कि कोई गर्वपूर्वक यह कह सके कि मेरी नसों में इसके विजेताओं का रक्त प्रवाहित है। यह विजय थी जंगल और मैदान पर पहाड़ घाटी और नदी पर, नये-नय शिल्प विज्ञान और सामाजिक संस्थानों पर, जिसमें प्रवासियों की प्रत्येक हिलोर ने भाग लिया। यद्यपि प्रवासियों का सबसे बड़ा दल ब्रिटिश द्वीपों से आया था फिर भी अमेरिका को सर्वप्रथम बसाने का श्रेय केवल किसी भी एक दल को प्राप्त नहीं यहाँ तक कि गणतन्त्र की पहली दशाब्दियों में भी वहाँ अनेक स्टाक विद्यमान थ जिन्होंने इस नये 'अमेरिकी मानव' का निर्माण किया और अन्त में गणतन्त्रीय विचारधारा के साम्य बल का एक संकरण और वंशों का मिश्रण हुआ जिससे यूरपीय विशुद्धता अन्वेषक का कार्य निराशा में परिणत हो गया।

निन्दात्मक प्रतिष्ठा की प्रतिलिपि के रूप में अमेरिकी धरा पर पूर्वाधिकार का प्रयत्न किसी एक विभ्रगुण के लिए अन्य सबको उससे वंचित रखने की एक सुरक्षित युक्ति है। अपेक्षाकृत अधिक अल्पवर्ग तथा अजातीय लोगों के विषय म चाहे इसका कुछ ही अर्थ हो पर अमरिका म यह अर्थहीन है। तो भी कुछ ऐसे लोग है जो रेसिज्म (Racism = प्रजातिवाद) से तो पीछे हटते है परन्तु आवास के दीर्घकाल को एक महत्त्वपूर्ण प्रमाण चिह्न मानते है। मेरे एक मित्र ने मुझे लिखा है "क्या वे यूरोपीय जो यहाँ अधिक समय से बसे है उन लोगों से अधिक अमरिकी नहीं है जो बाद में आकर बसे है? उदाहरणार्थ क्या

एक पोलेस या स्लावेस्ट चीनी धोबी के बेटे से अधिक अमेरिकी नहीं हो सकते ? यदि समय को आधार मानें तो सबसे अधिक अमेरिकी अमेरिकी इण्डियन विग्विम्स के वंशज और प्रारम्भिक हब्शियों के वंशज ही होंगे जो वांछनीय नहीं हैं। 'यूरोपी लोग अधिक अमेरिकी हैं'—के विचार के पीछे उनके बसने के सुदीर्घ काल का तथ्य नहीं है बल्कि उनका यूरोपीय (पश्चिमी यूरोपीय भूमध्य सागरीय या स्लावी नहीं) होना है। बात यह है कि अमेरिका के प्रारम्भिक इतिहास पर अंग्रेज स्काट फ्रांसीसी ह्यूगनाट और डचों का बड़ा प्रभाव है। यह सोचना आसान और स्वाभाविक भी है कि पोलेस और स्लावेस्ट कहीं अधिक अमेरिकी हैं, बनिस्बत गोरे वर्णों से बने चीनी या आदि भारतीय या हब्शी परिवार के किसी व्यक्ति से। इसका कारण यह है कि आरम्भ से ही पश्चिमी यूरोपीय अमेरिका में कर्ताधर्ता थे। उन्होंने ही यहाँ बसने के नियम बनाये हैं और प्रवेश का मूल्य तय किया है। वे अधिक आनन्द से हैं। हाँ दूसरों को वे आनन्द से नहीं रहने देते।

अपनी बात और स्पष्ट करने के लिए कह सकते हैं कि अमेरिकी शब्द के अर्थ के तीन स्तर हैं। पहला दीर्घकालिक अमेरिकी इतिहास में परिवार और स्टाक का सम्बन्ध दूसरा कानून के अन्तर्गत अधिकार और सहूलियतों के बारे में समान और असमान दावे तथा तीसरा अमेरिकी जीवन के प्रति वचनबद्धता की भावना। केवल पहले स्तर पर ही स्टाक का प्रश्न उठता है चाहे कितने बेतुके रूप से ही। दूसरे स्तर पर किसी पोलेस या स्लावेस्ट और किसी चीनी धोबी के बेटे में क्या भेद हो सकता है ? तीसरे स्तर पर समस्या व्यक्तियों की है, स्टाक की नहीं। नए स्टाकों के अमेरिकी भी अमेरिकी जीवन के प्रति उतने ही समर्पित हो सकते हैं जितने पुराने। इनमें बहुतों ने तो अमेरिकी अनुभव को और भी धनी बनाया है।

फिर भी संसार के सबसे बड़े एथनिक लोकतन्त्र में प्रतिष्ठा की दर्जाबन्दी तो है ही जिसका कुछ आधार स्टाक भी है। काले भूरे, पीले और लाल पाद (तल) के पास हैं जबकि गोरे प्राटेस्टेंट पश्चिमी यूरोपियन शीर्ष पर हैं। बीच में भी रेखाएँ हैं जिनका निर्माण कुछ तो उपनिवेशी पीढ़ी (Colonial descent) के आधार पर हुआ है और कुछ प्रारम्भिक अंग्रेजी बस्ती से भौगोलिक निकटता के आधार पर। यदि अमेरिका में बसने वालों का कालक्रम के आधार पर विभाजन करें तो हम पाएँगे कि एथनिक दर्जाबन्दी में प्रतिष्ठा भी उसी क्रम से घटती जाती है। इनकी लहर इस क्रम से आई थी—अंग्रेज, डच जर्मन स्काच आइरिश फ्रांसीसी स्केन्डेनेवियाई, आइरिश भूमध्यसागरीय यहूदी बालकनी स्लाव मैक्सिकी और दक्षिण अमेरिकी फिलिपाइनी मध्यपूर्वी और पूर्वीय। तो अमेरिका में इनकी प्रतिष्ठा भी मोटे तौर पर इसी क्रम से है। हाँ भारतीय

जीवनकोविज्ञान और संस्कृति का अपेक्षाकृत एक स्थायी प्रकार बन गया है।

इन एथनिक स्टाकों (जातीय वंशों) में से क्या कोई एक दूसरों की अपेक्षा अधिक अमेरिकी है। किसी के विषय में यह कहना "वह अमेरिकी स्टाक (वंश) का है" यह आशय प्रकट करता है कि वह श्वेतांग है एंग्लोसैक्सन वंश का है संभवतः प्रोटेस्टेंट हो और इसके बाप-दादा कई पीढ़ी पहले अमेरिका में आकर बस गए हों किन्तु विदेशी जिज्ञासुओं का इससे समाधान नहीं होता। अनेक सभ्यताओं में यह देखा गया है कि विजेता जाति के लोगों ने एक ओर तो पराजित भूमि के मूल-निवासियों से और दूसरी ओर उन नवागन्तुकों से अपने आपको पृथक (उत्कृष्ट) रखने का प्रयत्न किया है जो शक्ति और धन हथियाना चाहते थे। अमेरिका में कई कारणों से ऐसा करना कठिन था। मूल निवासी एक तो संख्या में बहुत ही कम थे और साथ ही उन्हें भूमि घर-बार और जीविका से इतनी नृशंसता से वंचित किया गया कि इस कृत्य से उनकी कोई उपलब्धी शेष न रही। यदि 'अमेरिकी वंश' (American Stock) का अर्थ उन लोगों के वंशज बताएँ जो तुरन्त ही किनारे पर टूट पड़े तो अधिकांश अमरिकी मात्र इस वंशानुक्रम को याद कर पर्वित न होंगे क्योंकि इसमें एक अपराध की भावना निहित है। अमरिका की वास्तविक विजय कोई सैनिक विजय न थी जिससे कि कोई गर्वपूर्वक यह कह सके कि मेरी नसों में इनके विजेताओं का रक्त प्रवाहित है। यह विजय थी जंगल और मैदान पर पहाड़ घाटी और नदी पर, नये-नये शिल्प विज्ञान और सामाजिक संस्थाओं पर, जिसमें प्रवासियों की प्रत्येक हिलोर ने भाग लिया। यद्यपि प्रवासियों का सबसे बड़ा दल ब्रिटिश द्वीपों से आया था फिर भी अमेरिका को सर्वप्रथम बसाने का श्रेय केवल किसी भी एक दल को प्राप्त नहीं। यहाँ तक कि आरम्भ की पहली शताब्दियों में भी यहाँ अनेक स्टाक विद्यमान थे जिन्होंने इस नये 'अमरिकी मानव' का निर्माण किया और अन्त में गणतन्त्रीय विचारधारा के साम्य बल का पक्ष संकरण और वंशों का विभाग हुआ जिसने मुसलमीय विमुद्रता अन्वेषक का कार्य नियन्ता में परिणत हो गया।

निर्णयात्मक प्रतिष्ठा की प्रविधि के रूप में 'अमरिकी' शब्द पर पूर्वाधिकार का प्रयत्न किसी एक विषमवर्ग के लिए अन्य सबको उससे वंचित रखने की एक सुपरिचित युक्ति है। अपेक्षाकृत अधिक अन्तर्जात तथा सजातीय लोगों के विषय में चाहे इसका कुछ ही अर्थ हो पर अमरिका में यह अर्थहीन है। तो भी कुछ ऐसे लोग हैं जो रेसिज़्म (Racism=प्रजातिवाद) से तो पीछे हटते हैं परन्तु आवास के दीर्घकाल को एक महत्वपूर्ण प्रभावक चिह्न मानते हैं। मेरे एक मित्र के मुख निकला है "क्या वे पुरातन या यहाँ अधिक समय से बसे हैं उन लोगों से अधिक अमेरिकी नहीं हैं या बाद में आकर बसे हैं? उदाहरणार्थ क्या

एक लोवेल या क्वावेस्ट चीनी धोबी के बेटे से अधिक अमेरिकी नहीं हो सकते ?" यदि समय को आधार मानें तो सबसे अधिक अमेरिकी अमेरिकी इण्डियन, पिलग्रिम्स के वंशज और प्रारम्भिक हब्शियों के वंशज ही होंगे जो लोभनीय नहीं है। 'यूरोपी लोग अधिक अमेरिकी हैं'—के विचार के पीछे उनके बसने के सुदीर्घ काल का तथ्य नहीं है बल्कि उनका यूरोपीय (पश्चिमी यूरोपीय भूमध्य सागरीय या स्लावी नहीं) होना है। बात यह है कि अमेरिका के प्रारम्भिक इतिहास पर अंग्रेज स्काट फ्रांसीसी ह्यूग्नाट और डचों का बड़ा प्रभाव है। यह सोचना आसान और स्वाभाविक भी है कि लोवेल और क्वावेस्ट कहीं अधिक अमेरिकी हैं बनिस्बत थोड़े दिनों से बसे चीनी या आदि भारतीय या हब्शी परिवार के किसी व्यक्ति से। इसका कारण यह है कि आरम्भ से ही पश्चिमी यूरोपीय अमेरिका में कर्ताधर्ता थे। उन्होंने ही यहाँ बसने के नियम बनाये हैं और प्रवेश का मूल्य तय किया है। वे अधिक आनन्द से हैं। हाँ, दूसरों को वे आनन्द से नहीं रहने देते।

अपनी बात और स्पष्ट करने के लिए कह सकते हैं कि 'अमेरिकी' शब्द के अर्थ के तीन स्तर हैं। पहला दीर्घकालिक अमेरिकी इतिहास में परिवार और स्टाक का सम्बन्ध दूसरा कानून के अन्तर्गत अधिकार और सहूलियतों के बारे में समान और असमान दावे तथा तीसरा अमेरिकी जीवन के प्रति वचनबद्धता की भावना। केवल पहले स्तर पर ही स्टाक का प्रश्न उठता है चाहे कितने बेतुके ढंग से ही। दूसरे स्तर पर किसी लोवेल या क्वावेस्ट और किसी चीनी धोबी के बेटे में क्या भेद हो सकता है ? तीसरे स्तर पर समस्या व्यक्तियों की है, स्टाक की नहीं। नए स्टाकों के अमेरिकी भी अमेरिकी जीवन के प्रति उतने ही समर्पित हो सकते हैं जितने पुराने। इनमें बहुतों ने तो अमेरिकी अनुभव को और भी धनी बनाया है।

फिर भी संसार के सबसे बड़े एथनिक लोकतन्त्र में प्रतिष्ठा की दर्जाबन्दी तो है ही जिसका कुछ आधार स्टाक भी है। काले भूरे पीले और लाल पाद (तल) के पास हैं जबकि गोरे प्राटेस्टेंट पश्चिमी यूरोपियन शीर्ष पर हैं। बीच में भी रेखाएँ हैं जिनका निर्माण कुछ तो उपनिवेशी पीढ़ी (Colonial descent) के आधार पर हुआ है और कुछ प्रारम्भिक अंग्रेजी बस्ती से भौगोलिक निकटता के आधार पर। यदि अमेरिका में बसने वालों का कालक्रम के आधार पर विभाजन करें तो हम पाएँगे कि एथनिक दर्जेबन्दी में प्रतिष्ठा भी उसी क्रम से घटती जाती है। इनकी लहर इस क्रम से आई थी—अंग्रेज, डच जर्मन स्काच आइरिश फ्रांसीसी स्कन्डेनेवियाई, आइरिश भूमध्यसागरीय यहूदी बाल्कनी स्लाव मैक्सिकी और दक्षिण अमेरिकी फिलिपाइनी मध्यपूर्वी और पूर्वीय। तो अमेरिका में इनकी प्रतिष्ठा भी मोटे तौर पर इसी क्रम से है। हाँ, भारतीय

जीवनतात्विज्ञान और संस्कृति का अपेक्षाकृत एक स्थायी प्रकार बन गया है।

इन एथनिक स्टाकों (जातीय वंशों) में से क्या कोई एक दूसरों की अपेक्षा अधिक अमरीकी है। किसी के विषय में यह कहना 'वह अमेरिकी स्टाक (वंश) का है' यह आशय प्रकट करता है कि वह श्वेतांग है ऐंग्लोसैक्सन वंश का है संभवत प्रोटेस्टेंट हो और इसके बाप-दादा कई पीढ़ी पहले अमेरिका में आकर बस गए होंगे किन्तु विवेकी जिज्ञासुओं का इससे सन्तोष नहीं होता। अनेक सभ्यताओं में यह देखा गया है कि विजेता जाति के लोगों ने एक ओर तो पराजित भूमि के मूल-निवासियों से और दूसरी ओर उन नवागन्तुकों से अपने आपको पृथक (उत्कृष्ट) रखने का प्रयत्न किया है जो शक्ति और मद हथियाना चाहते थे। अमेरिका में कई कारणों से ऐसा करना कठिन था। मूल निवासी एक तो संख्या में बहुत ही कम थे और साथ ही उन्हें भूमि घर-बार और जीविका से इतनी नृशंसता से वंचित किया गया कि इस क्रम से उनकी कोई उपलब्धी शेष न रही। यदि 'अमेरिकी वंश' (American Stock) का अर्थ उन लोगों के वंशज लगाएँ, तो तुरन्त ही शिकार पर टूट पड़ें तो अधिकांश अमेरिकी प्राय इस व्यापनुक्रम को याद कर लज्जित न होवें क्योंकि इसमें एक अपराध की भावना निहित है। अमेरिका की वास्तविक विजय कोई सैनिक विजय न थी जिससे कि कोई गर्वपूर्वक यह कह सके कि मेरी नसों में इसके विजेताओं का रक्त प्रवाहित है। यह विजय थी जंगल और मैदान पर पहाड़ घाटी और नदी पर, नये-नये शिल्प विज्ञान और सामाजिक संस्थानों पर जिसमें प्रवासियों की प्रत्येक टुकड़ी ने भाग लिया। यद्यपि प्रवासियों का सबसे बड़ा दल ब्रिटिश द्वीपों से आया था फिर भी अमेरिका का सर्वप्रथम बसाने का श्रेय केवल किसी भी एक दल का प्राप्त नहीं यहाँ तक कि मसाचुसेट्स की पहली बस्तियों में भी कहीं अनेक स्टाक विद्यमान थे जिन्होंने इस नये 'अमेरिकी मानव' का निर्माण किया और अन्त में अन्तर्राष्ट्रीय विचारधारा के साम्य बल का पुन संकरण और वंशों का मिश्रण हुआ जिससे मूलवंशीय विशुद्धता अन्वेषक का कार्य निरर्थक में परिणत हो गया।

निर्णयात्मक प्रतिज्ञा थी। प्रविधि के रूप में 'अमेरिकी' नाम पर पूर्वाधिकार का प्रयत्न किसी एक विशेष गुट के लिए अन्य सबको उससे वंचित रखने की एक सुपरिचित युक्ति है। अपेक्षाकृत अधिक सम्पन्न तथा सजातीय लोगों के विषय में चाहे इसका कुछ ही अर्थ हो पर अमेरिका में यह अर्थहीन है। तो भी कुछ ऐसे लोग हैं जो रेसिज्म (Racism=प्रजातिवाद) से तो पीछे हटते हैं परन्तु आवास के दीर्घकाल को एक महत्त्वपूर्ण प्रभावक सिद्ध मानते हैं। मेरे एक मित्र ने मुझे लिखा है "क्या वे यूरोपीय जो यहाँ अधिक समय से बसे हैं उन लोगों से अधिक अमरीकी नहीं हैं जो बाद में आकर बसे हैं? उदाहरणार्थ क्या

हैं वे फार्म और मकान खरीद सके हैं। विश्वविद्यालयों की शिक्षा लेते हैं और पेशों में कुशलता प्राप्त करते हैं तथा आगे बढ़कर मध्यवर्ग के सदस्य बन जाते हैं। उपाधियाँ प्राय रह जाती हैं[1]—वॉप डागो शीनी किके निग्गर, मार्कों मिक स्पिक पालक हुंकी बोहुंक चिंक जैप वैटबैक ग्रीजर-बग और जाति द्वेष तथा नस्ल के विद्रूप स्वरूप।

कभी-कभी इस प्रचलित रूप की आवश्यकता से अधिक क्षति पूर्ति के वश में होकर लोग पूछ बैठते हैं *कि क्या हम एक स्टाक स दूसरे में भेद कर सकते हैं* या प्रचुर और आश्चर्य में डालने वाले भेदों में केवल वैयक्तिता ही तो नहीं है?

ठीक है कि स्टाकों में भेद बो-टूक नहीं है। एक ही स्टाक में अन्तर है। उदाहरणार्थ यहूदियों में चेहरे, कद अस्थियों के ढाँचे खोपड़ी के ढाँचे और स्वभाव में कहीं अधिक भेद हैं बनिस्बत एक यहूदी और इटालियन या आइरिश या पुर्तगाली या ग्रामी में। यह भी सच है कि एथनिक मतभेद के कारण उनमें कोई बड़प्पन या छोटापन की भावना नहीं होती जैसा कुछ नस्लवादी बतलाते हैं। यद्यपि अमेरिका में कोई अति-मानव नहीं है पर कुछ लोग ऐसे भी हैं जो एंग्लोसैक्सन गोरे देवताओं का एक सम्प्रदाय बनाने के लिए व्याकुल हैं। यद्यपि अमेरिका में कोई उपमानव नहीं है पर कुछ गोरे ऐसे जरूर हैं जो किसी रिक्तता के भय से अपनी गोरी चमड़ी से चिपके रहना चाहते हैं और इस बात की उत्कट कामना करते हैं कि हब्शियों या प्यूर्टोरिकी या मैक्सिकी या कोमी लोगों को उपमानव करार दे दें। कोई भी अमरिकी ऐसा नहीं है जो किसी ऐसे मानव परिवार का हो जो अन्य परिवारों से अलग है या कुछ ऐसे भी नहीं हैं जो बन्दर या देवों के नजदीक हों। ऐसी बात भी नहीं है कि कुछ अमेरिकी मेहनतकशों के लिए और कुछ उन पर प्रभुत्व के लिए पैदा हुए हों। एथनिक दृष्टि से कोई ऐसा दल भी नहीं है जो विशुद्ध हो (दक्ष के हुट्टराइटी जैसे कुछ अल्प अपवाद हैं जो दक्षिण डकोटा में बसे हैं और अन्तर्विवाही हैं)। अमेरिकी इतिहास के उस बिन्दु पर पहुँच गए हैं जिसमें प्रत्येक वर्ग के रंग में कमोबेश दूसरे वर्गों का कुछ न कुछ छींटा जरूर लग चुका है।

फिर भी अमेरिका में एथनिक स्टाक नहीं है या उनमें भेद नहीं है यह मानना भी निरी मूर्खता होगी। अमेरिका में जो आये हैं वे अपेक्षाकृत स्थिर एथनिक वर्गों के रहे हैं। *अपने मांस के शरीर के आनुवंशिक मतभेद और आदतें* लाये हैं जो उन्हें दूसरों से अलग करती हैं। उन्हें यहाँ जिस प्रकार के सामाजिक

---

1 The epithets do often stick—'Wop Dago Sheeny 'Kike 'Nigger 'Norake Mick Spick 'Polack Hunkie 'Bohunk 'Chink Jap 'Wetback Greaser

देश का सामना करना पड़ा उसमें वे बाध्य होकर कमोबेश विविक्त एथनिक समुदायों में एकत्र हो गए हैं। इसलिए उनमें से बहुतों ने अपना पार्थक्य बना रखा है। या यों कहें कि यह पार्थक्य उनमें जम गया है। दूसरे ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने अपने को इससे मुक्त रखा है। उन्होंने संकरण भी किया है। अगर हम यह मान लें कि किसी एथनिक स्टाक का सदस्य होने में कोई लांछन नहीं है तो अमेरिका में स्टाक के सम्पूर्ण प्रश्न पर हम यथार्थ की दृष्टि से बिना किसी भावना के वशीभूत होकर विचार कर सकते हैं।

तथ्य यह है कि अमेरिका व्यक्तियों के नितान्त तारतम्य हीन ढेर से कुछ अधिक है। अमेरिका स्टाकों का एक कशीदा है जिसमें से प्रत्येक पहले-पहल आने से लेकर अन्तिम आप्रवास तक अपनी अहमियत बनाए है। अमेरिका की प्राणिशास्त्रीय समृद्धि इस बात में है कि यह सभी निचोड़ों का मेल है। अमेरिका की सांस्कृतिक समृद्धि इस बात में है कि इसमें परम्पराओं और स्वभावों का मेल है। जब तक कि स्टाक अपनी अहमियत न खोएँ उनके मेल की बात अर्थहीन है। जब तक कि वे सब इकाइयों को त्यागकर मिल न जाएँ, अमेरिका की सतत प्रवाहमान जीवन धारा में बहकर उनकी शक्ल बदल न जाए, किसी अमेरिकी स्टाक की बात चलाना अर्थहीन है।

प्रश्न है कि एथनिक स्टाकों की यह असीम संकरता अमेरिकी जीवन के जो गुण हैं उसके लिए लाभकर है या हानिकर। सच है कि असीम संकरता के विरुद्ध कुछ वाजिब तर्क दिये जा सकते हैं। इस मेल में तो वे वर्ग शारीरिक और सांस्कृतिक दोनों दृष्टियों में प्रधान पड़ जाएँगे जिनकी उर्वरता अधिक है। अधिक उर्वरता जीवन-शक्ति का परिचायक हो सकती है पर यहाँ प्रश्न तो उन व्यक्तियों और संस्कृतियों के गुण का है जिनका संकरण हो रहा है। पर शुद्ध अमेरिका के तर्क दुहरे हैं और वे परस्पर विरोधी हैं। एक तर्क है कि अधिक ताजे प्रवासी गोत्रवादी हैं। वे अपने से बाहर विवाह नहीं करते। इसलिए उन्हें छोड़ ही देना चाहिए। दूसरा तर्क यह है कि देश भर में उनकी बाढ़ आ जाएगी। वे सर्वत्र छा जाएँगे। वे अपनी संख्या अपनी प्रजनन शक्ति और अंतर्विवाह द्वारा सारे देसी स्टाक (native stock) को ही नष्ट कर देंगे। इस प्रकार जहाँ एक तर्क का आधार है कि वे मिलते नहीं हैं वहीं दूसरे का आधार है कि वे खूब मिलते हैं। मुझे तो संदेह है कि इस प्रक्रिया में तर्क उतना नहीं है जितनी भावना—ईर्ष्या अपराध गर्व और भय की भावना—जो 'शुद्ध अमेरिका' बन कर छाई हुई है।

यदि इन भावनाओं को अलग कर दें तो शारीरिक दृष्टि से अमेरिकी स्टाक की एकात्मक नस्लता का असली डर यह है कि सीमाहीन संकरण से अमेरिका खोखला हो जाएगा। प्रतिष्ठित लेखक भी इससे भयभीत हो गए हैं कि जैविकी

और सांस्कृतिक दृष्टि से इटली एशियाई, स्लाव यहूदी और मुमध्य सागरीय लोग विशुद्ध ऐंग्लोसैक्सनों को भ्रष्ट कर देंगे। यदि इस दोगलेपन का कोई भय है तो यही कि यह यह मानकर चलता है कि कोई विशुद्ध (किन्तु अस्तित्वहीन) स्टाक है जो संकरण के कारण क्षीण और भ्रष्ट हो रहा है। दोगलेपन का भय प्रजननी रक्त का भय है और यह भय उस वर्ग को है जिसका यह विश्वास है कि उसका धार्मिक और सामाजिक प्रामाण्य कुछ बाहरी लोगों के कारण खतरे में पड़ गया है। इसीलिए ऐसे लोग नस्ली हमलावरों को अपना शत्रु समझते हैं।

दक्षिण के राज्यों में यह भय दुःस्वप्न की सीमा तक पहुँच चुका है। जहाँ शासक वर्ग न अपनी 'गोरी प्रभुता' की रक्षा के निमित्त मिश्र-प्रजनन (mis-cegenation) के विरुद्ध क़ानून भी बना डाले हैं। मिसिसिपी और जार्जिया जैसे राज्यों में क़ानून के द्वारा ऐसा कोई भी विवाह अमान्य (felonious) और अपराध करार दिया गया है जिसमें एक पक्ष श्वेत है और दूसरे म अफ्रीकी वेस्टइंडियन मारतीय या मंगोल रक्त का 'पता चल जाए। इस मिश्र-जनन क़ानूनों का एक बड़ा पहलू भी है। यदि हम यह मानें कि मिश्र-जनन से अमेरिका में दोगलापन फैल जाएगा तो सत्य तो यह है कि जिन राज्यों म ऐसे क़ानून हैं उनमें हब्शी जिनके विरुद्ध मुख्य रूप से यह क़ानून बना है मुश्किल से सारी जनसंख्या के एक प्रतिशत होंगे।

यह इस बात का प्रयत्न नहीं है कि संकरण से इन्कार किया जा रहा है। बल्कि दोगलेपन का तो प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि शुद्धता की कोई कसौटी ही नहीं है। जहाँ संकरण होगा वहाँ प्रत्येक एथनिक-मुकाव संकरण में दूसरे को 'भ्रष्ट' करेगा। पर इसमें प्रत्येक एक दूसरे से कुछ आत्मसात् भी करता है और उसे बलवान बनाता है। तथ्य तो यह है कि संकरण अपने में न तो अच्छा है न बुरा ही। इसका मुख्य प्रभाव यह है कि यह रेखा क दोनों किनारों पर आनुवंशिक स्वभाव में कुछ फ़र्क पैदा करता है। दूसरे शब्दों म जीन (genes) के प्रभूत विनिमय के फलस्वरूप जो कुछ पारेषित होता है उसका गुण औसत है। किन्तु इससे हमें उच्च धरातल पर अधिक प्रतिमाएँ भी मिलती हैं। संभाव्य का घेरा दोनों ओर विस्तृत होता है। जैसा मैंने कहा है कि सब कुछ उन व्यक्तियों और संस्कृतियों पर निर्भर है जिनका मेल होता है। अमरिका क एथनिक पुंज की विशेषता यह है कि यहाँ इतने विशाल आधार पर स्टाकों और परम्पराओं का मेल हुआ है जितना इतिहास में कभी नहीं हुआ। संस्कृति क कुछ इतिहासकारों का यह कहना है कि वर्गी स्टाक के मेल मात्र का परिणाम सांस्कृतिक अवनति में होता है। किन्तु इटली के नगर राज्यों समेत हालैण्ड ब्रिटेन और कम भारत तथा अमेरिका का उदाहरण तो यही बतलाता है कि संस्कृति का सबसे ओजस्वी युग तब आता है जब यह संकरण अपने चरम पर होता है। इसलिए

जिसका न्यूयार्क शिकागो सेंटलुई की बॉस-राजनीति (boss politics) उनके पक्ष प्रवासी के समर्थन में परिवर्तन के ही फलस्वरूप पैदा हुई थी। ये प्रवासी काम की तलाश और कानून का सामना करने के लिए निजी मददगार चाहते थे। प्रवासियों के ढेर के ढेर मतों का प्रभाव तब तक प्रकट हो चुका था।

प्रवासी की पहली पीढ़ी चाहे वह फार्मों पर रही हो या बड़े नगरों में नए समाज के प्रवेश द्वार पर ही थी। यहीं से वह समाज में अपनी संस्कृति भाषा की महक, अकेलेपन और निजत्व भेज रही थी। उसका बेटा दूसरी पीढ़ी का प्रवासी ही वह व्यक्ति था जिसे उपन्यासकार उपहास के लिए चित्रित करते थे जो या तो नकल करता था या 'देशी अमेरिकियों' (Native Americans) को उनके ही खेल में मात दे रहा था। बड शुलबर्ग (Budd Schulberg) के What Makes Sammy Run ? का सामी और जेरोम वीडमैन (Jerome Weidman) के I Can Get It for You Wholesale का हैरी बोगन भी वही था।

तीसरी पीढ़ी का प्रवासी दो विरोधी मतों में पड़ गया था। एक ओर तो उस पर उन लोगों का दबाव बढ़ रहा था जिनके पूर्वज राष्ट्र के पूर्वज मान लिये गए थे। इससे उसमें भी स्वामित्व और कम्फर्मिज्म आ रहा था। इस प्रकार वह अपने प्रवासी अनुभव से दूर हट रहा था। दूसरी ओर मार्कस हैन्सेन ने बतलाया कि "जो बेटा भूलना चाहता है पोता उसे याद करता है" और तीसरी पीढ़ी का प्रवासी अब अपने पूर्वजों के लिए लज्जित न था उसमें वह शक्ति आ गई थी जो उन्हें स्वीकार करती थी। ये दोनों प्रवृत्तियां प्रवासी के पोतों और परपोतों में मिलती थीं। पर मेरा विश्वास है कि हैन्सेन की बात में और अधिक शक्ति है।

प्रथम महायुद्ध के बाद प्रवास के सम्बन्ध में अमेरिकी दृष्टिकोण में बड़ा परिवर्तन हुआ। फलस्वरूप 1921 और 1924 के कानून पास हुए जिनमें नस्ल के आधार पर प्रवास के नियमों में भेद किया गया। सच तो यह है कि कानून के लिए आन्दोलन पिछली शताब्दी के अन्त के पूर्व नए प्रवास की विशाल लहर से ही आरम्भ हो गया था। प्रभावशाली वर्ग का विश्वास है कि जैसे सूर्य के चारों ओर चन्द्रमा और सितारे घूमते हैं वैसे ही एथनिक जगत् में भी होता है। अंग्रेजों के वंशज अमेरिकी—न्यू इंग्लैण्ड के वासी या मध्य पश्चिम के स्थानान्तरित वासी—सोचते थे कि उनका पुराना प्रभाव नए जनमती प्रवासियों के कारण समाप्त हो रहा है। [illegible] मैं इसी लेख-ग्रन्थों में भी कुछ
इनके चित्रित और भावना की [illegible] के और [illegible]
को ओर [illegible] के रूप [illegible] थी
दुनियां [illegible]

सियों के लिए फँस गया। मजदूरों की सुरक्षित सेना—जो व्यापारियों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण थी क्योंकि इससे औद्योगीकरण में सहायता मिलती थी—बहुत से मजदूर नेताओं को भय का कारण प्रतीत होने लगी क्योंकि अब सस्ते मजदूर के लिए प्रतियोगिता का खतरा उत्पन्न हो गया था। 'प्रगतिपुग' के कुछ बुद्धिवादी जो देशी परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए उत्सुक थे अब प्रवासियों के विरोधी हो गए। दूसरे यूरोप के उन सिद्धान्तों के प्रभाव में वे जो एक नस्ल को दूसरी से बड़ा या छोटा मानते हैं। अब उनको शुद्धि के सिद्धान्तों को 'वैज्ञानिक' समर्थन मिल गया।

मालिकों वाणिज्यायों मजदूर संघ वालों प्रगतिशील बुद्धिजीवियों नस्ली सिद्धान्तवादियों जनसंख्या को सुविधाओं और पेशावर जाति द्वेषियों ने सम्मिलित होकर 'प्रवासियों' के बंधनों को भी विधान विभाग में पर्याप्त सफलता प्राप्त कर ली कि अब प्रवासियों का आगमन खतरनाक है और इसे कड़ाई से रोकना चाहिए। उन्होंने अपराध शान्ति और पूर्वी धूर्तता का भय दिखाकर राष्ट्र भड़का दिया। उन्होंने माफिया और क्लीवलैंड हेमार्केट के अराजकतावादियों और यहूदी सोमचेवालों के उदाहरण दिए जो अन्तर्राष्ट्रीय साहूकार बन चुके थे। उन्होंने भयभीत अमरीकियों को डरा दिया कि उनके पूर्वजों का देश अमेरिका इन नव प्रवासियों के कारण उनका न रह जाएगा। ये सस्ती मजदूरी पर काम करते हैं (इस प्रकार मजदूरी के मानक को गिराते हैं) खतरनाक पुस्तकें पढ़ते हैं, सूअरों की भाँति रहते और चूहों की तरह बच्चे पैदा करते हैं। आदि-आदि।

निश्चय ही प्रवासी अनुभव में एक नया परिवर्तन हुआ। जिसे अतिथि और आतिथेय दोनों ने अनुभव किया। 1880 व 1800 के बीच लिखते हुए जस्स आरम ने देखा कि जिस बौद्धिक और नैतिक वातावरण में प्रवासी यूरोप से आकर बसते हैं उसमें उनके पचाने की शक्ति कहीं अधिक है बनिस्बत उनके नस्ली गुणों के परिवर्तन के। उसने एक प्रकार से अमेरिकी वातावरण के बदल डालने की शक्ति की सराहना ही की थी। उसमें प्रवासियों का बचाव ही किया जो अमेरिकी ईमान को भ्रष्ट करने वाले सर्प के समान माने जाते थे। फिर भी जब यह लिख ही रहा था उसी काल में अमेरिकी जीवन में परिवर्तन आ रहा था। पहले प्रवासी होने का अर्थ था—एक होने वाले अनुभव का भाग होना। वे अनचाहे और बेठीक न थे। न उनको अपनी सांस्कृतिक उत्पत्ति पर ही लज्जा आती थी। किन्तु गृहयुद्ध के बाद अमेरिका ऐसा देश हो गया जहाँ चमत्कार हो रहे थे जहाँ घुसने का मतलब चमत्कार करने में प्रवेश था। अब प्रवासी होने का अर्थ कोई प्रयोग न था। अब उसके प्रति सन्देह की भावना थी कि कहीं कोई अच्छी चीज भुनाकर पैसा न ऐंठ ले। अब प्रवेश-शुल्क

बड़ा प्रयत्न तो दरवाजा बन्द करने से है।

कोई भी स्टाक अमेरिका में आकर वह नहीं रहता जो वह था। नये भौतिक वातावरण और अन्तर्मिश्रण (intermingling) के फलस्वरूप वह अपनी मुख्य भाँति (type=किस्म) से दूर हटता जाता है। कोई भी स्टाक जब वह प्रवास के लिए चल पड़ता है तो वह अपने मूलकालिक वातावरण से अलग होकर एक नए वातावरण में पहुँच जाता है। अमरिका में लगातार एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास एक वर्ग से दूसरे में परिवर्तन के कारण वातावरण की दशा बदलते रहने की प्रक्रिया चालू रहती है। परिणाम में यह परिवर्तन कितना अधिक हो सकता है इसका ज्ञान फ्रेंज बोमस ने 1012 में अपनी महत्त्व पूर्ण पुस्तक 'चेन्जेज इन बॉडिली फॉर्म ऑफ डिसेन्डन्ट्स ऑफ इमिग्रान्ट्स' में कराया था। सामान्यतया विश्वास यह है कि खोपड़ी की नाप एक ऐसी नस्ली विशेषता है जो कभी नहीं बदलती। बोमस ने दिखलाया कि प्रवासी यहूदी और इटली वालों के बच्चों की खोपड़ियाँ उनके माता पिता से पर्याप्त भिन्न हैं। यह परिवर्तन से एथनिक भाँति से दूर वातावरण का है। यह खान-पान जीवन-स्तर, जलवायु या किसी अन्य प्राकृतिक और सांस्कृतिक वातावरण के कारण है, नहीं कहा जा सकता। बोमस का विषय था भौतिक कारण जिसके बारे में आशा की जाती है कि यह परिवर्तन के प्रति अधिक अवरोधशील है। जो बात खोपड़ी के सम्बन्ध में सही है वह मानसिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों पर और भी जोर से लागू होती है। और जो बात वातावरण और जीवन-स्तर के परिवर्तन के प्रभाव के कारण हो सकती है वह जैविक-मिश्रण के परिणाम के बारे में भी लागू है।

मुझे आश्चर्य यह देखकर हुआ कि आरनल्ड टायनबी (Arnold Tynbee) ने स्टडी ऑफ हिस्ट्री (इतिहास का अध्ययन) जिल्द 1 220-221 में बोमस के दर्ज को गलत रूप से समझा है। टायनबी का तर्क है कि बोमस भी अपने विरोधियों की ही भाँति नस्ली विचारधारा का है। बोमस ने लिखा है कि उसका अध्ययन प्रजातिक है क्योंकि "यह बतलाता है कि किसी नस्ल की वे विशेषताएँ जो उसके पुराने घर में स्थायी होती हैं नए वातावरण में वही नहीं रह जाती। और हम बाध्य होकर इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि जब शरीर के ये विशेष गुण भी परिवर्तित होते हैं तो प्रवासी का पूरा शरीर और उसकी मानसिक बनावट भी बदल सकती है"। टायनबी के अनुसार इससे स्पष्ट है कि बोमस मानता है कि "नस्ल के सभी सिद्धान्तों का मूल पक्ष है शारीरिक और मानसिक विशेषताओं में परस्पर सम्बन्ध। किन्तु इसमें बोमस के वास्तविक तर्क पर ध्यान नहीं दिया गया है जिसमें वातावरण के दबाव से सांस्कृतिक मानसिक और शारीरिक लक्षणों दोनों की कोमलता पर . . .

गया है। नस्लवादी विचारधारा का मुख्य तर्क यह है कि ऐसी कोई कोमलता नहीं है। ऊँची या नीची जाति के अपने निश्चित लक्षण होते हैं। बोअस ने कहा कि ऐसा कोई एकदम कठोर नियम नहीं है। (यद्यपि ऐसी कोमलता भी वह सीमित ही मानता है)। नस्लवादी आधार की वर्गबन्दी पर जोर देते हैं वे कोमलता से कतई इन्कार करते हैं।

पाल ऐंगिल ने अपनी 'अमेरिका याद करता है' (America Remembers) नामक कविता में कोमलता का वर्णन किया है। कविता का पंक्तिश अनुवाद प्रस्तुत है—

नस्लों के प्राचीन सम्बन्ध टूट गए
बन्द हुए सूर्य की छाया में साफ हवा में
जो फेफड़ों में मदिरा की भाँति घुसी, साँवले मुख
पीले हुए, मुख की अस्थियाँ उठ गयीं, धँस गयीं, बाल
सीधे हो गये अनेक रंग फीके पड़ गये, और शरीर भरा
इनके पास भूरे ईमानदार आँखें
पानी सी उत्सुक और प्रत्येक अन
की नसों में एक कहानी थी जिसने उसे ढकेल दिया
जिन्दगी की एक बेचैन सनक में।
रक्त मिल गए
पारस की भाँति (कौन जानता है
कैसा अजनबी मधु मिलकर पनपा जाएगा
इन रक्तों की प्रसव वेदना से
एक नये मिश्र महाद्वीप का निर्माण करने के लिए
एक नयी मानव जाति का?)

यदि ऐसी परिस्थिति हो कि तेजी से परिवर्तन हों तो प्रश्न यह है कि अमेरिकी स्टाक में कितनी कोमलता आ सकती है? स्पष्ट है कि अमेरिका में एथनिक स्टाक (यदि अमेरिकी-धारा की किसी भंवर में पड़कर एकदम अलग न हो जाए) अपनी पुरानी भाँति (own type) से दूर हो रहा है। किन्तु क्या वे अपनी भाँति से एक नई अवस्था में अलग हो रहा है जहाँ न्यूनाधिक मात्रा में यह स्थिर होगा? या क्या परिवर्तन की प्रक्रिया चालू और गतिशील है जिससे सबका मिश्रण होकर एक नई एथनिक भाँति का निर्माण होगा जो एक तीसे तीसे जैसे [की भाँति होगी जो वर्तमान भाँतियों (existing type) को—जो बच तो पायेंगी पर बदले रूप में—बदलने के लिए होगा।

जो सम्भव है वह इनमें से किसी भी भाँति सुस्पष्ट नहीं है। हम नहीं जानते कि अमेरिका में एथनिक भविष्य क्या होगा क्योंकि जननिकी (genetics)

बड़ी तेज़ी से अपनी मनस्तुष्टि और दृष्टिकोण बदल रही है। प्रसिद्ध मानव शास्त्री हूटन ने भविष्यवाणी की है कि "आज के औसत अमरिकी जो ठूँठ की तरह अस्थिपेशियों वाले हैं नहीं रह जाएँगे। यदि रह भी जाएँगे तो एक संस्थापक पुरुष प्रतिनिधि के रूप में ही। भविष्य के अमेरिकी 'पुरुष' होंगे शरीर से अधिक दुबले-पतले घुड़मुँहे अधिक लम्बे और कुरूप जबड़ों वाले। और औरतें? आज से क्षीण स्तनों और नितम्बों वाली।" और लोगों ने भी अन्दाज लगाए हैं पर कुछ इसमें आकर्षक नहीं है। किन्तु इन सबका अनुमान है कि एक नई एथनिक इकाई का निर्माण हो रहा है जिसमें सभी विगत पीढ़ियों का विविधता भरा सार भाग होगा किन्तु उस इकाई में स्वभाव शरीर रचना और मुखाकृति का भी कोई प्रधान ठप्पा होगा।

इसका अर्थ यह नहीं कि पुराने स्टाक खत्म जाएँगे और अमेरिका एथनिक दृष्टि से एक हो जाएगा। अमरिका की जैसी भिन्न जनसंख्या है उसमें जेन भेद (gene variants) संख्या में बहुत अधिक हैं और भविष्य में जिन दिशाओं में अमेरिकी स्टाक जा सकता है वे भी अनेक हैं। इतिहास में यह प्रथम महान् उदाहरण है जहाँ एथनिक प्रचुरता विवाह की स्वतन्त्रता के साथ मिलकर एक ऐसे एथनिक भविष्य का निर्माण कर रही है जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर पा रहे हैं।

यदि हम फिर प्रश्न करें कि 'क्या कोई अमेरिकी स्टाक भी है ?' तो उत्तर होगा कि हाँ एक नहीं बहुत से जितने कभी एक राष्ट्र में एकत्रित नहीं हुए। इनमें कोई भी एक-दूसरे से अधिक अमेरिकी नहीं है। (चाहे कोई ऐसा दम भर ले) कि प्रत्येक स्टाक अपने मूल स्थान से भिन्न है प्रत्येक अमेरिकी वातावरण में आकर बदला है क्योंकि वे अमरिकी महाद्वीप में साथ रहते हैं और आपस में विवाह सम्पन्न करते हैं। अमरिका प्राणी विज्ञान और मनोविज्ञान की एक बड़ी प्रयोगशाला है जिसके प्रयोगों का एक ऐसा परिणाम निकल सकता है कि जिसका स्वप्न में भी हमें आभास न हो। सभी स्टाकों में आन्तर-सम्बन्ध में अपनी भाँति से विचलन हुआ है। स्पष्ट नहीं सूक्ष्म रूप में धीरे-धीरे बहुत धीरे-धीरे, पर निश्चित रूप में नई जातियों का निर्माण हो रहा है जो अभी सामने नहीं आई हैं।

जब वे सामने आएँगी तो वे अमेरिका की रचना होंगी अमेरिका उनकी रचना न होगा। फिर भी जब हम अमेरिका के मानव पदार्थ में निरन्तर पुनर्मिश्रण भाव को देखते हैं तो क्या इस बात में कोई सन्देह रह जाता है कि अमेरिकी भविष्य का निश्चय करने वाले इसमें नहीं हैं? सेंटएक्जूपेरी (Saint Exopery) ने लिखा था "केवल एक विजय है जिसके बारे में कुछ निश्चय है। वह विजय बीज की शक्ति में निहित है।" जो कुछ हम अमेरिकी स्टाक के बारे में जानते

है उसके आधार पर इसका एक ही अर्थ है कि विजय बीज की कठोरता की नहीं उसकी कोमलता की है।

## 2. आव्रजन के अनुभव

शताब्दियों से यूरोप से आने वाले आव्रजकों के झुण्ड अमेरिका की शक्ति और वैभव बढ़ाते रहे हैं। इन लोगों के आने के स्रोत ब्रिटिश द्वीप समूह से पश्चिमी यूरोप और स्कैण्डेनेविया से भूमध्यसागरीय देशों स्लाव देशों तक रहे हैं। सन् 1790 में अमेरिका की जनसंख्या 40 लाख से भी कम थी। इनमें 7·5 लाख हब्शी थे और गोरी आबादी में 82 प्रतिशत अंग्रेज थे। अगले 40 वर्षों में 1830 तक प्रवासियों का प्रवाह मन्द था। 1830-40 के दशक में 'अटलान्टिक प्रवासियों' की गति तीव्र हुई—पहले आइरिश ग्रामीण फिर जर्मन किसान और कारीगर, फिर भूमि के भूखे स्कैण्डनेवियन आये। 1880-90 के दशक के पूर्वार्द्ध में एक बड़ी 'नई लहर आई'। नई, दो अर्थों में—एक तो ये पश्चिमी और उत्तरी यूरोप के न होकर पूर्वी और दक्षिणी यूरोप के थे और दूसरे, कि ये भूमि पर नहीं बल्कि बड़े शहरों में और खानों और मिलों और कारखानों में काम करने को थे।

कुछ संख्याएं ऐसी हैं जो नाटकीय कथा कहती हैं। 1880 से 1914 के बीच लगभग 5 करोड़ व्यक्तियों ने यूरोप छोड़ा—इनमें 3·5 करोड़ संयुक्त राज्य अमेरिका में आये। 1800 से 1950 तक के डेढ़ सौ वर्षों में 4 करोड़ नए लोग संयुक्त राज्य अमेरिका आए। इनमें 85 प्रतिशत यूरोप से 11 प्रतिशत अमेरिकी गोलार्द्ध के अन्य देशों से आये। एशिया से 3 और विश्व के अन्य देशों से आने वालों का प्रतिशत 2 ही था। 1904-14 के दशक में यह आगमन अपनी चरम सीमा पर था जब एक करोड़ व्यक्ति आये। 1907 में जो आगमन के लिए चरम वर्ष था 12·5 लाख से अधिक व्यक्ति आये।

जब कि अत्याचार, युद्ध और अकाल के विप्लव ने विश्व को मथ दिया और पुराने विश्व में 'अवसर की रेखा' पतली और नये विश्व में मोटी होती गई करोड़ों व्यक्ति जलमार्गों से बहते हुए अमेरिका आये। ऐसा मालूम पड़ता था जैसे अमेरिका में बसने की लोगों को धुन हो गई है। इस क्रम में सहायता दी जहाजी कम्पनियों ने जिनके दलाल घूम घूमकर नये किनारे के वैभव का बखान करते और प्रवासियों की भर्ती करते थे। यातायात के व्यय कम होते जाने से भी इसमें मदद मिली। ये पुचकारें (stimulants) न होते तो भी लोग देश छोड़ते ही। अमेरिका के नाम में वह चुम्बक था जो लोगों को जादू की शक्ति से खींच रहा था।

मुख्य रूप में ये किसान थे जो आयरलैण्ड जर्मनी स्कैण्डनेविया के देशों से

इटली, रूस और पोलैण्ड तथा बालकन देशों से आ रहे थे। और भी दूसरे लोग थे जो नगरों से आ रहे थे—बेकार कारीगर, विफल दुकानदार, राजनीतिक निर्वासित बुद्धिजीवी जिन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर नहीं मिला। और जो "लैटिन फार्म" (उपहास में उन्हें ऐसा ही कहते थे) की स्थापना करना चाहते थे। किन्तु जो परिवार आये उनमें अधिकांश भूमि पर आश्रित थे जिन्हें वहाँ भूमि अब पालन करने में असमर्थ थी। खेत छोटे थे। गाँव का समाज ऐसा था जो परम्पराओं के कारण कृषि प्रणाली से लाभ न उठा पा रहा था। ऋण के बोझ से दबी गरीबी उनकी संगिनी थी। अब अकाल ने जिन्दगी के हाशिये को पूर्णतया नष्ट कर दिया। जमीन के छोटे-से टुकड़े पर अतिक्रमण बढ़ गया और किसान बेदखल कर दिया गया तो अपने गाँव का छोटा सा घरा उसे असह्य हो गया। सामन्ती और पादरियों की परम्परा से बँधे उस किसान के लिए जिसके जीवन में आशा की कोई किरण शेष न थी और उसके बच्चों का भविष्य अन्धकारमय था, स्वाभाविक था कि वह एक ऐसे देश की प्रतिमा के सम्मुख नतमस्तक हो जहाँ जमीन थी और वह तब तक घूम सकता था जब तक उसके अनुकूल काम न मिल जाए, जहाँ उसकी सन्तति के लिए असीम सम्भावनाएँ थीं। दे क्रेवकूर (De Crevecoeur) ने बहुत पहले लिखा था "हमारे यूरोप में रह जाते हैं सम्पन्न और गरीब वर्ग के लोग प्रवासी हो जाते हैं।"

पुराने घर के उजड़ने और नई जगह पर बसने के बीच प्रतीक्षा और कष्ट के काफी कड़वे अनुभव होते थे। यूरोपीय तटों के बन्दरगाहों के विश्रामघरों में वह रात रात जागकर कष्ट भोगता था फिर किसी दलाल की मार्फत उसकी यात्रा का प्रबन्ध होता था और अन्त में जहाज चलता था। जहाजों के यात्रियों के कमरे जिनमें वे जाते थे—बड़े कष्टप्रद थे। जहाज वाले जगह में स्थान से अधिक यात्री उनमें ठूँस देते थे। ये कमरे भी प्रायः ठस भीड़ से भरे, गन्दे बीमारियों के घर और वहाँ से भरे रहते थे। प्रकाश की दृष्टि से रात्रि और दिन में इनमें कोई विशेष अन्तर नहीं होता था। खाने-पीने की तंगी और पानी की खराबी के कारण यात्रियों को प्रायः पेचिश और जहाजी बुखार तो होता ही था, एक दूसरी ऐसी बीमारी भी हो जाती थी जिसमें खून की खराबी से शरीर भर में चकत्ते पड़ जाते थे। इसे स्कर्वी कहते थे। जहाज पहुँचने पर अमेरिका परम्पराओं से दूर इस प्रवासी की आँखें इस नये संसार को देखकर चकाचौंध हो जाती थीं। वह घबरा जाता था। उसे तत्काल काम पाना था ताकि वह जिन्दा रह सके। किसी भी किस्म का काम किसी भी वेतन पर चाहे जितने कड़े काम करना पड़े और काम की स्थिति कितनी ही खराब क्यों न हो इसलिए वह आते ही देश के व्यापारी मालिकों महाजनों के

शोषण का शिकार हो जाता था। कभी-कभी तो प्रवासी जिस बड़े शहर में उतरता वहीं बस जाता था अपने ही देशवासियों की 'घेटो' (ghetto) की भीड़ में। कभी वह और भीतर चला जाता। जमीन का कोई टुकड़ा ले लेता या किराये के आदमी के रूप में शामिल हो जाता। वहाँ भी प्रायः वह अपने एथनिक स्टाक के लोगों के साथ ही रहता। दोनों रूपों में उसकी आवश्यकता होती कि कैसे वह अपने श्रम और कौशल से रुपया पैदा करे। आने के बाद वर्षों तक वह मामूली खर्च पर बसर कर सब-कुछ बचाता था ताकि किसी स्टोर या रेस्तरां या फार्म में कोई दूसरा छोटा-मोटा रोजगार करके सचमुच नया जीवन आरम्भ कर सके।

वर्षों तक सम्भवतः अपने शेष जीवन भर इन प्रवासियों में बहुत-से गैरों की भाँति (आस्कर हैण्डलिन ने बड़े मार्मिक ढंग से 'दि अपरूटेड' में इनका चित्रण किया है) रहता था। गैर वह उस संस्कृति से हो गया था जिसे छोड़ आया था और वह इस संस्कृति से भी था जहाँ वह आया था क्योंकि अभी सम्पूर्ण रूप में वह उसका नहीं हो पाया था। अन्त में वह अपनों के लिए भी गैर था। गाँव-समाज की पुरानी व्यवस्था में चाहे उसे कष्ट अवश्य था पर उसमें स्थायित्व तो था। उसमें प्रत्येक यह तो जानता था कि उसे क्या करना चाहिए। विशाल अमेरिकी नगरों के तौर-तरीकों और तेजी से बढ़ते फार्मों से वह जकड़ा जाता था। वह ऐसी शक्तियों की पकड़ में आ चुका था जिन पर उसका कोई वश नहीं था। उसे अपनी मेहनत को बाजार में डालरों में बदलना था ताकि वह सब-कुछ प्राप्त कर सके जो जीवन में उसके लिए आवश्यक था।

पीड़ित किसान वर्ग या यहूदी परम्परा के कसे हुए परिवार में तनाव पैदा हो चुका था और नये समाज में अब वे टूटने लगी थीं। प्रायः वह बुरी तरह टूटता था पर जो इससे बच रहते थे उन्होंने पाया कि एक गैर संसार का मिल जुलकर मुकाबला करने के लिए उनमें लगाव के बन्धन और मजबूत हो गए हैं। सबसे दुःख की बात तो यह थी कि बेचारा प्रवासी अपने बच्चों के लिए भी गैर होता जा रहा था। ये बच्चे एक नये ताल के संग भाषाओं से नये रास्ते अपनाते जा रहे थे। वे जीवन के नए उद्देश्य को स्वीकार कर रहे थे और नये वातावरण में घुल-मिल जाने के लिए उत्सुक थे। ये बच्चे भी अब उससे दूर और गैर होते जा रहे थे। शायद अपने और अपने नये साथियों के बीच के फासले को समाप्त करने के लिए ये भी अपने माँ-बाप को 'अमेरिकी' दृष्टि से देखते थे और उन्हें बाहरी और अजनबी समझते थे। अपनेपन का घेरा पूरा हो चुका था ।

इसलिए प्रवासी का अनुभव उदासी और दुःख से भरा था। किन्तु इसे केवल इसी रूप में देखना भूल होगी। इसमें उत्तेजना और उफान भी था। करोड़ों प्रवासी नए देश को अपना सब समर्पित कर असफलता और पराजय

की भावना लेकर मरे। किन्तु कई करोड़ इस अग्नि-परीक्षा में बच भी रहे। वे अपने भाई-बन्धुओं में प्रभाव प्राप्त कर सके। वे जिन्दा रहे और उन्होंने देखा कि अमेरिका से उन्होंने जो आशा की थी वह पूरी हुई। उनके बच्चों के जीवन में यह आशा दूसरे रूप में पूरी हुई। दे क्रेवेकर ने अपने साथी प्रवासियों के बारे में लिखा है "जो भी होता उसमें उनका पुनर्जन्म होता, नये क़ानून, रहन सहन की नई प्रणाली एक नई सामाजिक व्यवस्था यहाँ वे मानव बन गए, यूरोप में वे बेकार पौधे थे जिनके लिए खाद और ताज़गी देने वाली फुहार की आवश्यकता थी जो न मिली। वहाँ वे मुरझा गए। ग़रीबी भूख और युद्ध ने उनकी कटाई कर दी थी। पर अब दूसरे पौधों की तरह अब उनका स्थानान्तरण हो गया उन्होंने जड़ें पकड़ ली हैं और अब वे फूल-फल रहे हैं।" सन्देह है कि 18वी शताब्दी के मध्य में लिखे इस काव्यमय वर्णन को एक शताब्दी बाद कोई यथार्थ मानता कि नहीं किन्तु इसका एक अर्थ है जिसे वे ही समझ सकते थे जो प्रवास की इस सारी प्रक्रिया से होकर निकले थे और उन लोगों के बेटों और पोतों के लिए भी जो आज उनके स्थानान्तरण से आनन्द ले रहे हैं इसका कोई अर्थ है यद्यपि उन्हें ऐसी कोई अग्नि-परीक्षा नहीं देनी पड़ी है।

फिर भी इस अग्नि-परीक्षा में कुछ ऐसी बात अवश्य थी जिसने प्रवासी और उसके नए देश को समृद्धि दी। चाहे उसने अपने पुराने गाँव में अपने को असफल मान लिया हो चौराहे पर वह विवश भी हुआ हो और प्रत्येक हार के पश्चात् वह अपने जीवन पर ही सन्देह करने लग गया हो किन्तु एक चीज़ जो कोई उससे छीन नहीं सकता वह है उसका प्रत्यक्ष अनुभव। जो भी सिद्धि उसे मिली वह उसके बाहुबल से। पहले के अमेरिकी जनों को जो अनुभव हुआ था यह उससे भिन्न था। जिन कठिनाइयों का सामना उन लोगों ने किया था वे जंगली समाज के कारण थीं। इस नए अनुभव में जंगली एकान्त की एक दु:ख-पूर्ण महत्ता थी जिसकी अमेरिकी जीवन को आवश्यकता थी। दु:ख की चरम सीमा पर भी इसमें सजीवता का एक उफान था जिसने प्रत्येक दशक में एक नए अमेरिकी अनुभव की सृष्टि की। अमेरिकी मन में बहुत कुछ ऐसा था जो स्थायी और कन्ज़र्वेटिव हो रहा था। प्रवासियों के अनुभव ने इससे टक्कर ली और एक ऐसी गर्मी पैदा कर दी जिसने उस बर्फ़ीली कठोरता को पिघला दिया। पिछले 40 वर्षों से जब प्रवास के लिए द्वार प्राय बन्द कर दिया गया है कम प्रवासी आए हैं अब पुनर्रचना की प्रक्रिया का अवसर भी बन्द है।

प्रवासियों ने मध्य में अमेरिकी आर्थिक जगत् में अपना स्थान बना लिया। जो भी नई लहर आई उसने अपने से ऊपर की सतह को आगे बढ़ा दिया। किन्तु अमेरिकी अर्थ-व्यवस्था को भी इस प्रवास ने प्रभावित किया। औद्योगी-करण के लिए आवश्यक श्रमिक-शक्ति उसे मिली। अमेरिका के प्राकृतिक

साधनों की समृद्धि के बारे में जो भी कहा जाए पर सबसे समृद्धिशाली साधन तो मानव-शक्ति का था। यदि ये प्रवासी न आते तो अमेरिका में इतनी तेज़ी से न रेलें बनतीं न कोयला निकलता न इस्पात की भट्टियाँ बनतीं और न कल-कारखाने। एक बात और है वह यह कि यद्यपि सही है कि अधिकांश प्रवासी अकुशल कमचारी थे पर वे जमरतोड़ परिश्रम कर सकते थे। साथ ही उनमें बहुत-से कुशल कमचारी भी थे जो यूरोप की औद्योगिक प्रक्रिया से परिचित थे। इसलिए 'यह महान् देशान्तरण' केवल जनता का ही नहीं बल्कि प्रतिभा कौशल और सांस्कृतिक परम्पराओं का भी था। प्रवास में वृद्धि से उपभोक्ता और निर्माता भी बढ़े। नई मशीनों ने उत्पादन की लागत और दाम घटा दिये फिर भी नित्य बढ़ते करोड़ों प्रवासियों ने मुनाफे में कमी न होने दी जो लौटकर फिर उन्हीं उद्योगों में लग रहा था। प्रवासियों के पास बचत सदा रखा ही गया था। अब उनका जीवन-स्तर ऊँचा हो गया। अतः घर की बाजार गणित की भाँति नहीं ज्यामिति की भाँति बढ़ती गई।

प्रवासी को बढ़ते जीवन-स्तर की एक प्रकार की प्रेतबाधा थी जिसे उसने अमेरिकी जीवन को दिया और उससे कुछ लिया भी। उसकी दशा उस आदमी की-सी थी जिसे जल्दी होती है। उसे अपने परिश्रम का फल पाने और उसे दिखाने की भी जल्दी थी। 'आत्म-निर्मित मनुष्य' की कथाएँ जो अमेरिकी कल्पना में बस गई हैं। वे इन प्रवासी लड़कों की ही कथाएँ थीं जो चीथड़ों से महलों में पहुँच गए। उनके व्यापार की प्रणाली पहले के अमेरिकियों से भिन्न न थी। पर चूँकि उन्हें फल प्राप्ति की इतनी जल्दी थी कि कहानी फैल गई कि व्यापार में वे सिद्धान्तहीन हैं। फलस्वरूप 'पादरवाले' (मानी देशी) व्यापारी और 'प्रवासी व्यापारी' के बीच एक दरार थी। निश्चय ही प्रवासी व्यापारी में बुखार की एक तेजी थी। उसकी दशा उस छोटे से लड़के की थी जो हलवाई की दुकान में रखी मिठाई को तब तक ललचाई-सी निगाह से देखता है जब तक कि उसकी जेब में पैसे न हों। नया प्रवासी विज्ञान और यान्त्रिक आविष्कार के करिश्मों उन्नति सम्पत्ति और शक्ति की अथाहता को देखकर चकित था। वह सम्भावनाओं से भरा था शायद उसने प्रथम लपट को फिर से जिला दिया था।

जब सम्भावनाएँ विफलित हो जातीं और आशा धूल में मिल जाती तो उसका *औद्योगिक मजदूर या अन्य क्रान्तिकारी आन्दोलनों में अभिव्यक्ति पाता* जिसका प्रारम्भ कतिपय एकाधिक स्ट्राइकों के विरुद्ध होता। आगे चलकर यही विद्रोही दलों में संघटित हो जाता या तीसरे पार्टी का आन्दोलन बन जाता। किन्तु प्रवासियों का राजनीतिक प्रभाव जितना नगरीय राजनीति पर पड़ा उतना ही मध्य-पश्चिम की मतभेद की राजनीति पर भी। बोस्टन शिकागो

लिंकन, न्यूयार्क, शिकागो, सेंटलुई की बॉस राजनीति (boss politics) अकेले पर प्रवासी के समर्थन में परिवर्तन के ही फलस्वरूप पैदा हुई थी। ये प्रवासी काम की तलाश और कानून का सामना करने के लिए किसी मददगार चाहते थे। प्रवासियों के हर के ढेर मतों का प्रभाव तब तक प्रकट हो चुका था।

प्रवासी की पहली पीढ़ी चाहे वह खानों पर रही हो या बड़े नगरों में नए समाज के प्रवेश द्वार पर ही थी। यहीं से वह समाज में अपनी संस्कृति भाषा की महक, अकेलेपन और निजत्व भेज रही थी। उसका बेटा दूसरी पीढ़ी का प्रवासी ही वह व्यक्ति था जिसे उपन्यासकार उपहास के लिए चित्रित करते थे जो या तो नकल करता था या 'देशी अमेरिकियों' (Native Americans) को उनके ही खेल में मात दे रहा था। बड शुलबर्ग (Budd Schulberg) के What Makes Sammy Run? का सामी और जेरोम वीडमैन (Jerome Weidman) के I Can Get It for You Wholesale का हैरी बोगन भी वही था।

तीसरी पीढ़ी का प्रवासी दो विरोधी मतों में पड़ गया था। एक ओर तो उस पर उन लोगों का दबाव बढ़ रहा था जिनके पूर्वज राष्ट्र के पूर्वज मान लिये गए थे। इससे उसमें भी नेटिविज्म और कन्फर्मिज्म आ रहा था। इस प्रकार वह अपने प्रवासी अनुभव से दूर हट रहा था। दूसरी ओर मार्कस हैन्सेन ने बतलाया कि "जो बेटा भूलना चाहता है पोता उसे याद करता है" और तीसरी पीढ़ी का प्रवासी अब अपने पूर्वजों के लिए लज्जित न था उसमें वह शक्ति आ गई थी जो उसे स्वीकार करती थी। ये दोनों प्रवृत्तियाँ प्रवासी के वादों और परवादों में मिलती थीं। पर मेरा विश्वास है कि हैन्सेन की बात में और अधिक शक्ति है।

प्रथम महायुद्ध के बाद प्रवास के सम्बन्ध में अमेरिकी दृष्टिकोण में बड़ा परिवर्तन हुआ। फलस्वरूप 1021 और 19[illegible]4 के कानून पास हुए जिनमें नस्ल के आधार पर प्रवास के नियमों में भेद किया गया। सच तो यह है कि कानून के लिए आन्दोलन पिछली शताब्दी के अन्त के पूर्व नए प्रवास की विशाल लहर से ही प्रारम्भ हो गया था। प्रभावशाली वर्ग का विश्वास है कि जैसे सूर्य के चारों ओर चन्द्रमा और सितारे घूमते हैं वैसे ही एथनिक जगत् में भी होता है। पंजों के बजाय अमेरिकी—न्यू इंग्लैण्ड के गोरे या मध्य पश्चिम के स्थानान्तरित गोरे—मानते थे कि उनका पुराना प्रभाव नए अजनबी प्रवासियों के कारण समाप्त हो रहा है। पारिवारिक मोहल्ले में अब प्रोटेस्टेन्ट-वर्गों में भी कुछ इनमें भिन्नता और भावना की दृष्टि से विभक्त थे। दक्षिण के गोरे दक्षिण को 'गोरों का देश' के रूप में सुरक्षित रखने का प्रयत्न कर रहे थे। उन्हें हब्शियों से भय था जो उनके चारों ओर थे। पर उनका यह भय सभी विदेशियों

सियों के लिए फैल गया। मजदूरों की सुरक्षित सेना—जो व्यापारियों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण थी क्योंकि इससे औद्योगीकरण में सहायता मिलती थी—बहुत से मजदूर नेताओं को भय का कारण प्रतीत होने लगी क्योंकि अब सस्ते मजदूर के लिए प्रतियोगिता का खतरा उत्पन्न हो गया था। 'प्रमविपुम' के कुछ बुद्धिवादी जो देशी परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए उत्सुक थे अब प्रवासियों के विरोधी हो गए। दूसरे यूरोप के उन सिद्धान्तों के प्रभाव में थे जो एक नस्ल को दूसरी से बड़ा या छोटा मानते हैं। अब उनके शुद्धि के सिद्धान्तों को 'वैज्ञानिक' समर्थन मिल गया।

याकियों आभिजात्यों मजदूर संघ वालों प्रगतिशील बुद्धिजीवियों नस्ली सिद्धान्तवादियों जनसंख्या की शुद्धिवालों और पेशावर जाति द्वेषियों ने सम्मिलित होकर प्रवासियों के बंधनों को भी विश्वास दिलाने में पर्याप्त सफलता प्राप्त कर ली कि अब प्रवासियों का आगमन खतरनाक है और इसे कड़ाई से रोकना चाहिए। उन्होंने अपराध व्याधि और पूर्वी धूर्तता का भय दिखाकर उन्हें भड़का दिया। उन्होंने माफिया और ब्लैकहैंड हेमार्केट के अराजकतावादियों और यहूदी रोमचेवालों के उदाहरण दिये जो अन्तर्राष्ट्रीय साहूकार बन चुके थे। उन्होंने भयभीत अमेरिकियों को डरा दिया कि उनके पूर्वजों का देश अमेरिका इन नए प्रवासियों के कारण उनका न रह जाएगा। ये सस्ती मजदूरी पर काम करते हैं (इस प्रकार मजदूरी के मानक को गिराते हैं) खतरनाक पुस्तकें पढ़ते हैं सूअरों की भाँति रहते और चूहों की तरह बच्चे पैदा करते हैं। आदि-आदि।

निश्चय ही प्रवासी अनुभव में एक नया परिवर्तन हुआ। जिसे अतिथि और आतिथेय दोनों ने अनुभव किया। 1880 व 1890 के बीच लिखते हुए जेम्स ब्राइस ने देखा कि जिस बौद्धिक और नैतिक वातावरण में प्रवासी यूरोप से आकर बसते हैं उसमें उनके पचाने की शक्ति कहीं अधिक है बनिस्बत उनके नस्ली गुणों के परिवर्तन के। उसने एक प्रकार से अमेरिकी वातावरण के बदल देने की शक्ति की सराहना ही की थी। उसने प्रवासियों का बचाव ही किया जो अमेरिकी-ईडन को भ्रष्ट करने वाले सर्प के समान माने जाते थे। फिर भी जब वह लिख ही रहा था उसी काल में अमेरिकी जीवन में परिवर्तन आ रहा था। पहले प्रवासी होने का अर्थ था—एक होने वाले अनुभव का भाग होना। वे अनचाहे और बेठीक न थे। न उनको अपनी सांस्कृतिक उत्पत्ति पर ही लज्जा आती थी। किन्तु गृहयुद्ध के बाद अमेरिका ऐसा देश हो गया जहाँ चमत्कार हो चुके थे जहाँ घुसने का मतलब चमत्कार करने में प्रवेश था। अब प्रवासी होने का अर्थ कोई प्रयोग न था। अब उसके प्रति सन्देह की भावना थी कि कहीं कोई अपनी चीज भुनाकर पैसा न ऐंठ ले। अब प्रवेश-शुल्क

के रूप में उसको भीड़ से भरे गन्दे घरों में प्रवेश दिया जाता था। और वे गन्दे काम करने को बाध्य थे जिसके लिए उनको पैसा भी कम मिलता था अब उनको यह अनुभव कराया जाता था कि वे बाहरी हैं।

अब देशी पूछने लगे थे कि फाटक तोड़ने वालों की इतनी हिम्मत कि वे हमसे भिन्न हैं। "यदि अलपाइन भूमध्य सागरीय और सेमीटिक नस्ल के कुछ करोड़ व्यक्ति हमारे बीच घुस आएँ" उपन्यासकार केनेथ राबर्टस ने लिखा "तो हमारी नस्ल दोगली होकर वैसी ही बेकार हो जाएगी जैसे मध्य अमेरिका और दक्षिण पूर्वी यूरोप के निठल्ले दोगले हैं।" ऐसे बहुत-से दोगले चले आ रहे थे। वे अजनबियों की तरह दिखते थे। वे चारों ओर छितरे हुए थे। वाचाल थे। वे एक ऐसे यूरोप से आ रहे थे जहाँ क्रान्तिकारी षड्यन्त्रों का बोलबाला था। ये अमेरिका के अमनप्रियों को असुरक्षित बना रहे थे। पृष्ठभूमि में सर्वदा भयंकर (पर बड़ा लुभावना) भय लिंग का भी था कि ये काले विदेशी हमारे शुद्ध अमेरिकी रक्त को बिगाड़ देंगे।

इस प्रकार प्रवास के दूसरे दौर ने पहले की उदार भावना को पिस दिया। यहूदी जांगविल का आलोक कि अमेरिका वह भट्ठी है जिसमें सभी देशों की धातुएँ पड़ती हैं और 'महान् रसायनी' उन्हें अपनी लपट से गलाकर एक कर देता है। अमेरिका में उत्साहपूर्ण स्वागत तो पा रहा था पर यह उत्प्रेक्षा खतरनाक थी क्योंकि इसमें यह भाव छिपा था कि सभी प्रवासी तत्वों को और अधिक अमेरिकी तत्वों के द्वारा पचा लिया जाए और फिर वे सब एक हो जाएँ। प्रथम विश्वयुद्ध में यह भय जगा कि भिन्न तत्वों को एक और शुद्ध करने वाला अमेरिकी तत्व पिछड़ रहा है 'कम्युनिज्म का हौवा' जो युद्ध के बाद आया उसे विदेशियों के विरुद्ध लगा दिया गया। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद तो यह और भी तीव्र हो उठा। कुछ अमेरिकियों ने इसमें आक्रामक भावनाओं की अभिव्यक्ति की। दूसरे बहुत-से लोग बौद्धिक और भावनात्मक विकृतियों के शिकार हो गए। सन् 1021 के प्रवासी कानून में हिस्से का जो सूत्र था उसे एक चीनी मिशनरी ने बनाया जिसने पूर्वी प्रवासियों के आगमन पर जो प्रतिबन्ध थे उन्हें दूसरे सामान्य प्रतिबन्धों में मिला देने का एक रास्ता ढूँढ निकाला था। 1921 के कानून में जो मानक वर्ष था जिसके आधार पर प्रवासियों की कुल संख्या में प्रत्येक देश का हिस्सा निश्चित होता था, और पीछे धकेल दिया गया ताकि भूमध्य सागरीय और पूर्वी यूरोप के प्रवासियों की संख्या कम हो जाए। यूरोपीय लोगों के लिए उस लोकतन्त्र की थाह पाना कठिन था जिसमें मोटे तौर पर 3,000 फ्रांसीसी और 4,000 इटालियन प्रतिवर्ष लिये जा सकते थे जब कि जर्मनों और अंग्रेजों के लिए यह संख्या क्रमशः 25,000 और 65,000 थी। प्रवास पर प्रतिबन्ध लगाने में भेद भाव किया गया जानबूझकर और

के आधार पर। सन् 1952 के मैकक्लन-वाल्टर क़ानून (McCarran-Walter-law) से आज तक उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। इम्मा लाज़रस का 'सोने का दरवाज़ा' (Golden Door) क़रीब-क़रीब बन्द ही है। 1900 में सारी अमेरिकी आबादी के 13 प्रतिशत विदेशों में पैदा थे जब कि 1950 के केवल 7 प्रतिशत 1960 में यह प्रतिशत और भी नगण्य हो जाएगा। इस नीति की विडम्बना यह थी कि चूँकि प्यूरटोरिको (जो भी अमेरिका का अंग है) पर लागू न थी। इसलिए प्यूरटोरिकियों का आगमन उन्हें बर्दाश्त करना पड़ा। स्मरणीय है कि ये उनके आदर्श एथनिक भाँति से भिन्न हैं। इस प्रवास की नीति का उद्देश्य था प्रतिवर्ष लगभग 250 000 प्रवासियों को स्थायी रूप से प्रवेश करना। यह और भी तर्कसंगत ढंग से हो सकता था। होना यह चाहिए था कि संख्या निश्चित करने के पश्चात् जिस क्रम से उनकी अर्जी आती या कौशल का जो भी मापदंड निश्चित किया जाता उन्हें ले लेते। प्रवास के नियम ढीला करने और उनका प्रबन्ध करने के लिए आज भी संघर्ष हो रहा है पर धीमे दिल से। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी को विश्वास नहीं रह गया है कि यह क्रम बदला जा सकता है, क्योंकि (बुद्धिवादी जैसे भी सोचें) कांग्रेस और चुनाव क्षेत्रों में विदेशी-विरोधी तत्त्व अब भी प्रबल हैं।

जब द्वार बन्द नहीं हुआ था तब भी प्रवासी इस संकीर्ण दृष्टिकोण का प्रभाव अनुभव करने लगे थे। अमेरिका का बुखार इतना तेज़ था कि वे अमेरिका में बसने के लिए आवश्यकता से अधिक उत्सुक थे। उनमें सब कुछ गहरा हो चुका था स्वतन्त्रता से प्रेम 'ठीक के निर्माण' (make good)) की भावना अपमान की वेदना और योग्य होने की उत्सुकता। प्रवासी परिवार का ढाँचा हिल चुका था। परम्पराओं का गर्व जो वे अपने साथ लाये थे भी बंधन हो उठा था।

प्रवासी ने अपना भी दो पीटों के बीच फँसा पाया। एक था उस पर थोपे गए आर्थिक और सामाजिक भेदभाव का बाहरी पीटों दूसरा आन्तरिक पीटा था जो उस दबाव का परिणाम था जो उसे इस भेद-भाव का सामना करने के लिए तैयार कर रहा था। अब उसे नई संस्कृति का किस्सा सीखकर बन्दरों की तरह उसकी नक़ल करता था इस प्रकार वह अपनी पारिवारिक और एथनिक परम्पराओं से इन्कार कर रहा था या फिर वह अपनी पुरानी संस्कृति की खोल में घुस रहा था। एथनिक परम्परा की दुहरी प्रक्रिया काम कर रही थी—उत्सुक समन्वयवाद और जुझारू एथनिक सनातनवाद की। दोनों रूपों में यह विरोध और गैरियत की भावना के विरुद्ध थी। छिटफुट प्रवासियों की सफलता की जो कहानियाँ हैं वे इसे झूठा सिद्ध नहीं करतीं बल्कि इसकी पुष्टि करती हैं। 'नौकर से धनपत' बनने की सफलता की अधिकांश

कहानियाँ उन प्रवासियों की हैं जिन्होंने एक संस्कृति से दूसरी में प्रवेश के संक्रमण काल को इतना कष्टपूर्ण पाया कि दोनों संस्कृतियों को छोड़ने के लिए उन्हें एकाकीपन से इतना संघर्ष करना पड़ा कि जिसमें उनका व्यक्तित्व बिखर गया।

हर्ष है कि अमेरिकी विचारधारा में प्रवासियों के सम्बन्ध में 'मेल्टिंग पॉट' (परिवर्तन की स्थिति) का दौर छोटा रहा। आज विचारशील अमेरिकी लेखकों और विचारकों में कम ही ऐसे हैं जो इस प्रकार के हैं जो अमेरिकी संस्कृति को इस रूप में देखते हैं कि उसमें वह शक्ति है जो विभिन्न संस्कृतियों की विभिन्न धाराओं को समेटकर दुर्लभ मानव वस्तु को एकात्मिक विशाल प्रस्तर खंड में बदल देती है। अब प्रवासियों के आगमन की धारा एकदम धीमी पड़ चुकी है (1940 से औसतन 100 000 से अधिक प्रवासी प्रतिवर्ष नहीं आये)। और अब तो प्रश्न यह है कि दूसरी तीसरी या उसके बाद की पीढ़ियाँ कैसे अपना जीवन बिताएँगी। नए प्रवासियों में जो विचारधारा विकसी हुई है वह है 'सांस्कृतिक बहुवाद' की जिसमें प्रत्येक एथनिक वर्ग अपनी परम्पराओं की पूजा तो करता है पर व संस्कृति की बड़ी धारा से अपने को विच्छिन्न नहीं करते। यह विचारधारा रैन्डाल्फ बोर्न और होरेस कालिन ने बनाई थी।

नवागन्तुकों या कई सारे अमेरिकी वर्गों की समस्या है कि कैसे विभिन्न संस्कृतियों को धार्मिक अवसम्मान में जोड़ रखें। एक दूसरे को ताने-बाने की तरह बुन दें जिस प्रक्रिया के बिना अमेरिकी समाज—जैसा हम आज उसे समझते हैं—कभी बनता ही नहीं। प्रश्न यह नहीं है कि पुरानी परम्पराओं को बदलना है कि नहीं क्योंकि परिवर्तन—सम्मिश्रण के साथ—अवश्यंभावी है। वास्तविक समस्या यह है कि परिवर्तन की गति नहीं इतनी तेज न हो कि सब-कुछ मिट ही जाए और नहीं इसमें बाप-दादों का जड़ से ही न उखड़ना पड़ जाए क्योंकि तब तो संक्रमण काल में बेटों और पोतों के लिए कोई आधार ही न रह जाएगा। भेद वस्तुतः मूल्य और कार्य की गति का है। यह भेद समीकरण और एकीकरण का है। समीकरण एकतरफा होता है। उसमें जो कुछ बच रहता है उसका कोई मूल्य नहीं होता। इसलिए वह समाप्त हो जाता है। एकीकरण दुहरी प्रक्रिया है जिसमें नई चेतना पुरानी परम्परा को विस्तार देती है और पुरानी परम्परा नई सांस्कृतिक उपज को भावनात्मक गहराई और जड़ प्रदान करती है।

## 3 जनता बसी

अमरीकी सर्वदा से यात्री रहे हैं। महासागर पार कर वे अपने स्वप्नों के देश में बसने के लिए आए। नावों से फिर स्टीमरों से उन्होंने अमेरिका की नदियों के जाल को पार किया। नदियों को जोड़ने के लिए उन्होंने नहरें बनाईं।

भूमि के भी ये चतुर नाविक थे। उन्होंने 'घास का समुद्र' पार किया। सुन्दर छोटे-छोटे जहाज बनाये जो संसार भर के समुद्रों में घूमे और जिन्होंने अमेरिका को एक महान् व्यापारी देश बनाया। सड़कों पर लोहे के पहियों पर वे दौड़े फिर रबर के पहियों से आटो-मोबाइल के राजपथ पर। अन्त में समुद्र और भूमि के बाद वे आकाश की यात्रा करने लगे हैं। अब आकाश उनकी विजय की कामना का क्षेत्र है।

पश्चिम की ओर देशान्तरण पर स्टीफेन बेनेट ने एक अपूर्व पर वीरतापूर्ण कविता लिखी है जिसकी पहली पंक्ति है 'अमेरिकी सदा आगे बढ़ते हैं।' अमेरिकी साहित्य में जो विषय सबसे अधिक वर्णित है वह है भूमि पर, नदियों में या समुद्र में बेचैन होकर बढ़ना। ऐतिहासिक रचनाओं में प्रसिद्ध है सीमा पर टर्नर की रचना पार्कमैन की 'ओरेगान ट्रेल' और भी छोटे मोटे क्लासिक जैसे मोरिस का 'मेरिटाइम हिस्ट्री ऑफ़ मासाचूसेट्स' वेब की 'दि ग्रेट प्लेन्स' और दे वोटो की 'एक्रास दि वाइड मिसूरी' मेल विले की 'मोबी डिक' और उसकी दक्षिणी समुद्री की कहानी कथाएँ कभी न लिखी जा सकतीं यदि उसे सामुद्रिक और प्यूरिटन सभ्यता न मिलती जिसमें सत्य और असत्य की खोज के लिए समुद्र-यात्रा का वातावरण बड़ी स्वाभाविकता से उपस्थित किया जा सका। मार्क ट्वेन की 'लाइफ ऑन दि मिसिसिपी' में अमेरिका की सबसे बड़ी नदी की विकरालता और शक्ति का चित्रण है। मार्क ट्वेन के समय पश्चिमी जीवन का विकास यह राजपथ टिड्डी दल की भाँति छाये यात्रियों जहाजों के नापाक कप्तानों सम्राट् बनकर भिन्न-भिन्न करने वालों जुआड़ियों स्टीमरों की दौड़ फूटते बॉयलरों तीखी भाषा और सेठों की कहानियों से भरा हुआ था। इस संसार में पौरुष का राज्य था। किसी युवा के लिए जिसके मन में अमेरिका की भावना और साहित्यिक चित्रण की पकड़ हो यह संसार अनुभवों की पूरी पाठशाला हो थी। मार्क ट्वेन के महान् उपन्यास 'हकलबेरी फिन', का जन्म कभी मटमैली तो कभी रौद्र मिसिसिपी की धारा पर ही हुआ था। 'अमेरिकी नदियों' पर पूरी पुस्तक माला ही आ गई जिसमें ऐतिहासिक घटनाओं की भीड़ है। इन पुस्तकों से पता चलता है कि अमेरिका के जलमार्ग उसके सारे इतिहास से कैसे जुड़े हुए हैं। कुछ वर्षों से अब ये नदियाँ अपना पुराना महत्व खो चुकी हैं।

हमारे अपने समय के फाक्नर के उपन्यासों और स्टीन बैक के, 'ग्रेप्स ऑफ़ राथ', जैसे कुछ अपवादात्मक उपन्यासों को छोड़कर अब अपने आस-पास का प्राकृतिक वातावरण लेखकों को संकेत के रूप में विषय-वस्तु के प्रति आकर्षित नहीं कर रहा है। अब अमेरिकी साहित्य में अमेरिकी जीवन की हिंसा की अभिव्यक्ति भौतिक वातावरण के प्रभाव के माध्यम से नहीं बल्कि मनुष्य के

अगली पुश्तों में होती है। यह अभिव्यक्ति अब महासागर और नदियों की यात्राओं और 'महान की सफेद ह्वेल' की खोज में नहीं बल्कि हत्यारे की जासूसी खोज में होती है। हत्या में मरने वाला शिकार भी अयथार्थ है। उसमें अपराध की इकाई कल्पना है। ऐसी समस्याओं के सुलझाने की बात तो यहाँ कोई समस्या सुलझती ही नहीं।

अमरिकी निबन्धों में जिस प्रवृत्ति का चित्रण हुआ है उसके दो रूप हैं एक है बेचैन गति और दूसरा स्थान के प्रति मोह। इसमें पहले पर टर्नर और उसके अनुयायियों ने ज़ोर दिया है और दूसरे पर आंचलिकों और परम्परावादियों ने। अमेरिका को समझने के लिए आवश्यक है कि हम समझें कि ये दोनों एक वस्तु के बाह्य रूप हैं। अमेरिकी इसलिए नहीं घूमते-फिरते कि उनमें कोई आन्तरिक बेचैनी है या ज़मीन की कमी है (जिस कारण खानाबदोश घूमते हैं) बल्कि अवसर की खोज में घूमते हैं। जब घूमने-फिरने का उद्देश्य सिद्ध हो जाता है तो वे उसी गहराई के साथ अपने स्थान से अनुरक्त हो जाते हैं।

अमेरिकी देशान्तरण के तीन प्रकार रहे हैं—महाद्वीप पार से देशान्तरण नई सीमाओं की ओर देशान्तरण और तीसरा आन्तरिक हेर-फेर जिसे हम देशान्तरण का पुनर्स्थापन कह सकते हैं यह मुख्यतया नगरों और उपनगरों का हुआ है।

आज जो जनता का देशान्तरण होता है वह सरकारों द्वारा पहले से निश्चित नीति और क्रम से होता है। इस अर्थ में पश्चिमी सीमा को अधिक देशान्तरण सुनियोजित न था। सम्भवतः इतिहास में यह अन्तिम स्वतः उद्भूत विशाल देशान्तरण था। किन्तु यदि हम ध्यान से देखें तो पाएँगे कि इसकी प्रगति बड़े ढंग से हुई एक ज़ोन से दूसरे में जैसे पहले ही इसका नक्शा बना लिया गया हो। एक लहर आई फिर दूसरी फिर तीसरी और यह क्रम चलता रहा। पहले साफ करने वाले गए, फिर समूर के व्यापारी फिर पहाड़ी लोग पशुपालक खान खनिक और अन्त में किसान बीज पशु और कृषि-यन्त्रों के साथ वहाँ गए। पूर्व से बड़े मैदानों और राकीज़ की पहाड़ी दुरूहता को पारकर अन्त में प्रशान्त उत्तर पूर्व और कैलिफोर्निया के घने मैदानों में बसने की प्रक्रिया के बाद के चरण में दिखा लाभ और सोने दोनों में। ओरेगान (रास्ते) की कठिनाइयाँ समूर के व्यापार को हथियाने के लिए संघर्ष अन्त में कैलिफोर्निया में गोल्डरश इसमें गोरे रूप के फास्टियन प्रवृत्ति (Faustian spirit) के दर्शन होते हैं। गोल्डरश में शामिल होने वाले लाखों में सम्भवतः एक को भी सफलता न मिली होगी किन्तु हम इन असफलताओं को तो भूल चुके हैं केवल बड़े-बड़े पुरस्कारों को ही याद करते हैं। न्यू इंगलैंड से 'यांकियों की कूच' (Yankee exodus) में सारे राज्य और देश से बहुत से उत्तम प्रतिभा वाले युवक सम्मिलित थे। जब निःशुल्क

भूमि का सिलसिला बंद हो गया तो भी जनसंख्या का पुनर्संगठन जारी रहा।

सभी मार्ग जो धूमिल ज्ञात गन्तव्य को ले जा रहे थे, अमरीका के राजमार्ग थे। तत्कालीन आशावादिता और आज को घर पर मक्खी मारने की प्रवृत्ति ने मिलकर उन ऊबड़-खाबड़ सड़कों और कटीदार घुमावों गाड़ियों में जुतने वाले घोड़ों और सामान लादने वाले खच्चरों को आदर्श का जामा पहना दिया है। रेलों के बनने से यातायात जगत् में जो क्रान्ति हुई उसने भी उन टोली वालों की जिन्होंने रेलों की पटरियाँ बिछाईं और इंजिनियरों की जो उन दैत्याकार इंजनों को चलाते थे अनेक कहानियों का निर्माण किया है। कुछ कहानियाँ रेलों के नवाबों जैसे वांडर बिल्ट, फिस्के और हिल के बारे में भी हैं।

यातायात जगत् में जो नई क्रान्ति मोटर के आने से हुई है उसने अमरीकी संस्कृति को पहियों पर बैठा दिया है। अनुमान किया गया था कि 1966 में 7.3 करोड़ मोटरें और ट्रकें अमेरिका में थीं। इनके मालिकों की संख्या 7 करोड़ थी। इस प्रकार प्रत्येक परिवार के पास कम-से-कम एक मोटर थी। अब मोटर उद्योग 80 लाख कारें प्रति वर्ष बना रहा है। अमेरिका में सभी प्रकार की सड़कों की सम्मिलित लम्बाई लगभग 40 लाख मील है। प्रति 7 अमेरिकियों में से एक आज किसी-न-किसी प्रकार से मोटर-उद्योग से सम्बद्ध है। 1985 तक अमेरिका में 10 करोड़ कारें हो जाएँगी। इनसे सड़कों पर कितनी भीड़ हो जाएगी इसकी कल्पना की जा सकती है।

अमेरिका की मोटर टेक्नीक ने यह सम्भव किया है लड़का इतना बड़ा हो कि उसे मोटर चलाने का लाइसेंस मिल सके इससे बहुत पहले ही वह व्हील पर हाथ साधने लगता है और यह अनुभव करने लगता है कि उसे शीघ्र ही अच्छा चालक बनना है। कार चलाने के मामले में अमरीकी लड़की लड़कों के बराबर ही होती है। गन्दी बस्तियों में रहने वाले मजदूर परिवार छोड़कर सभी भी प्रायः अपनी कारों के मालिक होते हैं। ये कारें उनके घरों से साफ-सुथरी होती हैं। सप्ताहान्त में अमेरिका की सड़कों पर जिस रूप में रास्ता रुका रहता है उसे देखकर तो यही पता चलता है कि अमेरिकी जितना समय घरों में बिताते हैं उससे कम अपनी मोटर में नहीं। अमेरिकी संभ्रान्त के लिए कार शौक और आराम की चीज नहीं आवश्यक चीज है। कारें उनकी मानसिक आवश्यकता की पूर्ति करती हैं जो पर्याप्त आवास, शिक्षा या स्वास्थ्य से अधिक महत्वपूर्ण है। कारों से ही यह पहचान होती है कि व्यापक जीवन-स्तर इतना है कि नहीं कि व्यक्ति को वर्ग का सदस्य स्वीकार किया जा सके। कार पूरा घर है जो पहियों पर दौड़ता है। इसमें सप्ताहान्त में घूमने बाजार करने मिलने-जुलने रोजगार और (युवा-युवती) प्रेम करने जाते हैं।

कार अर्थात् पहियों पर पूरा घर आज वैसा दीखता है पचास साल पहले

न थी। तब यह नितान्त आडम्बरपूर्ण विचित्र संगीत करने वाली और अविश्वसनीय सुन्दरी थी। पर आज तो इंजीनियरी विद्या का यह महान् आश्चर्य है। आप इसे जैसे चाहें मोड़ सकते हैं। काफी तेज चाल से आसानी से चला सकते हैं और यह इतने विविध रंगों की होती है कि उनमें किसी की पसन्द छूटती नहीं। कभी-कभी तो लोग अपनी पत्नी या कन्या के कपड़ों के रंग पर भी कारें रखते हैं। आप किश्तों में भी कार ले सकते हैं। पर शीघ्र ही इसके 'मॉडल' पुराने पड़ जाते हैं और लोग इन्हें निकालकर कोई नई या पुरानी अच्छी कार ले लेते हैं। एक क्रान्ति हो चुकी है—कारों के निर्माण में ऐसी प्रविधि की खोज में कि रंग जल्द-से-जल्द सूखे, पत्थर के कंकड़ कूट कर सड़कें बनवाने में, इंजिन पावर में, कार की डिजाइन में, विद्युत सम्पादन में और पुर्जों के जोड़ने में। तब जाकर अमेरिकी कार इतनी जल्दी सड़क पर इस रूप में आती है। इससे शहर भरे हैं, सड़कों पर रास्ता रुक जाता है। नौसिखिये तेज चलाने वालों और न्यूरोटिक चालकों के हाथों में कार भयंकर मृत्यु का खतरनाक माध्यम भी बन चुकी है—जिससे अमेरिका की आबादी में इस पीछे एक व्यक्ति मरता है। मोटर गाड़ियों के विशाल स्टेडियम, पार्किंग स्थान, चौराहे, सड़कों पर जल्दी मरम्मत के लिए बने स्टैंड या जलपान घर, ट्रेलर कैम्प, दैत्याकार बोझ ढोने वाली ट्रकें, मोटर बस, पार्किंग बाजार, बुधवार से शनिवार तक सवारियों के कारण बन्द रास्ते आदि अमेरिकी लैंडस्केप को अवरुद्ध करते हैं। मोटरों के कारण सड़कों की हर समय मरम्मत आवश्यक हो जाती है। सारे देश में मजबूत और चौड़ी सड़कों का जाल है। कुछ सड़कें निजी लोगों के पैसे से भी बनी हैं, कुछ संघ और राज्य के धन से। कार धनी निर्धन सभी के लिए आवश्यक है। मोटरों ने भेदविरोधी क्रान्ति पैदा की है। सामानों का यातायात और दैनिक मजदूर रेल स्टेशनों और बदलने की ट्रेनों से स्वतन्त्र हो चुका है। कल-कारखानों के स्थान और फार्मों के मूल्य बदल गए हैं। अब ऐसे नये शाखा नगर बन गये हैं जहाँ इन मोटरों पर परिवार सवेरे घर से निकल जाता है और शाम को आने पर वापस आ जाता है। मोटरों के कारण ही मध्यवर्ग और मजदूरों के परिवारों में समुद्री किनारों पर या पहाड़ों में छुट्टी बिताना और मछली मारना या शिकार करना एक आम शौक हो गया है।

नए वायु-युग ने जिसका प्रभाव अब अनुभव होने लगा है—अमेरिका वासियों को और भी तीव्र कर दिया है। बड़े-बड़े हवाई अड्डे जिनमें दैत्याकार पक्षियों की भाँति जहाज उड़ते आते और जाते हैं, यह बताते हैं कि शीघ्र ही वह समय आ रहा है जब दूरी का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा। मोटर गाड़ियों की ही तरह अब आकाश में हवाई मार्गों पर भी यातायात होने लगे हैं। किन्तु हवाई जहाज निजी सवारी के रूप में कार का स्थान न ले सकेगा। यह कार का प्रयोग

कम दुखदाई अवश्य बना सकता है। वायु-युग ने अब यह सम्भव अवश्य बना दिया है कि दूर के स्थानों में मालिक और उनका मिस्त्री सचिव दोनों छुट्टियाँ बिता सकते हैं।

1950-60 के दशक के मध्य में 8 करोड़ अमेरिकी किसी न किसी रूप में वार्षिक छुट्टियाँ बिताने घर से बाहर निकले थे। इनमें बहुत-से 'महाद्वीप' के भागे बहुत से विश्व के भागे रास्ते गए। कुछ उत्तर-पूर्व कुछ उत्तर-पश्चिम की नदियों में कुछ कनाडा में मछली का शिकार करने कुछ फ्लोरिडा या कैलिफोर्निया में धूप का आनन्द लेने कुछ अन्य स्वास्थ्य के स्थानों में कुछ मेक्सिको या दक्षिणी अमेरिका का आनन्द लेने बहुत-से यूरोप में उसकी परम्पराओं और वैभव के दर्शन करने कुछ अपने राजमार्गों पर देहात का दर्शन करने गए। पर्यटन अमेरिका का एक बड़ा व्यवसाय हो गया है। इसमें करीब 2 अरब खर्च होता है। हर मजदूर साल में एक बार सवेतन छुट्टी पाता है। वह हवाई जहाज में रेल में, या मोटर कार या बस से घर से बाहर निकल जाता है। ज्यादा झुकाव लम्बी छुट्टियों का इसलिए लम्बी यात्राओं का है। आयु की लम्बाई में हाल में हुए परिवर्तन के कारण और आत्म-तोष की खोज के लिए आज विश्व के सभी देशों की राजधानियाँ मध्यवर्ग के और अधेड़ अमेरिकियों से भर गई हैं। इनके लड़के सयाने हो चुके हैं और अब वे काम से फुरसत पाकर अन्य-कोप यात्रियों की निर्देशिकाएँ और भारी चैक से लैस होकर घूमते हैं ताकि नई चीजें देखें और सुनें और अनुभव करें जो उनको न मिलने वाली भूख को शान्ति मिले। ऐसा मालूम पड़ता है कि मशीनी संस्कृति ने अमेरिकी जन के मस्तिष्क पर यह प्रभाव डाला है कि वह सदा चलता रहे, चाहे अपने काम से ऊबकर या उत्सुकता के कारण या अपनी स्वतन्त्रता की अभिव्यक्ति के लिए ही। अब तो इनके आगे अमेरिका को महान् स्थानान्तरण भी हल्का मालूम पड़ता है।

पर्यटन की चालिता से अधिक बढ़कर है अमेरिकियों की एक पेशे से दूसरे में और एक घर से दूसरे में गतिमानता। पेशे या सामाजिक-स्तर में परिवर्तन के कारण एक ही नगर में निवास-स्थान बदलते रहते हैं। बड़े नगरों में एक ही राज्य में नगर और छोटे नगर से बड़े नगरों की ओर और बाहर के बीच से छोटा नगरों को निवास परिवर्तन बढ़ता जा रहा है। 1937 में सरकार की ओर से इसका अध्ययन किया गया था। परिणाम यह मिला कि डीट्रॉयट-जैसे औद्योगिक केन्द्र में जहाँ बराबर मजदूर आते रहते हैं पाँच वर्षों में पाँच व्यक्तियों में चार अपने पुराने निवासों को छोड़ गए। स्थान-परिवर्तन के इस उदाहरण में कुछ अति हो सकती है पर फिर भी अनुमान यह है कि 1920 से 1935 के दशक में प्रत्येक पाँच अमेरिकियों में एक ने किसी एक वर्ष में मकान बदला था। यह

शहरों में यह अनुमान और अधिक हो सकता है।

इस घटना की सबसे नाजुक बात यह है जिसमें स्थान परिवर्तन एक राज्य से दूसरे राज्य में होता है। युद्ध-काल में या अस्त्रास्त्रों की [illegible] के समयों में सुरक्षा-उद्योग के क्षेत्रों में मजदूर खिंचते हैं। इसके साथ ही युद्ध के बीच और बाद में नियमित ढंग से हब्शी दक्षिण के राज्यों से उत्तर-पूर्व मध्य पश्चिम के बड़े नगरों जैसे फिलाडेल्फिया न्यूआर्क पिट्सबर्ग डीट्रॉयट शिकागो, सेंट लुई और कैंसास नगर में गए। इसके अतिरिक्त उद्योगों के साथ अमेरिकी जनसंख्या का दक्षिणी दक्षिण-पश्चिम और प्रशान्त तट विशेषकर फ्लोरिडा टैक्सास कैलिफोर्निया औरेगन और वाशिंगटन की ओर प्रस्थान हुआ। 1940 से 1950 के प्रथम एक दशक में कैलिफोर्निया की आबादी 50 प्रतिशत, औरेगन की 40 प्रतिशत और वाशिंगटन की 37 प्रतिशत बढ़ी।

अमरीका में जनसंख्या का केन्द्र पश्चिम की ओर गया। फिर कुछ दक्षिण की ओर। 1950 में यह दक्षिणी-पूर्व में था। आटोमोबाइल हवाईजहाज और [illegible] के उद्योगों की चहल-पहल भी पश्चिम और दक्षिण में गई। फलस्वरूप अपने राज्य को (जहाँ जन्म हुआ हो) छोड़कर दूसरे राज्य में बसने वाले अमरीकियों की संख्या जल्दी से बढ़ने लगी। संप्रति यह संख्या 25 प्रतिशत है। पश्चिमी समुद्र तट के किनारे पर जहाँ आबादी में वृद्धि का प्रतिशत सबसे अधिक रहा है प्रति तीन व्यक्तियों में दो से अधिक व्यक्ति इस राज्य से बाहर पैदा हुए थे।

यह धन है जो इस आन्तरिक प्रवास को प्रोत्साहन देता है। औद्योगिक मजदूर उन उद्योगों के स्थानों में जाते हैं—जैसे उद्योग खुल गए जहाँ वे अधिक मजदूरी पा सकें। फार्मों के वे मजदूर जिनके पास अपनी कोई भूमि नहीं या थोड़ी-सी भूमि थी वह भी भू-क्षरण में चली गई, फसलों के मौसम में एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते हैं। उनमें से विरले ही किसी एक स्थान पर बसते हैं। इस प्रकार एक स्थायी रूप से अस्थायी मजदूरवर्ग का निर्माण हो जाता है। पूरा का पूरा उद्योग उजड़ गया। कारण या तो चहल-पहल का दौर खत्म हो गया या किसी अच्छे बाजार के निकट चला गया या वहाँ चला गया जहाँ सस्ते मजदूर मिल सकें। इस प्रक्रिया के परिणाम हैं भूतों के नगर जो अमेरिकी लैंडस्केप पर और भी बिगाड़ की सृष्टि करते हैं। ये ऐसे नगर हैं खाली किन्तु कभी की दौलत में [illegible] रहा हो।

कुछ वास्तविकता इसमें भी है कि अमरीका में आन्तरिक प्रवास अवसर और उन्नति का प्रमाण है। इसका कारण भूमि की भूख या आबादी की तीव्र वृद्धि। आरम्भ में विदेशों से अमरीका आने के प्रवाह के पीछे यह भावना थी। आज लोग अपना स्थान छोड़कर इसलिए जाते हैं कि उन्हें रोजगार और लाभ के

काम और मजदूरी के जलवायु व शिक्षा के और रहन-सहन के मध्य अक्सर मिलता है। शारीरिक चालिता की एक अप्रत्यक्ष प्रेरणा और भी है और वह अमरिका की सामाजिक चालिता है—यहाँ वर्गों की कोई टिकाऊ रेखा नहीं और न विश्वास परम्पराओं का मूल ही है। इससे भी आदमी के पैर कहां टिकते नहीं। यही बात है टॉक विल न अपने अमेरिकी इतने वैभव के बीच भी इतने बेचैन क्यों रहते हैं ? अध्याय में बतलायी है। अमरिकी तब तक बेचैन रहता है जब तक उसे ऐसी कोई जगह काम पर्यावरण और सामाजिक जलवायु नहीं मिल जाती जिसमें वह जीवन बिताना चाहता है।

स्थान और पेशे की खोज में वह अपने को ठीक उतने निकट स पा सता है जितना पाना सम्भव है। यह उसके जीवन म प्रयोग का काल होता है। एश्वर्य की खोज में य साहस के कार्य और स्थान परिवतन अमरिकी शिक्षा प्रणाली का कहीं अधिक सच्चे ढंग से प्रतिबिम्बित करते हैं बनिस्बत स्कूल और कालेजों के। अमेरिकी स्नातकों के बारे में एक सत्य यह भी है कि सर्वोत्तम जीवन की प्रशिक्षा उन्हें कालेज छोड़ने के बाद के दशक में मिलती है जब व देश में घूमते हुए काम की तलाश करते हैं। एक काम के बाद दूसरा करते हैं फिर तीसरा काम। उनका यह अनुभव पढ़ने में 19वीं सदी के रंगीन उपन्यास का आनन्द देता है। 1930 की जनगणना से पता चला कि 18-34 की उम्र के वर्ग में 1947 से 50 के बीच 28 प्रतिशत ने किसी-न-किसी वर्ष में अपना मकान बदला। 45 से ऊपर की उम्र के वर्ग में यह संख्या 10 प्रतिशत थी। सबसे बलत वर्ग रहे व्यवसायी और अर्द्धव्यवसायी डाक्टरों इंजीनियरों में नये जोड़े या अपत्नीक और टैकनिशियन जिन्होंने देश के पार की भी लम्बी यात्रा की। चुनाव के कारण नहीं बल्कि अन्य कारणों से भी यह सम्भव हुआ। बड़े-बड़े निगम अब देश के पास अपनी शाखाओं और कार्यालयों में अवक कार्याधिकारियों को भेजते हैं। समय-समय पर इनकी बदली भी करते हैं अनुभव की प्राप्ति के लिए या उन्नत पदों पर। इस प्रकार 'अमेरिकी खानाबदोशों' का एक नया वग तयार हो रहा है।

इसका यह अथ नहीं कि जो अमरिकी घूमते हैं वह सब-कुछ पा ही लेते हैं जिसकी वे खोज करते हैं। यदि गहराई से देखें तो उनमें बहुत-से इस कार्य म असफल रहते हैं। किन्तु बगमा एक रास्ता है जो पकड़ जाने के भय का सबन करता है। अमरिकी जिस भावना से सबसे अधिक त्रस्त होता है वह है 'फँस जाने की'—कहीं ऐसा न हो कि पर्यावरण के बन्धन म वह फँस जाए जिसम सब-कुछ गतिहीन है। यूरोप और सुदूर पूव के बहुत-से देशों म शताब्दियों से मनुष्य के भाग्य में यही बदा है। किन्तु एक अमेरिकी के लिए यह उन सभी बातों का संगम है जो उसने जीवन के सम्बन्ध म अनुभव किया है। फँसे मिए

जाने का बोध ही अन्तिम तिरस्कार है। इसलिए यह चलता रहता है। चलने में उसकी सामाजिक सम्भावना की भावना—एक विश्वास कि 'कुछ-न-कुछ होगा' अक्षय जिन्दा रहती है और तब तक सब कुछ नष्ट न होगा जब तक कि कुछ न कुछ होता रहेगा।

यह यात्रा और इसकी संगिनी साहस की भावावस्था ही वह कुंजी है जो हमें बतलाती है कि आन्तरिक प्रवास का अमेरिकी चरित्र पर क्या प्रभाव होता है। ये इस बात का खुलासा करती हैं कि लोक-कल्पना ने हर सीमा और विशेषकर सुदूर पश्चिम को इतनी रूमानियत क्यों दी है? बफ़ैलो बिल किट कार्सन और दूसरे इंडियन स्काउट जनरल कस्टर, कामस्टाक लोड तथा 'सिमरन स्ट्रिप' और बिल्ली और किड जैसे 'दसजन' भी ऐसे चरित्र हैं जो टाइप बन गए हैं। इनकी परम्परा सिनेमा और कहानियों में अपने चरम पर पहुँच चुकी है। फिर भी ये ऐसे गीत के अंग हैं जो आज भी गाये जा रहे हैं। इनमें मनस्तरंग की एक गहरी धड़कन है। टर्नर की थीसिस इसी की एक अभिव्यक्ति है।

अमरीकियों के लिए आन्तरिक प्रवास कितना आवश्यक है इसका ज्ञान द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद हुआ जब आबादी के पुनर्वास की एक विशाल लहर सारे अमेरिकियों को पश्चिम की ओर बहा ले गई। यह आन्दोलन नितान्त अनियोजित और अनियन्त्रित था। पुराने उद्योग एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाये गए। नए युद्ध उद्योग खुले। इस प्रकार युद्ध ने आबादी के पुनर्संघटन के लिए ऐड़ लगाने का काम किया। इसका प्रभाव विशेषकर युवकों पर अधिक हुआ। उनमें से बहुत-से पश्चिमी तट पर प्रशिक्षित हुए थे या वहाँ से प्रशान्त सागर के युद्ध-क्षेत्र में भेजे गए थे। उन्होंने वे जगहें देखीं जो पहले कभी न देखी थीं। इसका प्राकृतिक और सामाजिक लैंडस्केप भिन्न था। उन्होंने इसे पसन्द किया। युद्ध की समाप्ति पर वे अपनी पत्नियों को भी वहाँ ले गए और उन्होंने वहीं काम भी ढूंढ़ लिया। एक दशक में ही ओरेगन की जनसंख्या में 40 प्रतिशत की वृद्धि हो गई। कैलिफ़ोर्निया में यह वृद्धि 50 प्रतिशत से भी अधिक रही। इनमें अधिकांश घास के मैदानों वाले राज्यों से आये जहाँ कटाव और अत्यधिक चराई के कारण भूमि नष्ट हो रही थी और 'अवसर' प्रायः समाप्ति पर था। इनमें बहुत हब्शी युवक भी थे। उन्होंने सानफ़्रांसिस्को, सीएटल और पोर्टलैंड की आबादी को खूब बढ़ाया तथा तदनुसार इस क्षेत्र में वे एक नयी विचार धारा लाए। जिससे इस क्षेत्र का राजनीतिक लैंडस्केप बदल गया।

किन्तु इन सभी प्रवासों व पुनर्जन्म का गीत अभी गा रहा है यह सुस्पष्ट है। पश्चिमगमन प्रवास के दिनों में जो वार्षिक 160 एकड़ मुफ़्त भूमि (निश्चय ही रेडों और गड्डेवालों का हिस्सा काटकर) मिलती थी अब वही काम उद्योग को पूरा करता है। युद्ध से मुक्त युवक पश्चिम की ओर इसलिए नहीं गए कि

उन्हें पश्चिम जाना था बल्कि वे इसलिए गए कि वहाँ पावर और नये बाजारों की सुविधाओं के कारण खुलने वाले उद्योग से गए वहाँ उन्हें अधिक अवसर मिल सकते थे। सीमा ने कृषि-जीवी समाज के आदर्शीकरण का एक परिणाम यह हुआ कि अमेरिकी सामाजिक विचारणा के लिए औद्योगिक सच्चाई का सामना करना और कठिन हो गया। सच यह है कि अधिकांश अमेरिकी चाहते हैं कि सामाजिक अवसर की गति और उद्योगों तथा जल-विद्युत की ऊर्जा का उपयोग करने के लिए पावर कर्मों की गति दोनों साथ-साथ कदम मिलाकर चलें। 'आज अमेरिकी क्यों घूमता-फिरता है' बात का खुलासा पाने के लिए एक ऐसे सिद्धान्त को ढूंढना पड़ेगा जिसमें यह ध्यान रखा गया हो कि काम के अवसर औद्योगिक-स्थापन फैल न जाने का संकल्प बढ़ने के क्षेत्र सांस्कृतिक बिम्ब और एक घर की उत्कट कामना जिसमें बसा जा सके और स्थान का ज्ञान हो इन सब में आपस में क्या सम्बन्ध है।

एक ऐसी संस्कृति में जो सब-कुछ जड़मूल से उखाड़ रही है स्थान का ज्ञान कठिन है—पर है यह आवश्यक। एक बड़े देश म इस बात का खतरा रहता है कि कहीं आप डूब जाने का-सा अनुभव न करने लगें। नए देश में खतरा होता है कि कहीं आप बेनाम न रह जाएँ। स्थान का ज्ञान एक रास्ता है जो बतलाता है कि आप जम चुके हैं। जो धन शक्ति या प्रतिष्ठा में विशेषत्व प्राप्त नहीं करते उनके लिए स्थान से लगाव अपना निजत्व रखने के लिए एक मार्ग है।

स्थान का ज्ञान होने (बिलांगिंग) के ज्ञान का एक रूप है। कभी-कभी भूमि से लगाव—सामाजिक दर्जेबंदी में एक स्पष्ट स्थान से सम्बद्ध होकर—एक सबसे बड़ा भावात्मक मूल्य बन जाता है जो कोई समाज दे सकता है। मध्य युग के यूरोप में यह सत्य था। अमेरिका में गृहयुद्ध से पूर्व दक्षिण में भी यह सत्य था। किन्तु यूरोप क सामन्ती समाज के विघटन ने यह दिखला दिया कि होने का भाव अधिक संतोषप्रद होता है बनिस्बत स्थान के ज्ञान के यदि इसके साथ और कुछ न हो। अमेरिका बसा प्राक्पूंजीवादी यूरोपीय समाज के उखड़ने से। इस उखड़ने ने नई जड़ पकड़ने की अभिलाषा को जन्म दिया। किन्तु कुछ एकड़ जमीन या काम ही तो नई जड़ नहीं हैं। उन्हें यह भी देना था जो अवसर के नए सामाजिक जलवायु में जीवन के प्रति कामना की जा सकती है। अमेरिका के प्रसंग में सभी मूल्य इस तृप्ति की खोज से जुड़ हुए हैं। इस प्रकार अमेरिकी स्थान का ज्ञान भी गत्यात्मक है।

इसमें बहुत कुछ भ्रमात्मक भी है। जब दो अमरिकी आपस में मिलते हैं और उन्हें पता चलता है कि वे एक ही स्थान से आये हैं तो उनकी आँखें चमक उठती हैं। जब किसी अमेरिकी को यह पता चलता है कि आप उस स्थान को नहीं जानते जहाँ से उसका परिवार आया है तो वह एक कमी का धक्के का-सा

अनुभव करता है। इसका अर्थ यही नहीं है कि आप स्थान विशेष से या उससे होने इन्कार करते हैं बल्कि आप उन सम्पूर्ण निजी अनुभवों से भी इन्कार करते हैं जो इसमें लिपटे हुए हैं। इस प्रकार अमेरिकी दुहरे रूप में विशिष्ट अनुभव करता है। इन स्थानीय अनुभवों से अज्ञान प्रकट करने का अर्थ है आप उसके व्यक्तित्व के एक भाग से उस अंश कर रहे हैं। किसी परंपरात्मक समाज में उतरा इस बात का रहता है कि इसमें आये जाकर उन सभी वस्तुओं के टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं जो स्थान का भाग व्यक्तित्व को देता है। जब आप एक स्थान में आ आपका परिचित होता है ऐसे स्थान को जाते हैं जहाँ आपको रास्ता बनाना है तो उस स्थान की स्मृतियाँ आप से लिपट जाती हैं। इस प्रकार मोटी प्रवास के तुरन्त बाद न्यू इंग्लैण्ड सोसायटियाँ न्यूयार्क मध्य-पश्चिम और कैलिफोर्निया तक फैली हुई थी। मानवीय गति और विस्थापन के परिवर्तन और सम्पूर्ण सम्बन्ध के स्थान पर निर्वैयक्तिक सम्बन्ध के स्थापन के साथ जो अपनापा स्थानों के नाम और उनकी स्मृतियों से जुड़ी होती है उनकी अपील में बड़ी शक्ति होती है। यही कारण है कि थामस वुल्फ ने आयोवाले से न्यूयार्क आते हुए, काल और स्मृति के जाने से स्थान के नाम को भी अपने 'लुक होमवर्ड एञ्जल' में चुना था एक पत्थर एक पत्ता एक न मिला द्वार—इसमें उसने अपनी उत्कंठा और खो जाने की भावना का चित्रण किया है।

मूल की यह भावना स्थान की भावना के रूप में गाँव की स्मृतियों तक ही सीमित नहीं है। 1870 से 1800 के नगरों के निर्माण के महान् काल में सीमा के फार्म और गाँव के साथ संयुक्त स्नेह में शहर और कस्बे ने भी हिस्सा बँटाया। इसने व्यक्तित्व के प्रतिरूप का रूप धारण किया और जो स्मृति में चिपक गया—नगर की मुख्य सड़कों का विन्यास आवास-क्षेत्र टैटी टाउन (जहाँ हब्शी और विदेशी लोग गंदी बस्तियों में रहते हैं) स्कूल आवधर, सिनेमा घर, रात्रि-मनोविनोद केन्द्र रोचक मित्र जिनमें व्यक्ति की दीवानगी थी। बूथ टार किंग्टन के 'मैग्निफिसेंट ऐम्बरसन्स' जैसे उपन्यासों में हमें इसी प्रकार के पश्चदर्शी स्नेह के दर्शन होते हैं। इन दृश्यों में हम रहे। बड़े। बहुत बार क बात तक हम न मा प। उपन्यास या कहानियों में या भावुकतापूर्ण आत्म चरितों या पितृचरितों में इसका चित्रण हुआ है। अमेरिकी इनमें बड़ आनन्द का अनुभव करते हैं।

गर बात है। अमेरिकियों के स्थान के भाव में पश्चादर्शी भक्ति वैसे ही है जैसे मोड़े हुए रस्से में उसकी कोई एक रस्सी। इसकी दूसरी रस्सी है तीव्र भागी हुई इकाई का एक अंग होने का तात्कालिक भय। बकमिन या वैटमाम नेस्माप गिनी या लामामिन्को बेग या पोम्पन से आने का भय है एक भयंकर इयोरप्ति का भार। अमेरिकियों के बारे में आचार-व्यवहार सम्बन्धी उपन्यास

या कोई शायके सुखान्त मिल जाय तो अपनी शैली का वह सच्चा उपन्यास हो नहीं सकता यदि उसमें 'टैक्स' नाम का एक चरित्र न हो जो लोन स्टार स्टेट के वैभव का गान बड़े आग्रह से करता है। अपना स्थान चाहे जैसा ही क्यों न रहा हो उससे समानता ढूंढने की एक बड़ी करुण उत्कंठा मानव में होती है। अपने व्यक्तित्व को ऊँचा उठाने और सुरक्षा की भावना को मजबूत बनाने के लिए वह उसका बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन करता ही है।

4 प्राकृतिक संसाधन अमेरिकी धरती

अमेरिकी धरती पर जो सबसे पहली निष्ठा ये लोग लाए, वह स्थान के प्रति प्रेम था। बसने आने वाले अपने ऐसे देशों से आए, जहाँ वे अपन परिचित आकाश, भूमि और पहाड़ों को हृदय से चाहते रहे थे। अमेरिका का भूचित्र नया था ऊबड़खाबड़ और दुर्गम। सारा महाद्वीप ही जंगल था बड़े-बड़े मैदान थे—नाना प्रकार के जीव-जन्तुओं और वनस्पतियों की समृद्धि से भरे हुए। इसकी ओर उन सभी प्रारम्भिक बसने वालों का ध्यान गया जो खोजी दृष्टि लेकर आए थे।

अटलांटिक किनारे पर स्थित बालू के टीलों से प्रारम्भ होकर जगह-जगह पर काफी भीतर तक चला गया विशाल वन प्रदेश या फिर बड़े मैदान थे और बड़ी घास के प्रेरी मैदान ओहियो और मिसिसिपी तथा मिसौरी नदियों के पार राकीज की उपत्यकाओं तक चले गए थे। फिर छोटी घास वाला चारागाह रेगिस्तान और पहाड़ थे जो प्रशान्त तट की उपजाऊ घाटियों तक चले गए थे उत्तर में समुद्र के किनारे विशाल वन प्रदेश की एक शृंखला और है। पूरब में एप्लेशियन रेंज से लेकर पश्चिम में सीरा तक पहाड़ इस भूप्रदेश को यत्र-तत्र चीरते हैं। स्थान-स्थान पर पहाड़ी दर्रे हैं जिनसे होकर कल-कल करती नदियाँ बहती हैं। इसमें सभी प्रकार की जलवायु भी मिलती है—उत्तर में बड़ी झीलों के प्रदेश में कुहरे की जलवायु, सुदूर उत्तर-पश्चिम में समूर पकड़ने वाले दक्षिण पश्चिम में ऊँचे समतल मैदान मुरियाला का झाड़ियों वाला प्रदेश तथा फ्लोरिडा में जंगलों के बीच खुले मैदान और दलदल। जब बसने वाले यहाँ आए तो उस समय यह वनस्पतियों और प्राणियों से भरा था उसमें थे भैंसों के झुण्ड भालू हिरन जंगली कबूतर और बतख बढ़ियाल और बड़ी-बड़ी मछलियाँ घनी बेलों की झाड़ियाँ दलदली घास रूई-सी नोकदार घास तथा भाँति भाँति के घासों के मैदान। पेड़ों में थे—फर और म्याऊ, मापल और ओक नारियल आदि तथा अमेरिकी पेड़ों में सबसे प्रसिद्ध चपेज पाइन (सनौबार)।

यूरोप के पुराने भूप्रदेश से आकर बसने वालों के लिए यह दृश्य कोई बड़ा सुखप्रद न था। इसमें भय का भाव भरा था। किन्तु यह सबसे उपयुक्त स्टेज

था उस महानाटक के लिए जो यहाँ हुआ। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति के रचयिता ने बड़े यत्न से इसे इसी काम के लिए बनाया था। इसमें एक प्रकार का प्रतीक था जैसे एक ही चित्र में ये भूचित्र सिमटे हुए थे वैसे ही यहाँ अनेक जातियाँ भी भरी हुई थी जो एक राष्ट्र का निर्माण करने को थी। वनों से भरे इस भूपटल पर 18वीं शताब्दी के मस्तिष्क को एक ऐसे समाज का निर्माण करना था जिसमें किसी को कोई विशेषाधिकार न हो न कोई पक्षपात सब समान हों इन सबका शासन प्रकृति के नियमों से हो। इसने पीढ़ियों तक अमरिका में असीम प्राकृतिक साधनों के उपयोग के लिए रास्ता बना दिया।

इस अप्रत्यक्ष अर्थ मे ही अमेरिका के भूचित्र ने अमेरिका के राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण मे सहायता दी है। मैंने 'भूचित्र' शब्द का प्रयोग आलंकारिक या सौन्दर्यशास्त्रीय अर्थ में ही नहीं किया बल्कि सम्पूर्ण भौतिक वातावरण के अर्थ में किया है जो मनुष्यों से सम्बन्ध रखता है। मोटे तौर पर यह सही है कि निवास भूमि का मनुष्य की आदतों के निर्माण में हाथ होता है। टर्नर और वेब ने यह दिखाने का यत्न किया है कि 'विशाल खुले मैदान' जिसमे बर्फीली जलवायु और बेहद गर्मी दोनों प्रकार की अतियाँ मिलती हैं—व्यक्तियों को एक ओर तो हिंसक क्रान्तिकारी और दूसरी ओर शान्त और सहनशील बना देते हैं। यह दृष्टिकोण वैध हो या अवैध इस प्रकार की स्थापना अमरिका पर लागू नहीं होगी। अमेरिकी इस भूमि मे अभी बसा है जिस पर यहाँ की धरती और जलवायु का सदियों पुराना प्रभाव नहीं है। इसीलिए (और इसके खतरे से मैं परिचित हूँ) मैं यह कहता हूँ कि समाज-निर्माण के काम में इस भूचित्र ने अमरिकियों पर अप्रत्यक्ष प्रभाव डाला है। इसका अमरिकी विचारों पर सूक्ष्म किन्तु बड़ा प्रभावशाली असर हुआ है। वातावरण के भिन्न का सांस्कृतिक भिन्न से भी सम्बन्ध है। एक ऐसे महाद्वीप में जहाँ स्थानीय विभिन्नताएँ पर्याप्त हों एक पूर्ण केन्द्रीयता नहीं हो सकती। जहाँ प्रकृति की अतियाँ इतनी अधिक हों वहाँ यूरोप की रूमानी विचारधारा से साम्य की प्राप्ति में कोई आश्चर्य नहीं है। यह वहाँ के संविधान और राजनीतिक विचारधारा दोनों में है। यहाँ वातावरण बसने मे बड़ी कठिनाइयाँ उपस्थित कर रहा था। इसलिए डार्विन का योग्यतम का जीने का सिद्धान्त भी लागू होता है। इस सिद्धान्त के पनपने के लिए यहाँ सबसे उपयुक्त सामाजिक भूमि मिली। इसने यहाँ प्रतियोगितापूर्ण सामाजिक व्यवस्था की स्थापना में भी सहायता दी।

किन्तु मुख्य बात यह है कि अमेरिकी भूमि बड़ी उपजाऊ है। अमेरिकियों ने कैसे इसका उपयोग और दुरुपयोग किया है यह भी महत्त्वपूर्ण है। प्रश्न यह नहीं है कि उस भूमि ने मनुष्यों के लिए क्या किया है बल्कि प्रश्न यह है कि मनुष्यों ने उसका क्या किया है? रुपया-प्रधान संस्कृति में राष्ट्र की प्रतीकात्मक

सम्पत्ति और वास्तविक सम्पत्ति में स्पष्ट भेद करना कठिन है। अमेरिका का भाग्य है कि उसे वास्तविक सम्पत्ति प्रचुर मात्रा में विभिन्न रूपों में और अच्छे गुणों वाली मिली है। मिट्टी जलवायु जल और वन-जीवन ही नहीं विभिन्न खनिज फासिल ईंधन (कोयला तेल प्राकृतिक गैस) जल विद्युत ऊर्जा, दुर्लभ खनिज आदि की भी सम्पत्ति समृद्ध है।

तात्कालिक रिजर्व या सम्भाव्य सभी दृष्टि से विश्व में प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से अमेरिका विश्व में अग्रणी है। रूस का नम्बर उसके बाद या काफी पीछे है। 1950 में एक अनुमान के अनुसार विश्व की समूची जलशक्ति का 30 प्रतिशत सारी विद्युत शक्ति का 42 प्रतिशत उसके पास था। यह लगभग 430 बिलियन किलोवाट बिजली पैदा करता था जब कि पश्चिमी यूरोप 23 प्रतिशत और रूस सारे विश्व का 8 प्रतिशत बिजली पैदा करता था। विश्व के पैट्रोलियम उत्पादन का 60 प्रतिशत वह इस्तेमाल करता था। 1934 में अमेरिका में प्रति व्यक्ति 465 किलोवाट बिजली का खर्च था। 1954 में यह खर्च 3000 किलोवाट हो गया। 6 टन कोयले से जितनी मशीनी ऊर्जा निकलती उतना प्रति व्यक्ति खर्च था। यह विश्व के प्रति व्यक्ति औसत का 6 गुना था एशिया में जापान को छोड़कर, प्रति व्यक्ति औसत का 160 गुना जापान का 8 गुना और यूरोप का तिगुना था।

अमेरिका के फासिल ईंधन रिजर्व का चित्र बड़ा ऊबड़-खाबड़ है। 1938 के एक सर्वे के अनुसार अमेरिका के पास सभी श्रेणियों के कोयले का 3200 बिलियन टन का रिजर्व था। सारे विश्व का रिजर्व 7300 बिलियन टन कूता गया था। उसके पास संसार भर के रिजर्व का आधा था। कुछ लोगों ने बड़ी मात्रा में कहा है कि उसका रिजर्व दो से तीन हजार साल तक चल जाएगा। किन्तु इस अनुमान में एक खामी यह है कि इसमें यह ध्यान नहीं रखा गया है कि कुल रिजर्व में 10 प्रतिशत ही आर्थिक दृष्टि से उपयोग्य है। दूसरी बात यह है कि आज उपभोग का जो स्तर है वह भविष्य में न रहेगा। ज्यों-ज्यों आबादी बढ़ेगी और जीवन का स्तर ऊँचा उठेगा और ज्यों-ज्यों फासिल का परिमाण और किस्म घटेगी पूर्ति कम होगी और मांग अधिक। अमेरिका प्रति वर्ष 2 बिलियन बैरल तेल का उत्पादन करता है और 7 बिलियन बैरल का इस्तेमाल करता है। उसके सम्पूर्ण रिजर्व का अनुमान करीब 35 बिलियन बैरल है जो सारे विश्व के रिजर्व का 9वां भाग है। यदि भू भौतिकी वेत्ता तेल के नए कुओं की खोज नहीं करते तो अमेरिकी तेल का रिजर्व 1980 के आगे नहीं चलेगा। 1950 के अनुमान के आधार पर उसके पास 180 बिलियन घनफुट प्राकृतिक गैस का रिजर्व है। जिस दर से उसका इस्तेमाल हो रहा है। यह रिजर्व उसका करीब 50 गुना है। किन्तु 1960 तक गैस का वितरण दूना हो

जाएगा। रिजर्व के स्वामी के पास ही रसायन और इन ईंधन प्राकृतिक गैस से बन रहे हैं। अमेरिका जिंक रांगा बाक्साइट टिन टंग्स्टेन और मोलिब्डिनम की भी खानें हैं। पर इसके रिजर्व बड़ी अल्प मात्रा में हैं। उसके पास चूना और एल्यूमिनियम मिट्टी भी है।

अमेरिका में खनिज और ऊर्जा के उपयोग में परिवर्तन आ रहा है। अमेरिका के खनिज की खपत के बारे में लिखते हुए हैरिसन ब्राउन ने लिखा है कि अमेरिका में प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष 1200 पौण्ड स्टील उत्पादन अभी से गुजरता है। इसमें 8 टन प्रति व्यक्ति स्टील का उपयोग होता है। यह दोनों परिमाण बढ़ते जा रहे हैं। लोहा एल्यूमिनियम तांबा मैग्नीशियम आदि के रिजर्व चुकते जा रहे हैं। सम्भावना यह है कि आगे सामान्य चट्टानों से भी ये धातुएँ निकालनी पड़ेंगी। इस कार्य में परमाणु ऊर्जा का प्रयोग किया जाएगा। ऊर्जा के साधन—कोयला पेट्रोलियम प्राकृतिक गैस भी इसके सीमित हैं। इनका स्थान परमाणु और सूर्य की शक्तियाँ लेंगी। इनका दोहन करने के लिए आवश्यकता पड़ने पर यूरेनियम ग्रेनाइट से निकाला जा सकता है जो यहाँ पर्याप्त संख्या में है। ब्राउन का कथन है कि "भविष्य में उद्योगों के लिए समुद्र का पानी हवा साधारण चट्टानें चूना फास्फेट की चट्टानों और सूर्य की किरणों का इस्तेमाल होगा।" इस प्रकार यदि एक क्षेत्र में अमेरिका 'कंगाल' हो रहा है और उसे दूसरे का मुहताज बनना पड़ रहा है तो उसके काम के लिए साधन के अन्य स्रोत भी काम में आ रहे हैं जो टेक्निकल क्षेत्र में उसकी आवश्यकता की पूर्ति अच्छी तरह कर सकेंगे।

जहाँ तक मिट्टी और उसमें होने वाली उपज का प्रश्न है अमेरिका की निधि विशाल है। 10 बिलियन भूमि में से 4 करोड़ एकड़ भूमि में खेती होती है। आधी अर्थात् 9 करोड़ एकड़ चरागाह है। तिहाई से कम अर्थात् लगभग 0 करोड़ एकड़ में जंगल हैं। यद्यपि अधिकांश जंगल कट गए हैं। पर प्रशांत तट, कैलिफोर्निया वाशिंगटन और खासकर ओरेगन में अभी काफ़ी वन हैं। आयोवा में 9 फुट ऊँचे धान्य खेत हैं। टैक्सास से लेकर मिनेसोटा तक के विशाल मैदान में गेहूँ पैदा होता है। दक्षिण और मध्यवर्ती भाग में रुई और तम्बाकू के खेत हैं। मनुष्यता के इतिहास में भूख सदा से त्रास करती रही है। अमेरिका में इस समस्या पर प्रायः विजय प्राप्त कर ली गई है। दूसरी ऐसी जगहें भी हैं जहाँ धरती भी इससे अच्छा फलदायी होती है और श्रम-प्रधान खेती के माध्यम से अधिक उपज भी होती है पर विज्ञान और मशीन के द्वारा अमेरिकी अपनी ज़मीन की उपज बढ़ा रहे हैं। अमेरिका आज विश्व के अनेक क्षेत्रों का अन्नदाता है। जहाँ सामग्री साधन धरती की टेक्नीक के ज्ञान के अभाव और धन की कमी के कारण कृष्य भूमि का पूरा उपयोग नहीं हो पाता।

गणतन्त्र की स्थापना के 100 साल बाद तक यह विश्वास था कि प्रकृति के साधनों की रक्षा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। वह अनन्त काल तक अक्षुण्ण रहेगी। अपने प्राकृतिक साधनों पर जितना गर्व अमेरिका को होगा उतना शायद ही किसी और को हो। सभ्यता का इतिहास तो यही बतलाता है कि अब दूसरों ने इस बारे में कुछ भी नहीं सोचा तो अमेरिकी भला कैसे सीख सकते हैं। अमेरिका में भी प्राकृतिक साधनों की लूट हुई है। पूछा जा सकता है कि ये लुटेरे कौन थे ?

इसका उत्तर जमीन की भूख लालच और जल्दबाजी में मिलेगा। बहुत-से प्रवासी यूरोप के उस क्षेत्र से आए जहाँ जमीन की तंगी थी। खेत छोटे थे। उत्तराधिकार के नियम कड़े थे। जंगल काटकर जब पहली फसल बोई गई तो उससे जो उपज हुई उसकी कल्पना स्वप्न में भी न थी। प्रवासी पेड़ गिराते और जंगलों को काटकर खेत बनाते जा रहे थे। बुरी तरह क्षत-विक्षत भूमि को पीछे छोड़कर वे आगे बढ़ते जा रहे थे पश्चिम की अछूती भूमि की ओर। इसमें अधिकांश भूमि पर फसल चक्र के माध्यम से तथा उपयुक्त खाद आदि के प्रयोग से अमेरिकी किसानों ने भूमि और उच्चकोटि की उपज को सुरक्षित रखा है। पर सबने यह नहीं किया है। उन्होंने जमीन का सारा तत्व खींच लिया और उसे छोड़ दिया। गेहूँ अनाज और रुई की एक फसली खेती ने जमीन को नष्ट कर दिया। नमी जमीन आधी पानी से अरक्षित पड़ी रही। आँधियाँ अच्छी मिट्टी उड़ा ले गईं। बाढ़ें मिट्टी बहा ले गईं। अनुमान यह है कि ऊपरी मिट्टी के 9 इंच में से 3 इंच गृहयुद्ध के बाद नष्ट हो चुके हैं।

गेहूँ और अन्य अनाज के खेतों के बारे में बात जो हुई वही चरागाहों के बारे में भी हुई। महाचरागाह भूमि के खुलते ही पशुपालकों की आँखें लग गईं। यूरोप में तो लोगों ने अमेरिकी गडरिये को ही अमरिका का प्रतीक मान लिया। किन्तु गृहयुद्ध के बाद जानवरों की जो संख्या बढ़ी तो गिराव प्रारम्भ हो गया। पश्चिम की भूमि में चौपायों की चराई की क्षति हो गई। अब तक उसकी चराई की क्षमता पहले से आधी ही है। हवा और पानी से भूमि का कटना भी प्रारम्भ हो गया। आँधियाँ आईं। सूखे पेड़ और रेगिस्तान बढ़ने लगे। दक्षिण पश्चिम में घाटियों के तल कटाव से गहरा गए। उनमें हजारों ऐरोयॉस (arroyos) बन गई। फलस्वरूप पश्चिम के चरागाहों में आज आबादी की वृद्धि सबसे कम है और लोगबाग उसे छोड़ रहे हैं।

इस प्रक्रिया में सम्भवतः सबसे चरम चरण जंगलों का विनाश था। अमेरिका में कीड़े-मकोड़ों जंगली आग और सबसे अधिक बेरहम कटाई के कारण इमारती लकड़ी का 90 प्रतिशत समाप्त हो चुका है। अमेरिकी पौराणिक साहित्य का एक खासा भाग और पॉल बुनियान जैसे नायकों का सम्बन्ध लकड़हारों के

कैम्पों और उनके जीवन से है। किन्तु थोड़े ही दिनों में यह सारा रोमांस समाप्त हो गया। जंगलों के इन बड़े-बड़े ठेकेदारों ने भूमि को वृक्षों से हीन कर दिया। एक स्थान के सारे वृक्ष काटकर वे दूसरे में पहुँच जाते थे। इसमें इन्होंने तो खूब मुनाफे कमाये पर जंगलों के नष्ट जाने से भूमि की शक्ति समाप्त हो गई। फिर बाढ़ और सूखे पड़ने लगे। फलस्वरूप छोटे किसान रेगिस्तान के साथ-साथ इधर-उधर भटकने लगे। पॉल बुनियान की जंगली परम्परा में 'वोबीज' और स्टीमबेक के जोड़ जैसे चरित्र आते हैं। 1918 में अमेरिकी एक पेड़ लगाते तो छह काटते। यह कटाई पीरियन की पश्चिम सीमा के जंगलों तक पहुँच गई। जिम्मेदार कम्पनियाँ अब पेड़ों को फसल के रूप में देखती हैं। किन्तु अब भी ऐसी कम्पनियाँ हैं जो 'काटो और भागो' के सिद्धान्त में ही विश्वास करती हैं ये कम्पनियाँ पेड़ों का सफाया तो कर देती हैं पर उनकी जगह नए पेड़ नहीं लगातीं। पशुपालकों ने स्थिति को और भी बुरी बना दिया है। ये राष्ट्रीय वनों को हथियाने के चक्कर में भेड़ें ही नहीं चराते पेड़ों पर भी हाथ साफ करते हैं।

इस प्रकार जमीन और मुनाफे की भूख और 'लाइज फेयरे' के सिद्धान्त को ऐसी जगह लगाने के कारण जहाँ उसका कोई तुक नहीं है अमेरिकी भूमि के प्रति आदर की भावना प्राय: समाप्त है। कम व्यक्ति ही इस बात की ओर ध्यान देते हैं कि भूमि का उपयोग तात्कालिक ही नहीं बल्कि दीर्घकालिक है। ऐसा प्रतीत होता है कि कोई राक्षसी शक्ति अमेरिकियों को भूमि और उसके साधनों को नष्ट भ्रष्ट करने के लिए प्रेरित कर रही है। मार्क ट्वेन ने अपनी पुस्तक 'गिल्डड एज' में उत्तर गृहयुद्ध काल में सार्वजनिक भूमि वैधानिक घूस और वास्तविक सम्पदा के अर्जन के ताने-बाने में बड़े चुटीले ढंग से इस समस्या का चित्रण किया है। विभिन्न उपन्यासों में चित्रित 'भूमि की छीना-झपटी' (Land rush) की घटनाओं पर महत्वपूर्ण और तिरंगे चल चित्रों के कारण एक अनुभवपूर्ण तथ्य पर पर्दा पड़ गया। वह तथ्य है कि इस सारे व्यापार में असल मुनाफा तो रेल कम्पनियों ने उठाया। अन्यथा वह रुपया सट्टे में फँस गया। यही सट्टेबाजी जो गेहूँ की फसल में चली तो उसे फ्रैंक नौरिस ने अपने प्रसिद्ध उपन्यासों 'दि पिट' एण्ड 'दि ओक्टोपस' की कथावस्तु बनाया। इसमें भूमि की उपज सटोरियों और रेल मालिकों के हाथों में खिलौने बने उत्पादकों और उपभोक्ताओं के भाग्य का जैसा चित्रण हुआ है वह वास्तविकता से अधिक दूर नहीं है।

ठेनों वाली जमीन जो अमेरिका की मौजूदा सम्पदा की शक्ति प्रमाण करती है का भी इतिहास है कि लोगों-हड़पो और सब ठेस निकाल लो। विचार की पार्थिव व्यवस्था में एक सिद्धान्त है 'पकड़ने का सिद्धान्त'। यही

सिद्धान्त तेलों पर भी लागू किया गया। तेल उसका जो पहले निकाले। फल स्वरूप प्रत्येक तेल वाला उतनी गहराई से तेल निकालता जितनी गहराई तक वह पहुँच सकता था। जमीन के नीचे तेल का जो तालाब था वह तो बंटा न था। इसलिए प्रत्येक तेल वाला यह कोशिश करता कि वह अपने कुएँ को इतना गहरे से गहरा कर दे कि उस सम्मिलित तालाब का सब तेल निकाल ले। तेल की इस डाकाजनी का मुकाबला करने के लिए पड़ोसी तेलवाले 'आफसेट' कुएँ बनाते। इसका फल होता बेरहम बर्बादी और प्रतिद्वन्द्विता में अति-उत्पादन जबकि प्रारम्भिक वर्षों में 10 प्रतिशत तेल ही निकलता। अन्त में सरकार के हस्तक्षेप से उसके नियंत्रण में तेल मालिकों के बीच एक राशन-व्यवस्था लागू हुई। किन्तु यह व्यवस्था लागू होने तक तो काफी बर्बादी हो चुकी थी।

अमेरिकी भूमि के प्राकृतिक इतिहास का एक तुरन्त भुलाने के लिए हास्यास्पद चरण बाद में आया। 'वास्तविक सम्पदा' को 'बाद में विकसित की जाएगी' की भूख पैदा हुई। इसका एक प्रतीक है अमेरिका की जमीन की छीना-झपटी जो वर्तमान शताब्दी के बीसे में आई। यहाँ जमीन का उपयोग उपज के लिए नहीं बल्कि सट्टेबाजी में किया गया। यह सट्टेबाजी भी उन्माद की सीमा तक पहुँचकर हास्यास्पद बन गई। छीना झपटी जब समाप्त हुई तो इसमें सम्मिलित सभी व्यक्तियों ने पाया कि उनके स्वप्नों का कागजी साम्राज्य लुप्त हो चुका है। 'वास्तविक-सम्पदा' के विकास की स्मृति में केवल कुछ सड़कों के निशान और बोर्ड उस वियाबान में खड़े हैं। बालीसे और पचासे में जब छीना झपटी कुछ सीमित रही तो कुछ स्थानों पर वैभव उतरा भी।

सोने की भूमि की कहानी भी इसी प्रकार अर्थपूर्ण है। जब केलिफोर्निया का सोना निकला तो वह 'गोल्डरश' जमीन में गड़ा सारा धन निकाल लेने का मादकीय संकेत था। यह सोना बाजार में गया और साख और मुद्रा के पिरामिड का आधार बना। किसी भी अर्थ-व्यवस्था ने इतना काम नहीं किया। अमेरिकी पूँजी और अनुकूल अमेरिकी व्यापार ने चुम्बक की भाँति संसार के सब सोने को भी अपनी ओर खींच लिया।

अमेरिकी साधनों के उपयोग का जैसा चित्र हमारे सम्मुख प्रकट होता है वास्तविक चित्र उससे कहीं अधिक भिन्न है। भूमि के लूट और शोषण के प्रकरण में आज के संरक्षण और ऊर्जा के नित नए स्रोतों की तेजी से होने वाली खोजों को भी जोड़ना पड़ेगा। अमेरिकी यदि साधनों के उस सीमा तक उपयोग में बढ़े हैं जहाँ उन्हें पुनः स्थापित नहीं किया जा सकता तो वे नए साधनों की खोज में भी रत हैं। संरक्षणवादी इस शताब्दी के प्रारम्भ से पूर्व अमेरिकियों को वर्षों से होने वाली जल्दबाजी, बरबादी और निर्ममता के कुप्रभावों से अवगत न करा सके। उन्हें अपने इस कार्य में पिंचोट और क्लेवेस्ट

और गिफोर्ड पिनशाट तथा बाद में जार्ज डब्लू० नोरिस और फ्रैंकलिन रूजवेल्ट से पर्याप्त सहायता मिली। हाल ही में संरक्षण आन्दोलन एक नए चरण में पहुँचा है। अब नारा है—साधनों को सुरक्षित ही नहीं रखना है बल्कि उसकी भाविता का भी अनुभव करना है। संरक्षण की समस्याओं का सामना करने के लिए मेड़ें बनाई जा रही हैं ढालियों पर खेती होती है पट्टियों में फसलें लगाई जाती हैं। सिंचाई, फसल-चक्र तथा जंगलों की पट्टियों की भी व्यवस्था की जा रही है। इन सबके परे एक पूरे वाटर शेड को एक इकाई मानकर बृहद् आयोजना भी की जा रही है।

किन्तु असावधानी और शोषण का युग अभी समूल नष्ट नहीं हुआ है। अमरिका के प्राकृतिक साधनों के सम्बन्ध में प्रधान बात यह है कि अधिकांश अन्य संस्कृतियों से भिन्न यहाँ इनका स्वामित्व प्रायः निजी व्यक्तियों के हाथ है जो इनका उपयोग करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि आज के अमरिका ने उत्तरदायित्वपूर्ण काम के अनुभवों को भुला दिया है और यहाँ नए सौदे के वर्षों के बहुत-से कार्यों को बिगाड़ने में लग गया है। इस विश्वास के आनन्द में कि अमरिका ने अपने साधनों के उपयोग का गुर प्राप्त कर लिया है और निजी स्वामी पुरस्कार के पात्र हैं क्योंकि वे साधनों का सर्वोत्तम उपयोग जनता के हित में कर रहे हैं कांग्रेस और विधान-मण्डलों ने उन्हें उदारतापूर्वक सुविधाएँ दीं। सामान्य सूत्र यह बना कि संघीय स्वामित्व के साधन राज्यों या उत्पादकों के संघों को हस्तान्तरित कर दिए जाएँ। इस प्रकार समुद्र तेल-क्षेत्र विशेषकर लुइजियाना, टेक्सास और कैलिफोर्निया के तेल-क्षेत्र और सार्वजनिक क्षेत्र के बहुत से चरागाह राज्यों को दे दिये गए, जिन्होंने उन्हें निजी क्षेत्रों में उपयोग के लिए हस्तान्तरित कर दिया। तेल की भूमि के हस्तान्तरण में बड़ी गहरी राजनीतिक लड़ाई हुई सुप्रीम कोर्ट के फैसलों को अमान्य कर कांग्रेस ने कानून बनाया। किन्तु दाँव पर बहुत बड़ी सम्पत्ति थी और बड़ों के बड़े स्वार्थ थे। इसलिए नतीजे के बारे में क्या सन्देह हो सकता था? चरागाहों का नियन्त्रण चरवाहों के संघों के हाथ आ गया जो 'निजी गिरह' ही थे—इन्होंने प्रारम्भ में राजनीतिक नेताओं को अपनी ओर करने की कोशिश की। जब वे इसमें सफल न हुए तो उन्होंने ऐसा प्रबन्ध किया कि उनकी कुछ चल ही न पाई। जल-विद्युत के क्षेत्र में प्रधान सार्वजनिक उत्पादनालय में विशाल बाँध बने जिससे निजी और म्युनिसिपल उपभोक्ताओं को बिजली दी गई। हूवर कमीशन की रिपोर्टों के प्रभाव के कारण टी० वी० ए० जैसी महान् सफलताएँ भी इस पार्टी की धार घुमाव से पूर्णतः अछूती नहीं मानी गई।

यह ही एक ऐसा तत्त्व है जिसने अन्य सभी तत्त्वों की अपेक्षा अमेरिकी व्यक्तियों को अपने पर्यावरण और साधनों के सम्बन्ध में एकात्मक दृष्टिकोण

अपनाने को बाध्य किया है। जीन बूल्ंस ने लिखा है "प्रत्येक मानव उद्योग थोड़ी मानवता, थोड़ी जमीन और थोड़े-से जल का सम्मिश्रण है। यद्यपि जीन की बात ठीक है पर इन सबमें जल सबसे दुरूह सिद्ध हुआ है। सूखों कटाव और बाढ़ से मिलकर यह एक अविभाज्य जल-ग्रंथि बन जाता है। बरसात का पानी-यदि उसे रोकने के लिए पेड़ या हरियाली न हो तो बाढ़ का रूप धारण कर लेता है। ऊपर की मिट्टी तेज धारा में बह जाती है। फिर वही रेत जमकर नदी की धारा को रोकती है और नई बाढ़ आने में मदद करती है। बाढ़ नियन्त्रण के कार्यक्रम संघीय धन से होते हैं और सिंचाई और पुनर्जोत के कार्यक्रमों के साथ साथ चलते हैं। सबसे ऊपर पानी के अभाव की समस्या है। पानी की सतह के गिरने और उद्योगों के लिए पानी की माँग बढ़ने के कारण बहुत से क्षेत्र जैसे दक्षिणी केलिफोर्निया टैक्सास पेनहेंडिल दक्षिण पश्चिमी की रियासतें न्यूजर्सी और न्यूयार्क पानी के अकाल के खतरे में रहते हैं। एक कानूनी समस्या—किसे कितना पानी मिलना चाहिए की भी है। इसके कारण एक प्रकार का पानी का साम्राज्य ही खड़ा हो गया है। विभिन्न जातियों में कभी कभी राज्यों में बड़ी नदियों के बटवारे के नियन्त्रण को लेकर लम्बी-लम्बी लड़ाइयाँ होती हैं। सभी अधिक-से-अधिक पानी हड़पने की कोशिश करते हैं।

अब यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि पानी की इन सारी समस्याओं का एक ही उत्तर है कि हम पानी के सम्बन्ध में एक इकाई के दृष्टिकोण से विचार करें। एक नदी घाटी को एक इकाई मानकर वहाँ की भूमि जनता कृषि, जल विद्युत शक्ति और उद्योग का सामाजिक और इंजीनियरी हल निकालें। अमेरिका की एक नदी और उसका जलपात्र दूसरे से भिन्न है। प्रत्येक का अपना अलग रूप है जिसका उसी रूप में अध्ययन होना चाहिए। जल-साधन नीति आयोग ने 10 नदियों के जलपात्रों का इसी रूप में अध्ययन भी किया था। इनमें कोलम्बिया बेसिन, मिसूरी और टेनस्सी के दक्षिण केलिफोर्निया का बीच का बेसिन रियोग्रांडा और कोलोराडो कनेक्टिकट और पोटोमाक अलबामा कूसा और ओहियो-बेसिन सम्मिलित हैं।

बिजली के युग में प्राकृतिक पर्यावरण और औद्योगिक सभ्यता के बीच परस्पर सम्बन्ध है। दूसरे रूप में कहें तो यह सम्बन्ध अमेरिका महाद्वीप के प्राकृतिक और सामाजिक लैण्ड स्केप (भूचित्र) के बीच है। अमेरिकियों ने इस कल्पना को टी० वी० ए० के रूप में साकार किया है। भारत और मध्यपूर्व में इसका काम नदी घाटी योजनाओं में हो रहा है। टी० वी० ए० की मुख्य बात है बहु-उद्देशीय बाँध—ये बाढ़ नियन्त्रण, सिंचाई, जमीन की पुनर्जोत और जल विद्युत के उत्पादन के लिए बनते हैं। आश्चर्य की बात नहीं कि टी० वी० ए० के दूसरे क्षेत्र में विस्तार के विचार का बिजली कम्पनियों और उनके समर्थक

विचारकों ने जबर्दस्त विरोध किया। किन्तु बहु-उद्देशीय बांधों और एक नदी की तराई के दृष्टिकोण में इतना जोर है कि उसका सामना करना कठिन होगा। बिजली-शक्ति के युग का तर्क दक्षिण-सम्प्रदायों से अधिक बलवान सिद्ध होगा। औद्योगिक विकास में नए उद्योग जैसे उड्डयन रसायन हल्की धातुएँ, असीम एलेक्ट्रानिक्स परमाणु ऊर्जा ऐसे उद्योग हैं जिनको पर्याप्त विद्युत-शक्ति की आवश्यकता पड़ती है। अमेरिका की समस्या है कि इन उद्योगों की आवश्यकताएँ कैसे पूरी करें। इसमें दलीय राजनीति या स्वामित्व के निजी और सार्वजनिक रूप को लेकर विवाद का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। चाहे नौरिस बांध हो या पासता या ग्रांड कूली या हेस या कैम्बलैंड इनका पूरा विकास और विस्तार होना ही है। इन्हें हम कल्पना तक सीमित रखकर छोड़ नहीं सकते।

इनको छोड़ देने का अर्थ है प्रकृति के असली हस्ताक्षर का नाश करना। अमेरिका में जो सबसे अनुदार वर्ग है वह है किसानों और छोटे व्यापारियों का। बहु-उद्देशीय बांधों से जो विद्युत-शक्ति उत्पन्न होगी उसके नए ग्राहक तो ये ही लोग हैं। इसलिए इन योजनाओं के त्याग में इनके लिए भी कोई राजनीतिक तुक नहीं है। टी० वी० ए० क्षेत्र में या प्रशान्त उत्तरी पश्चिमी इलाके में सस्ती बिजली मिलने का अर्थ है फार्मों में शान्ति। उन्हें ट्रैक्टर मिलेगा फ्रीजिडेयर मिलेगा और मिलेगा टेलिविजन का सेट। छोटे व्यापारियों को जैसा टेनेसी घाटी में हुआ ग्राहक मिलेंगे। टी० वी० ए० ने क्षेत्र की आवश्यकता उसके ढांचे और भाव के विकास में सम्बन्ध स्थापित कर क्षेत्र और क्षेत्रीय आयोजना को एक नया अर्थ दिया है।

आवश्यकता इस बात की है कि भूत के साधनों को सुरक्षित रखने व अधिक बल भविष्य की मांगों की खोज पर दिया जाए। ज्यों-ज्यों औद्योगिक-कला बदलती है साधन भी बदलते रहते हैं। प्राकृतिक साधनों के बारे में अमेरिकी मस्तिष्क दो दिशाओं में काम करता है। उन्होंने इनके प्रति असावधानी की और उन्हें नष्ट किया। सम्भवतः उन्हें विश्वास था कि काला सोना (रैवेन्स) मत देगा। जब उन्हें पता चला कि किस सीमा तक उन्होंने प्राकृतिक साधनों को तहस-नहस कर दिया है तो वे अचानक भयभीत हुए और उन्होंने कड़ाई से संरक्षण का आन्दोलन चलाया। फिर भी वे मूलतः भविष्यवादी हैं। वे महासम्पदा पर ही नहीं रहते बल्कि भविष्य में उनकी क्या आवश्यकताएँ और साधन होंगे उनकी भी सूची तैयार करते हैं। इसके अतिरिक्त वे प्रचुरतावादी भी हैं। मेरे जैसे लोगों के लिए यह उपयुक्त भी है। यद्यपि रह-रहकर उन पर अपराध और अचानक भय का दौरा पड़ता है। पर उन्होंने कभी भी अन्न स्थान या समाप्त साधन के सिद्धान्तों को गम्भीरतापूर्वक नहीं लिया है। प्रकृति के विरुद्ध वस्तु

बाजी और शिकार की उनकी प्रवृत्ति के मूल में भी भावाभाव ही था। जिनमें शक्ति का निवास है, जो अपने को और अपने माप्य को सदा बदलते रहने की क्षमता बनाये रखते हैं उन्हें अपने पर्यावरण के बिगाड़ने या बदलने की क्या चिन्ता ?

आधी शताब्दी पूर्व हेनरी एडम्स ने कहा था कि "नया अमेरिकी कोयला की अगणित शक्ति रसायन शक्ति विद्युत्-शक्ति और विकीर्णित ऊर्जा और उन अनेक तत्त्वों का पुत्र होगा जो अभी अज्ञात हैं'। उसने भविष्यवाणी की थी कि 'वह भूतकाल के किसी भी प्राणी की तुलना में देवता होगा'। यद्यपि नए समाज के प्रति एडम्स निराशावादी था पर उसने 'तीव्रगति के सिद्धान्त' से भविष्य के ऊर्जा-विकास की भविष्यवाणी कर दी थी। 1800 ई० में अमेरिका में लकड़ी का ईंधन ही प्रधान था। उसके मुकाबले में पिछले 150 वर्षों में अमेरिका ने खनिज ईंधन और जलशक्ति के माध्यम से ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में प्रति व्यक्ति 60 गुनी उन्नति की है। यह उन्नति अभी जारी है। 1952 में पैली कमीशन की नियुक्ति हुई थी। कमीशन ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि प्रथम विश्वयुद्ध से अब तक खनिज ईंधन और अन्य दूसरी धातुओं की जितनी खपत अमेरिका में हुई वह विश्व के इतिहास में अब तक की हुई सारी खपत से कहीं अधिक है। किन्तु वैज्ञानिकों ने बहुत-से कृत्रिम संघात प्लास्टिक और एलेक्ट्रोनिक भी खोज निकाले हैं और उन्होंने परमाणु ऊर्जा की शान्तिपूर्ण सम्भावना भी देख ली है। साधनों का एक ऐसा भी क्षेत्र है जो कमजोर है। अमेरिका को अब भी टिन संखिया, मैंगनीज जिंक बाक्साइट, टिटेनियम-जैसी कई महत्त्वपूर्ण कच्ची धातुओं के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। पर यह कमजोरी यदि कोई और विश्वयुद्ध होगा तभी आएगी। किन्तु वह युद्ध स्वयं टेक्नोलाजी यातायात और उद्योग के सारे कमजोर ढांचे को तोड़ डालेगा। दूसरी कमजोरी है आबादी के विस्तार की जो वास्तविक है। किन्तु यह भेद्यता विश्व के अन्य घनी आबादी वाले और अल्प विकसित देशों पर अधिक लागू है अमेरिका पर कम।

अमेरिका के पास जितने साधन हैं वह उसके वर्तमान और भविष्य के लिए पर्याप्त हैं। शर्त यह है कि उनका उपयोग पूरा-पूरा किया जाए और उन्हें सामाजिक कल्पना के साथ सम्पर्क में किया जाए। खतरा एक बात के भूल जाने का है कि चाहे औद्योगिक समाज हो या कृषि विकास विद्युत-शक्ति या जंगल की सफाई के युग में मनुष्य और उसके पर्यावरण के बीच की जाली जब टूटती है तो वह मनुष्य को ही हानि पहुँचाती है। इसलिए अंतिम विचारणीय विषय साधनों के क्षय और संचय का नहीं है। यह मौलिक दृष्टिकोण का है। चाहे जमीन की भूख रही हो या धन को भूख जिसके कारण फ्रंटियरमैन आगे

बढ़ा वह जहाँ कहीं गया उसने लूटा और साधनों का नाश किया । उसे हमेशा जल्दी थी क्योंकि उसे साम्राज्य के सपने जो आ रहे थे । उसके पीछे-पीछे आय सटटेबाज नगर बसाने वाले और साम्राज्य खड़ा करने वाले । इनके साथ वैज्ञानिक थे जिनका काम था जब प्राचीन साधन चुक जाएँ तो उनके स्थान पर दूसरे कृत्रिम पदार्थ खोजना । यद्यपि अमरीकी मस्तिष्क पर प्राकृतिक पर्यावरण का प्रभाव था पर प्रत्यक्ष अवस्था में कभी एक बात की थी और वह थी प्रकृति के प्रति आदर की भावना की ।

प्रकृतिवादियों का एक सिद्धान्त है 'असीम चक्र' का। इस सिद्धान्त के अनुसार बरसात का जल भूमि में जज्ब हो जाता है । वह नदियों और समुद्र में बहकर जाता है । वायुमंडल म पहुँच जाता है । फिर बरसात के पानी के रूप में मनुष्य को उपलब्ध हो जाता है । प्रकृतिवादी एक दूसरे सिद्धान्त की भी बात करते हैं और वह है 'प्राणि चक्र' का जिसके अनुसार इसी प्रकार वनस्पति जीव बनता है बढ़ता है और मनुष्य के काम आता है । फिर उसका कूड़ा-कचरा और रासायनिक तत्व मिट्टी म मिल जाता है और फिर एक बार प्राणिक विकास का एक अंग बन जाता है । किन्तु इन दोनों को अपनी परिधि में समेटता तीसरा सिद्धान्त भी है और वह है प्रकृति और मनुष्य का संतुलन । इस सिद्धान्त के अनुसार वातावरण मनुष्य का पालन एक शर्त पर करता है कि वह इस महान् सम्पदा का उपयोग हत्यारा के रूप में नहीं करेगा बल्कि उसे संजोकर रखेगा । जब अमेरिकी मिट्टी के प्रति आदर भाव समाप्त कर देगा तो वह साधनों से अधिक कुछ और खो देगा । फिर उसके स्वयं का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा और न उसमे यह क्षमता ही रह जाएगी कि वह ऐसी महान् सम्पदा को जिन्दा रख सके ।

## 5 मानवीय साधन आबादी का चित्र

इस शताब्दी के पचासे के मध्य म अमरिका के एक सिरे से दूसरे सिरे की यात्रा करने वाले पर्यवेक्षक दो संस्थाओं से बड़े प्रभावित हुए थे । एक थी अमरिका में मोटर-गाड़ियों तथा टेलीविजन सेटों की संख्या और दूसरी अमेरिका में पैदा होने वाले बच्चों की संख्या । एक बात महत्व की है और वह यह कि भौतिकतावादी अमरिका का उच्चतर जीवन-स्तर चुनना चाहिए न कि बड़े परिवार । पर अमरिका ने दोनों को चुना है । मजेदार बात है कि अमेरिकी 'बच्चों की बूम' की भी उसी रूप में चर्चा करते हैं जिस रूप में वे मकानों की या यूरेनियम बूम की चर्चा करते हैं । फिर भी इस बच्चों की बूम के पीछे एक आधी प्राप्ट आधी अनुमा आन्तरिक शक्ति भी है जिसने अमेरिकी जनसंख्या के भावी रूप के सम्बन्ध में अनेक रूढ़िगत विचारों और धारणाओं को पलट दिया है ।

इसकी सजीवता के परिचायक भी हैं जो सभ्यता के इतिहास के विद्यार्थियों के लिए बड़े काम के हैं। संख्या, जन्मदर, मृत्युदर, जनवृद्धि, औसत आयु, परिवार का विस्तार, वय का विवरण, पेशे और शिक्षा का ढांचा, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य, भोजन, आवास, और जनकल्याण सभी दृष्टियों से अमेरिका की जनसंख्या का अध्ययन बड़ा महत्वपूर्ण है। इन सबमें जन्मदर, मृत्युदर और जनवृद्धि और अधिक महत्व के हैं। इतिहास लेखकों के लिए सदा से एक ढांचा रहा है 'स्थिर समाज' या 'स्थिर राज्य' का।

इसलिए कोई आश्चर्य की बात नहीं कि बहुत-से अमरीकी भी ऐसा मानते हैं। उन्होंने जहाँ कोई ऐसा चिह्न देखा कि जन्मदर धीमी पड़ रही है तो वे तत्काल बेचैन हो उठते हैं। पश्चिम की कुछ जातियों की भाँति वे भी अनुभव करते हैं कि वृद्धि की दर में कमी बुरी बात है। वृद्धि अच्छी बात है। किन्तु इसमें एक स्वीकृति कि सभ्यता भी एक शरीर की भाँति है निहित है। जब इसकी जनसंख्या का आन्तरिक स्रोत सूखने लगता है तो राष्ट्रीय शक्ति का भी क्षय होता है। इतिहास में ऐसी भी जातियों के उदाहरण हैं जो अपना प्रतिरूप पैदा न कर सकीं क्योंकि या तो उनकी जन्मदर कम थी या मृत्युदर अधिक। तीसे और चालीसे में विद्वानों में एक बात की बड़ी चर्चा थी और वह यह कि प्रत्येक सभ्यता के इतिहास में 'जनसंख्या का एक चक्र' होता है। अमरिका में जब इस सिद्धान्त को लागू कर यह भविष्यवाणी की गई कि 1950-75 में अमेरिका की जनसंख्या सम होगी तो इससे अमरिका में बड़ी चिन्ता व्यापी। किन्तु 1950 और 1955 के आंकड़ों ने इस भविष्यवाणी को झुठला दिया। जनवृद्धि की रेखा तेजी से ऊपर को गई और अमेरिका में लोगों ने राहत की साँस ली। ठीक हो या गलत व लोग बड़े प्रसन्न हुए जो अमरिका की आन्तरिक शक्ति के बड़े भक्त हैं। यहाँ जनसंख्या के चक्र को अमेरिका की जीवन-शक्ति का पता देना चाहिए था वहाँ यह प्रकट हुआ कि जीवन स्तर का जनसंख्या चक्र के नियमन में बड़ा हाथ है।

पहले के भाष्यकारों की भविष्योक्तियाँ कुछ अधिक ठोस सिद्ध हुई हैं। 1780 के आस-पास बेंजामिन फ्रैंकलिन ने एक सूचना पुस्तिका प्रवासियों के लिए लिखी थी जिसका शीर्षक था "उन लोगों के लिए सूचनाएँ जो अमेरिका आएँगे।" उसने लिखा था "अमरिका में स्वास्थ्यकर हवा और जलवायु, खाद्य पदार्थों की प्रचुरता, शीघ्र विवाह को प्रोत्साहन, खेती से गुजर-बसर की निश्चितता है। फलस्वरूप जन्म के कारण आबादी तेजी से बढ़ती है। आगन्तुकों के कारण यह वृद्धि और तेज हो रही है।" इतिहास ने फ्रैंकलिन की वाणी को सत्य सिद्ध कर दिया। आबादी में वृद्धि प्रवास के कारण ही नहीं बल्कि जल्द विवाह, खेती के लिए नई श्रमिक शक्ति की आवश्यकता के कारण भी हुई। नए

प्रवासी नर-नारी अधिकांशतः उसी वय-वर्ग के थे जो संतति उत्पन्न करने में सक्षम है।

60 वर्ष पश्चात् लिखते हुए ऐलेक्सिस डी टॉकविले ने और महत्वपूर्ण भविष्यवाणी की। अमेरिका में जनतन्त्र नामक पुस्तक के प्रथम खण्ड के अन्त में उसने लिखा है कि "एक समय आएगा जब अमेरिका में 10 करोड़ व्यक्ति होंगे। वे सब एक ही अवस्था में रहेंगे एक ही नस्ल की संतति होंगे उनकी उत्पत्ति का मूल एक होगा। वे एक ही सभ्यता के प्रहरी और एक धर्म के अनुयायी होंगे। उनकी आदतें और व्यवहार एक होंगे। उनके मत एक होंगे, मत प्रचार के साधन एक होंगे और शेष सब कुछ अनिश्चित है, निश्चित है तो केवल इतना ही और यह विश्व के लिए नई बात है जिसके गर्भ में इतना कुछ भार है वहाँ कल्पना की भी वास्तविक पहुँच नहीं।" 1930 की जनगणना के आंकड़ों ने दिखला दिया कि डी टॉकविले की उक्ति कितनी सही थी। 1937 में यह संख्या 17 करोड़ पहुँच गई और यह अब भी बढ़ाव पर है।

1930-40 के बीच इस गति के धीमी पड़ने के पुष्ट प्रमाण थे जब उत्पत्ति की दर में स्पष्ट घटाव था। बीसे और तीसे अमेरिका के लिए बड़े नाज़ुक वर्ष थे। वैभव के शीर्ष के सहसा बाद आर्थिक शक्तिहीनता ने अमरिकी विश्वास में एक नाज़ुक स्थिति पैदा कर दी थी। गर्भ अवरोध का ज्ञान ही नहीं बढ़ा था उस पर अमल भी किया गया। फलस्वरूप परिवार का विस्तार सहसा सिकुड़ गया। वेनिस रोम के एक अध्ययन से पता चला कि 1910 से पिछले अधिक आय वाले और कम आय वाले वर्गों में उत्पत्ति अनुपात का फर्क कम हो रहा है। यह फर्क तीसे के मंदी के काल में सबसे कम था। इस प्रकार अल्प आय के वर्गों में भी आबादी के प्रति विवेकवादी दृष्टिकोण का प्रचार हो रहा था। जैसा कि एक लेखक ने लिखा है कि "उत्पादन की सामग्री और बच्चों की प्रतिद्वन्द्विता में बच्चे हारते से प्रतीत हो रहे थे।" 1925 से 1945 तक इस बात पर प्राय सहमति थी कि यह क्रम अभी बना रहेगा। 1910 तक जन गणना के अनुमान यही थे कि 1990 में आबादी 10.5 करोड़ होगी। अभी लक्षण यही बतला रहे थे कि अमेरिकी जन-संख्या की वृद्धि में 'ह्रास का प्रारम्भ' हो गया है।

आश्चर्य की बात हुई कि 1910 के बाद उत्पत्ति की दर बढ़ गई। 1945 में यह वृद्धि इतनी सुस्पष्ट थी कि अनुमान में परिवर्तन करना आवश्यक हो गया। 1933 में जब मंदी चरमसीमा पर थी जन्मदर भी कमी के चरम पर थी। 1933 में जन्मदर 16.6 प्रति सहस्र थी 1910 में यह संख्या 17.9 हो गई और 194[illegible] में [illegible].8 पर पहुँच गई। 1933 में 23 लाख बच्चे पैदा हुए। यह संख्या 19[illegible] में 30 लाख हो गई। 1954 और 1955 में तो 40 लाख से भी अधिक

बच्चे प्रति वर्ष पैदा हुए। अमेरिका की जनसंख्या 1940 में 13 करोड़ थी। 15 वर्षों में इस संख्या में 3·5 करोड़ की वृद्धि हो गई। इसमें प्रवासियों से कोई विशेष सहायता नहीं मिली।

मैं इस घटना पर विशेष जोर देता हूँ क्योंकि यह किसी जीवित सभ्यता को मशीन के रूप में देखने के दृष्टिकोण पर अच्छी टीका है। वैज्ञानिकों ने कहा कि अमेरिका में मृत्यु की दर में घटाव सीमा पर पहुँच चुका है। प्रवास का दरवाजा बन्द है। जन्मदर में कमी भी हो चुकी है। यद्यपि सामग्री का अध्ययन हम बड़े विश्वास के साथ कर सकते हैं पर मनुष्य किस मार्ग से जाएगा हम निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते। वैज्ञानिकों का यह कथन ठीक है कि जब लोग देहात से शहर में आते हैं तो उनकी जन्मदर में गिराव होता है। जब नारी घर से बाहर निकलती है और बच्चों के पैदा करने और उन्हें पालने के अतिरिक्त दूसरे काम भी करने लगती है तो जन्मदर और गिरती है। जब जीवन का स्तर ऊपर उठता है तो बच्चों की भीड़-भाड़ पसन्द नहीं आती। किन्तु घटनाओं ने वैज्ञानिक को गलत सिद्ध कर दिया क्योंकि उन्होंने एक महत्त्वपूर्ण बात की ओर ध्यान नहीं दिया। जोसेफ एस० डेवीज (इसने इस नई प्रवृत्ति का दर्शन औरों से पहले कर लिया था।) के एक लेख पर टीका करते हुए 1954 में फैंक डब्ल्यू नोटस्टीन ने अपने साथियों के गलत अन्दाजों को दिखाया था। उसने कहा था "एक शताब्दी से अधिक के काल में जन्मदर के गिरने पर जरूरत से अधिक ध्यान दिया गया। "इस सम्भावना पर सबसे कम ध्यान दिया गया कि परिवार का गठन जो अब तक स्थिर था अप्रत्याशित तेजी से बदल भी सकता है।"

इसका सार यह निकला कि अमेरिकी जीवन का उद्देश्य और उसका दृष्टिकोण अब भी अस्थिर है। वह उतना ही अस्थिर है जितना जनता के प्रवास का प्रवाह। जनसंख्या में वृद्धि जन्म और मृत्यु के दर के सम्बन्ध पर निर्भर है। अमेरिका में बच्चों की मृत्युदर में पर्याप्त कमी हुई है। किन्तु कुछ समय तक जन्म की दर में ही कमी हो गई थी। युद्ध के काल में इस कमी के पलटने का एक कारण हो सकता है जो समझ में भी आता है। युद्ध काल में लड़कियाँ इसके पूर्व कि उनके पति युद्ध के मोर्चे पर जाएँ जल्दी बच्चे पैदा कर उन्हें पालने में अधिक दत्तचित थी। यदि पति युद्ध में न जाते तो यह वृद्धि और भी होती। दर में वृद्धि की प्रवृत्ति युद्ध के पश्चात् भी बनी रही। यह सत्य है कि 1930-40 के बीच परिवारों के गठन में पर्याप्त परिवर्तन हुए किन्तु इस परिवर्तन से भी अधिक मौलिक परिवर्तन हुआ उन मूल्यों और उस मूर्ति के बारे में जो अमेरिकी नर-नारी अपने सम्बन्ध में बना रहे थे।

मैंने कहा है कि इस सदी के बीते की समृद्धि के मुकाबिले तीसे की आर्थिक

गिरावट से अमेरिकियों में विश्वास का संकट पैदा हो गया था। इस संकट का मुकाबिला किया गया 'न्यू डील' के वर्षों में। इसके बाद सबको नौकरी दी गई और एक नई प्रवृत्ति के दर्शन हुए 1940 में। मृत्युदर में कमी का सम्बन्ध विज्ञान से है किन्तु जन्मदर में वृद्धि और वह भी जब गर्भ-निरोध के सभी साधन प्रायः सबको उपलब्ध थे जीवन के प्रति विश्वास के कारण हुई। बच्चे पैदा करने का अर्थ है भविष्य को बंधक रखना। आधुनिक बुद्धि-परक समाजों में बच्चे तब तक पैदा नहीं करते जब तक भविष्य में पूर्ण विश्वास न हो। रोजगार और आय की पुनः प्राप्ति और उप नगरों में बसने से पर्याप्त फुरसत मिलने के कारण युवा अमेरिकियों ने बच्चों के प्रति जो दृष्टिकोण अपनाया वह उनको छोड़कर और सभी को आश्चर्य में डालने वाला था। बच्चों के सम्बन्ध में उनका दृष्टिकोण पुराने ढंग का हो गया जब कि लोग उनसे आधुनिक होने की आशा कर रहे थे। जहाँ तक युवती पत्नियों का सम्बन्ध है वे उस पीढ़ी की हैं जो पहले बच्चे पैदा करना चाहती हैं फिर उनके लालन-पालन में से फुरसत पाकर दूसरे काम करना चाहती हैं या अपनी प्रतिभा का उपयोग तब करना चाहती हैं जब बच्चे सयाने हो जाएँ। उच्च मध्यवर्ग और अन्य वर्गों तथा कलाकारों और बुद्धिजीवियों में जन्मदर के घटने का खतरा बढ़ जाने का था क्योंकि दूसरे वर्ग वाले सामान्यतया इनका ही अनुकरण करते हैं। इन महत्त्वपूर्ण वर्गों में 1940 से उत्पत्ति दर में पर्याप्त वृद्धि हुई है।

मैंने चर्चा की है कि अमेरिकी अपने सम्बन्ध में बनाई मूर्ति में परिवर्तन कर रहे हैं। इससे इस बात का कुछ सुराग मिलेगा कि क्यों अमेरिकी इतनी तेजी से या इतने धीरे बच्चे पैदा करते हैं। यही बात दूसरे तरीके से कहें तो यह कह सकते हैं कि जब एक युवक अमेरिकी कहता है कि नवयुवावस्था में शादी करने में बड़ा मजा है या निस्संतान रहने से अच्छा है कि बच्चे पैदा किए जाएँ (आज अमेरिका में निस्संतानों के बीच गोद लेने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इससे बच्चों के सम्बन्ध में अमेरिकियों के भावों का पता चलता है) या जब वह यह कहता है कि एक बच्चा पैदा करने से अच्छा है दो पैदा किए जाएँ, दो बच्चे से अच्छा है कि तीन पैदा किये जाएँ। या जब वह किसी उपनगर में मकान बनाता है और मानो गर्व करता है या परिवार बढ़ाता है तो उसका क्या तात्पर्य होता है? उत्तम ऊँची आय के स्तर वालों और ऊँची शिक्षा वालों के लिए भी इसके मजे हैं क्योंकि वे भी जीवन में इससे नहीं अधिक आनन्द की खोज में रहते हैं। ये मूर्तियाँ संस्कृति के प्रत्येक भाग से रेखाओं के मिलने से बनती हैं। इसलिए अनुमान किया जा सकता है कि भविष्य की आशा और निराशा के वातावरण के निर्माण में इनका क्या हाथ होगा। यह अनुमान भी किया जा सकता है कि परमाणु ऊर्जा और स्वचालित कारखानों आदि के निर्माण से क्या

होगा ? और इसी प्रकार निम्न वर्तमान अवकाश और जीवन-स्तर उत्पत्ति-दर की वृद्धि पर क्या प्रभाव डालेंगे।

अमेरिका में जनवृद्धि और उसके रूप के लिए मृत्युदर का महत्त्व जन्मदर जितना ही है। मृत्युदर के विश्लेषण में कठिनाई कुछ कम अवश्य है। 1850 से 1950 की शताब्दी में अमेरिका की जनसंख्या 6 गुनी से अधिक बढ़ गई। इसमें कुछ तो 1920-30 के बीच प्रवास के कारण वृद्धि हुई पर मुख्य रूप से मृत्युदर में कमी की वजह से आबादी बढ़ी विशेषकर 1900 के पश्चात्। मृत्युदर में कमी का कारण था दवादारू की सुविधा का सुधरना अच्छा भोजन उत्तम आवास जीवन-स्तर में उन्नति और जन-स्वास्थ्य। अमेरिका में ही नहीं अन्यत्र भी आबादी-वृद्धि में मृत्यु दर में कमी का बहुत बड़ा हाथ रहा है। 1900 में मृत्यु की दर 17·2 प्रति सहस्र। 1920 में यह 12 और 1950 में 9·6 हो गई। बाल-मृत्युएँ भी पर्याप्त रूप में घट गईं। फलस्वरूप प्रजनन की वय में अधिक संख्या पहुँचने लगी। इसलिए भी आबादी में वृद्धि की मात्रिता बढ़ गई। प्रसूति काल में मृत्यु की दर में काफ़ी कमी हो गई। 1920 में यह संख्या प्रति हजार 6·47 थी जो 1951 में ·76 हो गई। 1927 में जन्म के बाद के वर्ष में प्रति सहस्र बच्चों में 65 मर गए थे। 1951 में 29 बच्चे ही मरे। इसी प्रकार 45 से नीचे के लोगों में भी मृत्यु की दर पर्याप्त घटी। 60 के ऊपर वालों में भी मृत्यु दर घटी है। अब यदि यह कमी और होने को है तो वह 45 से 60 के बीच में होगी।

अमेरिकी आबादी के गठन और वितरण के चित्र में हाल में जो परिवर्तन हुए हैं उनका वर्णन करना अभी शेष है। दवादारू की सुविधाएँ बढ़ जाने और मृत्युदर के घट जाने से अमेरिकी आबादी के दोनों किनारों के वयवर्ग का चित्र बदला है। पैदा होने पर बच्चे के जीने के अवसर अब अधिक हैं। (95 प्रतिशत बच्चे कम-से-कम 15 वर्ष की आयु तक अवश्य पहुँचते हैं) इसी प्रकार 65 पार हो जाने पर जीवन कुछ और खींच ले जाने की संभावनाएँ भी बढ़ गई हैं। 1940 से 50 के एक दशक में ही आबादी में 15 प्रतिशत वृद्धि के मुकाबले 10 के नीचे के बच्चों की 40 प्रतिशत वृद्धि हुई। 1950 में अमेरिका में 65 से अधिक उम्र के लोगों की संख्या 2·6 करोड़ थी—एक दशक में 30 प्रतिशत की वृद्धि। 65 से अधिक वालों की संख्या 1900 में 30 लाख (सम्पूर्ण जनसंख्या का 4 प्रतिशत) से 1952 में 1·3 करोड़ (8 प्रतिशत से अधिक) पहुँच गई। सम्भावना यह है कि एक ही पीढ़ी में यह संख्या 10 प्रतिशत हो जाएगी। पिछले 50 वर्षों में जब कि अमेरिका की आबादी दुगुनी हुई 65 से अधिक उम्र वालों की संख्या चौगुनी से अधिक बढ़ गई।

बच्चों के संरक्षण और सामान्य आयु में वृद्धि का अमेरिका पर प्रसूति-गृहों

में भीड़ और शिक्षा की सुविधाओं में वृद्धि से और आगे प्रभाव पड़ा है। इससे अमेरिका एक साथ ही बच्चों और बूढ़ों का देश हो गया है। इससे अमेरिका की विचार-सरणि में भी पर्याप्त परिवर्तन हुआ है। पिछले 50 वर्षों में (1950 तक) तक अमरिकी पुरुष के जीवन की आशा में 21 वर्ष बढ़े हैं। 1937 से 1951 के 14 वर्षों में यह 60 से 68½ वर्ष तक पहुँच गई है। अवृस्य रूप में इसने गुरुजनों और जीवन की गति के प्रति दृष्टिकोण में पर्याप्त परिवर्तन किया है। अब जीवन अधिक लम्बा मिल रहा है इसलिए उसकी गति धीमी पड़ने लगी है। अब तो कुछ ऐसे भी अमेरिकी हैं जो दर्प से कहने लगे हैं कि मृत्यु की समस्या पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

अमेरिका बड़े बूढ़ों का देश होता जा रहा है इस पर कुछ आँसू बहाने वाले लोग भी हैं। पिछले 75 वर्षों में मध्य आयु में लगभग 10 वर्ष की वृद्धि हुई है। मध्य आयु 1850 में 20·9 से 1950 में 30 से कुछ अधिक हो गई। तब से इसमें कुछ कमी हुई है। क्योंकि बच्चों की उत्पत्ति में बाढ़ आ जाने से यह प्रतिशत कुछ गिर गया है। कुछ आश्चर्य की बात है कि अपेक्षाकृत लम्बी-मध्य आयु अवांछित क्यों मानी जाती है? इसमें कमी से क्या विशेषत्व पैदा हो जाएगा। आबादी की जवानियत[1] हम शीघ्र मृत्यु और जन्म से खरीद सकते हैं। किसी भी संस्कृति में इसका यही अर्थ होगा कि जीवन छोटा और दुःखमय था। टैक्निकस और दवादारू का विकास कम था। एक बच्चा अमेरिका में पैदा हो तो उसे 80 तक पहुँचना आसान है पर वही एशिया में पैदा होकर कठिनता से 15 तक पहुँचेगा। लम्बी जिन्दगी से आदमी को अपने आदर्शों को पूरा करने का अवसर मिलता है। किसी भी संस्कृति को इससे ऐसे मनुष्य मिलते हैं जो उत्पादन करते हैं। जहाँ तक अमेरिकी जनता का प्रश्न है यह कहना कि अब वे 'युवा' नहीं रहे यह 'युवा' शब्द के अर्थ पर निर्भर है। आबादी में हुए परिवर्तन से युवा और वृद्ध शब्दों का अर्थ भी बदल गया है। अमेरिका में युवावस्था अब चालीसे के आखीर तक और अधेड़ावस्था साठे के आखीर तक पहुँचने लगी है जहाँ से वृद्धावस्था का प्रारम्भ होता है। अब केवल उद्योगों में ही 45 से ऊपर के नर-नारियों को काम पाना कठिन रह गया है। वहाँ भी अब ये पुराने विचार बदलने लगे हैं।[2]

मैंने इसी अध्याय म अन्यत्र (खण्ड 3) राज्यों और क्षेत्रों तथा देहात और शहरों में हो रहे आबादी के रद्दोबदल की चर्चा की है। इन परिवर्तनों में जन्म दर से प्रवास के आवागमन का अधिक महत्व है। चालीसे के दशक में

---

1 Youthfulness.

2 अधिक विवरण के लिए देखें अध्याय 3 का अनुभाग 7।

कैलिफोर्निया ऐरिज़ोना फ्लोरिडा नेवाडा ओरेगन वाशिंगटन और मेरीलैंड के सात राज्यों में आबादी सबसे तेजी से बढ़ी है। इनमें जन्मदर की अपेक्षा प्रवासियों के आगमन के कारण आबादी अधिक बढ़ी है। मिसिसिपी आरकान्सास उत्तरी डकोटा और ओकलाहोमा के चार राज्यों में वहाँ की आबादी घटी है जन्मदर ऊँची थी पर फिर भी आबादी घटी क्योंकि वहाँ से अधिक लोग प्रवास के लिए निकल गए। यदि केवल जन्म और मृत्यु दर का ही प्रश्न हो तो दक्षिण के राज्य सबसे उर्वर सिद्ध होंगे। हब्शियों और गरीब गोरों[1] में जन्म की दर ऊँची है। किन्तु फ्लोरिडा-जैसे राज्यों को छोड़कर युवक गोरे और हब्शी दोनों दक्षिण से हट रहे हैं। पश्चिम की ओर प्रवास की गति चालू है। आंतरिक आवागमन की स्वतंत्रता के कारण अधिक जन्मदर और कम आर्थिक अवसर के राज्यों और कम जन्मदर और अधिक आर्थिक अवसर के राज्यों के बीच आबादी का समंजन होता रहता है।

आबादी के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है और वह यह कि खेतों और कस्बों से हटकर लोग नगरों की ओर और बड़े नगरों से हटकर उपनगरों में गए हैं। बड़े नगरों की आबादी में इस प्रकार कोई विशेष वृद्धि नहीं हुई है। उपनगरों में आसानी से मकान खरीदे जा सकते हैं जिनमें रसोई की सभी सुविधाएँ हैं। वहाँ से मोटर गाड़ियों से लोग शहरों में अपने कामों पर आसानी से आ-जा सकते हैं टेलीविजन पर अवकाश आनन्दपूर्वक बिताया जा सकता है। इस प्रकार जीवन की लगभग सभी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध होने के कारण उपनगरों की आबादी तेजी से बढ़ गई है। खेतों और कस्बों तथा बड़े शहरों के जीवन से विरक्ति साथ-साथ हुई। रोमन प्रिंसिपेट[2] के दिनों की भाँति अमेरिका में 'खेतों को वापस लौटो' का नारा नहीं है। किन्तु आन्दोलन यह है कि ऐसा करो कि दोनों प्रकार के जीवनों का उत्तम अंश प्राप्त हो।[3]

विदेशों में उत्पन्न अमेरिकियों की संख्या में बड़ी कमी हुई है। 1956 तक 6 प्रतिशत अमेरिकियों में से अधिक विदेशों में उत्पन्न न थे। वह समय भी शीघ्र ही आवेगा जब 1950 में दक्षिण की भाँति (1.5 प्रतिशत के लगभग) सर्वत्र ऐसे अमेरिकियों की संख्या नगण्य हो जावेगी।

1930 से पूर्व अमेरिका में पुरुषों की संख्या औरतों से अधिक थी। कारण था प्रवासी लोगों में पुरुषों की बहुतायत और औरतों की मृत्युदर में अधिकता।

---

1 Poor Whites.

2 Roman Principate.

3 इस प्रश्न पर सबसे बाद में [illegible] की [illegible] के अन्तर्गत विशेष रूप से चर्चा की गई है।

10.0 के बाद यह अनुपात बदला है। इसका कारण प्रवासियों सम्बन्धी परिवर्तन तो हैं ही साथ ही प्रवृत्तियों की मृत्युदर में कमी भी इसके लिए उत्तरदायी है। अब 45 के ऊपर पहुँचकर अमेरिका में पुरुषों को तनाव की बीमारियाँ पकड़ती हैं। उनकी पत्नियाँ ही अधिकतर अब उनकी वारिस बनती हैं।

अमेरिका की आबादी सम्पूर्ण विश्व की आबादी का केवल 6 प्रतिशत है। पर अमेरिका में सारे विश्व का लगभग आधा उत्पादन होता है। इसका कारण है अमरिका की विशाल श्रमिक शक्ति अर्थात् उस वयवर्ग के लोगों की संख्या जो मशीनों को चला या उनका प्रबन्ध कर सकते हैं। 19.8 में 7 करोड़ से अधिक अमेरिकी लाभजनक पेशों में लगे थे। अनुमान है कि 1975 में यह संख्या 8.5 से 9 करोड़ के बीच होगी। काम-कर्ताओं में औरतों की संख्या (विशेषकर विवाहिताओं की) बढ़ रही है। 1870 से काम का सप्ताह 5 प्रतिशत दशक घट रहा है। इस दशाब्दी के मध्य सप्ताह लगभग 40 घण्टों का था। अनुमान है कि 1975 में स्वचालित यन्त्रों और बिजली से नियंत्रित मशीनों के दफ्तरों के प्रभाव के कारण काम का सप्ताह तीस या पच्चीस घण्टे का हो जाएगा। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि काम के घण्टे घटने पर भी उत्पादन बढ़ा ही है। अब लोगों का स्वास्थ्य पहले से अच्छा है, बेकारी कम होती है। शिक्षा की सुविधाएँ अधिक हैं।

पढ़ने में यह सब विजय के गीत का-सा लगेगा पर मेरा इरादा ऐसा नहीं है। किसी भी राष्ट्र के मानव-साधन[1] का वास्तविक बल उसके विस्तार में नहीं बल्कि सद्गुण में है। इस सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा इस अध्याय के अगले अनुभाग में होगी। अभी तक आबादी की वृद्धि उतनी नहीं हुई है जितनी अब ऊर्जा के साधनों या उद्योग तथा कृषि की उत्पादन क्षमता या प्राप्त रहने योग्य स्थान है। जितनी तेजी से अमेरिका की आबादी बढ़ रही है उसे देखते इस बात का खतरा है कि औद्योगिक कारखाने या कृषि उसे सम्भाल न सकेंगे। अमेरिका आज जितना कच्चा माल पैदा करता है उससे अधिक खर्च करता है। कच्चे माल की प्रति व्यक्ति माँग भी बढ़ती जा रही है।

इसलिए इस दशाब्दी के मध्य में अमेरिकी साधनों और जनसंख्या के बहुत-से विद्यार्थी बच्चों के इस बूम को देखकर भय से काँपने लगे हैं। उनको विश्वास हो गया है कि उपयुक्त योजना के अभाव और संख्यासुर की भक्ति के फेर में अमेरिका इतने बच्चे पैदा करेगा जो उसके धन और शक्ति की मात्रा से बहुत अधिक होंगे और इस प्रकार उनके जीवन का स्तर गिर जाएगा। वे यह स्वीकार करते हैं कि अमेरिका में आबादी का घनत्व अभी कम है। अमेरिकी महाद्वीप में एक अरब की आबादी तक का पालन हो सकता है। किन्तु उनका तर्क यह है कि

1 Human resources.

ऐसे अमेरिका में जीवन-स्तर गिर जाएगा। भोजन को कृत्रिम साधनों से परिष्कृत करना पड़ेगा। दैनिक जीवन उलझनों और चिन्ताओं से भरा होगा। फिर अतिक्रमणकारी प्रवृत्तियों को कोई रोक न सकेगा। इस माल्थसपूर्ण तर्क[1] के अतिरिक्त सौन्दर्यवादी दृष्टिकोण[2] भी है। कल्पना तो कीजिए सारी खाली जगह में आदमी भरे पड़े होंगे। बड़े शहर कैंसर की तरह गाँवों की ओर बढ़ जाएँगे। इसलिए विद्वानों की ओर से 'जनसंख्यानीति' के निर्माण की माँगें बढ़ती जा रही हैं।

मैं 'परिवार-नियोजन' के विरुद्ध तर्क नहीं कर रहा हूँ। परिवार नियोजन आबादी नियंत्रण के प्रश्न को वहीं छोड़ देता है जहाँ वह है। किन्तु मैं किसी 'राष्ट्रीय जनसंख्या नीति' के पक्ष में नहीं हूँ। ऐसी नीति यह मानकर चलती है कि अमेरिका के लिए कोई आदर्श जनसंख्या हो सकती है जहाँ हमें किसी नीति के द्वारा पहुँचना चाहिए। इस सम्बन्ध में सरकार को कोई फैसला देने का मतलब है कि हम जानते हैं या जान सकते हैं कि कोई 'आदर्श' जनसंख्या है और कैसे उसे जनता के निजी फैसले के ऊपर लागू कर सकते हैं। इस सम्बन्ध में मुझे संदेह है। 1921 से अब तक प्रवास के जो कानून बने हैं वे ऐसे ज्ञान को मानकर चलते हैं। किन्तु यह कहना कठिन है कि इन कानूनों से अमरिकी जीवन में समृद्धि या सद्गुणों की वृद्धि हुई है। यदि कोई मुझ से पूछे कि गणित योग्य भविष्य[3] में क्या मैं अमेरिकी आबादी को दृढ़तापूर्वक बढ़ते देखता हूँ तो मैं कहूँगा कि "क्यों नहीं"? अमेरिकी जीवन के बहुत-से गतिशील सद्गुण सतत जनवृद्धि की अत्यावश्यकता के कारण हैं। इसका अर्थ है नए मकान, नए स्कूल रहने के नए स्थान नई सड़कें और परिवहन बड़ा घरेलू बाजार, बड़ी श्रमिक शक्ति और अधिक उत्पादन।

भूतकाल में जब किसी राष्ट्र ने जनसंख्या नीति अपनाई है उसका उद्देश्य होता था कि अधिक बच्चे पैदा किये जाएँ या कम बच्चे पैदा किए जाएँ। अधिक बच्चे पैदा करने का कारण या तो राष्ट्र की धारा के रुक जाने का भय था (जैसे रोम साम्राज्य या फ्रांस) या उसे युद्ध के लिए सैनिकों की आवश्यकता थी (जैसे जापान युद्धपूर्व इटली रूस)। कम बच्चे पैदा करने का कारण है अति जनसंख्या अकाल और बीमारी (जैसे भारत वर्तमान जापान लंका प्यूर्टोरिको)। स्वीडन की जनसंख्या नीति सबसे पुष्ट है। स्वीडन में जनसंख्या कम होने के कारण राष्ट्र की अवनति का खतरा है। इसलिए उसे रोकने के लिए वह जन्मदर बढ़ाना चाहता है। किन्तु अमेरिका में अभी न तो जनसंख्या की

1. Malthusian argument.
2. Aesthetic plea.
3. Calculable future.

अवनति और सांस्कृतिक पारस्परिक का खतरा है। न आबादी की इतनी बहुतायत ही है कि प्रश्न हो कि उनका पालन-पोषण कैसे किया जाए। अभी तक तो जनसंख्या में वृद्धि के कारण अमेरिका की आर्थिक व्यवस्था मजबूत ही हुई है। स्थिति यह है कि प्रचुर संख्या में प्रवास को कानून रहना का विरोध इसलिए होता है कि मुनवैज्ञानिकों को इन विदेशी जातियों की अधिक आगमन से भय है। किन्तु समझदार अमरिकी इस बात की चिन्ता नहीं करते कि प्रवासियों के कारण मूलतत्व की परम्परा की क्षति होगी या अमरिका में जनसंख्या आवश्यकता से अधिक बढ़ जाएगी क्योंकि उन्हें विश्वास है कि राष्ट्र नए तत्वों को भी पचा लेगा जैसा उसने भूत में किया है। हाँ अभिनायकवाद का भय अवश्य वास्तविक है और इस तर्क में भी दम है कि आबादी के दबाव से इसका खतरा बढ़ जाता है। फिर भी यह कोई बड़ा खटका नहीं है। यदि अमेरिका में कभी अभिनायकवाद आएगा तो वह इस कारण से नहीं बल्कि किसी दूसरे प्रबल कारण से आएगा।

इस बात की सम्भावना अत्यन्त न्यून है कि निकट भविष्य में अमेरिका को अति आबादी की समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। यद्यपि वर्तमान में अमेरिका में जन्मदर बढ़ गई है और मृत्युदर में कमी हो रही है तथापि संतति नियमन के साधनों की सतत बढ़ती जानकारी से आबादी पर नियंत्रण की पूर्ण सम्भावना है। निश्चित है समय से वृद्धि की यह गति अवश्य कम हो जाएगी। जनसंख्या-आत्मघात और अति आबादी के खतरों के बावजूद स्वास्थ्यकर प्रवृत्ति बने रहने की सम्भावना है। आबादी नीति के सम्बन्ध में निर्णय अपने जीवन के उद्देश्यों और अपने ज्ञान के प्रकाश में परिवार वाले स्वयं करेंगे।

6 जनकल्याण के साधन

*(स्वास्थ्य, भोजन, आवास और सुरक्षा)*

आबादी के प्रश्न में सख्यातुर सम्प्रदाय[1] का कोई अर्थ नहीं है। हाँ, यदि उसका सम्बन्ध जनता के जीवन गुण की फिक्र से हो तो इसका अर्थ है। मैंने जनता के जीवन के गुण की चर्चा की है। उसकी जन्मजात-क्षमता[2] की नहीं क्योंकि यह तर्क करना बेकार है कि अमेरिकियों की जन्मजात-क्षमता में कोई खोट आ गई है। यदि कोई यह सिद्ध भी कर दे कि ऐसा कोई दोष आ गया है तो भी सुधार का कोई कार्यक्रम ऊपर से थोपकर उसे पूरा कराना समझ के बाहर की बात है। अधिक से अधिक हम जनता से यही पूछ सकते हैं कि क्या तुम्हारे पास स्वस्थ जीवन-यापन के लिए जो आवश्यकताएँ होती हैं वे सब हैं? क्या

1 The Cult of Numbers

2. Innate capacity

अमेरिकी संस्कृति जनकल्याण के ये सब साधन उन्हें उपलब्ध करती है ?

जनकल्याण के साधनों[1] से मेरा तात्पर्य केवल जीवन की मौलिक आवश्यकताओं से है जैसे स्वास्थ्य और चिकित्सा-सेवा भोजन वस्त्र आश्रय शिक्षा और सुरक्षा। मैंने इसमें व्यक्ति और व्यक्तित्व की मोटी-मोटी आवश्यकताओं को ही सम्मिलित किया है। किसी भी संस्कृति को यदि उसे असफल नहीं होना है तो अपनी जनता का कम-से-कम ये आवश्यकताएँ तो उपलब्ध करनी ही होंगी। हर क्षेत्र में इन आवश्यकताओं का कोई न्यूनतम मानक अवश्य होगा।

अमेरिका में स्वास्थ्य समृद्धि अवकाश, सुरक्षा और सुख की दशा सुस्पष्ट है। सामग्री और साधनों की इतनी रेलपेल है कि जनकल्याण के साधनों के बारे में पूछताछ व्यर्थ मालूम पड़ती। यदि स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए आहार शास्त्रियों द्वारा निश्चित जीवन की आवश्यकताओं के न्यूनतम मानक का ही प्रश्न हो तो हम कह सकते हैं कि भोजन ही नहीं अन्य क्षेत्रों में भी अमेरिका का मानदंड ऊँचा ही होगा। किन्तु न्यूनतम पोषण से आगे आप्टिमम पोषण[2] होता है। जिसके आगे भोजन में जिह्वा स्वाद और अमीरों के शौक से चाहे हम कुछ भी खाएँ पर स्वास्थ्य को विशेष लाभ नहीं होता। इस दृष्टि से अमरिका में जनकल्याण के साधनों पर पुनर्विचार करना पड़ेगा। अमरिका के राष्ट्रीय उत्पादन और जीवन मान की दरें ऐसी हैं जो जीवन-यापन की सारी परिकल्पनाओं को चीर देती है। किन्तु हम जब ऐसा कोई मानक बना लेते हैं तो फिर सारी अपर्याप्तताएँ प्रकट हो जाती हैं। जब फ्रैंकलिन रूजवेल्ट ने कहा कि 'तिहाई राष्ट्र के मकान गन्दे हैं कपड़े खराब हैं और आहार अपर्याप्त है' तो उनका तात्पर्य यही था कि इतने समृद्ध देश में यह अवस्था मर्यादा के बाहर है।

यह देखने में अवश्य पर सत्य बात सबसे अधिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रकट होती है। डाक्टरों की संख्या और उनकी प्रवीणता अस्पतालों के संगठन चिकित्सा के क्षेत्र में अनुसंधान की गहराई, निदान और भेषज-विज्ञान आधुनिक मशीनों औज़ारों और दवाओं की प्रदर्शनी और रोगों पर विजय-प्राप्ति को देखें तो इस क्षेत्र में अमेरिका की प्रगति काफ़ी अच्छी है। सर विलियम ओस्लर ने 1913 में लिखा था "प्रत्येक पीढ़ी के भाग्य में नहीं बदा होता कि वह क्रान्ति के बीच से गुज़रे और स्वास्थ्य की नई योजनाओं पुनर्गठित चिकित्सा विद्यालयों नए ढंग से गठित अस्पताल तथा मानवता के प्रति नए दृष्टिकोण की साक्षी बने।" 1911 में चार्ल्स जे॰ हिंगरसन ने इसी क्रान्ति की चर्चा

1 Sinews welfare.

2. Optimum nutrition.

की थी जब उसने कहा था कि "दवादारू की अमेरिका में अब इतनी प्रगति हो चुकी है कि जिससे अब कोई बीमार किसी बेसिर-पैर की बीमारी होने पर किसी भी चिकित्सक से चिकित्सा कराकर 50-50 की उम्मीद रखने की अच्छी दशा में पहुँच चुका है।

पिछली आधी शताब्दी से चिकित्सा की दृष्टि से अमेरिकी जादू के युग और देश में रह रहा है। इस जादू को देखकर वह अचम्भित है। इस पर कभी कभी वह क्रुद्ध भी हुआ है और उसने इसका प्रतिरोध भी किया है किन्तु अन्त में उसने यही कहा है कि इसका लाभ सबको मिलना चाहिए। द्वितीय महायुद्ध में जब अमेरिकी दवादारू अन्य कर्म और वस्तु चिकित्सा के अनुकरणीय साधन मिसिसिपी या ओक्लाहोमा के गरीब से-गरीब व्यक्ति के लिए भी सुलभ हो गए व इस प्रकार वे आम सतह पर आ गए। यह विचार दृढ़ होने लगा कि अच्छी-से-अच्छी चिकित्सा की प्राप्ति सभी का संविधानसिद्ध अधिकार है। यह हमारे युग का एक नया फर्मान है। जो कभी केवल धनवानों का द्वारा समझा जाता था वह सबके लिए आवश्यक बन गया है। अब अर्थशास्त्री अमेरिका की स्वास्थ्य क्षेत्र में 'आवश्यकता' का सर्वेक्षण कर रहे हैं क्योंकि अब यह मान लिया गया है कि नियमानुसार यह सबका अधिकार है। चिकित्सा के क्षेत्र में चाक्षुषों से भी अधिक महत्त्व स्वास्थ्य के क्षेत्र में हुई इस क्रान्ति का है।

किन्तु निराशा की बात यह है कि इस अद्भुत कौशल और उपायों से जहाँ अनेक भयंकर संक्रामक रोगों का आमूल नष्ट कर दिया गया है शिशु जन्म का सारा वातावरण ही परिवर्तित हो गया है और सारा मानव-शरीर देदीप्यमान अनुसन्धान की वस्तु बन गया है वहाँ स्वस्थ आबादी नहीं पैदा हुई है। दक्षिण कैरोलिना और कोनक्टिकट, देहात और शहर या गन्दी बस्तियों तथा स्वस्थ वायु वाले लोगों और मध्यवर्ग के लोगों के स्वास्थ्य-चित्र में भिन्नता है। यदि मानसिक स्वास्थ्य का चित्र देखें तो पाएँगे कि एक करोड़ अमेरिकियों (सोलह में एक) की गणना मानसिक अस्वस्थों में है। इनमें 16 लाख स्नायविक टिक हैं। जितने दूसरे रोगों के बीमार अस्पतालों में हैं उतने ही मानसिक रोगों के हैं।

सेना में भर्ती में अस्वीकृत सदस्यों का प्रमाण तो और भी नाटकीय है। 1940-41 में 20 लाख युवक (18 से 20 की उम्र के) बुलाये गए। इनमें 50 प्रतिशत शारीरिक और मानसिक त्रुटियों के कारण छाँट दिए गए। द्वितीय महायुद्ध के अन्त में यह संख्या 33 प्रतिशत थी। किन्तु इसका कारण यह था कि उस समय स्टैंडर्ड ढीला कर दिया गया था। 1949-52 में 45 प्रतिशत अस्वीकृत हुए। कोरिया युद्ध के प्रारम्भ में संख्या 59 प्रतिशत पहुँच गई थी किन्तु अन्त में फिर 33 प्रतिशत रही। इन संख्याओं का उपयोग आलोचनात्मक

दृष्टि से ही करना चाहिए। आँखों या कानों की कमजोरी या शरीर के अन्य किसी अंग की खराबी या साइकान्यूरोटिक[1] के कारण सेना वाले किसी को न लें पर वह व्यक्ति दूसरे काम तो कर ही सकता है और दीर्घायु भी हो सकता है। यह भी सच है कि स्वयंसेवकों की संख्या बढ़ जाने पर अस्वीकृतों की प्रतिशत और घट गई। यह तर्क दिया जा सकता है कि अमेरिकी सेना में भर्ती के लिए स्वास्थ्य का स्टैंडर्ड ऊँचा है क्योंकि भर्ती की उम्र के युवकों की संख्या अधिक है और उनमें से उन्हें अपने काम की संख्या मिल जाती है। फिर भी किसी भी चिकित्सा की महान् प्रगति के युग में राष्ट्र के लिए यह संख्या काफी बुरी है। बड़ी बात यह है कि इनमें बहुत-से युवक सच्चे थे। इसका अर्थ यह हुआ कि वे उस वर्ग के थे जिनके लिए आर्थिक दृष्टि से चिकित्सा पहुँच के बाहर थी या फिर वे ऐसी पिछड़ी जातियों के थे जहाँ डाक्टर कम थे और अस्पताल की सुविधा अपर्याप्त थी। स्थायी रोगों की संख्या तो चित्र को और काला बना देती है। प्रत्येक 6 में 1 अमेरिकी किसी-न किसी स्थायी रोग से पीड़ित है। इनमें भी 60 से 70 लाख व्यक्ति भयंकर रूप से बीमार हैं। इन रोगों में आर्थराइटिस, हाइपरटेंसन आर्टिरियोस्क्लेरोसिस सेरेब्रल पैल्सी और मैस्कुलर डिस्ट्रोफी[2] जसे रोगों के भी रोगी हैं।

इन संख्याओं ने आँखें खोल दी हैं। अब बार-बार 'स्क्रीनिंग' होती है, रोग के शीघ्र निदान और रोकथाम की ओर अधिक ध्यान दिया जाने लगा है। जनता को स्वास्थ्य की शिक्षा देने के लिए आन्दोलन चलाए जाते हैं और पुनर्वास का कार्य बड़े परिश्रम से किया जाता है। डाक्टरों की निरन्तर कमी की समस्या भी सामने आई है। 1955 में अमेरिका में कुल सवा दो लाख अर्थात् प्रति 720 व्यक्ति के पीछे एक डाक्टर था। समस्या यह नहीं है कि डाक्टरी पेशे की ओर कम लोग आकर्षित होते हैं बल्कि समस्या यह है कि अनेक कारणों से (उदाहरणार्थ आर्थिक और जातिगत कारणों से) लोग निरुत्साहित होते हैं। डाक्टरी की शिक्षा के लिए पर्याप्त स्कूलों और उनके खर्च के लिए पर्याप्त धन की कमी है। संघ ने छात्रवृत्तियों से सहायता देनी चाही पर उसे इस कारण ठुकरा दिया गया कि इससे स्कूलों पर उनका प्रभाव बढ़ जाएगा। मजेदार बात यह है कि संघ द्वारा दिया गया अनुसन्धान के लिए धन बड़ी प्रसन्नता से स्वीकारा जाता है। संघ की सहायता तो ठुकरा दी गई किन्तु उसके स्थान पर उद्योगों से सहायता भी नहीं मिल पा रही है जिसे भय रहित समझा जाता है।

एक बड़ी कठिनाई है स्वास्थ्य के सम्बन्ध में अधिक खर्च की विशेषकर

1 Psychoneurotic.

2 Arthritis Hypertension, Arteriosclerosis, Cerebral pa sy and Muscular dystrophy

निम्न मध्यवर्ग के लिए जो न तो सार्वजनिक अस्पतालों में जाना चाहता है, न अपने खर्च से महंगी चिकित्सा करा सकता है। डाक्टर के यहाँ जाने पर 5 डॉलर घर बुलाने पर 10 डॉलर सर्जरी की ऊँची फीस विशेषज्ञों से परामर्श की फीस तो आसमान छू जाती है उस पर एक्सरे आदि का खर्च अलग से। ऊपर से दवाओं के दाम तो अभी बाकी हैं ही। मतलब यह कि कम आय के परिवारों का बीमारी में दिवाला निकल जाता है। इसमें डाक्टरों का दोष नहीं है। उनमें अधिकांश परिश्रमी हैं। अमरिका-जैसे धनलोलुप और तड़क-भड़क देश में हम उनसे तापस जीवन और त्याग की उम्मीद कैसे करें? अनिवार्य स्वास्थ्य बीमा की योजना भी जिसमें मुख्य रूप से संघ का ही व्यय होता पर उसका अमरिकन मेडिकल एसोसिएशन की ओर से यह कहकर घोर विरोध हुआ यह तो 'पंचायती दवा' है। एसोसिएशन शिकायत करता है कि प्राय उस पर गालियों की बौछार होती है किन्तु वह भी निर्दोष नहीं है। उसने बड़ी चतुराई से स्वास्थ्य-सुरक्षा की योजनाओं पर राजनीतिक विरोध का संगठन किया। वह यह भूल गया कि यद्यपि पेशा निजी क्षेत्र है पर युद्ध और शिक्षा को छोड़कर जनता के हित से उसका सबसे गहरा सम्बन्ध है।

इच्छापूर्वक हो या अनिच्छापूर्वक स्वास्थ्य सुरक्षा के क्षेत्र में प्रगति हो रही है। अस्पताल और (कुछ हद तक) डाक्टर की फीस के लिए स्वेच्छा से बीमा की व्यवस्था प्रगति कर रही है। आधी से अधिक जनता को आंशिक लाभ हो जाता है। सभी बीमारियों के लिए अग्रिम दे दिया जाता है या सेवा के लिए फीस—दोनों प्रकार की व्यवस्था है। मालिक-मजदूरों के बीच ऐसे करार हो जाते हैं जिनके द्वारा बीमारीकाल के लाभ और स्वास्थ्य की देख भाल का प्रबन्ध होता है। न्यूयार्क राज्य में राजकीय बेकारी बीमा में जितने व्यक्ति सम्मिलित हैं उनके तीन-चौथाई मालिकों द्वारा पोषित स्वास्थ्य और जनकल्याण की योजनाओं में सम्मिलित हैं। यद्यपि ऐसी योजनाएँ बराबर बनती जा रही हैं फिर भी बहुत-से अमेरिकी परिवार ऐसे हैं जिन्हें ऐसी किसी भी योजना का लाभ प्राप्त नहीं है। उदाहरणार्थ 10 लाख अमेरिकी परिवार ऐसे हैं जो अपनी सारी आय का आधा किसी गहरी बीमारी में खर्च कर देते हैं। स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओं के सामाजिक संगठन की दृष्टि से अमेरिका इंग्लैंड और स्वीडन से पीछे है। निजी हाथों में दवादारू का उत्पादन और वितरण रहने से अमरिका में स्वास्थ्य की योजनाएँ कैसे संकट में आ सकती हैं इसका एक दुःखद उदाहरण 1955 में जब देश में पोलियो का रोग जोर पकड़ गया था सामने आया। सही परिस्थितियों के अभाव में 'साक एण्टी पोलियो'[1] दवा जल्दबाजीपूर्वक बनाकर

---

1 Salk Anti-polio

बाद की बात कि अमेरिका में प्रारम्भ में काफ़ी समय तक मोटापा रहा।

1932 में स्वास्थ्य की देखभाल पर बनी समिति ने अपनी रिपोर्ट में लिखा था "युद्ध या शान्ति प्रत्येक समय में अमेरिका में मानव-साधन बेरहमी से नष्ट किया जा रहा है"। अब स्थिति निश्चय ही उतनी बुरी नहीं है। एक पीढ़ी में स्वच्छानिमित स्वास्थ्य योजनाएँ, डाक्टरों की संख्या उद्योगों में स्वास्थ्य और जनकल्याण की योजनाएँ वेटरनों[1] की संघ द्वारा देखभाल और दूसरे रूपों में संघ तथा राज्यों द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं की सहायता आदि की योजनाएँ कैसे पूरी हो जाएँगी।

प्रश्न बाक़ी है कि अमेरिका में बीमारियों की दशा कैसी है? इस सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि राष्ट्रीय बीमारियों का रूप बदलता रहता है। इससे संस्कृति के स्वरूप पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। 1900 के बाद से तपेदिक निमोनिया संग्रहणी ब्रोंकाइटिस इन्फ्लुएंजा अपेंडिसाइटिस रयूमेटिक बुखार और आतशक (गर्मी) के रोगों से होने वाली मृत्युओं में पर्याप्त कमी हुई है। उसके बाद भी मनुष्य मरते हैं—और भी दूसरी मारक बीमारियों का ज़ोर बढ़ गया है। हृदय के रोग सेरेब्रल हेमोरेज[2] आर्टिरिओस्क्लेरोसिस[3] कैंसर, और हिंसा से मृत्यु की संख्या अब बढ़ गई है। 1953 में सम्पूर्ण मृत्यु संख्या में 54 प्रतिशत हृदय रोग और अन्य सर्कुलेशन की बीमारियों से 15 प्रतिशत कैंसर से मरे। यानी 10 में 7 मृत्युएँ इस प्रकार हुईं। दूसरी बीमारियाँ जो अब बढ़ गई हैं उनमें प्रमुख हैं मानसिक रोग (1953 में 90 लाख) आर्थ्राइटिस[4] और वातज बीमारियाँ (सेरेब्रल पाल्सी एपिलेप्सी मल्टिपुल स्लेरोसिस पार्किन्सन की बीमारियाँ) जिनसे मनुष्य असक्त और पंगु हो जाता है। इनमें मानसिक रोगों के कुछ विशेष वर्गों को भी जोड़ना पड़ेगा। कम-से-कम 60,000 नशेबाज़ 40 लाख 'समस्या पियक्कड़'[5] जिनमें करीब 10 लाख जमकर शराबी हैं। इसमें और जोड़िये 10 में 6 या 7 अमेरिकी सिर दर्द से पीड़ित हैं। सेना में भर्ती के लिए प्रथम या द्वितीय युद्ध के आरम्भ में छाँटे गए व्यक्तियों में 40 प्रतिशत को निम्नलिखित कारणों से छाँटा गया मस्तिष्क के रोग, मानसिक हीनता यथा चोरी या समलिंगी कामुकता।

इसके विरोध में कोई तर्क कर सकता है कि 'स्वास्थ्य' की परिभाषा शारीरिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि कम की क्षमता की दृष्टि से भी करते ही हैं।

1 Veterans.
2 Cerebral hemorrhage.
3 Arteriosclerosis.
4 Arthritis.
5 Problem drinkers.

और कि इन बीमारियों के बावजूद भी अमेरिका में मृत्युदर घटी है और आयु बढ़ी है। किन्तु सच बात यह है कि अमरीकी बीमारियों की सफ़ाई के लिए की जाने वाली अतिप्रवीणता से ही उत्पन्न बीमारियों से ग्रस्त हैं। यह कहना मुनासिब है कि अमरिका में व्याप्त प्रमुख बीमारियाँ वर्तमान जीवन में तनाव की सूचक हैं और मोटर या कारखानों में दुर्घटनाएँ, अपमृत्युएँ, धमनी की बीमारियाँ, सेरेब्रल हेमोरेज की बीमारियाँ 'अमेरिका में निर्मित' के प्रमाण चिह्न हैं। फिर भी इसमें सच्चाई है। इस शताब्दी के बीसे और तीसे को किसी ने 'एस्पिरिन युग' कहा था। यदि ऐसी बात है तो चालीसे और पचासे को 'नींद की गोली' का युग या 'अपमृत्यु का युग' या 'प्रशान्तिकारक युग'[1] कहना चाहिए। एसलोप ने यह बतलाते हुए कि अमेरिकियों ने छूत की बीमारियों पर विजय प्राप्त कर ली है उन्होंने अपना आयुष्य बढ़ा लिया है अब उन्हें दूसरी भयंकर और क्षयकारक बीमारियों का मुकाबला करना चाहिए। लिखा है कि "हमने मौत के स्थान पर अस्वस्थता को अपना लिया है"। अमरीकियों ने रोग के कीटाणुओं और बैसिलस का रास्ता तो पता लगा लिया है किन्तु अभी वे इसके हटाने का पता नहीं लगा पाए हैं। इस प्रकार हृदय और मस्तिष्क की बहुत-सी बीमारियों में भी कई बातों में उन्हें सफलता नहीं मिल पाई है।

अमरीकी को होने वाली बीमारियों के स्वरूप का ज्ञान राष्ट्रपति आइजनहावर को 1955-56 में हुए कोरोनरी और गैस्ट्रोइन्टेस्टिनल के आक्रमणों से हो सकता है। महीनों तक अमेरिकियों का ध्यान किसी राजनीतिक उलझन से अधिक राष्ट्रपति के शरीर के आन्तरिक भागों के घावों और आपरेशनों तथा शरीर के चालन की ओर था। इससे अमेरिकियों को अपने स्वास्थ्य की चिन्ता अधिक थी। सभी अधेड़ व्यक्ति राष्ट्रपति के शरीर में अपनी परछाईं देख रहे थे। राष्ट्रपति की अंतड़ियों के सम्बन्ध में कुछ जानकारी देकर डाक्टर पॉल ह्वाइट ने कहा था कि अमेरिकी अब अंतड़ियों के प्रति सजग हो गए हैं। राष्ट्रपति के डाक्टरों ने जब उनके जीवन के प्रति आशा व्यक्त की तो अमेरिकियों की प्रतिक्रिया क्या हुई यह संसार में कहीं तो एक लेखक की एक पुस्तक के शीर्षक से कह सकते हैं 'भगवान मुझे हृदय के दौरे से बचायें'।[2]

भाग्य का खेल तो देखिए कि अमरिका में स्वास्थ्य के क्षेत्र में जिन डाक्टरों स्वास्थ्य प्रबन्धकों और अनुसन्धायकों के कारण इतनी सफलता मिली है वे ही बेचारे जल्दी मर जाते हैं। कारण तनाव की बिमारियाँ हैं। स्वास्थ्य और बीमारियों के सम्बन्ध में अमरीकी दृष्टिकोण में कुछ विशेषताएँ हैं। टाइम और रीडर्स डाइजेस्ट में स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रगति की आश्चर्यपूर्ण कहानियाँ निकलती

1 Sleeping-pill age Coronory age Tranquilizer age
2 Thank God for my Heart Attack.

है। इनकी बिक्री भी खूब है। अमरीकी 'आश्चर्यपूर्ण औषधि' ऐन्टीबॉयटिक्स के सम्बन्ध में अति उत्सुक होते हैं। पेंसलीन की उपयोगिता में उनका अगाध विश्वास है (1945-65 के दशक में उन्होंने 3000 टन पेंसलीन ली) यही हाल विभिन्न मायसिनों क्लोरमिसेन और ए०-सी०-टी० एच० का है। अब स्थिति यह है कि उनके शरीर में इन दवाओं के प्रति शारीरिक प्रतिरोध पैदा हो गया है। नई दवाओं और गोलियों का असर उन पर तत्काल होता है—सोने की गोली अधिक जागने की गोली उन पर तुरन्त असर करती है। इसी प्रकार अस्पतालों में अब बिजली और इन्सुलिन का इलाज आवश्यकता से अधिक प्रयोग में आने लगा है। सर्वत्र बड़े पैमाने की बिमारियों का बड़े पैमाने पर इलाज भी होने लगा है। प्रयत्न इस बात का है कि कोई नजदीकी रास्ता निकल आए।

सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में स्वास्थ्य के संयोजकों ने 'अभियान' छेड़ दिए हैं—दिल की बीमारियों के विरुद्ध कैंसर के विरुद्ध सेरेब्रल पल्सी के विरुद्ध। इसके दो कारण हैं, 1 शोध के लिए धन संग्रह 2. जनता को इन घातक बीमारियों के विरुद्ध सावधान करना। उन्होंने इनके बीमारों की संख्या मनुष्य दिन की हानि मृत यदि जीवित होते तो राष्ट्रीय आय में कितना देते आदि के सम्बन्ध में आंकड़े एकत्र किए हैं। प्रत्येक समय कोई न कोई अभियान चलता ही रहता है। फल यह हुआ है कि अब जनता इन बीमारियों के प्रति सजग ही नहीं उत्सुक भी हो गई है। चिकित्सा के क्षेत्र में इस अपार प्रगति से जहाँ एक ओर जीवन बढ़ा है वहाँ सारा राष्ट्र मन और शरीर के प्रति चिन्ताग्रस्त हो गया है। सभी को अपने भोजन के प्रति चिन्ता है वे खाने की या शान्ति की गोलियाँ खाते हैं। नाड़ी की गति गिनते हैं रक्त-चाप का चार्ट देखते रहते हैं। सिगरेट क्यों नहीं छोड़ पाते हैं इसके लिए चिन्तित रहते हैं। गुर्दे और आँतों पर सांस रोककर विचार करते हैं। नतीजा यह होता है कि स्नानघर में दवाओं की अलमारियाँ पेटेंट दवाओं की शीशियों से भरी रहती हैं। बड़े-बड़े दवाओं के कारखाने इसी से तो चलते और बढ़ते हैं।

विदेशी पर्यवेक्षकों ने अमेरिका के बारे में एक बात नोट की है कि सभी अमेरिकी डाक्टर शोध करना चाहते हैं और सभी चिकित्सा विद्यालयों (संसार भर में ये उत्तम माने जाते हैं) का अधिकांश समय अज्ञात की खोज में जाता है। जो ज्ञात है उसे कैसे अच्छी भांति उपयोग में लाया जाए इसकी चिन्ता के लिए उन्हें कम-से-कम समय मिलता है। यद्यपि इधर सामान्य चिकित्सकों की संख्या में कुछ वृद्धि हुई है पर दीर्घकालीन प्रवृत्ति तो इन दो दिशाओं की ओर ही है—(1) और अधिक विशेषज्ञता जिसका अर्थ होगा कि कोई डाक्टर अब पूरे बीमार को नहीं देखेगा और भविष्य का डाक्टर डाक्टरों की एक टीम का सदस्य भर रहेगा और (2) स्वास्थ्य की देख-रेख के लिए नए संस्थागत रूपों का विकास।

चिकित्सा के क्षेत्र में वृहद् वृद्धि होने के कारण अच्छी चिकित्सा सामान्य मज़दूर की पहुँच से परे है —खासकर एपमिक मध्यवर्गकों के। इसलिए निश्चित है कि सम्मिलित स्वास्थ्य योजनाओं और मज़दूर संघों के कार्यों की ओर प्रवृत्ति बराबर बढ़ेगी। अमेरिका में चिकित्सा सरकार के वश में चाहे न रहे पर मज़दूर संघों और नियमों के चंगुल से नहीं छूट सकती। भविष्य में चिकित्सा मस्तिष्कों के नए स्वामी ये होंगे। यह सब समझ में आने वाली बात है। क्योंकि अमरिका में चिकित्सा की प्रतिमा सदा से संगठनकारी प्रतिमा रही है।

स्वास्थ्य के बाद अमेरिकी जिस वस्तु की अधिक परवाह करता है वह है सुरक्षा। जो लोग 'कल्याणकारी राज्य' के 'बढ़ते हुए समाजवाद' के कट्टर विरोधी हैं वे भी इस सम्बन्ध में चिन्तित हैं। कई पीढ़ियों से अमेरिकी अपने ढंग से इस दिशा में प्रयत्न कर रहे हैं। सरकारी सुरक्षा की पूर्ण व्यवस्था के विचार से कुछ लोग भड़क उठते हैं क्योंकि वे सोचते हैं (शायद ग़लत ढंग से) कि यह प्राइवेट बीमा कम्पनी को तहस-नहस कर देगी। इनके स्वार्थ उद्योग बैंकिंग और शासन के प्रत्येक क्षेत्र में घुसे हुए हैं। इस प्रकार अमेरिकी सुरक्षा व्यवस्था का निजी क्षेत्र तो एकदम अछूता पड़ा है। इसमें आकर जुड़ गया है संघीय बुढ़ापा और उत्तर जीवियों का बीमा और राज्य बेकारी बीमा जिसमें मज़दूर और मालिक दोनों चन्दा देते हैं। एक व्यवस्था और है जिसके द्वारा संघ राज्यों को अंध और अपंगो तथा बूढ़ों और बच्चों की देख-रेख के लिए अनुदान देता है।

न्यू-डील में तो यह सब बड़ा क्रान्तिकारी माना गया था पर अब यह सामान्य बात है। अब रिपब्लिकन पार्टी सरकार और कांग्रेस दोनों पर शासन करती है तब भी। बूढ़े और उत्तर जीवियों के बीमे की मूल व्यवस्था को अभी हाल में घरेलू और खेतिहर मज़दूरों पर भी लागू कर दिया गया है। पर अस्थायी मज़दूर अभी भी इस व्यवस्था के बाहर हैं। बेकारी के बीमे की व्यवस्था अभी भी अपर्याप्त है। इसकी परिधि में उन सभी कार्यकर्ताओं को सम्मिलित कर लेना चाहिए जो किसी भी पेशे में लगे हों। उद्देश्य यह कि कोई किसी पर निर्भर रहने के कारण उसकी सहानुभूति का शिकार न हो। एक दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह हुई है कि अब नियम और मज़दूर-संघ [illegible] योग आर्थिक लाभ और निश्चित वार्षिक मज़दूरी आदि के द्वारा सुरक्षा की आंशिक ज़िम्मेदारी ले रहे हैं। इन सब नियोक्ताओं के द्वारा ही अमरिकी सुरक्षा व्यवस्था का स्वरूप निखर रहा है।

यदि सुरक्षा की चाहतों के माध्यम से कल्याण राज्य का जन्म होने वाला है इसलिए अमरीकी प्रणाली के आरम्भ से ही इस सम्बन्ध में काफी शोरगुल मचता रहा है। इस प्रणाली में ऐसे अनेक सुधारवादी आन्दोलन चले हैं।

इसमें डेमोक्रेटिक और उदार रिपब्लिकन दोनों शासनों को व्यस्त स्वामियों से लोहा लेना पड़ा है। 1900 से प्रथम विश्वयुद्ध के बीच के काल में राष्ट्रीय स्तर पर ऐसी अनेक संस्थाओं की स्थापना हुई जिनका उद्देश्य बाल-मजदूर, मानसिक-स्वास्थ्य जन-स्वास्थ्य शिशुरक्षण मजदूर-कानून पास कराना या इसी प्रकार के जनकल्याण के कार्य थे। न्यू डील के काल में पूर्व के कार्य और पुष्ट किये गए। साथ ही ऐसे कार्य भी प्रारम्भ किये गए जिनका फल 1935 के सामाजिक सुरक्षा कानून में हुआ। पिछले दो दशकों में इसका बार-बार विस्तार हुआ है। किन्तु इस शताब्दी के मध्य में भी इसमें कहाँ-कहाँ और क्या कमियाँ हैं स्पष्ट है। आवश्यक स्वास्थ्य बीमा जैसी कोई व्यवस्था अब भी नहीं बन पाई है और न कोई ऐसी दूसरी व्यवस्था ही है जिससे स्वास्थ्य की सुविधाएँ बेरोक-टोक सबको प्राप्त हो सकें। सामाजिक बीमे के सिद्धान्तों को शारीरिक अयोग्यता बीमारी या बुढ़ापे के सहारे के लिए लागू किया जाना चाहिए। पर अभी तक ऐसा कुछ भी नहीं हो सका है। अपने कर्म-काल में काम के अतिरिक्त यदि किसी दूसरे कारण से कोई शारीरिक दृष्टि से अयोग्य हो जाए तो उसके परिवार के भरण-पोषण का कोई प्रबन्ध नहीं।

इन प्रवृत्तियों का व्यक्तिवादी अमेरिकन विचारकों ने शुरू से विरोध किया था। न्यू इंग्लैण्ड मानववादी आन्दोलन को देखकर इमर्सन ने कहा था "रे मूर्ख दानियों मैं तुमसे कहता हूँ कि यदि मैं एक कौड़ी भी ऐसे आदमियों को देता हूँ जो मेरे नहीं हैं या मैं जिनका नहीं हूँ तो मुझे खलता है। उसने इसे 'अलेबाज को भीख'[1] की संज्ञा दी थी। फिर भी दानियों के कारण ही नहीं बल्कि आवश्यकता के कारण जनकल्याण के कार्यों का काम किया। 'बड़ी मन्दी' के कारण लोगों को बड़ा मानसिक धक्का पहुँचा। उसने स्पष्ट कर दिया कि भाग्य का चक्र यदि चल जाए तो जो लोग आर्थिक दृष्टि से बड़े पुष्ट समझे जाते हैं वे भी बरबाद हो सकते हैं। इस प्रकार अमरीकी दिमाग में अरक्षा का भय बैठ गया। इससे यह प्रकट हो गया कि दुर्दशाग्रस्तता का प्रश्न अकेले किसी व्यक्ति का नहीं बल्कि सारे समाज का है। द्वितीय विश्वयुद्ध और कोरिया की लड़ाई से यह स्पष्ट हुआ है कि बीमार और असमर्थ मानसिक-अपाप्य और कुपोषित गन्दी बस्तियों और वातावरण में पले व्यक्ति सम्पूर्ण राष्ट्र की मानव-शक्ति के लिए भार स्वरूप हैं। इस प्रकार इनके कल्याण के लिए जो कुछ हो रहा है वह युद्ध के कारण—चोर दरवाजे से है। वैसे मात्र मानवता के भरोसे तो न जाने कब तक ये कार्य पड़े रहते। फिर भी इमर्सन की गालियों के बावजूद अमेरिकियों में भी अपने भाई-बन्धुओं के प्रति उतनी ही सहानुभूति है जितनी

1 Alms for sots.

किसी भी देश की जनता में। टेक्निकल और आर्थिक समृद्धि के हर युग में अयोग्य और असफल व्यक्तियों के प्रति दुहरी भावना—घृणा और सहानुभूति की रहती ही है।

अभी तक अमरिका में मजदूरों के मुआविजे बेकारी भत्ते बुढ़ापा बीमा इमदादी कम लाभ के मकान स्वास्थ्य बीमा संघ चालित कल्याण फंड या धार्मिक मजदूरी आदि के सम्बन्ध में जो कुछ हुआ है वह छिटपुट ही हुआ है। इसमें एक प्रकार का सातत्य तो है पर वह दूसरे किस्म का है। कल्याण के प्रत्येक क्षेत्र म जो कुछ हुआ है उसमें उत्तरदायित्व की स्वीकृति तो है किन्तु उसमें किसी उद्योग का कम-से-कम छूने और कर के ढाँचे पर कम-से-कम दबाव—जोर दिया गया है। स्वेच्छा के सिद्धान्तों पर अधिक विश्वास किया है। मोटा सूत्र यह रहा है कि एक ऐसे धरातल का निर्माण किया जाए जिसके नीचे सुरक्षा और कल्याण न गिर सकें। सरकारी फंड का उपयोग सामाजिक बीमा के और अधिक आवश्यक रूपों में किया जाए। राज्यों को अधिक-से अधिक स्वतन्त्रता दी जाए। केन्द्रीकरण कम-से-कम किया जाए। कर्म-बीमा पर जहाँ तक हो सके अधिक-से-अधिक विचार किया जाए। सरकारी धन हो तब भी प्राइवेट कम्पनियों के माध्यम से काम किया जाए (जैसे मजदूरों के मुआविजे के क्षेत्र में)। सामान्य नागरिकों से अधिक सैनिकों के लिए प्रबन्ध किया जाए और कार्यक्रम के विस्तार का भार जनमत के दबाव पर छोड़ दिया जाए।

अधिक सम्भावना है कि ये दबाव जारी रहेंगे। कल्याण रक्षा के कार्यक्रम अधूरे हैं कुछ क्षेत्रों में तो दयनीय रूप में हैं। बीमे के लाभ बहुत अल्प हैं। इस प्रकार उभरता है कि अपर्याप्त भोजन घर और शिक्षा तथा मानसिक सुरक्षा की भावना पीढ़ियों चलेगी। सुरक्षा के लिए धन के साधन व्यक्ति की सामर्थ्य पर छोड़ दिये गए हैं।

यही बात कल्याण के अन्य साधनों के सम्बन्ध में है। यद्यपि अभी बहुत कुछ करने को है पर सुरक्षा की समस्याओं का अमेरिका ने जिस रूप में सामना किया है उसमें यूरोप की नकल मात्र नहीं है बल्कि उसका अपना निजत्व भी है। इसके लिए उसे धर्म विचार और भावना के क्षेत्र में एक क्रान्ति के बीच से गुजरना पड़ा है। फलस्वरूप आज जनकल्याण का जो ढाँचा अमरिका में है वह बीमे के अमरिका से एकदम भिन्न है। यूरोप वाले बीमे के ही उस ढाँचे को अपना आदर्श माने बैठे हैं।

अमेरिकियों के निवास की क्या स्थिति है? मानव शास्त्र की शब्दावली में किसी जाति के लिए आश्रय-स्थान चाहिए, समाज-शास्त्र की शब्दावली में प्रत्येक जाति बिरादरी कम्युनिटी के लिए मकान चाहिए, मनोविज्ञान की शब्दावली में प्रत्येक परिवार अपना घर चाहता है। संख्या विचारकों के

के आवास-फ्लैट अपार्टमेंट कतारों में बने मकान या इस्टेटों की चर्चा की है। मुख्य बात यह नहीं कि सिर छिपाने के लिए आश्रय है कि नहीं बल्कि प्रश्न यह है कि जगह साफ-सुथरी है या बीमारियों का घर है, खुली है या सीलन से भारी सुन्दर है या उजाड़ और बदशक्ल। अमेरिका में आज इतनी समृद्धि है कि 'पर्याप्त' आश्रय ही आज उस समाज का मानदंड नहीं है।

मध्यशती में अमेरिका में एक तिहाई जन-संख्या के आवास ठीक नहीं थे। अब यह बात नहीं। अब अधिक आय और कम आय दोनों एकान्तों की आवास स्थिति में अन्तर आया है। अब करोड़पतियों के गगनचुम्बी प्रसाद भी पसन्द नहीं किये जाते। अब बड़े-बड़े सेठ भी अपनी इस्टेटों में सादगी से रहते हैं। इसी प्रकार गन्दी बस्तियाँ शरीर के व्रण की भाँति मिटाई जा रही हैं और उनके स्थान पर नए मकान उठ रहे हैं। सबसे अधिक मकान—कार्यों—मध्य आय वालों के बने हैं।

अमेरिका में गृह-निर्माण के क्षेत्र में पूरी क्रान्ति ही हो गई है। प्रथम महायुद्ध से पूर्व के दशक में अमेरिका में कई आन्दोलन अमेरिकी जीवन में अपर्याप्तताओं को दूर करने के लिए चले थे। इसमें एक आन्दोलन टेनेमेंट सुधार के लिए भी चला था। किन्तु तीसे के मध्य में न्यू डील के काल में गृह-निर्माण आन्दोलन को बड़ी गति दी। संघीय सरकार ने पिछड़े हुए गृह-निर्माण उद्योग में काफ़ी धन दिया जिसका उद्देश्य शहरों से गंदी बस्तियों को मिटाना था। करोड़ों अमेरिकियों के लिए पर्याप्त आवास की व्यवस्था करना आवश्यक हो गया था। न्यू डील के काल में जो रास्ता इसके लिए अपनाया गया वह उचित भी था। स्थानीय गृह-निर्माण संस्थाओं को इसके लिए धन दे दिया गया। ये प्राइवेट फर्मों के माध्यम से काम करती थीं। ऊँचे-ऊँचे मकान कतारों में बन गए। सामान्यतया इन्होंने एक क्षेत्र में आबादी का घनत्व तो अवश्य बढ़ा दिया पर ये मकान 'सुन्दर, सुरक्षित और साफ सुथरे' थे। इनके आस-पास हरे-भरे स्थान भी छोड़ गए थे। संघीय सरकार की इस योजना से बीमा कम्पनियों को प्रेरणा मिली और उन्होंने अपने नगर ही बनाने शुरू कर दिए। पुनर्वास प्रशासन की ओर से भी सरकारी कर्मचारियों और उद्योग योग्य मजदूरों के लिए 'हरी पट्टी वाले नगर'[1] बने। द्वितीय विश्वयुद्ध के काल में युद्ध-उद्योगों के केन्द्रों में यह प्रक्रिया चालू रही क्योंकि लोगों ने यह जान लिया था कि लोग ऐसे स्थानों में तब तक आयेंगे ही नहीं जब तक आवास आदि की समुचित व्यवस्था न हो। युद्ध के पश्चात् भी यह प्रक्रिया चालू रही क्योंकि युवक भूतपूर्व सैनिकों के लिए मकानों की आवश्यकता थी। फिर गृह-निर्माण का दौर-दौरा चला।

1. Greenbelt Towns.

ट्रूमन और आइजनहावर के शासनकाल के एक दशक में एक करोड़ आवास बने। इनमें 3 से 4 करोड़ व्यक्ति बसाये गए। इनमें प्रत्येक मकान पर औसतन 10 000 डालर खर्च हुआ। कुल खर्च 100 बिलियन डालर हुआ। आज अमेरिका में गृह निर्माण का उद्योग सभी उद्योगों में बड़ा है।

अमेरिकी आवास का चित्र खींचने के लिए हमें शिकागो के दक्षिणी किनारे में या न्यूयार्क में प्यूरटोरिकन के 'बीटों' से प्रारम्भ करना पड़ेगा। ये उन मकानों में हैं जिन्हें 'खस्ता हालत में'[1] का विशेषण दिया गया है। इनकी संख्या 9 प्रतिशत है। ये बड़े शहरों की बरबादी का चित्र उपस्थित करते हैं। इसी प्रकार छोटे मोहल्लों वाले नगर हैं जहाँ 'सड़कों के दूसरे किनारे' छोटे-छोटे मकान बने हैं जो जाड़े में सर्द और गर्मियों में इतने गर्म होते हैं कि उनमें रहना बर्दाश्त के बाहर होता है। इनमें नहाने के कमरे नहीं के बराबर होते हैं। चूहे कमरों में दिन-रात भरते रहते हैं। इनमें अकुशल मजदूर या ऐसे लोग रहते हैं जो इमदादों या बुढ़ापे की पेंशन पर गुजर करते हैं। इसके बाद नम्बर आता है बाल्टीमोर और फिलाडेल्फिया के टेनेमेंटों और कतारों में बने मकानों का जो आवास की दृष्टि से इनसे कहीं अच्छे हैं। इनमें कुशल मजदूर और सफेदपोश कर्मचारी रहते हैं। इन मकानों में एक परिवार को दूसरे से अलग करने के लिए मात्र एक दीवार होती है। सभी एक शक्ल के मकान मन को ऊबा देते हैं। इनके बा' निम्न और मध्य आय वालों के लिए योजनाओं के अंतर्गत बने ऊँचे आवास हैं जिनकी चर्चा ऊपर की जा चुकी है। इनमें कहीं-कहीं वर्ण के आधार पर पार्थक्य है यद्यपि उससे मुक्ति मिल चुकी है। इसके बाद उपनगरों के बाहर की नगरों के दरबों की तरह के मकान आते हैं जिनमें एक मकान में 5 या 6 कमरे होते हैं एक गैराज होता है आप अपने मन की शैली या रंग का मकान चुन सकते हैं। पीछे छोटा-सा आँगन भी होता है। इन बस्तियों में छोटे-मोटे बाजार भी होते हैं। इसके बाद उन मकानों का नम्बर आता है जो इनसे भी अपेक्षाकृत हैं। ये कुछ अधिक अमीर उपनगरों में बने होते हैं जहाँ रिहायशी मकानों की अलग बस्ती होती है और अन्त में 'पहाड़ी पर बने मकान' और करोड़पतियों की शानदार इस्टेटें और खानदानी धनिकों के आलीशान मकान हैं।

इन सब रूपों के लिए कोई सामान्य मापक नहीं है। हाँ नए मकानों के बारे में एक बात स्पष्ट है। वह यह कि इनमें मालिकों ने रुचि में अपने निजत्व को सुरक्षित रखने का प्रयत्न अवश्य है। द्वितीय विश्वयुद्ध के तत्काल पश्चात् लोगों ने माना कि 'प्रीफेब्रिकेटेड' मकान आवास के क्षेत्र में गतिरोध तोड़ देंगे किन्तु उन्होंने कई प्रकार की समस्याएँ, जैसे मकान निर्माण के क्षेत्र में अनेक रोकों

1 Dilapidated.

और इस उद्योग में मजदूर संघों की अगुवाई पैदा की। फिर विचार हुआ कि कारखानों में मकानों को बनाने की जगह कारखानों के तरीके पर मकानों के निर्माण में लगा जाए। मकानों के कुछ प्रारूप तैयार कर लिये जाएँ। उनके लिए सामान बड़े पैमाने पर खरीद कर लागतें गिराई जाएँ। उनमें टेलीविजन सेट लगाये जाएँ। बस्तियों में बगीचे लगाये जाएँ। खेल के मैदान बनाये जाएँ और सार्वजनिक स्थानों से उनका सम्बन्ध जोड़ दिया जाए।

अब इस आधार पर नगरों के किनारे-किनारे 'सामुदायिक विकास केन्द्र' अमेरिकी नक्शे की विशेषता बन गए हैं। यद्यपि बड़े पैमाने पर निर्माण और सस्ती जमीन के कारण दाम गिरे हैं फिर भी अभी दाम काफ़ी ऊँचे हैं। वास्तु-शास्त्रियों और गृह-निर्माताओं की एक समिति का अनुमान है कि पुरातन गृह-निर्माता संहिताओं और संघ के आचारों के कारण सीमेंट काठ-कबाड़ लोहा-पाइप बहुत इस्तेमाल तो होता है पर गृह-निर्माण अभी अभी टेकनिकल नहीं है। इनमें मानवीकरण खूब हुआ है। इनमें रहने के लिए मध्यवर्गीय अमेरिकी बड़ी संख्या में आ रहे हैं। कारों की तरह मकान भी किश्तों पर खरीदे गए हैं। इसके लिए इनके मालिकों को आवश्यकतापूर्वक रेहन या कर्ज लेना पड़ा है। रेहन के साथ बदनामी की जो भावना थी अब वह नहीं है। अब किश्त पर सम्मान-पूर्ण जीवन बिताने में अमेरिकी जनों को कोई एतराज नहीं। बल्कि प्रसन्नता ही होती है। घरों के दाम भी निरन्तर बढ़ते जा रहे हैं इसलिए भी यह प्रथा फल-फूल रही है।

नये मकान मानवीकृत ही नहीं बल्कि यांत्रिक साधनों से भी पूर्ण हैं। ऑयल बर्नर, डीप फ्रीज रेफ्रिजरेटर, धोबी-काम-सम्बन्धी-यन्त्र—सब स्वचालित पद्धति के होते हैं। टोस्टर, मिक्सर मैशर कुकर, बिजली स्टोव, कचरा-नाशक आदि भी मशीन के हैं। ये रसोई का काम बहुत हल्का कर देते हैं। मकान में एक टेलीविजन सेट और रेकार्ड प्लेयर भी होता है। ज्यों-ज्यों मकानों के दाम बढ़े और घरेलू नौकरों की कमी हुई ये सब चीजें स्वतः विकसित होती गईं। पहले जिन घरों में कई नौकर थे अब उनमें कोई नौकर नहीं। इस नई परिस्थिति का सामना करने के लिए मकानों की बनावट में भी सुधार आवश्यक हो गया। बैठकखाना, रिहायशी कमरा और भोजन घर सब सिकुड़कर एक कमरे में समा गए। कभी-कभी तो रसोई घर भी इसी कमरे में एक किनारे होता है। ऐसा आत्यन्तिक रूप में तब हुआ जब मकान एकदम छोटे बनने लगे। इसके विपरीत प्रवृत्ति मकानों में पहले भी की थी। यूरोप के मुकाबले अमेरिकी मकान में इतनी जगह थी कि माता पिता और बच्चों के लिए अलग कमरे मिल सकें। अमेरिकी परिवार अपेक्षाकृत छोटा होता है। इसलिए इसका यह अर्थ है कि आम परिवार में सबको कमरे मिल जाते हैं।

सामाजिक सुरक्षा की भांति गृह-निर्माण क्षेत्र में भी अमेरिका में कम-से-कम सामाजीकरण और अधिक-से-अधिक निजी उद्योग का स्थान है। फिर भी गृह निर्माण के क्षेत्र में डेमोक्रैट और रिपब्लिकन दोनों शासन संघीय हस्तक्षेप की बात स्वीकार करते हैं। गृह-निर्माण का क्षेत्र विशाल होने के साथ-साथ भिन्न उपायी है। संघीय सरकार गृह-निर्माण गन्दी बस्तियों (स्लमों) की सफाई, पुन विकास आदि के काम में मदद करती है। 1946-65 के दशक में 1 करोड़ से अधिक मकान बने। इनमें 40 लाख मकान या तो 'फेडरल हाउसिंग एडमिनिस्ट्रेशन' (एफ० एच० ए०) या 'वेटरन एडमिनिस्ट्रेशन' (वी० ए०) की सहायता से बने। मेट्रोपालिटन क्षेत्रों में तो यह अनुपात ~0 प्रतिशत तक था। जिस उपनगरी के उपविभाग की चर्चा मैंने की है वह मुख्य रूप से के० हा० ए० (एफ० एच० ए०) की ही कृति है। यह के० हा० ए० रेहन बीमा की पद्धति से सहायता करता है। यह प्रथा 1934 में एक आपातिक व्यवस्था के रूप में लागू की गई थी। फिर तो उसके बाद सहकारी गृह-निर्माण योजना का ही विकास प्रारम्भ हो गया। आज जो दो-तिहाई मकान रहने वालों के स्वामित्व में हैं। उसका मुख्य कारण संघीय हस्तक्षेप ही है। यद्यपि इस योजना में सरकार का हाथ था फिर भी बैंकों बीमा कम्पनियों और निजी निर्माताओं ने इसका स्वागत किया क्योंकि इसमें घाटे के विरुद्ध सरकारी गारंटी थी। वैसे योजना में लाभ भी पर्याप्त था।

गृह निर्माण के इस 'समाजवाद' में दरअसल कोई समाजवाद था तो वह घाटे का ही समाजीकरण था। (मजेदार बात यह है कि सिनेटर टाफ्ट जैसे व्यक्ति को भी इस योजना का समर्थन करने के कारण समाजवादी करार दिया गया था) यूरोप के समाजवादियों ने इस समाजवाद को देखकर नाक-भौंह सिकोड़ी था। किन्तु अमरिका में तो यह योजना सफल ही रही। सच तो यह है कि इस योजना में सरकार को भी कोई घाटा नहीं उठाना पड़ा। हाँ यदि फिर कोई मंदी आए तो बात दूसरी है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि घाटा उठाने के लिए तैयार सरकार ने गृह-निर्माण के सम्बन्ध में एक मानक स्थापित करने की अपनी योजना सफल कर ली। एक बार तो एफ० हा० ए० ने कर्ज के लिए निर्माता ठेकेदारों से मिली जुली जातियों वाले क्षेत्रों में बसने के लिए कुछ प्रतिबन्धात्मक प्रतिज्ञाओं पर हस्ताक्षर करा लिए। किन्तु संघीय शक्ति का दूसरे रूप में भी उपयोग हो सकता है। केनेडी-जॉनसन की अध्यक्षता में बनी एक समिति ने तो गृह निर्माण में जातीय पक्षपात को समाप्त करने की सिफारिश की है। स्कूलों में पार्थक्य के विरुद्ध संघीय न्यायालय ने फैसला दिया। उसी प्रकार आज नहीं तो कल वह सर्वोच्च मदद से कम आय वाले मकानों की योजना में अधिकार के विरुद्ध फैसला दे सकता है। ऐसा होने पर आवास के क्षेत्र में काफी उथल-पुथल होगी। किन्तु इतना तो निश्चित है कि अधिक...

पड़ोसी'[1] जैसी कोई चीज न रह सकेगी (इस विषय पर इसी अध्याय के खंड 9 'शहरी प्रकाश और कार्य' तथा खंड 10 'उपनगरों की शान्ति' में भी चर्चा की गई है)।

जनकल्याण की सबसे प्रारंभिक सामग्री भोजन है जिसके सम्बन्ध में प्रत्येक अमेरिकी को विश्वास है कि वह मिलेगा ही। हाँ यह बात अवश्य है कि मकान के बाद भोजन में उसका सबसे अधिक (31 सेंट) प्रति डालर खर्च होता है। अकालग्रस्त देशों की परम्परा का इतना असर अवश्य हुआ है कि अन्न का प्रत्येक दाना बचाया जाए क्योंकि कोई ऐसा दिन भी आ सकता है जब दाना मिले ही नहीं। अमेरिका में खाद्य का प्राचुर्य सर्वदा से रहा है। जो प्रवासी आए उनके सम्मुख प्रश्न यह नहीं था कि खाना मिलेगा या नहीं बल्कि प्रश्न यह रहा कि कैसे उसे खरीदा जाए? बाद में प्रश्न यह हुआ कि जब खाने की इतनी रेल-पेल है तो उसमें से कौन-सा खाना चुना जाए। ऐसा भी समय था—विशेषकर युद्धकाल में—जब युद्ध की आवश्यकताओं के साथ कुवितरण का भी योग लग गया था जिससे प्राचुर्य की भावना कुछ ढीली पड़ गई थी। उदाहरणस्वरूप 1941 में एक जाँच से पता चला कि प्रति दो में एक अमेरिकी को उतना भोजन नहीं मिलता जितना वह चाहता है। किन्तु राष्ट्र संघ के खाद्य और कृषि संगठन के हाल के एक सर्वेक्षण से पता चलता है कि संसार में सबसे अच्छा भोजन अमेरिकियों का है। एक अमेरिकी औसतन प्रतिदिन 3,200 कैलोरी लेता है। प्रतिवर्ष 1 600 पौंड भोजन करता है। उसके भोजन में प्रोटीन सबसे अधिक है। एशिया के जावा-जैसे क्षेत्र का व्यक्ति सबसे रद्दी भोजन करता है। उसके भोजन में 2 000 कैलोरी चावल का आधिक्य वार्षिक 800 पौंड भोजन और प्रोटीन कम होता है। भोजन का यह अन्तर इतना अधिक है कि अमेरिका में एशिया के माँ बाप का 16 साल का प्रवासी बालक अपनी उम्र के बालक से प्रायः 4 इंच लम्बा होता है।

पिछले 25 वर्षों में विशेषकर द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् अमेरिकियों की भोजन की आदत में बड़ा परिवर्तन हुआ है। इस परिवर्तन के दो कारण हैं—प्रथम 'संतुलित भोजन' करने की भावना और दूसरा पका-पकाया भोजन करने की भावना।

संतुलित भोजन का विचार न्यूट्रिशन अध्ययन का परिणाम है। किन्तु खाद्य-शिक्षा का आयाम कभी न बनता यदि द्वितीय विश्वयुद्ध न होता। युद्धकाल में लाखों अमेरिकी ऐसे स्थानों में गए जहाँ भोजन का ढंग ही दूसरा था। पहाड़ों और खेती के मैदानों में रोटी, सुअर का माँस गर्म बिस्कुट और आलू खाकर

---

1. Forbidden neighbors.

अपने युवकों में साग संतरे का रस और दूध का भोजन सौंपा। अधिकांश अमेरिकी जो पहले अन्न और रोटी पर अधिक विश्वास करते थे अब वे मांस मछली खाने लगे। यह परिवर्तन किस हद तक हुआ इसका इसी से अंदाज किया जा सकता है कि कामगरों और सेना में बलवान अमेरिकी युवक सरेआम दूध पीने में नहीं झिझकते। यद्यपि कुछ हम अमेरिकी पुरुष को 'माता पर आश्रित' की प्रवृत्ति की संज्ञा देते हैं पर अधिक उचित नहीं होगा कि हम कहें कि अमेरिकी न्यूट्रिशन के मामलों में सजग हो गए हैं। अब वे स्वास्थ्य के लिए स्वास्थ्यकर भोजन का बड़ा ध्यान रखते हैं। कैलोरियों की उत्कंठापूर्वक गणना करते हैं। समय-समय पर अपना वजन कराते रहते हैं। निकृष्ट भोजन की संख्या घट रही है। अब अमरीकी—खासकर महिलाएं—सौन्दर्य के बाहरी दिखावे की उतनी चिन्ता नहीं करती।

अमेरिकी अतिभोजी हैं। वे अतिपायी हैं। इसके कारण है कि बाहर से आने के कारण अमरिकियों को भूख की स्मृति है। फिर यहां प्रसन्नता की चिन्ता जितनी अधिक है उतनी ही मानसिक उलझनें भी हैं। मोटापे की जैसी समस्या अमेरिका में है वैसी अन्यत्र कहीं नहीं। मोटापे और दांतों के डर के कारण मिठाई की खपत में 1940–60 के बीच प्रति व्यक्ति 3 पौंड की कमी हो गई। अमेरिकी बच्चा वैसा ही मोटा होता है जैसा बलि के लिए तैयार किया गया पशु। यहां जीवन का चक्र मोटाने से शुरू होकर दुबलाने में समाप्त होता है।

किन्तु न्यूट्रिशन के प्रति जितनी सजगता इस सदी के तीसरे और चालीसे में थी उतनी पचासे में नहीं। स्कूलों, कालेजों, विश्वविद्यालयों, कारखानों, अस्पतालों, सेना आदि में जहां कई बार भोजन परखा जाता था यह सजगता भर गई थी। नई प्रवृत्ति भोजन के सम्बन्ध में नए प्रयोगों की थी। एथनिक बाहुल्य से यह एक समस्या और समाधान भी सिद्ध हुआ। समस्या इसलिए कि इस बाहुल्य का एक ही शहर में जमाव हो गया था। कैफिटेरिया का विकास ही भोजन सूची को अनगिनत इकाइयों में जोड़ देने से हुआ। यहां आप अपने पसंद की इकाइयां जुटाकर अपना भोजन कर लीजिए। इस प्रकार भोजन में निजी पसंद को पुष्ट करने के लिए यह बहुत बुद्धिमत्तापूर्ण युक्ति थी। यह प्रथा सारे संसार में फैली। अमेरिकी एथनिक बाहुल्य ने व्यंजनों में भी समृद्धि ला दी।

प्यूरिटन लोग भोजन को कर्तव्य, प्रयत्न और पुरस्कार के रूप में जीवन का अंग मानते हैं। बाद के प्रवासियों ने इस प्रवृत्ति के अनुसार अपने बच्चों को सिखाया कि खाते समय थाली में कुछ भी न छोड़ो। किन्तु एक दूसरी धारा भी थी वह थी वर्जीनिया, कैरोलिनास और लुइसियाना की जिसमें दलिए की प्लाटेयों की समृद्धि और हब्शियों की कला का संयोग था। इन्हें स्वास्थ्य न्यूट्रिशन व कोरी विटामिन या संतुलित भोजन की कोई परवाह नहीं थी।

खाने में एक विशेष आनन्द का अनुभव करते थे। इनके भोजन में पसंद के लिए ही नहीं बल्कि अभिव्यक्ति के लिए भी सादगी का पर्याप्त स्थान था। विदेशों में जाने वाले सैनिकों ने देखा कि पेरिस फ्लोरेंटीन मिलाने वाले शराब सूप, सलाद और मसालों पर कितना समय बरबाद करते हैं। घर लौटने पर इन्हें अपने देश के एथनिक और प्रादेशिक भोजन के वैविध्य का महत्त्व मालूम हुआ।

अब भोजन पकाना एक कला बन गया। घरेलू नौकरों की प्रथा की प्राय समाप्ति से इस प्रवृत्ति को और अधिक बल मिला। इसमें इन्हें आधुनिक अमेरिकी की एक महान् घटना—आसान भोजन (बनाये प्रोसेस किए, पैक किए पके खाने) के उदय से भी प्रोत्साहन मिला। इसी बीच गौप फीड का भी विकास हो गया। कुछ अंशों तक यह 'अमेरिका बस्ती में है' का भी परिणाम था। प्राय पके भोजन खासकर रोटियाँ इतने सिंथेटिक और परिशुद्ध होतीं कि उनमें से महत्त्वपूर्ण अंश तो शुद्धि की प्रक्रिया में शुद्ध होकर बाहर हो जाते।

सामान्य रूप में अमेरिकी भोजन में सुधार की अभी पर्याप्त गुंजाइश है। यह अनुभव किया गया है कि आमदनी बढ़ने पर भी औसत अमेरिकी के परिवार में भोजन में कोई विशेष अन्तर नहीं आता। किन्तु अब ऐसे अमेरिकियों की संख्या बढ़ रही है जो भोजन को भी एक एडवेंचर मानने लगे हैं। अब ये पाक-विद्या की पुस्तकों और बातचीत द्वारा प्राप्त ज्ञान के आधार पर भोजन पकाने का निरन्तर प्रयोग करते रहते हैं। खुराक में परिवर्तन के कारण अब भोजन के बारे में भी भ्रान्ति होने लग गई है।

अभी तक यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि इस परिवर्तित दृष्टिकोण का अमेरिकियों की भोजन की कल्पना पर क्या प्रभाव पड़ेगा। खाने की आदत के निर्माण में बच्चे का सामाजीकरण होता है। इसलिए बच्चे और माता-पिता के बीच भोजन तनाव का एक विषय बन गया है। इसमें पुरस्कार, दंड श्रम के दान और स्तंभन की प्रक्रिया सम्मिलित हो गई है। खासकर ये तनाव माता और बच्चे के बीच होते हैं। बाद में पिता भी इस संघर्ष में शामिल हो सकता है। पर बाजार में माँ जाती है। खाने की सामग्री वह चुनती है। बच्चे के लिए क्या बुरा है इसका निर्णय वह करती है। टेबुल के आचारों और आदतों का फैसला वह करती है। बलिष्ठ और स्वस्थ बच्चे के निर्माण के लिए फुसलाहट, डाँट-डपट दंड आदि सभी उपायों का उसे सहारा लेना पड़ता है।

इसका फल यह है कि भोजन दुश्चिन्ता या फसाद से भर जाता है। वह या तो अधिकार के सम्मुख झुक जाता है या फिर किशोर-सुलभ ढंग से स्वतन्त्रता की रक्षा करता है। परिवार में कुछ प्रकार के भोजनों का प्रतीकात्मक मूल्य भी होता है। इससे कभी-कभी न्यूरोटिक उथल-पुथल और मनोवैज्ञानिक बीमारियाँ

भी पकड़ सकी है। अब पार्टियों में भोजन में रस लेने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। शायद इससे बाल-बच्चों और माता-पिता के बीच तनाव भी कम हो सके।

भोजन के सम्बन्ध में कुछ पूर्वाग्रह भी हैं। ये परिवार से नहीं संस्कृति से आते हैं। इसलिए ये शायद बचेंगे। कुछ प्रकार के भोजन बचपन की स्मृतियों के कारण और घर की स्मृति से अमेरिकी बन गए हैं। जैसे गेहूँ की केक सिरप मूंगफली भुनी मुर्गी बड़े दिन का टर्की डिनर पका आलू स्ट्राबेरी पाई या पीच शार्टकेक, इनमें अमेरिकी पेयों को भी जोड़ दीजिए, गर्म काफी बूर्बोन ह्विस्की आइसक्रीम सोडा और विभिन्न कोला पेय। मैं इन्हें आधुनिक अमेरिका का प्रतीक मानता हूँ। पर आज स्टैंडर्ड [illegible] और आइसवाटर [illegible] भी पसंद करते हैं। इनका रिवाज दूसरी संस्कृतियों में उतना नहीं है। यह सब होने पर भी सच तो यह है कि वैविध्य की दृष्टि से अमेरिकी थाली बड़ी समृद्ध है।

## 7 किसानों की रीति

विज्ञान आज शक्तियों के नित नए स्रोतों का अनुसंधान कर हमें चकित कर रहा है और आज अमरिका में खाद्यान्न का प्राचुर्य है। इन सबके कारण हम आज यह भूल जाते हैं कि खाद्य का मूल तो भूमि ही है। भूमि का उपयोग हम कैसे करते हैं यही किसानों की रीति है। यह भावुकता की किसी कमी के कारण नहीं है। जब से जैफरसन ने मुक्त किसानों के समाज की कल्पना की तभी से अमेरिका में किसानों को आदर्श के रूप में देखा जा रहा है यद्यपि यह बात भी सच है कि आज तेजी से नगरीकरण हो रहा है। शायद इसी कारण किसानों को आदर्श माना जाता हो। व्यक्ति परिचय (Who's Who) की पुस्तिकाओं में जिन लोगों की चर्चा होती है उनमें अधिकांश किसान हैं। कांग्रेस में किसानों को सहायता और फसलों को मजबूती देने के लिए जो भी कार्यक्रम रखा जाता है वह जल्दी से पास हो जाता है। यह इसलिए नहीं कि कांग्रेस में ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों का बहुमत है बल्कि इस कारण भी कि अमेरिका के लोगों का यह विश्वास है कि किसान ही राष्ट्र की रीढ़ है।

किसानों की रीति के सम्बन्ध में सामान्य अमरिकी के मन में जो भाव हैं वे उतने वास्तविक नहीं हैं। आज से [illegible]3 वर्ष पूर्व तक अमरिकी अर्थ व्यवस्था मुख्यरूप से कृषि अर्थ-व्यवस्था थी। अमरिकी राजनीति मुख्यरूप में किसानों की राजनीति थी और अमरिकी-समाज मुख्य रूप से कृषकों का समाज था। पर आज ये तीनों बातें लागू नहीं होतीं। 19[illegible] में अमरिका में 2 करोड़ 30 लाख से कम अर्थात् कुल जनसंख्या का मात्र तेरह प्रतिशत कृषि पर आश्रित थे। इसके मुकाबले 1930 में कृषि कर्मियों का अनुपात 20 प्रतिशत था। सीमा पर

भूमि जब उपलब्ध थी तब भी कृषकों का अनुपात गिर रहा था। 1825 के आस-पास में जितने लोग काम के पेशे में लगे थे उनमें उनके तीन-चौथाई कृषि से सम्बद्ध थे। 1875 में यह अनुपात आधा हो गया। 19.5 में 70 लाख से कम अर्थात् 11 प्रतिशत व्यक्ति कृषि-कर्म में थे। इनमें 30 लाख मजदूर थे। इस प्रकार स्वतंत्र कृषकों की संख्या 40 लाख ही थी। इस संख्या में से हमें 'एक खच्चर' वाले वर्ग के किसानों और उन किसानों की संख्या भी घटा देनी चाहिए जो अनुपजाऊ और कटी फटी जमीन में खेती करते हैं और उससे उतना भी पैदा नहीं कर पाते जिससे उनका खर्च पूरा चल सके। 1055 में यह अनुमान किया गया था कि 8 से लेकर 175 लाख के बीच परिवार ऐसे हैं जो इस समय कृषि पर आश्रित हैं। पर इस पेशे में उन्हें उतना नहीं पैदा होता कि वे सुन्दर जीवन व्यतीत कर सकें। यदि वे उद्योगों में लग जाएं तो निश्चित ही उनकी हालत अब की अपेक्षा अच्छी रहेगी।

गिल्बर्ट बर्क ने 'फार्चून' में जिसे अमेरिकी कृषि का महान् ह्रास कहा है यह उसी का एक अंश है। संख्या का यह ह्रास सुस्पष्ट है। 1930 से 1955 के 25 वर्षों में फार्मों की संख्या 6,300,000 से घटकर 5,300 000 हो गई। यह संख्या भविष्य में और भी घटेगी। अनुमान यह है कि 1960 में अमेरिका में कृषि जीवियों की संख्या 13 5 प्रतिशत (1055) से घटकर 8 प्रतिशत हो जाएगी। यह संख्या घटते-घटते इतनी कम हो जाएगी कि अंत में अन्य उद्योगों की तरह कुछ कम्पनियाँ ही फार्मों को चलाएँगी।

कृषि के 'महान ह्रास' में महत्ता उत्पादन-वृद्धि में है। इसका प्रारम्भ इस शताब्दी के तीसे में हुआ। इसका कारण वनस्पति जगत् में जननिकी, संकरण और मिश्रण क्षेत्र में होने वाली खोजें थीं जो न्यू डील के काल में कृषि के स्कूलों और कालेजों में हुई। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय इस कार्य को और भी प्रोत्साहन मिला। 194. से 1956 के बीच यह कार्य अपनी गति की सीमा पर पहुँच गया था। 1930 के मुकाबिले 1955 में 37 प्रतिशत कम मानव-शक्ति ने 54 प्रतिशत अधिक उत्पादन किया। केवल 25 वर्षों में ही कृषि की उत्पादन क्षमता 110 प्रतिशत बढ़ गई। प्रति एकड़ उत्पादन तो करीब-करीब वही था हाँ काम के घंटे कम हो गए। इससे फर्क क्या हुआ? इसका उत्तर है कि विज्ञान और औद्योगीकरण, नए किस्म की खादें अन्न के संकर, सुअरों को खिलाने के नए तरीके नए कीटमारकी और संक्रामक रोगों की रोकथाम सिंचाई के नए साधन नई पूँजी की लागत और व्यापार-व्यवस्था की नई तकनीक।

हुआ यह है कि व्यापार की भावना और मशीनों के प्रयोग ने कृषि को भी उद्योग में बदल दिया है। अमरिकी कृषि में मशीनों का प्रयाग कोई अकस्मात घटना नहीं है बल्कि यह तो शुरू से ही था। अमेरिकी किसान यूरोप से ही

अनाज और पशु अपने साथ लाए थे जिन्हें उन्होंने स्थानीय जलवायु और भूमि के अनुकूल बना लिया। वैज्ञानिक खेती का आरम्भ यूरोप में ही हुआ है और उसका प्रयोग अमेरिका से पहले इंग्लैण्ड में होता था किन्तु ह्विटनी मैककॉर्मिक और रूस के ग्रंथों में वर्णित मशीनें तो अमरिका की अपनी ईजादें हैं। मोटरों से फसलकाट दवाई मशीन[1] संयुक्तमंडाई मशीन[2] कई फसलों का हल और रुई धुनने की मशीन आदि का जमाना यह सब तो आवश्यकता के कारण हुआ। अमरिका में जमीन ज्यादा थी मजदूर कम। यूरोप में जमीन की कमी है और आबादी अधिक। इसलिए वहाँ का मानक प्रतिएकड़ उत्पादन में है। अभी भी यूरोप में श्रम-प्रधान खेती होने के कारण प्रति एकड़ उत्पादन बहुत अधिक है। अमेरिका में मानक काम के घंटों के अनुसार उत्पादन में है।

पिछले कुछ वर्षों में अमरिका में कृषि यंत्रों में जो सफलता पाई है वह बेजोड़ है। 1935 में अमेरिकी फार्मों में कुल 10 लाख ट्रैक्टर थे। 1955 में 45 लाख ट्रैक्टर और 23 लाख ट्रकें थीं। लगभग 10 लाख कम्बाइन्स[3] और 7.5 लाख दूध दुहने की मशीनें थीं। पहले ये सब मोटर से चलते थे फिर बिजली से चलने लगे। 1955 में 90 प्रतिशत फार्म विद्युत शक्ति से सज्जित थे। यह परिणाम है ग्राम विद्युतीकरण प्रबन्ध के जन्मदाता मॉरिस एल० कुक और ग्राम कार्मीकों की दूरदर्शिता और विद्युत-सहकार के कार्य का। खेती के अधिकांश काम अब मशीन से ही होते हैं। बुलडोजर से जमीन समतल की जाती है। गहरे पाताल कूपों से पंपों के द्वारा सिंचाई की जाती है। हवाई जहाज से 'स्प्रे' किया जाता है। कैलिफोर्निया के एक मैमथ फार्म[4] पर अब प्रति व्यक्ति काम के प्रति घंटे जितना कपास उगता है वह कल्पनातीत है। इसी प्रकार सुअरों को प्रजनन के आधार पर न्यूट्रिशन कैलकुलस से खिलाया जाता है और मांस जानवरों[5] को भारी वजन हार्मोनों से खूब मोटा कर दिया जाता है।

ऐसे फार्मों में 'स्वचालिता के आगमन' की संज्ञा दी गई है। किन्तु यह कथन सटीक नहीं है क्योंकि अभी भी मानव-श्रम के बिना फार्म चलाये ही नहीं जा सकते। फिर भी फार्मों में मशीनीकरण की प्रगति स्पष्ट है। 1955 में रुई चुनने की एक मशीन उतना ही काम करती थी जितना पहले 60 या 70 मजदूर। छोटे किसान जो इतनी खर्चीली मशीन नहीं खरीद सकते अब 'पुरातनवादी'

1. Threshing Machine.
2. Combine harvester
3. Combines.
4. Corporates farm
5. Beef Cattle.

बनते जा रहे हैं। 1955 में औसतन अमेरिकी फार्म 215 एकड़ का था। यदि अब सीमा के फार्मों को छोड़ दिया जाए तो औसतन क्षेत्रफल काफ़ी बढ़ जाएगा। अमेरिकी कृषि के स्रोत हैं करीब 20 लाख फार्म जिनकी स्थूल वार्षिक आय 2,500 डालर थी। टामस जैफ़रसन जैसे व्यक्तियों ने छोटे पैमाने के अमरीकी फार्मों की कल्पना की थी। यदि जैफ़रसन आज भी आ जाएँ तो वे मशीन तंत्र को देखकर कितने निराश होंगे। प्रति घंटे के काम के अनुसार उत्पादन रसायन और हार्मोन विज्ञान उत्पादन रेखा ऊँची पूँजी और बिजली-चालित मशीनों का प्रयोग कुछ भी तो उनकी कल्पना का नहीं है।

इस प्रकार मशीनों आदि ने कृषकों के सब रीति-रस्म ही बदल दिए हैं। किसान औद्योगीकरण व्यापारिक शक्ति से उसका सब सम्बन्ध ही बदल गया है। आय शक्ति का स्रोत केन्द्र से (कभी छोटे किसान जिसका प्रतिनिधित्व करते थे) बड़े किसानों और मैयम फार्म की ओर बढ़ता है। फिर भी हम छोटे किसानों की उपजिया किसानों (बटाई पर काम करने वालों) या घुमन्तू मजदूरों की उपेक्षा नहीं कर सकते यद्यपि अब उनका विशेषत्व कम अवश्य हो चुका है।

स्वतन्त्र किसान का महत्त्व घट गया है। पर अब भी ऐसे किसान कैन्सास में अनाज उगाते या आइवा में सांड या सूअर पालते हैं या मेन या लौंगआइलैण्ड में आलू पैदा करते या विस्कोंसिन में जानवर चराते मिल जाएँगे। उसकी पत्नी आज भी भोजन पकाने (अब बिजली से) में बेजोड़ है। उसके बच्चे फोर० एच० क्लब[1] के सदस्य हैं। वे हाई स्कूलों में बास्केट बाल खेलते हैं, कृषि विश्वविद्यालयों में पढ़ते हैं कार और ट्रैक्टर चलाते हैं। रिपब्लिक चर्चों में जाते हैं। सिनेमा देखते हैं। टेलीविज़न रखते हैं। पुस्तक-क्लब के सदस्य होते हैं। लाइफ टाइम, न्यूज़वीक, लुक और रीडर्स डाइजेस्ट पढ़ते हैं। फार्म ब्यूरो या ग्रेंज के सदस्य होते हैं और अपनी जात बिरादरी में राजनीतिक शक्ति रखते हैं। पर ये वे नहीं हैं जो जैफ़रसन या जैक्सन या बाइरन के समय में थे। उस समय तो वे अमेरिकी-समाज की रीढ़ थे।

जब हम अमेरिकी कृषि की ऊँची कुशलता को देखते हैं तो प्रायः हमें उसकी नींव के सामान्य गुमनाम मनुष्यों का ध्यान नहीं आता। उदाहरणार्थ अकेले कैलिफ़ोर्निया में 5 लाख से अधिक खेतिहर कर्मचारी हैं। पूरे दक्षिण-पश्चिम में अब भी मैक्सिकी अमेरिकी बड़ी संख्या में गैर-कानूनी ढंग से रातों में आकर रियासतों में छा जाते हैं। सारी सीमा को इन लोगों ने छलनी बना रखा है। इन्हें समय-समय पर पकड़कर हवाई जहाज से देश के बाहर निकालना पड़ता है। अभी भी अमेरिका में बहुत-से गिरमिटिया मजदूर हैं। इनमें बहुत-से तो

1 4 H Club (Head Heart, Hands, Health)

अमेरिका में ही बस गए हैं। पर दूसरे बहुत-से ऐसे भी हैं जो हर साल आते और वापस चले जाते हैं। कैलिफोर्निया के सान जोक्विन और इम्पीरियल वैली जैसे अनेक ऐसे स्थान हैं। कभी कैरी मैकविलियम्स ने इन्हें 'खेतों में कारखानों' की संज्ञा दी थी। अब इनकी हालत में काफ़ी सुधार हो चुका है। पर इनमें काम करने वाले मज़दूर अभी भी संघीय सुरक्षा और सामाजिक विधान की कार्य परिधि के बाहर हैं। इन्हें अभी भी पूरा वेतन नहीं मिलता।

दक्षिण में भी 'स्वतन्त्र किसान' की चर्चा कठिन है। भूतकाल में दक्षिण में केवल एक फ़सल होती थी। अभी हाल तक रुई वहाँ की फ़सलों की रानी थी। पर अब खेती का काफ़ी फैलाव हो चुका है। अब कई दूसरे देशों में रुई की पर्याप्त खेती होने लगी है। फलस्वरूप अमेरिका का रुई बाज़ार काफ़ी सिकुड़ गया है। अब ज़ोर कुशलता पर है। मिसिसिपी के डेल्टे में टैक्सास में अलबामा के कुछ क्षेत्रों में रुई की खेती मशीन से होती है। अब वहाँ बागानों के ढंग पर या काफ़ी पूँजी से या मशीनें खरीदने के लिए सहकारी समितियाँ बना कर ही खेती सम्भव है। दक्षिण में अब छोटे-छोटे फ़ार्म अधिक मज़दूरी के कारण खत्म हो रहे हैं। अब कटी-फटी ज़मीन में किसी तरह गुज़ारा करना या फिर अच्छी ज़मीन में मशीन से खेती करना ही सम्भव है।

मेरा उद्देश्य यह कहना कि अमेरिकी ज़मीन पिछड़ी हुई नहीं है। अमेरिकी किसान का मुकाबला हिन्देशिया या मलाया के किसान से कीजिए।। वहाँ का किसान निपट बीमार, आधा भूखा है। खराब घरों में रहता है। महाजनों के चंगुल में फँसा वहाँ न किसानों का कोई [illegible] नहीं होती। वह अपने खेत का भी मालिक नहीं। अमेरिकी किसान और उसकी हालत में ज़मीन आसमान का फ़र्क है। इसी प्रकार आइयोवा, विस्कान्सिन, मिन्नेसोटा, इलिनियोस के परिवार-आकार के फ़ार्मों को लीजिए या कन्सास, नेब्रास्का और डकोटाज़ के गेहूँ, सूअर और मांस बीफ़ क्षेत्रों को लीजिए और उनका मुकाबला यूरोप के किसानों से कीजिए। अन्तर स्पष्ट होगा।

प्रत्येक कृषि प्रणाली अपना सामाजिक मूल्य चुकाती है। 19वीं शताब्दी की अमेरिकी कृषि क्या थी एक प्रकार का भूमि का खानों की तरह उपयोग था जिसमें उत्पादन व्यय कम हो लाभ अधिक। (प्रसंग के रूप में बता दिया जाए कि उस समय की ब्रिटिश कृषि तो काफ़ी खर्चीली थी। इस अमेरिकी कृषि ने अपने बाम समाज बेचकर उसे कहीं का न रखा) आज भी मशीनों और सुव्यवस्थित कृषि का अपना अलग सामाजिक मूल्य है। कृषि का क्षेत्र तो स्थिर रहा है पर फ़ार्मों और किसानों की संख्या में काफ़ी कमी हुई है। पुराना मज़दूर जो कृषक-परिवार के साथ घनिष्ट सम्बन्ध रखता था अब समाप्त हो रहा है। अब उसका स्थान घुमन्तू मज़दूर और मशीनें ले रही हैं।

भूमिहीनता अब वास्तविकता का रूप ले रही है। बहुत-से काश्तकार भूमिहीन हैं हब्शी भूमिहीन हैं इसी प्रकार मौसमी मजदूर। जैसे-जैसे मशीनें बढ़ रही हैं, भूमिहीनता भी बढ़ रही है। उदाहरणार्थ कैलिफोर्निया को ले लीजिए। यहाँ कृषि बाद में विकसित हुई और तब तक मशीनें आ चुकी थीं। यहाँ मशीनी फल्ट लैगम फार्मों के मालिकों और भूमिहीन घुमन्तू मजदूरों के बीच की दूरी स्पष्ट है। यहाँ इन मजदूरों की दशा उद्योगों में काम करने वाले मजदूरों से बदतर है क्योंकि इनके न अपने कोई संघ हैं न उनकी रक्षा के लिए कोई कानून है। इन्हें फुरसत की कोई सुविधा नहीं न नगर जीवन का कोई सुख।

जैफरसन की किसान की जो कल्पना थी वह अब नहीं रही। इस पर भावुकतावश आँसू बहाये जा सकते हैं। लुई ब्रोमफील्ड ने लिखा था 'सच तो यह है कि यदि सुयोजित वैज्ञानिक और मशीनों के द्वारा खेती की जाए तो जीवन के एक मार्ग के रूप में कृषि एक आनन्ददायक पेशा है।" खेती के पूँजीकरण के लिए यह पुराना तर्क है। किन्तु इससे इन्कार नहीं किया जा सकता है कि अब जमीन के प्रति प्रेम नहीं है। पैदावार बढ़ाने कौशल और खर्च के लेखे का बुखार तेजी पर है। तभी तो कौशल का ध्यान रखने वाले कृषि-विशेषज्ञ यह कहने लगे हैं कि छोटे किसानों को अपनी भूमि छोड़नी पड़ेगी। जो बात इस समय छोटे किसानों पर लागू है आगे जाकर वही मध्यम किसानों पर लागू होगी। कहा यह जाएगा कि खेती से बहिष्कृत ये किसान उद्योगों में लग ही जाते हैं, पर इससे उनके निर्वासन का तथ्य तो झूठा नहीं पड़ता।

अमेरिका में कृषि और पूँजीवादी अर्थ-व्यवस्था के मूल में परस्पर विरोध है। एक ओर तो कृषि का पूरी तरह मशीनीकरण और औद्योगीकरण हो चुका है और इस प्रकार वह बृहत् अर्थ-व्यवस्था का अंग बन चुकी है पर किसान जो रसायनों की खरीद और उसका इस्तेमाल करता है माल उत्पादन करने वाला रह गया है। दूसरी ओर राष्ट्रीय सुरक्षा को छोड़कर कृषि सबसे बड़ा आर्थिक धन्धा है। सुरक्षा उद्योग सरकार से सहायता पाता है। इसलिए दूसरे धन्धों से उसकी कोई समानता नहीं।

इस निर्भरता के दो मूल कारण हैं। पहला कारण यह है कि कृषि उत्पादनों की माँग के विस्तार का क्षेत्र सीमित है। भोजन के क्षेत्र में हुई क्रान्ति और अमेरिकी व्यक्तियों के खाने की आदत में जितना परिवर्तन हुआ है और उनका जीवन-स्तर जितना उठा है खाद्यान्नों की खपत उस अनुपात में नहीं बढ़ी है। उद्योग के क्षेत्र में उत्पादन-व्यय के घटने से उत्पादन की माँग बढ़ी है। फलस्वरूप नये लघु-उद्योग खुले हैं और पुराने उद्योगों का विस्तार हुआ है। पर कृषि के क्षेत्र में ऐसा नहीं हुआ है। दूसरा कारण यह है कि कृषि

उत्पादनों का मूल्य घटता-बढ़ता रहता है। यह घटती-बढ़ती हमेशा रही है और बहुत अधिक होती रही है। किसानों को हमेशा इसका शिकार होना पड़ता है। जब दाम बढ़े रहते हैं—खासकर लड़ाई के दिनों में—तो किसान इस बात की कोशिश करता है कि अधिक-से-अधिक जमीन खरीद ले। इसके लिए वह अपनी निजी जमीन भी बंधक रख देता है। और इस प्रकार अपने पर आपत्ति मोल ले लेता है। मंदी के दिनों में तो वह वैसे ही पिसा रहता है।

यही कारण है कि फार्म समस्या को स्थिर करना पड़ा और किसान को एक प्रकार से राज्य के संरक्षण में रखा गया। इसके लिए मूल्य को स्थिर रखने, मूल्यों में समानान्तर कमी या बेशी करने, फसलों पर नियन्त्रण लगाने 'भूमिबैंक'[1] और सरकार द्वारा क्रय-विक्रय का प्रबन्ध किया जाता है ताकि मूल्यों के घटने-बढ़ने से किसान पिस न जाए। दूसरा कारण भी है। जिस प्रकार पिछले वर्षों में राष्ट्र की व्यापारिक या औद्योगिक आय में वृद्धि हुई है उस अनुपात से कृषि की आय नहीं बढ़ी है। 1910 में किसानों की आय कुल राष्ट्रीय आय का 7 प्रतिशत थी। 1945 में यह प्रतिशत गिरकर 4 प्रतिशत हो गया। यद्यपि इस काल में कृषि से आय दुगुनी हुई, पर राष्ट्रीय आय तो चौगुनी हो गई थी। सीमान्त किसानों की दशा तो और भी स्थिति चौपट कर रही है। 1950 की एक गणना के अनुसार 13 लाख से अधिक फार्म-परिवारों की वार्षिक नकद आय औसतन 1,000 डालर थी। राष्ट्र-भर के फार्मों की औसत आय भी 4,000 डालर प्रतिफार्म से कम ही थी। यदि हम फार्मेतर आय से इसकी तुलना करें तो यह बहुत ही कम है। हां दूसरे देशों के कृषिकारों की तुलना में यह बहुत अधिक है।

अमरिका में कृषकों का राजनीतिक प्रभाव उनकी संख्या के अनुपात से बहुत अधिक है। उन्होंने इस प्रभाव का उपयोग सरकार के माध्यम से कृषि उत्पादनों के मूल्यों में स्थायित्व लाने के लिए किया है। यद्यपि शुरू में मूल्यों की गिरावट रोकने का निश्चय 'न्यू डील' के बाद ही हुआ किन्तु किसी रिपब्लिकन सरकार ने इसे बदलने का साहस नहीं किया है। 1953 में — बिलियन डॉलर के मूल्य का कृषि उत्पादन देश में था। टंकियों और गोदामों में इसे रखने की जगह न थी। विदेशों में बेचने का प्रयत्न भी सीमित रूप में ही सफल रहा। कृषि क्षेत्र में कमी का भी प्रयत्न बेकार था क्योंकि प्रति एकड़ उत्पादन तेजी से बढ़ रहा था।

अमरीकी कृषकों के मन[2] के सम्बन्ध में काफी चर्चा हुई है। किन्तु इस

---

1 Soil bank.
2 [illegible] mind.

मन की कोई सामूहिक इकाई नहीं है, जिसके बारे में चर्चा की जा सके। ऐरेना इम्पीरियल कम्पनी का मन मालवा अन्न उत्पादक से भिन्न है। इसी प्रकार मेन के आलू उत्पादक का मन भी कुछ और ही है। यही बात अलबामा के 'रेडनेक'[1] या जार्जिया के 'कैकर' या 'ऊल हैट'[2] की है। इन सब का मन अरकान्सास के भीतरी कृषक या रियो ग्रैंड वैली के किसान या जमाइका या प्यूरटोरिको के गिरमिटिया मजदूर से भिन्न है। अनाज क्षेत्र के किसानों का मन कपास-क्षेत्र के किसान या गेहूँ-क्षेत्र के किसान या विस्कान्सिन या पेन्सिल्वानिया या न्यूयार्क के पशुपालक या पहाड़ी इलाके के चरवाहे या भेड़-बकरियों के गड़रिये से भिन्न है। धार्मिक जातिगत एथनिक और वर्गगत भेद तो हैं ही व्यक्तिगत भेद भी हैं।

क्या इन सबका कोई सम्मिलित तत्व भी है जिसे किसान का दृष्टिकोण कहा जा सकता है। वेब्लेन ने इसे 'आदपूँजीवादी और अध्यात्मवादी'[3] कहा है। मशीन की टैक्नोलाजी ने और इसीलिए मनोविज्ञान ने इसे दूर छोड़ दिया है। यह अनुदारवादी है। वह औद्योगिक मजदूर से अधिक सामाजिक संस्थाओं के क्षेत्र में जादू में विश्वास करता है। मजदूर का अध्यात्मवाद तो मशीनों ने पीस दिया है।

इस दृष्टिकोण के साथ दिक्कत यह है कि इसमें इतिहास के तथ्यों को उल्टी दिशा में मोड़ने का प्रयत्न है। अमेरिका में विरोध के सभी राजनीतिक आन्दोलनों से किसानों का सम्बन्ध रहा है। शे के विद्रोह[4] से लेकर बड़ी मंदी के छुट्टी के आन्दोलन[5] के सिलसिले में 24 घण्टे की हिंसा तक जितने क्रान्तिकारी आन्दोलन हुए हैं सभी मुख्यतया कृषि-सम्बन्धी आन्दोलन थे। हो सकता है कि किसानों ने व्यापारियों द्वारा अपनी शक्ति को चुनौती देने पर उनके विरोध में ये क्रान्तिकारी आन्दोलन चलाये हों। सभी कृषक क्रान्तियों के मूल में सम्पत्ति और परम्परावाद की शक्तिवती धारा रही है। इसलिए वेब्लेन के इस कथन से हम सहमत नहीं हो सकते कि अमेरिकी इतिहास में यहाँ का किसान अनुदारवादी रहा है।

इस क्रान्ति का स्रोत क्या था और वह लगभग समाप्त क्यों हो गई? किसान की प्रवृत्ति का स्रोत भयंकर व्यक्तिकता थी। जैसे-जैसे व्यक्तिवाद रिपब्लिकन-हस्तक्षेप-विरोधी, कर्जबन्दी विरोधी अनुदारवाद से जुड़ता गया

---

1 Red neck.
2 Wool hat.
3 Preolpitalist and animlatio.
4 Shays Rebellion.
5 Farm holiday movement of the great Depression.

किसान अमेरिका के अनुदारवाद की रीढ़ बनते गए। ग्रैंजर-विद्रोह, फ़ार्मर्स ऐलायन्स, फ़ार्मर-लेबर पार्टियाँ, नान पार्टिजन लीगें, पापुलिस्ट और प्रगतिशील गुट, इन सबका गढ़ मध्य-पश्चिम के कृषि प्रधान राज्यों में था। कांग्रेस में मध्य-पश्चिम से जो 'जंगली गधों के बच्चे'[1] आते थे सब वे नहीं रहे। इसका मतलब यह नहीं कि अमेरिकी रिपब्लिकनों को सदा यह विश्वास रहता है कि कृषकों के वोट उन्हें मिल ही जाएँगे। 1932 से 1952 के बीस वर्षों के चुनावों के परिणाम यह बतलाते हैं कि किसान उसी से सौदा करते हैं जो कृषि उपज के मूल्य ऊँचे रख सके। किन्तु 'न्यू डील' और 'फ़ेयर डील' दोनों चरणों के मध्य भी किसान ने अपने मौलिक अनुदारवाद को अक्षुण्ण रखा है। मजेदार बात यह है कि कृषक भावुकता से कृषक अनुदारवाद का परिवर्तन मशीनों के प्रयोग के बढ़ने के साथ बढ़ता गया है। यह कहना अधिक सही होगा कि ज्यों ज्यों अमेरिकी किसान का जीवन-स्तर ऊँचा उठता गया वह अनुदार बनता गया है।

किसानों की व्यक्तिता का कारण यह है कि नैगमफ़ार्मों और सहकारी फ़ार्मों को छोड़कर सभी किसानों को मिट्टी और जलवायु, खटमलों और कीड़ों, रसायन और क़ानूनों से अकेले ही लड़ना पड़ा है। छोटे व्यापारियों की भाँति उन्हें भी सभी काम अपने परिश्रम और बुद्धि से करना पड़ता है जिसकी सफलता-असफलता वह खुद भोगता है। इसीलिए दोनों व्यक्तिवादी हो गए हैं।

एक रूप में अमेरिकी किसान संसार के अन्य किसानों से भिन्न है। वह ग्रामीण नहीं है। उदाहरणार्थ भारत में 85 प्रतिशत व्यक्ति गाँवों में रहते हैं। यूरोप के ग्रामीण तो अमेरिका या न्यू इंग्लैंड में आ सकते थे पर भारतीयों से गलत माना जाता है। कस्बा के पोमौन प्रवासियों और स्पेनिशभाषी दक्षिण पश्चिम के ग्रामीणों को छोड़कर सामान्यतया अमेरिकी किसान अपने फ़ार्म पर ही रहता है। गाँवों और कस्बों में व्यापारी, आढ़तिये, मिल मजदूर और नौकर रहते हैं। इस सम्बन्ध में निर्णायक ऐतिहासिक क्षण मध्य पश्चिम के बसाव के समय आया। होमस्टीड क़ानूनों[2] ने भूमि पर स्वत्व प्राप्त रखने के लिए फ़ार्मों पर निवास अनिवार्य कर दिया था। एक फ़ार्म औसतन 160 एकड़ का था। इसका अर्थ यह हुआ कि किसान ज़मीन पर छिटक कर बसे। एक दूसरे का हरम और छोटा-सा दिग्ग्रामर होना। इसका फल यह हुआ कि अपकर स्थानीयवाद पनपा जिसने स्थानीय स्वायत्तता पर जोर दिया। अति हीनता के भय और अपमान के जीवन ने उनके दृष्टिकोण में ही अलगाव को

1 Sons of the wild Jakass
2 Homestead Acts.

पुष्ट किया। किसान नगर को विद्रोह की दृष्टि से देखता है। नगर से उसका सम्बन्ध वैसा ही है जैसा कि उत्पादक उसके माल को सस्ते दाम में खरीदने वाले और अपना माल ऊँचे दामों बेचने वाले बिचौलियों के बारे में रख सकता है। यह सम्बन्ध कर्जदार और बैंकों का है। इन सबने उसकी व्यक्तिता बढ़ाई है।

मध्य-पश्चिम में या अन्यत्र सभी जगह स्वतन्त्र किसानों के जीवन में परिवर्तन हुआ है। अमेरिकी संस्कृति के मानक की शक्तियों से उसका नया रिश्ता हुआ है और वह संचार-व्यवस्था की क्रान्ति का अंग बना है। मोटर रेडियो सिनेमा टेलीविजन ने उसे अलगाव से बाहर निकाला है। अब वह क्रय-विक्रय गाँव में कम करता है, अधिकतर वह बड़े औद्योगिक केन्द्रों में जाता है जहाँ उसकी मशीनों के पुर्जे मिलते हैं और उसकी पत्नी और बच्चों को नए नए फैशन। अब उसके बच्चे स्कूल की बस में इन केन्द्रों में पढ़ने जाते हैं। अब उसकी जमीन बन्धक नहीं रहती। सरकार उसकी फसलों के मूल्य गिरने से बचाती है। फसलों के पैदा करने में भी अब उसे सरकारी टेक्निशियनों से मदद मिलती है। पर उसका काम अब भी कड़ा है। कार्याधिक्य मौसम और बाजार के खतरे अब भी हैं। किन्तु अब कृषि अमेरिकी अर्थ-व्यवस्था का एक इमदादी अंग बन गई है और उसकी सुरक्षा राज्य करता है।

संसार के अधिकांश क्षेत्रों में ग्रामीण जनता परम्पराओं से बंधी होती है। किसान के ऊपर चारों ओर से आधुनिक जीवन को छिन्न-भिन्न करने वाली शक्तियाँ आक्रमण कर रही हैं। जिसे 'ग्रामीण-समाज' कहते हैं वह अब मिटा जा चुका है और अब वह सारे देश में विघटन के विभिन्न स्तरों पर है, जमीन से लोग हट रहे हैं। किसान की बेटी जिसने विश्वविद्यालय की शिक्षा पाई है वह अब विवाह या नौकरी की तलाश में शहरों के चक्कर काटती है। किसान का बेटा जो कृषि कालेज से डिग्री पा चुका है, वह कभी तो फार्म पर ही टिक जाता है नहीं तो नागरिक जीवन से आकर्षित होकर शहर में चला जाता है। कृषि जीवन की जो शिथिलता है अब उसको बड़े फार्म या नैगम फार्म भरने लगे हैं।

अब भी फार्मों का आकर्षण समाप्त नहीं हुआ है। प्रति वर्ष ऐसे युवक सामने आ रहे हैं जो फार्मों पर आकर बसना चाहते हैं। पर अब सरकारी जमीन नहीं रही। थोड़ी-सी जमीन पश्चिम में है जिसे हाल ही में सिंचाई के साधन जुटाकर कृषि योग्य बनाया गया है। पर वहाँ भी सबों के लिए लम्बी कतारें[1] लगी हैं। एक और प्रवृत्ति के दर्शन हुए हैं। नगरों के लोग भी अपने पेशों के अतिरिक्त फार्म चलाना चाहते हैं। इनके पास फार्मों में लगाने के लिए

---

1 Waiting list.

पर्याप्त पैसा भी है। कभी-कभी तो आयकर से बचने के लिए भी वे आटे की थैली बनने को तैयार रहते हैं। यह दूसरा उदाहरण है इस बात का कि किसानों का रास्ता कैसे अमेरिकी अर्थ-संस्कृति को प्रभावित कर रहा है।

### ३. छोटे नगरों की अवनति

अमेरिका में पहले आबादी कम थी। तेजी से आबादी बढ़ी। इस बीच इस पर दो तरफ से दबाव पड़ा जो अब भी है—ये हैं 1. आबादी छोटी इकाइयों से बड़ी इकाइयों में आ रही है 2. साथ ही बड़ी सरकारें केन्द्र से उसकी परिधि की ओर बढ़ रही हैं। परम्परा के अनुसार छोटे शहरों में अमेरिका की आत्मा अधिक सुरक्षित है। दे टॉकविले का विश्वासपूर्ण कथन है कि अमेरिका में राज्य और राष्ट्र के निर्माण के पूर्व शहर ही सरकार और जीवन का प्रतिनिधित्व करते थे। न्यू इंग्लैण्ड में नगर पिछले 300 वर्षों से हैं। यद्यपि राज्य, राष्ट्र और अर्थ-व्यवस्था ने उन पर कम बोझा-भारी नहीं है तथापि आज भी वे अपने दोनों मौलिक गुणों को सुरक्षित रखे हुए हैं। ये गुण हैं—आपसी सम्बन्धों में मैत्री और अपने नगर के कल्याण की चिन्ता।

दे टॉकविले ने अपने निजी कारणों से न्यू इंग्लैण्ड के नगरों की प्रशंसा की थी। वह फ्रांसीसी केन्द्रीकरण को घृणा करता था क्योंकि वह "प्रवासीजनों को अपनी निवास भूमि के प्रति उदासीन बनाता है। वहां के जीवन में बड़े-से बड़ा परिवर्तन उसकी स्वीकृति के बिना होता है।...अपने गांव की हालत, सड़क की पुलिस या गिरजाघर की मरम्मत से उसका सरोकार नहीं है। क्योंकि वह सोचता है कि इन बातों से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। यह सब बस अजनबी की सम्पत्ति है जिसे वह सरकार कहता है। इस दु:खात्मक चित्र के मुकाबिले में उसने आदर्शपूर्ण अमरीकी नगर-व्यवस्था को देखा। चाहे उसका दृष्टिकोण पक्षपात पूर्ण रहा हो पर अमेरिकी नगरों की 'प्रान्तीय स्वतन्त्रता' और वहां के छोटे-से-छोटे नागरिक का उसके प्रति लगाव का जो वर्णन उसने किया है वह सही है। गणतन्त्र के प्रारम्भिक दिनों में सभी क्रान्तिकारी और सांस्कृतिक कार्यों के स्थान ये नगर थे। लिंकन और ग्रान्ट से लेकर ट्रूमन और आइजनहावर तक प्रायः सभी राष्ट्रपति इन छोटे शहरों में ही उत्पन्न हुए हैं। बीसवीं शताब्दी तक अमेरिका के इतिहास में अधिकांश अमेरिकियों के लिए यही मौलिक समाज था।

किन्तु विकासमान अमेरिकी-समाज का चित्र अब इन छोटे शहरों में मुश्किल से मिलता। पिछले दिनों में तो विकास की महत्त्वपूर्ण रेखाएं कहीं अन्यत्र खींचती हैं। इसका मुख्य कारण तो यह भी है कि अमेरिका में अभी छोटी इकाइयों

छोटे फार्म छोटी व्यापारी फर्में छोटे कस्बे यहाँ तक कि बड़े शहरों के छोटे भाग सभी की अवनति हो रही है। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ और ग्यूरीस के समय के बीच किसी समय छोटे नगरों ने आधुनिक अमरीकी जीवन का आघात महसूस किया। 1930 से 1935 के बीच तो निश्चित रूप से छोटे नगरों के जीवन में मोड़ आ गया। वह अमेरिकी जीवन से दूर पड़ने लगा। अमेरिकी शक्ति छोटे शहरों के आस-पास घूमकर चली गई, पर वह इन छोटे शहरों को छू न सकी। वे अलग ही खड़े रहे। अब ये भूतों के नगर की तरह उजाड़ हो रहे हैं, क्योंकि युवक इन्हें छोड़कर जा रहे हैं।

हुआ यह था कि छोटे नगरों का आर्थिक और सांस्कृतिक आधार ही ढह गया। अंशतः तो यह उस क्षेत्र में हुआ जहाँ कटाव के कारण भूमि नष्ट हुआ है। किन्तु यह तो एक आर्थिक कारण है। सर्वत्र-समृद्ध क्षेत्रों में भी जहाँ मोटरें रेडियो टेलीविज़न आए हैं राष्ट्रीय विज्ञान का विकास हुआ है और मशीनों से फसलों की खेती होने लगी है और जनता बड़े शहरों की ओर जाने लगी है, छोटे शहरों की अवनति हो रही अब बड़े शहर और उनके उपनगर परिश्रम और विलासी उपभोग और आराम के केन्द्र हो रहे हैं। आइवा के ग्रीनीन सेन्टर के एक बूढ़े ने कहा कि "जो लड़का अब यहाँ से पढ़ने जाता है वह फिर वापस रहने नहीं आता।" वर्तमान सदी के चालीस में इस नगर का आबादी आधी हो गई। युवक अपने स्थानों से दूर नगरों में नौकरी खोजने जाते हैं या फिर वे ऐसे टेक्नीकल स्कूलों में जाते हैं जहाँ से शिक्षित होकर निकलने पर उन्हें उनके छोटे नगर में अपने उपयुक्त काम ही नहीं मिलता।

मैंने यहाँ छोटे नगरों (कस्बों) और नगरों की चर्चा की है जिनका अन्तर बताना बड़ा मुश्किल है। जनगणना ब्यूरो किसी भी व्यक्ति को जो ऐसे स्थान में रहता है जिसकी आबादी 2,500 से अधिक है 'नगरवासी' मानता है। 1950 में 1,000 से 2,500 की आबादी के कस्बों की संख्या 3 000 थी। 2,500 से 10 000 की आबादी के नगरों की संख्या 3 000 से अधिक थी। 2,500 से 25 000 की आबादी के नगरों की संख्या 3,500 थी। इसलिए भेद की रेखा हम मोटे तौर पर 10,000 या 15 000 रख सकते हैं। पर यह भी मनमानी ही है।

फर्क यह है कि आबादी के किस बिन्दु पर पहुँचकर कस्बे का जीवन अपनी परिधि को पार कर जाता है। कस्बे के जीवन का मुख्य लक्षण यह है कि वहाँ के नागरिक व्यक्तिशः एक दूसरे से सम्बन्ध स्थापित कर सकें। कोई कह सकता है कि ऐसे कस्बे का नागरिक वर्षों तक वहाँ निवास करने पर भी जब घर से बाहर सड़कों पर आए और उसे अपरिचित चेहरे मिलने लग जाएँ तो वह कस्बा नहीं रह जाता बल्कि शहर या नगर बन जाता है। छोटे शहरों में अपरिचितों का मिलना और बड़े शहरों में परिचितों का मिलना महत्वपूर्ण

हुआ है। बहुत-से लोगों ने अनुभव किया है कि बड़े शहरों में छोटे शहरों की भाँति यदि परिचित पग-पग पर मिलने लग जाएँ तो आदमी पागल हो जाए। गौर करने की बात है कि हाल में जो सर्वेक्षण प्रकाशित हुए हैं वे उन्हीं नगरों के थे जिनकी आबादी 25,000 से कम थी। सभी अध्येताओं ने प्रतिनिधि जनता को सामने रखकर अमरिकी जीवन के अध्ययन का यत्न किया। स्पष्ट है कि छोटे शहरों के सम्बन्ध में ऐसा अध्ययन सुकर है। पर मुझे संदेह है कि इनमें सर्वांगपूर्ण अमरिकी जीवन का चित्र है। इन अध्ययनों में एक पीढ़ी पहले के अमरिका की खोज की गई है। अमेरिकी जीवन के विकास केन्द्रों का परिचय इन छोटे शहरों में अद्भुत रूप में प्रतिबिम्बित हुआ है।

जिसे अमेरिकी कहते हैं छोटे शहर उसकी बीज भूमि है। यह विचार छोटे शहरों के प्रशंसकों और सर्वेक्षणकर्ताओं के ही नहीं है बल्कि छोटे शहरों के कटु आलोचक थार्स्टीन वेब्लेन जैसे व्यक्तियों के भी हैं। अपने 'दि कण्ट्री टाउन' शीर्षक निबन्ध में उसने अपना मत व्यक्त भी किया है। स्कैण्डिनेवियन मिड वेस्ट के कृषक आदिवासियों के रूप में न्यू इंग्लैण्ड से आकर मैदानों पर कब्जा करने वाले भोले व्यापारियों और साहूकारों के प्रति उसने रोष भी व्यक्त किया है। उसने इस देहाती कस्बे में पूँजीवादी मनोवृत्ति के दर्शन किए जो उत्पादक नहीं बल्कि दलाल हैं जो मुनाफाखोरी करते हैं लालची हैं और सदा अपना अधिकार बनाए रखना चाहते हैं यद्यपि यह मूल्यांकन बड़ी बेरहमी से किया गया है पर इसमें एक अन्तर्दृष्टि है। अमेरिका का इतिहास ही बत-लाएगा कि उद्योगों के क्षेत्र में जो व्यक्ति शीर्षक पर पहुँचे हैं उसमें कितनों ने अपना निर्माण इन छोटे शहरों में किया। बहुतों ने तो व्यापार का प्रारम्भ भी इन्हीं कस्बों में किया था। किन्तु इस शताब्दी के बीच में जब वैमनस्य मिल रहा था तब भी ये कस्बे पूँजीवादी मनोवृत्ति के केन्द्रबिन्दु के रूप में नष्ट हो रहे थे।

ज्यों ज्यों कस्बों का महत्त्व घट रहा है आदर्श के रूप में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ रही है। कस्बे के अब दो अर्थ हैं एक भावनात्मक और दूसरा विनीत। अब भी लोगों का विश्वास है कि देहातों में अपनापन अधिक है। यह भी लोगों का विचार है कि नगरों के जीवन के भ्रष्टाचार से आज भी छोटे शहर छोटे होने के कारण बचे हैं। इतिहास भूगोल और अर्थ-व्यवस्था ने प्रत्येक अमेरिकी शहर को अपना एक निजत्व दिया है प्रत्येक की अपनी छाप होती है। बड़े शहरों में घरों में रह-रह लोगों का बचपन के साथ छोटे शहरों की स्मृति जाग जाती है।

इस शताब्दी के मध्य में छोटे शहरों के प्रति 'पुनर्जागरण' की जो भावना आई शायद उसका आधार यही था। मजेदार बात यह है कि इसी समय इन छोटे शहरों से अधिक-से अधिक लोग बाहर गए और इनकी अवनति उससे अधिक हुई। इसलिए बौद्धिक रूप में तो नहीं पर भावनात्मक रूप में

इसके रूप की ओर सबका ध्यान गया। बहुत-से लेखकों विज्ञापनपुरुषों अख-बार वालों और कलाकारों ने न्यूयार्क शिकागो या हालीवुड छोड़कर छोटे शहरों में बसने और परित्यक्त 'अमरिकी हृदय' की प्राप्ति के स्वप्न देखे। विश्व-विद्यालयों में बहुत-से प्रोफेसरों ने भी छोटे शहरों की शक्ति के पुनर्जीवन के लिए जी-तोड़ प्रयत्न किया है।

पर इनमें से कम लोगों ने इस प्रश्न पर गहराई से विचार किया है। आखिर क्या बात है कि छोटे शहरों की अवनति हो रही है और नई पीढ़ी उन्हें छोड़कर जा रही है। शान्ति और सन्तोषपूर्ण जीवन बिताने वाले नये लोगों को तो इसकी ओर आकर्षित होना चाहिए था। किन्तु इस आकर्षण को गाँवों की जड़ता और अत्याचार की शक्तियों से मुकाबला करना पड़ता है और इस मुकाबले में ये प्रतिशक्तियाँ मजबूत पड़ती हैं। इस प्रतिशक्ति का सुराग वर्तमान शती के दसे और बीसे के साहित्य में मिलता है। सिन्क्लेयर लुई के 'मेन स्ट्रीट' के गोफर प्रेयरी और एडगर ली मास्टर्स की कविताओं में स्पून रिवर के चित्रण में और शेरवुड एण्डरसन और थियोडोर ड्रीज़र के वर्णनों में इनका बखान होता है। 188? में ए० होवे ने 'दि स्टोरी ऑफ ए कण्ट्री टाउन' में छोटे शहरों के जीवन के टुच्चेपन और अन्यायपन को नग्न रूप में सामने रख दिया था। इन सभी लेखकों ने बड़ी बेरहमी से छोटे शहरों में व्याप्त आत्मीयता, दम घोंट देने वाली विवशता और बन्द कमरों में रहने से पैदा होने वाली जड़ता का चित्रण किया है। अमरिकी कन्फार्मिज्म के गहरे पंजे इन छोटे नगरों के निवासी समाज के नियमों को तोड़कर नया जीवन बिताने वाले नर-नारियों पर जितनी निर्दयता से पड़ते हैं शायद अन्यत्र वैसी स्थिति न हो। व्यक्ति की अपनी स्वयं की विद्रोही प्रवृत्तियों पर भी ये पंजे उसी दृढ़ता से पड़ते हैं। बाहरी सामाजिक अत्याचार और आन्तरिक दबाव का चित्रण हमें प्राप्टवुड द्वारा चित्रित पात्रों के घबराए चेहरों में भली भाँति दिखलाई पड़ता है।

अनेक आलोचक जिनमें टी० एस० इलियट भी हैं यह मानते हैं कि सृजनात्मक सफलता के लिए आपसी जान-पहचान[1] आवश्यक है। यह छोटे शहरों में ही सम्भव है। हो सकता है कि यह सत्य भी हो। पर वर्तमान काल के अमरिकी कवि और उपन्यासकार ने इसलिए नहीं लिखा कि छोटे शहरों से उनका सम्बन्ध था बल्कि उन्होंने इसलिए लिखा था कि यह सम्बन्ध वे तोड़ रहे थे। परम्परा के खूँटे को तोड़ने के अभिप्राय से उन्हें सृजनात्मक शक्ति मिलती है। छोटे नगरों का छोटापन ही उनके लिए शिकायत और घृणा का प्रतीक है इसमें छोटे शहरों और महान् समाज का संघर्ष तथा विद्रोह का भाव खूबी के साथ

1 Face to face relations.

उभरता है। पिछले दशक के कई नए उपन्यास लेखकों ने भी छोटे शहरों के त्रिभुवन का चित्रण[1] किया है। किन्तु एक प्रकार से पिछले कोने में ही साहित्यिक प्रान्तीय रचनाएँ लिखी जा चुकी हैं। अब महान् रचनाएँ छोटे शहरों के विषय नहीं करतीं बल्कि अब उनमें बड़े नगरों और उनके उपनगरों का चित्रण होता है।

इन सामाजिक परिवर्तनों ने छोटे शहरों का महत्त्व घटाकर उन्हें प्रभाव ही नहीं कर दिया बल्कि उनकी शक्ति के स्रोत भी सुखा दिये। वर्तमान में अमेरिका में शक्ति बड़े नगरों के व्यापारियों के हाथ में है। यही नैगम-साम्राज्य मज़दूर-संघ राष्ट्रीय दबाव गुट और जन-संचार व्यवस्था की नीतियों का निर्धारण करते हैं। किन्तु इसके पूर्व के अमरिका में अमेरिकी इच्छा को व्यक्त करने वाले विषय छोटे शहरों के वकील साहूकार व्यापारी और सम्पादक करते थे। जैसे जैसे व्यापार परिवहन और आमोद-प्रमोद के साधनों के केन्द्र बदलने लगे वैसे वैसे शक्ति के केन्द्र भी हटने लगे। अब नगर अपने साधनों से अपनी सड़कें सेवा शिक्षा कर और सार्वजनिक काम नहीं कर सकते। इन कामों के लिए अब उन्हें संघीय सहायता के ऊपर निर्भर रहना पड़ता है। शक्ति तो समाप्त हो गई पर आपसी झगड़े और गुटबन्दी तो वैसी ही है। इसलिए छोटे शहरों में अक्सर इस समाप्त प्राय शक्ति के हथियाने के लिए संघर्ष होते रहते हैं।

बाहर से गिरिजाघर की मीनारें, टाउनहाल मुख्य सड़कों बैंकों और यहाँ के स्थानीय पत्रों को देखने से तो यही मालूम होता है कि इन नगरों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। सब कुछ वैसे-का-वैसा ही है। किन्तु ये ह्रास-ग्रस्त हो चुके हैं। इनकी शक्ति नहीं और चली गई है। परम्परागत जीवन विशृंखल हो चुका है। कई पीढ़ियों पूर्व चार्ल्स फ्रांसिस ऐडम्स ने इसे देख लिया था जिसका चित्रण उनके न्यू इंग्लैण्ड के तेजी से विलीन होते गाँव के काम्यपूर्ण वर्णनों में मिलता है। अब तो नैतिकता के यम-नियम इन शहरों के समाजों में भी क्षीण पड़ रहे हैं क्योंकि सम्पूर्ण समाज में नैतिक अराजकता व्याप्त है। जार्ज होमैन्स ने मैनापुटन के कस्बे के सामाजिक विघटन का अध्ययन किया था। इस हिलटाउन की आबादी 1,000 के लगभग थी। उसने लिखा है कि एक क्लर्क ने सार्वजनिक धन का हनन किया और वह फरार हो गया। पकड़े जाने पर उसे उतना कड़ा दण्ड नहीं दिया गया जितना पहले देते थे। अब लड़कियाँ 'डेटिंग' के समय यौन सम्बन्ध कर लेती हैं। अब अक्षत कुमारित्व पर न तो जोर ही दिया जाता है न उसका विश्वास ही है। शायद ही कोई कहे कि इन छोटे शहरों में मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति बड़े शहरों से अच्छी है या यहाँ शराब कम पी जाती है या यहाँ का पारिवारिक जीवन बेहतर है। अब कोई स्थानीयता" हृदय-विदारक निष्क्रियता और हठ जमता तक भ्रष्टाचार और

1 Macrocosm of some small town.

शोक को भी दृष्टि से दूर नहीं कर सकता । क्षुद्रता और उदारता सार्वभौम हैं । संस्कृति के उपचारों का अनुगमन शहर या देहात कहीं भी रहकर समान रूप से किया जा सकता है । छोटे नगरों में शान्ति अधिक हो सकती है पर सुख नहीं । परिचय-सम्बन्ध हो सकता है पर मानव-स्थिति का ज्ञान गहरा नहीं हो सकता है । सामाजिक और शारीरिक दृष्टि से समझने के लिए एक और बड़ा संसार है पर सचमुच में वह जंगल जैसा ही है ।

यदि कस्बे के जीवन की श्रेष्ठता के व्याख्यान की मैंने आलोचना की है तो मेरा यह कथन नहीं कि उसमें कुछ स्थायी मूल्य नहीं है । हाँ वह उतना श्रेष्ठ नहीं है जितना उसे बताया गया है और इसी रूप में अमेरिकी जीवन में उसका स्थान भी होगा । नितान्त शहरी और मशीनी समाज के विकास ने छोटे शहरों का महत्त्व ही नहीं समाप्त कर दिया है बल्कि उनके बहुत-से मूल्यों को भी नष्ट कर दिया है जिनका उनके साथ ऐतिहासिक सम्बन्ध रहा है । इमर्सन का कान्कार्ड लिंकन का स्प्रिंगफील्ड विलियम एलन ह्वाइट का इम्पोरिया ट्रूमन का इंडिपेंडेंस और आइज़नहावर का एबिलिने निश्चित ही ये ऐसे नगर हैं जिनका अपना निश्चित रहा होगा जिसने ऐसे-ऐसे महापुरुषों को जन्म दिया । अभी भी ऐसे अनेक छोटे शहर हैं—विशेषकर न्यू इंग्लैंड या मध्य-पश्चिम के धनी क्षेत्रों में जो अपनी परम्पराओं और दर्शन के प्रति बड़े जागरूक हैं । ट्रूमन ने बाल अपराध के सम्बन्ध में जब कहा कि हमारे बालकों को 'गैजट' की कम 'कोरीज' की अधिक आवश्यकता है[1] तो वे इन्हीं छोटे शहरों के उद्यान—प्रत्यक्ष बनावटी रहित, जीवन को सीधा-सादा रहने दो—की भावना को ही प्रकट कर रहे थे । ट्रूमन का निजी चरित्र-अनौपचारिक निष्कपट सादगीपूर्ण कर्तव्यनिष्ठापूर्ण दृढ़ भक्ति की माँग करने वाला 'नहीं' को अस्वीकृत करने वाला मनुष्य और घटना को सटीक पहचानने वाला नैतिक आधार में ढला—छोटे नगरों में जो सबसे स्वस्थ और मर्मभेदी है उसी धातु से निर्मित हुआ है । यद्यपि इन छोटे नगरों के अधिकांश राजनीतिज्ञ ट्रूमन की भाँति बहुमत की आकांक्षाओं तथा अल्पमत के हितों या मजदूरों के हितों या नागरिक स्वातन्त्र्य और हब्शियों के नागरिक अधिकारों से तादात्म्य स्थापित करने में हिचकते फिर भी बहुत-से ऐसे राजनीतिज्ञ हैं जो ट्रूमन की भाँति मानसिक और छोटे शहरों के जीवन के समन्वय की कल्पना करते हैं । और यह पर्याप्त है । यदि छोटे शहरों का बलिदान होता है तो इसके साथ पारस्परिक सम्बन्ध की परम्परा अपने निजत्व का भान और सम्पूर्ण का एक भाग होने का भान और मूल्य नहीं बल्कि एक व्यक्ति के रूप में मिल जाने के भाव ये सब भी बलि चढ़ जाएँगे ।

---

1. Our children need fewer gadgets and more chores.

हाल की कुछ रचनाओं से प्रकट होता है कि छोटे नगरों से ऊब की बीमारी के मूल म ये छोटे नगर उतना नहीं है जितना समाज (कम्यूनिटी) की खोज[1]। प्रश्न यह नहीं है कि छोटे नगरों का पुराने रूप में पुनर्वास हो सकता है कि नहीं क्योंकि यह असम्भव है—बल्कि प्रश्न यह है कि उसके स्थान पर कोई वैसा ही समाज बनेगा कि नहीं ? इस में अमेरिका में स्थान की समस्या कहता है। जब तक कि ऐसा नहीं होगा अमेरिकी जीवन एक जंगल विच्छिन्न रहेगा और अमरिका का व्यक्तित्व अमाप्त और असन्तुष्ट रहेगा[2]।

यदि भविष्य म अमरिका में य छोटे शहर जीवित रह गए तो व इसी ढाँचे म जिन्दे रहग। उनका आर्थिक आधार दूसरा होगा। कृषि क्षत्र के कस्बे या मिल या खान के कस्बे के रूप म वे न रहेंगे बल्कि उनमें कृषि और उद्योग का सामजस्य होगा और उनम बड़े शहरों और उनके उपनगरों से लोग बसने आएँगे। इस सम्बन्ध म आगे की पंक्तियों में चर्चा की जाएगी पर यहाँ इतना ही पर्याप्त है कि बड़ शहर या उनके उपनगर समस्या का कोई हल प्रस्तुत नहीं करते। इस स्थान की समस्या का हल छोटे शहर भी नहीं देते। छोटे शहर अपने आर्थिक आधार मे परिवर्तन कर सकत है—विशेषकर उद्योगों के विकेन्द्री करण की प्रवृति क साथ। परिवहन के नए साधनों के विकास के होने से अब छोटे शहरो से बड़ शहरों मे काम या मनोरंजन या स्कूल या अस्पताल के लिए आसानी स ए का जा सकता है। छोटे शहर अपने पुराने रूपो की रक्षा करते हुए, जड़ता और संकीर्णता का परित्याग करके नया जीवन विकसित कर सकते हैं।

9 बड़ नगरों क प्रसार और उनकी बाधाएँ

आधुनिक रूप मे अमेरिका का निर्माण नगरो क निर्माण की प्रक्रिया से ही हुआ है। उपनगरों की क्रान्ति के इस युग म भी यह प्रक्रिया अभी चल रही है। अमरिका म जब किसी स्थान को नई धारा की आती है तो अमरीकी ही बड़ नगर का रूप धारण कर लेता है। सामान और रुपया बनाने में अम रिका नगर भी बनाना जानता है।

लविस ममफोर्ड ने 'कल्चर ऑफ सिटीज़' मे बड़ी विद्वता क साथ यह समझाया है कि नगर किस प्रकार सामान्य आश्रय के रूप में जन्म लेकर किसा र उदाय नगर और फिर महानगर बन जाता है जहाँ सब काम मशीन से होता है। किर तो सभी सभ्यताओं मे बड़ नगरों का विकास हैनिरिज और

[1] Quest f r community

[2] American life will become more jangled and fragmented than it is and American personality will c ntinue to be quiet and unfulfilled.

औद्योगिक विकास के साथ-साथ हुआ है। यूरोप में भी जहाँ नगर अमेरिका से पहले बड़े और जिनकी आबादी का घनत्व आज भी अमेरिकी नगरों से अधिक है ऐसा ही हुआ और एशिया में भी ऐसा ही हो रहा है। अमेरिका में जहाँ महानगरों का विकास हुआ है तो केवल वहाँ जनसंख्या ही नहीं बढ़ी है बल्कि शक्ति भी एकत्रित हुई है। उत्पादन संचलन-शक्ति[1] परिवहन और संचार के साधनों के क्षेत्र में होने वाली क्रान्ति के साथ-साथ—बल्कि उनके परिणाम स्वरूप अमरिकी नगरों का विकास हुआ है। नये उद्योगों के विकास सड़क से शहर, शहर से रेल, रेल से मोटर और हवाई जहाज, स्टीम से गैस साइन गैस साइन से बिजली और स्वचालित-शक्ति अर्थात् अर्थ-व्यवस्था के प्रत्येक परिवर्तन ने शहरों के जीवन को उलझाया है। फिर भी परिवर्तन तेजी से हो रहे हैं और प्रत्येक परिवर्तन शहरों के बाह्य और आन्तरिक रूप को बदलता है। तकनीक के क्षेत्र में होने वाला प्रत्येक परिवर्तन नगर के आन्तरिक रूप को नष्ट करता है। उसके स्थान पर नये रूप जन्म ले रहे हैं।

संख्यात्मक वृद्धि[2] से तो हम परिचित हो हैं। 1790 में जब अमरिकी राष्ट्र का जन्म हुआ अमेरिका में ऐसा कोई बड़ा नगर ही न था जो यूरोप के नगरों की तुलना में बड़ा होता। बीसरने में कुछ शहर थे जिनमें स तीन की आबादी 10,000 से 25,000 के बीच दो की 25,000 से ऊपर थी। 50,000 की आबादी का कोई शहर ही न था। न्यूयार्क की आबादी 1820 से पहले 100 000 न थी। 1880 में इसकी आबादी 10 लाख हुई। 1955 तक न्यूयार्क की आबादी 80 लाख से अधिक थी। 20 शहर न्यूयार्क की विशालता से लेकर 5 लाख तक की आबादी के थे। 106 शहर ऐसे थे जिनकी आबादी 1 लाख से अधिक थी। जनगणना ब्यूरो के आँकड़ों के अनुसार 1940 व 1950 के बीच नगरवासियों की संख्या (2,500 व ऊपर की आबादी के शहरों के निवासी) 7 करोड़ 60 लाख से बढ़कर 8 करोड़ 90 लाख के आसपास हो गई। आखिरी संख्या पूरी अमेरिका की आबादी की 64 प्रतिशत अर्थात् लगभग दो तिहाई है। उत्तर-पूर्व में यह अनुपात 80 प्रतिशत पश्चिम में 70 प्रतिशत दक्षिण में 50 प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त गाँवों में रहने वाले कुछ ऐसे लोग भी हैं जो शहरों के नजदीक रहते हैं शहरों में काम करते हैं और जिनका रहन-सहन नागरिकों की तरह ही है। यदि इन्हें भी नागरिकों में शामिल कर लें तो नगरवासियों की संख्या 80 से 82 प्रतिशत हो जाएगी। यदि 25 000 से 100 000 को छोटे और मध्यम श्रेणी के नगर मान लें तो सन् 1950 में 378 नगरों में 1 करोड़ 70 लाख अमेरिकी रह रहे थे। 4 करोड़ 40 लाख व्यक्ति 1 लाख से अधिक की आबादी वाले

1 Motive power
2 Statistical growth

नगरों में रहते थे। इस प्रकार 6 करोड़ 10 लाख व्यक्ति 25,000 से अधिक की आबादी वाले नगरों में रहते थे।

इनमें प्रत्येक नगर का अपना निजत्व और उसकी अपनी एक शैली है। न्यूयार्क और बोस्टन को बुद्धिवादियों का नगर होने का गर्व है। किन्तु 'सूअर कसाई बाड़ों'[1] का नगर शिकागो भी इस शताब्दी के प्रथम दशक में साहित्यिक पुनर्जागरण से प्रभावित हुआ। अब वह शिक्षा का केन्द्र भी बन चुका है। सानफ्रांसिस्को न्यू आर्लीन्स चार्ल्सटन—इन सबको अपने निजत्व का मान है। बोस्टन फिलाडेल्फिया बाल्टीमूर को भी अपने इतिहास पर गर्व है। इसी प्रकार लास एंजेल्स श्रीवपट हौस्टन डलास सीटल पोर्टलैण्ड ने अभी हाल में 'बूम-नगरों' के रूप में ख्याति पाई है। यद्यपि अधिकांश नगरों का विकास उद्योग और परिवहन व्यवस्था के कारण हुआ। किन्तु वाशिंगटन का विस्तार राष्ट्र की राजधानी होने के कारण ही हुआ है।

इस पर जोर देने में एक खतरा है। वह यह कि हम भूल जाते हैं कि अमेरिका में कृषक-प्रधान प्रदेश (हिन्टरलैण्ड) भी है और वहाँ भी नगरों का विकास हुआ है। इन नगरों का जन्म आस-पास के कृषि उत्पादन की मंडी के रूप में हुआ। कैन्सास और सुदूर पश्चिम के उत्पादन बाहर भेजने के लिए शिकागो और कैन्सास में व्यापारी केन्द्र बने। किन्तु पिट्सबर्ग और क्लीवलैण्ड के विकास का मुख्य कारण लोहा है और इसी प्रकार डेट्रायट का तेल। मियामी फुरसत के उद्योगों[2] का केन्द्र है। हाल में यहाँ और मौसमी लघु उद्योगों का भी विकास प्रारम्भ हो गया है। पूर्व के नगर बोस्टन न्यूयार्क फिलाडेल्फिया चार्ल्सटन और अटलांटा का विकास युद्ध की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण बन्दरगाहों के रूप में हुआ। इस बात के भी उदाहरण हैं कि किसी बड़े नगर का विकास इसलिए रुक गया कि वहाँ अन्तर्महाद्वीपी रेल नहीं आई जबकि बगल का छोटा नगर उस रेल पर पड़ जाने के कारण महानगर बन गया। इस प्रकार पश्चिम के बहुत-से नगर केवल राजनीतिक दबाव जमीन के सट्टे और धूम की बदौलत बढ़े हैं।

अमरीकन इतिहास में कभी-न-कभी प्रत्येक नगर 'बूम' (गरमागरमी) का अवसर पा चुका है। 'बूम' का अर्थ है अचानक विकास जब किसी नगर की ओर अचानक धन की प्राप्ति के लिए लोगों की निगाह तत्काल दौड़ जाए। प्रायः इस अचानक विकास का अपना कोई कारण होता है। यह बूम भी नगर को बढ़ाने में सहायता नहीं कर सकता। क्योंकि कोई नगर मात्र आशा आशोन्माद और कागजी भुगतानों पर नहीं बढ़ सकता। नगरों के विकास के अपने नियम होते हैं।

---

1 Hog butcher of the world

2 Vacationing and leisure industries.

यदि विकास का आधार वास्तविक होगा तो नगर बढ़ेगा और तब प्रारम्भिक सरगर्मी और बढ़ती। शिकागो की पहली सरगर्मी शिपयार्ड और रेल-केन्द्र के रूप में हुई दूसरा चरण कृषि मशीनों के निर्माण अनाज और अन्य सामानों के परिवर्तन और सट्टे के कारण आया। फिर युद्ध-अनुसंधान और उत्पादन के कारण। लास एंजल्स में पहली सरगर्मी चाँदी की खान से आई, फिर तेल मिल गया तत्पश्चात् सिनेमा के कारण और अन्त में युद्ध के कारण सरगर्मी आई। नोर्फोक का नगर पहले बहुत छोटा था। वहाँ एक छोटा-सा बन्दरगाह था पर द्वितीय विश्वयुद्ध में जहाजों के निर्माण को लेकर यहाँ भी सरगर्मी आई और यह विशाल नगर बस गया।

नगरों के विकास की कथा के अध्ययन से पता चलता है कि औद्योगिक कारणों से ही नगर का विकास नहीं होता। नगर बस जाने पर अन्य साधनों का भी पोषण करता है। प्रथम विश्वयुद्ध तक यूरोप से और कृषि से प्रवासी युवक और युवतियाँ शहर की ओर आकर्षित होकर आती थीं। वर्तमान शती के चालीसे और पचासे में दक्षिण से हब्शी और (न्यूयार्क में) प्यूरटोरिकी प्रवासी आये हैं। अधिकांश रूप में इनके अभिप्राय[1] तीन थे—आराम अवसर की खोज और तड़क-भड़क।

आराम का पाठ तो एक पीढ़ी पूर्व ने दिया जो सीमान्त जीवन की कठिनाइयाँ भुगत चुकी थी। अमेरिकी महिलाओं के लिए इसका विशेष महत्त्व था। इन्होंने सीमान्त जीवन के इतने कष्ट भले थे कि यूरोप के आराम यदि अमेरिका में मिल जाएँ, तो वे उन्हीं का स्वागत करने को तैयार थीं। मध्यवर्ग ने इस अभिप्राय को और आगे बढ़ाया। अमरिकी टब स्नानघर और अमेरिकी होटलों के आडम्बर की दूसरे लोगों ने पहले तो हँसी उड़ाई पर बाद में वे लोग भी इनके प्रशंसक बन गए और इन्हीं की नकल करने लगे।

इसी से बड़ी अमेरिकी नगरों की तड़क भड़क भी है। 1880-85 की पत्र पत्रिकाएँ इसे 'शहरों का प्रलोभन' कहती थीं। चित्रों में पहाड़ी पर बैठा युवक शहरों के गुंबद और मीनारों की ओर लुब्ध दृष्टि से देखता दिखलाया जाता। उस समय शिकागो डीट्रायट, मिन्नीपोलिस क्लीवलैंड पिट्सबर्ग बोस्टन न्यूयार्क उसके आदर्श थे जिनकी कल्पना वे करते थे। और युवतियाँ य शहरों की स्वतन्त्रता और पुष्पित-वाक्तिता पर मुग्ध थीं। उनकी संस्कृति की गति शीलता जिस नवात्मकता और रोमांस की माँग करती थी उस काल के युवा युवति शहरों के वातावरण में उसकी प्राप्ति की आशा रखते थे। वहाँ लोग इकट्ठे होंगे वहीं न जुनाव हो सकेगा सौन्दर्य और वेषभूषा प्रदर्शन और बातचीत

---

1 Motif

में आराम चैन का अवसर मिलेगा। यौन-तृप्ति प्रेम और विवाह के अवसर मिलेंगे। पिछले पचास वर्षों में शहरों की आबादी इस तरह भड़क सी गई है।

इन तीनों अभिप्रायों में सबसे बड़ा अभिप्राय असीम अवसर की प्राप्ति का था। प्रायः बड़े नगर एक जंगल ही सिद्ध होते जिसमें बहुत-से तो नष्ट हो जाते और अनेक-गुम अनाम बन जाते। किन्तु जो सफलता को पूजते हैं वे बलि के सम्बन्ध में सोचविचार नहीं करते। नागर जीवन के कारण अमेरिकी जनता ऐसी हो रही है जिसे गाँव या छोटे शहरों की सड़कों के नहीं बल्कि बड़े शहरों की गलियों सिनेमा क्लब की हैरानी और सैर-सपाटे के सपने आते हैं। इन्हें काम के घंटे पार देने वाले शहरों के शोर-गुल से अभ्यस्त होना पड़ता है, भीड़ भाड़ को धक्का देकर निकलने या फिर घंटों एक जगह खड़े होकर प्रतीक्षा करने का धैर्य पालन का अभ्यास करना पड़ता है।

वे इसे बर्दाश्त ही क्यों करते हैं? उत्तर यह है कि सब नहीं करते। इसी से उपनगरों की ओर लोग जा रहे हैं। जो बर्दाश्त करते हैं वे आवश्यकतावश क्योंकि शहरों को वे छोड़ नहीं सकते। मजदूरों को कारखानों या रेल या सड़कों के पासों के पास रहना ही है। व्यापारी अपनी बाजार के निकट रहेगा। इसी प्रकार लेखक समाचार या विज्ञापक राष्ट्र की गतिविधि से सम्पर्क बनाये रखने के लिए वहाँ रहता है।

पहले की भाँति अब शहर आराम का पर्याय[1] नहीं है। धना बसा हुआ और राजधानी में अधिक सवारियों की भीड़ भाड़ से भरा नगर जहाँ पैरों के नीचे मिट्टी नहीं मिलती और कोई मुश्किल से साँस ले सकता है अब आराम नहीं तकलीफ की जगह है। न्यूयार्क में भीड़ के घंटों में चलने वाला कोई भी व्यक्ति यही कहेगा कि बड़े शहरों के जीवन में सीमान्त जीवन से अधिक कष्ट है। यह कष्ट लोग बर्दाश्त इसलिए करते हैं कि यहाँ नाटक-घर संगीत रंगमंच रैस्तरां विश्वविद्यालय कलाकेन्द्र हैं जिनका टेलीविजन या रेडियो या अन्य कोई साधन स्थान नहीं ग्रहण कर सकते। इन सुख-साधनों के अतिरिक्त शहरों की ओर आकर्षण का मुख्य कारण तनाव गति और अवसर* है। डीट्रायट में कृषि मजदूरों और छोटे शहरों से खूब तेजी से भीड़ आई है। इसके सर्वेक्षण से विदित हुआ कि इनमें अधिकांश यह नहीं मानते कि शहरी जीवन से उन्हें हानि हुई। वे डीट्रायट में रहना पसन्द करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि और आकार व्यापार संख्या शक्ति की दृष्टि से बड़े के प्रति आकर्षण है। और इसी कमी से आगे और बढ़ते हैं।

1 St le of comfort.

* Tension Movement Opportunity

इस प्रकार अमरिकी नगरों का जीवन मात्र तकनीकी और आर्थिक कारणों की ही उपज नहीं है बल्कि उसमें एकान्त का भी सम्मिश्रण है। इसी स्थान पर आकर अमेरिकी संस्कृति का बाइजैन्टाइन[1] रूप महत्त्वपूर्ण हो जाता है। इसमें शराब की खोज रात्रि-क्लब यौन तृप्ति की उत्कण्ठा और उसके अवसर का ही प्रश्न नहीं है। ये तो फासिज्म भूख और भोग-सामग्री से वंचित रह जाने के भय का बाहरी निकास है। नगर मानवीय विराग की उपज और उसका प्रतीक है। यह उसकी दवा भी है। अनुभवों के प्रति आमन्त्रण जनता पर बेचैनी का छाप छोड़ सकती है मगर उसका सामूहिक प्रतीक है। ई॰ बी॰ व्हाइट ने न्यूयार्क के बारे में लिखा है कि शरारती और अद्भुत यह नगर ऐसा है जिसे न देखने का अर्थ है 'मृत्यु'।[2]

यह राग गहरा है पर इसमें शहरी जीवन की वास्तविकताओं को छिपाया नहीं गया है। व्हाइट के अनुसार तीन न्यूयार्क हैं, एक है देशी लोगों का जो नगर के पारम्परिक जीवन को बनाए जा रहे हैं दूसरा है कमाने और व्यापारियों का जो दिन में व्यापार के सिलसिले में काम को भेंट-मुलाकात आदि के लिए शहर में रहते हैं पर शाम को हो उपनगरों में चल जाते हैं, तीसरा न्यूयार्क है प्रवासियों का जो यूरोप अफ्रीका और एशिया से आए हैं। मध्य-पश्चिम अमेरिका आदि से भी बहुत-से युवक अवसर की तलाश और दुनिया देखने के लिए यहाँ आते हैं। कुछ अंशों तक दूसरे नगरों में भी ऐसे स्तर हैं। बड़े शहरों में एथनिक स्टाक अधिक मिलते हैं वहाँ व्यावसायिक और बुद्धिवादी वर्गों पर अधिक जोर रहता है। पर सभी अमेरिकी शहरों में मोटे तौर पर धन और जनता धन और निर्धनता अति उपभोग और अपूर्ण उपभोग के पिरामिड मिलेंगे। यह बात सारे अमरिका में ही मिलगी। फ़र्क इतना ही है कि नगर में यह भेद सुस्पष्ट होता है क्योंकि सारा देश ही सिकुड़कर छोटे-से क्षेत्र में आ जाता है।

बड़े नगर अमेरिकी धन और शक्ति का परिचय देते हैं ये सारे देश के बैंकिंग और वित्तीय ढाँचे का निर्माण करते हैं। सारे देश की संचार व्यवस्था के ये केन्द्र हैं। विज्ञापन प्रकाशन और सैल्समैनशिप[3] का प्रारम्भ यहाँ से होता है। इसका अर्थ यह नहीं कि ये उत्पादन नहीं करते। प्रत्येक बड़ा नगर अपने किसी उत्पादन के कारण ही बड़ा होता है। ये बड़े नगर उत्पादन के साथ-साथ सारे राष्ट्र को आर्थिक ढाँचा प्रदान करते हैं जो उनका निजस्व है। यहीं द्रव्य आता है जो शान के सारे ढाँचे का आधार है। जहाँ द्रव्य और साख है वहीं शक्ति

---

1 Byzantine.

2 This mischievous and marvelous monument which not to look upon would be like death.

3 Salesmanship

और वैभव है।

बड़े शहर दूरवासी शक्ति के केन्द्र होते हैं। छोटे शहर तो उनकी जागीर जैसे ही रहते हैं। उदाहरणार्थ न्यूयार्क के एल्मिरा जैसे मझोले नगरों में जो बड़े कल-कारखाने या रोजगार हैं उनके स्वामियों में अधिकांश बाहर के लोग हैं जो न्यूयार्क, पिट्सबर्ग, डीट्रॉयट जैसे बड़े-बड़े शहरों में रहते हैं। एल्मिरा में तो मजदूरों के प्रतिनिधि भी ऐसे ही हैं, क्योंकि मजदूरों के राष्ट्रीय संघ भी दूसरे स्थानों पर मिल जाते हैं। दूरवासी स्वामित्व की यह स्थिति दक्षिण और पश्चिम में और भी प्रचलित है। ये स्थान भी पूरब और मध्य-पश्चिम के केन्द्रों से नियन्त्रित होते हैं। बड़ा नगर अटलांटा और अलास्का हिल्टर-जैसा छोटा नगर (आबादी 23 000) दूसरे शहरों के साथ-साथ कल-कारखानों के लिए बोली बोलते हैं। इन कारखानों के स्वामी भी वहाँ के नहीं रहते। भावी उद्योग के लिए नगरों की बिक्री करना व्यापार-मंडल का मुख्य काम है। अखबार, बैंक, मेयर और नगरों के प्रबन्धक एक स्वर से अपने नगरों में नए उद्योग कायम करने के लिए प्रयत्न करते हैं। मान लीजिए कोई निगम दक्षिण में ऐसे स्थान पर कोई कारखाना खोलना चाहता है जहाँ नजदीक में विद्युत्-शक्ति हो तो उसे दर्जनों शहरों से प्रस्ताव आ जाएँगे जहाँ कम विद्युत, सस्ते मजदूर, कम भाव कर और राजनीतिक संरक्षण की सुविधा मिल सकती है। एक बार यदि कारखाना शुरू हो गया तो शहर उसका गुलाम हो गया क्योंकि मालिक स्थानीय हित का नहीं अपने पूरे साम्राज्य का ध्यान देखकर कारखाने के बारे में फैसले करते हैं। कारखानों में परिस्थिति से सम्बन्ध का निभना असम्भव होता है। यदि कारखाना किसी दूसरे और सस्ते स्थान में चला गया तो स्थानीय मजदूरों और व्यापारियों की हालत का अनुमान कर सकते हैं।

शहरों के लिए जिन देवताओं की उपासना आवश्यक है वे वहीं के नहीं हैं बल्कि बाहर के हैं और 'व्यापारिक व्यवस्था' के हैं। फिर भी कल्याण और प्रगति के सम्बन्ध में प्रत्येक नगर का अपना दृष्टिकोण होता है। शहरों की 'सामुदायिक भावना' को 'बूस्टरिज्म'[1] कहते हैं। प्रत्येक 'बूस्टर' अपने शहर की प्रगति के गीत गाता है उसके सामानों को आगे बढ़ाता है और बदनामी से उसके सम्मान की रक्षा करता है। किन्तु जब सामान्य बेकारी फैलती है और मन्दी के साथ-साथ विपत्ति आती है तो यह 'बूस्टरिज्म' ढीला पड़ जाता है। कारखाने बन्द हो जाते हैं वेतन कम हो जाता है। उधार पर काम चलाना पड़ता है और बेकारी का भय सब के सिर पर सवार रहता है। ऐसी स्थिति में या दुर्भाग्य की बाढ़ में सारा नगर एक सामूहिक इकाई के रूप में प्रकट होता है।

---

1 Boosterism

बाहर से सभी यही समझते हैं कि सारे अमेरिकी शहर एक से हैं पर बात ऐसी नहीं। प्रत्येक शहर की अपनी वास्तुकला है रहन-सहन और मकानों की अपनी शैली है और अपनी मनोदशा है। प्रत्येक का अपना एक प्राकृतिक इतिहास है जिसके प्रत्येक चरण से गुजरते हुए उसकी मौलिक शैली बदलती रही है। फिलाडेल्फिया और बोस्टन कभी अमेरिका की राजनीतिक और सांस्कृतिक राजधानी थे पर अब वे प्रान्तीय नगर हैं। सानफ्रांसिसको सिन्सिनाटी न्यू आर्लीन्स-जैसे बहुत-से नगर जो कभी व्यभिचार और जुए के अड्डों के रूप में बसे थे अब अन्य शहरों की भाँति प्रतिष्ठित नगर माने जाते हैं। इंडियानापोलिस-जैसे कुछ नगर भी हैं जिनसे देहाती आत्मीयता का मिटाना मुश्किल है। शिकागो क्लीवलैण्ड सिन्सिनाटी मिन्नि पोलिस, कैम्ब्रिज जैसे अन्य नगर भी हैं जहाँ कभी नाटक कम्पनियाँ और संगीत मण्डलियाँ आने की कृपा करती थीं और अब वे सांस्कृतिक केन्द्रों के रूप में विख्यात हैं।

यूरोप के बड़े शहर धीरे-धीरे बढ़े हैं। पर उनके मुकाबले अमेरिकी नगर ऐसे बढ़े हैं मानो रातों-रात सब हो गया। कुछ लोग ऐसे थे जब प्रयत्न करते पर किसी योजना के अनुसार इनका विकास किया जा सकता था जो अमेरिकी योजना का रूप ले सकती थी। चार्ल्सटन अन्नापोलिस और विलियम्सबर्ग में योजना बनी भी थी पर 'क्रान्ति' ने इसमें बाधा दी। अमरिकी राष्ट्र के उदय के पश्चात् वाशिंगटन बोस्टन फिलाडेल्फिया बफलो क्लीवलैण्ड और डीट्रायट आदि नगरों को योजनानुसार बसाने की बात सुनी गई थी पर वाशिंगटन और सवन्ना को छोड़कर और कहीं कुछ न हुआ। कारण शहर इतनी तेजी से बढ़ रहे थे कि योजनानुसार बसाने की फुर्सत नहीं थी।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में एक बार फिर नगरों को योजनानुसार बसाने का आन्दोलन चला। कारण था शिकागो सम्मेलन (1893) और पेरिस से अमरिकी वास्तुकारों का शिक्षा ग्रहण कर वापस आना। इस शिकागो आन्दोलन ने योजना को जन्म दिया और समुद्र के किनारे-किनारे नगरों को सुन्दर बनाने की योजना बनी। किन्तु बिना योजना शहरों के बढ़ने का रोग इतना जबर्दस्त था कि डैनियल बर्नहम फ्रेडरिक ओल्मिस्टेड और चार्ल्स मैकिम जैसे व्यक्ति भी कुछ न कर सके। किन्तु अमेरिकी वास्तुकारों के मन में नगर को सुन्दर बनाने की बात जम गई। आन्दोलन चल पड़ा कि राज्यों की राजधानियों नागरिक केन्द्रों विश्वविद्यालयों पुस्तकालयों यहाँ तक कि रेल स्टेशनों को भी सुन्दर बनाओ। इंग्लैण्ड के उद्यान नगरों के आन्दोलन के प्रभाव में उपनगरों को भी सुन्दर बनाने की बात चल पड़ी। इन आन्दोलनों की कमजोरी यह थी कि इसमें धनी लोगों के लिए मकान और उद्यानों की योजना ही प्रमुखरूप से सामने आई। पटरियों को और चौड़ी करने और गरीबों के मकान भी सुन्दर

बनाने की ओर कम ध्यान दिया गया। विलियम हौर्दन के शब्दों में 'इसमें जनवादी चर्चा तो बहुत थी पर काम के नाम पर शून्य था।'[1]

इस प्रकार नगर योजना के दोनों आन्दोलनों के बीच 100 वर्ष का समय बीत चुका है। इन आन्दोलनों के ऊपर स्थिर स्वार्थ[2] की कड़ी पर्त पड़ चुकी है। इस पर इस पूरी शताब्दी की परम्पराओं लोभ भेद और गलती से लागू 'सबजन हिताय सबजन सुखाय' के सिद्धान्तों का भी प्रभाव है जो लाभ के कमाने के क्षेत्र तक ही सीमित न होकर सौन्दर्य उपयोगिता और क्रमानुसार विकास के क्षेत्र में भी प्रवेश कर गए हैं। इसके बाद आए इंजिनियरिंग के चमत्कार और गगनचुम्बी भवन मोटर पार्क और थ्रू वेज[3]। पर नगर-विकास आन्दोलन तो इतनी देर से चले कि ये कुछ कर ही न सके। तब तक अमेरिकी शहरों का मौलिक रूप स्थिर हो चुका था। अब तो उन्हें उस ढांचे के अन्दर ही काम करना है।

इस गड़बड़ी का मुख्य कारण योजना-हीनता है। अधिकांश अमेरिकी शहर मनमाने ढंग से बसे हैं। जहाँ सुविधा मिली या लोभ खींच ले गया नगर बस गये। उनमें कोई सौन्दर्य नहीं। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अनुपयुक्त। मार्गों और तटों के आसपास भेड़िया-धसान की तरह रेलवे स्टेशनों स्टाक यार्डों रसायन के कारखानों या बिजली के कारखानों को घेरे हुए ये नगर बसे हैं जहाँ स्थान स्थान पर कोढ़ की तरह गन्दी बस्तियाँ भी हैं। भाप और धूल की बीमारियों का डर तो सदा बना रहता है। नीचे स्थानों में समय-समय पर बाढ़ से बरबादियाँ भी होती रहती हैं। फैक्टरियों की बदबू और धुएँ से दम घुटता है। इन मकानों में रहने वालों का जीवन कैसे सुखी होगा।

अब हम यह कहते हैं कि नगरों के विकास की कोई योजना न थी तो इसका अर्थ यह नहीं कि इनके विकास में कोई सिद्धान्त नहीं दीखता। नगर विकास के अध्येताओं ने एक ढंग से विभिन्न शहरों का अध्ययन करके बतलाया है कि प्रायः सभी अमेरिकी नगर एक ही ढर्रे पर बढ़े हैं। प्रत्येक नगर में एक कोड़ होता है जिसमें व्यापारियों के दफ्तर और दुकानें बैंक होटल थियेटर, सिनेमा घर डाउनटाउन और कार्यालयों के भवन होते हैं। इस कोड़ के चारों ओर होते हैं गोदाम रेलवे यार्ड फैक्टरियाँ थोक बाजार और लघु उद्योग कारखाने गन्दी बस्तियाँ टेनेमेंट जिनमें कुछ कम कुछ ज्यादा कुशल कारीगरों की साफ-सुथरी बस्तियाँ और मध्यवर्ग के मकान बड़े उद्योगों के कारखाने कभी-कभी बाहरी

---

1 It had a lot of democratic phrases but little democratic action.

2. Vested interest.

3. Thru-ways.

क्षेत्रों के लिए बाजार, निवास के बड़े-बड़े मकान (छायादार सड़कों के किनारे) और अंत में निवास और उद्योगों के एक उपनगर का घेरा होता है जिसमें अधिक और कम आय वाले साथ-साथ रहते हैं।

पहले यह समझा गया कि क्रोड के चारों ओर बस्तियां फैलती गईं। केन्द्रीय शक्ति ने उन्हें बाहर की ओर फेंका। फिर परिवहन के आधुनिक साधनों के प्रचार के बाद यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया कि शहर केन्द्र से बाहर की ओर मोटर और बस परिवहन की सड़कों के सहारे बढ़ते गए, वे नीची जमीनों और अस्वास्थ्यकर स्थानों से निकलकर ऊंची और स्वास्थ्यकर जमीन पर गए। अंत में मेट्रोपोलिटन नगरों के जटिल और असोत्पादी विकास को स्पष्ट करने के लिए कहा गया कि नगरों में एक नहीं अनेक क्रोड होते हैं जिनके चारों ओर नगर बसता है।

स्पष्ट है कि ये सभी सिद्धान्त एक ही दोष से विकृत हैं और वह यह कि विकास के बाद उसके कारणों को सिद्धान्त का रूप देना। साफ बात तो यह है कि नगर उसी ओर बढ़ते गए जहाँ बसने वालों ने लाभ देखा और परिवहन की सुविधायें मिलीं। नगर बढ़ने में निर्णायक हाथ रेलों मोटरों और वास्तविक सम्पदा (रियल इस्टेट) के स्थापकों (प्रोमोटर्स) का रहा। कुछ लोग इस पर यह कह सकते हैं कि अमेरिकी नगरों का विकास शरीर के अंगों जैसा है। पर मनमाने विकास को हम शारीरिक अंगों का विकास-जैसा नहीं कह सकते।

अमेरिकी नगरों के निर्माण-चित्र के अध्ययन से प्रवास की गति-दिशा का इतिहास मालूम होता है। उदाहरणार्थ ब्रुकलिन के इतिहास में डच ब्रिटिश न्यू इंग्लैण्ड वाले आइरिश यहूदी इटालवी हब्शी स्कैण्डेनेवियन पूर्वी यूरोप वाले आमी प्यूरटोरिकी बारी-बारी से आए। इनकी अपनी-अपनी अलग बस्तियां हैं जिनका अलग-अलग निकास है। इसीलिए न्यूयार्क के बारे में कहा जाता है कि उसकी प्रत्येक सड़क एक गांव है, दस या बारह ब्लाकों का प्रत्येक क्षेत्र एक पड़ोस है।

अमेरिकी शहरों की सबसे बड़ी असफलता उनकी गन्दी बस्तियां हैं। टालस्टाय ने लिखा है कि सभी सुखी परिवार एक-से हैं पर सभी दुखी परिवार अपने ढंग से दुखी हैं।[1] शहरों के बारे में टालस्टाय की यह सूक्ति उलटे रूप में सही है। प्रत्येक शहर की झाड़ी-बुहारी चमकती सड़कें अपने अपने ढंग की अकेली हैं। पर उनकी गन्दी बस्तियों में एक अजीब मुर्दनी एकता है। इन बस्तियों में सर्वत्र एक जैसा ही वातावरण है—निर्धनता रोग, अपराध और व्यभिचार का। अटलांटा के हब्शियों की गंदी बस्ती और मेंफिस बर्मिंघम या जैक्सन

1 That all happy families are alike but every unhappy family is unhappy in its own way

किसे भी अन्य बस्तियों में कोई अन्तर नहीं है। डीट्रायट बफलो और शिकागो की पोलिसों की गन्दी बस्तियां एक-सी हैं। साम एन्टोनियो की मैक्सिकी अमरीकी गन्दी बस्तियां डेन्वर से भी गई गुजरी हैं पर इनमें कोई मौलिक अन्तर नहीं। अन्तर केवल निर्धनता की मात्रा का है।

विलियम बालिसो ने न्यूयार्क की गन्दी बस्तियों को 'साम्राज्य का नासूर' कहा था। यह विशेषण अमेरिकी गन्दी बस्तियों पर और भी सच्चे रूप में लागू होता है। ये अमेरिकी सम्पन्नता और शक्ति के पुष्प पर पाले की भांति हैं। 1830 में पहले पहल पूर्व के नगरों में मजदूरों और प्रवासियों के परिवारों के मकान बने। उसके बाद भी मकान बनते गए। पर प्रत्येक नया मकान पहले से बदसूरत और अस्वास्थ्यकर था। प्रत्येक नई बस्ती में आबादी का घनत्व पहले से भी अधिक और दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन कम थे। इनमें अच्छे मकानों से भाड़ा अधिक होती। इस प्रकार मानव की लाचारियों का दोहन किया जाता रहा है। 1956 में फिलाडेल्फिया के एक मकान मालिक ने कहा कि मैं ऐसे मकान भी किराये पर उठाता हूँ जिसे दूसरा कोई ले ही नहीं सकता।

1960 की जन-गणना से पता चला कि एक तिहाई अमेरिकी आवास स्तर से नीचे के हैं। 1959 में सेन्टलुई नागर मण्डल के प्रधान ने कहा कि नगरों की कोई साठ हजार इमारतों में पाखाने और स्नानघर नहीं हैं। सेंटलुई में एक विषम वास्तुकार जिसका नाम अल्फोन्सस है 1960 में अध्यापन कर रहे थे। उनका कथन था कि "मैंने अन्य की गन्दी बस्तियां देखी हैं। पश्चिमी यूरोप के प्रत्येक देश में भी मैं घूमा हूँ। पर ऐसी गन्दी बस्तियां तो मैंने जीवन भर में कहीं नहीं देखी।" अनेक परिवार चूहों के डर से रहते हैं। इन मकानों में तो रोशनी भी नहीं पहुँचती। न्यूयार्क शिकागो या सेंटलुई की गन्दी बस्तियों के मुआइने के लिए समय-समय पर अखबार आते हैं। इनकी रिपोर्ट है कि इन बस्तियों में कई अखबार नवीसों में भी कई इधर उधर फिरते रहते हैं। मकानों के निचले तलों में तो रोशनी पहुँचती ही नहीं। बच्चे दिन के समय खण्डहरों या टूटी बोतलों से भरी जगहों में खेलते हैं। उनमें अपराध की भावना बढ़ती है। एकान्त में खेलने वाले हैं तो प्यारों से भेंट हो जाती है। भीड़ भाड़ में गए तो फंस भी जाते हैं। कोई कानून ऐसा नहीं जो इसे रोक सके। निकोल्स के उपन्यास में मैस्मन मस्तान के उपन्यासों में ऐसे ही जीवन का चित्रण हुआ है।

पर नगरों का वर्णन अधूरा है यदि हम उन लाखों व्यक्तियों को याद न करें जो भरपूर करके भी उसका मूल्य नहीं पाते। जहाँ मोटे-मोटे टैक्सों की बल्ब पर उनके भार दूसरों के लिए स्वर्ग होता है। जहाँ स्वर्ग में टूटे स्वप्नों का ढेर लगा रहता है। जहाँ रिश्वत और धोखाधड़ी की बाढ़ है। जहाँ संगठित

होकर चोरटों का शिकार होता है। बच्चे अपराध के लिए बाध्य किए जाते हैं। हारे लोगों के लिए अमेरिकी शहर एकदम म दीखते हैं जीवन वालों के लिए दूसरे रूप में। गंदी बस्तियों का अर्थ है—दुगण-मद्यालय बोर्डिंग हाउस सस्ते होटल सैलून नशाघर सस्ती वेश्याएँ और उनके दलाल। इनके सम्बन्ध में बाइबिल का वचन कितना सत्य है "इस प्रकार तुम्हारी दरिद्रता तुम्हारे लिए डाकू की तरह होगी और तुम्हारी आवश्यकताएँ हथियार लेकर तुम पर टूटेंगी।"[1]

गंदी बस्तियाँ कोढ़ की तरह अपशकुन हैं। जैसे-जैसे बेचैन आबादी एक स्थान से दूसरे स्थान म जाती है यह कोढ़ फैलता जाता है शहर के प्रत्येक भाग में जमीन की कीमत घटती-बढ़ती रहती है। एक बार जहाँ किसी क्षेत्र में दाम गिरा कि अवांछित जातियाँ उधर झुक पड़ती हैं। घबराहट पड़ जाती है और उस क्षेत्र का रूप ही बदल जाता है। परिवर्तन के इस काल में जातीय संघर्ष भी सामने आते हैं। स्कूलों में यह संघर्ष विकट होता है और सड़कों पर झगड़े होने लगते हैं। आबादी निकलकर शहर क ही किसी दूसरे क्षेत्र में या उपनगर में जाती है। इस प्रकार नगर की सारी जीवनी-शक्ति ही क्षीण हो जाती है।

प्रत्येक शहर क इतिहास में अवनति और नाश के समय आए हैं। भूत में इस प्रकार की घटनाओं क बाद वह भाग फिर से आबाद हो जाता था। किन्तु आज जब सरकारी ऋण यातायात की भीड़भाड़ और अपराध बढ़ गए हैं सम्पन्न और शिक्षित वर्ग ही अधिकतर बाहर हटने का खर्च बर्दाश्त कर पाता है। कम आय वालों क पास इतना पैसा कहाँ कि दूसरे स्थानों में रहने का खर्च उठा सकें। जब लोग उपनगरों में बड़ी संख्या में चले जाते हैं तो जो लोग वहाँ बस रहते हैं वे नगर की सारी सुविधाओं और सेवाओं का उपयोग मुफ्त में करते हैं। इस प्रकार सरकार की यह योजना कि इसका खर्च सारे शहर पर बराबर बराबर पड़े विफल हो जाती है। सुबह शाम उपनगर के निवासियों की गाड़ियों के कारण मुख्य नगर के सारे रास्ते अवरुद्ध हो जाते हैं। मजेदार बात यह है कि जो लोग सारे सप्ताह शहर में रह जाते हैं वे भी सप्ताहांत में सैर-सपाटे के लिए बाहर जाते समय इस यातायातावरोध के शिकार होते हैं।

इस प्रकार य बड़ शहर जो परिवहन के क्षेत्र में हुई क्रान्ति के कारण बढ़े हैं उसी परिवहन के कारण-मालों मोटरों से कष्ट पा रहे हैं। इस प्रकार नगर सतत-गतिशील मनुष्यों और परिवारों का एक अस्थायी पड़ाव है। इसीलिए शहर के विकास की अधिकांश योजनाओं में यातायात की सुविधाओं के विस्तार की ही प्रमुखता रहती है। यद्यपि यह सही है कि न्यूयार्क की सड़कों क जाल को

1 'So shall thy poverty come as a robber and thy want as an armed man.

यदि हम हवाई जहाज से देखें तो वे बड़े सुन्दर दिखाई पड़ते हैं किन्तु शहर का सड़कों की डिजाइन के चारों ओर बनाने का अर्थ है मनुष्य को उसका रचना—मोटरों का—दास बनाना। इसका यह अर्थ है कि हम यह नहीं मानते कि मनुष्य मनुष्य है और उसे जीवित समाज में जड़ पकड़नी चाहिए। इसका अर्थ यह है कि मनुष्य पहियों का दास है।

अमरीकी शहरों की योजना फिर से बन रही है और वे फिर बसाये जा रहे हैं। किन्तु उनका भावी रूप क्या होगा? वे कितनी दूरदर्शिता से बसाये जाएँगे? इनके बसाने वालों के मन में मानव की कैसी मूर्ति है? जब नगर और सम्पत्ति को प्राप्त हो तो उसे खरीदकर फिर से बनाना मुश्किल नहीं है। हम वहाँ ऐसे मकान बनाएँ जिनमें आगे के पचास वर्षों में विकसित होने वाले अमेरिकी परिवार सुख से रह सकें। निहित स्वार्थ की संस्थाओं और विचारों की आदतों का सामना किया जाए। 'न्यू डील' ने आवास की एक ऐसी योजना चालू कर दी जिसने दस वर्ष में ही गंदी बस्तियों की सफाई में उतना काम कर दिया जो पूरी शताब्दी में नहीं हुआ था। किन्तु इन नए मकानों में आबादी का घनत्व उतना ही था जितना कि उन पुराने मकानों में जिन्हें गिराकर ये बनाए गए। इनमें बच्चों के ही खेलने, बाग बगीचे या खेलकूद का उपयुक्त प्रबन्ध न था। 1910 में मुई ममफोर्ड ने पैट्रिक गेडीज का एक वाक्य उद्धृत किया था 'गंदी बस्ती, आधी गंदी बस्ती, अच्छी गंदी बस्ती इस क्रम से हमारे शहरों का विकास हो रहा है।"

भविष्य में अमेरिका के बड़े शहरों में ऐसे मुक्ताकाशी बहुमंजिले बैरकों की तरह मकान बनेंगे। ये मोटरगाड़ियों की उपज होंगे। मास्को और पेकिंग में भी ऐसे ही मकान बनेंगे। यह वह पीढ़ी है जिसमें औद्योगिक युग अपने को मढ़ रहे हैं। इस युग में भी अमेरिका ने किसी नए प्रकार के मानव का निर्माण नहीं किया है बल्कि वह यही बता रहा है कि भावी औद्योगिक मनुष्य कैसा होगा?

शहरों का जो परिवर्तन अमेरिका में तेजी से हो रहा है वह मशीन की उपज है—तकनीकी युग और बाजुओं का भी। नगर के जीवन का मशीनी रूप सुस्पष्ट है। जमीन में गड्ढे बनाकर उनमें से रास्ता बनाया जा रहा है। मानो कि नगर में जमीन पर सड़कें दौड़ रहा है। मशीनों से ही यातायात का नियन्त्रण होता है। टेलीविजन, बेल, टेलिफोनों द्वारा कौन क्या सोच सकता है? काम पर जाने की जल्दी, मिलने की जल्दी, आराम की जल्दी सब बातों की जल्दी। बड़े शहरों की इन व्यवस्थाओं में क्या कौन बच सकता है?

किन्तु यह जल्दबाजी या मशीनों द्वारा अनुशासन शहरों का कोई चरित्र नहीं था। यह चरित्र उन्हें मिला है इन युद्धों की क्रान्ति से जो इन सबके परे

है। सड़का मजदूरों के सर्वाधिक विरोध में इसीलिए शामिल होता है क्योंकि वहाँ उसे किसी का होने और किसी के प्रति भक्ति रखने का अवसर मिलता है। यही बात मशीनी टेलकूद और आमोद प्रमाद के सम्बन्ध में है। इनाम के लिए लड़ने वाले तलवारों की तरह एक-दूसरे पर टूटते हैं। व्यापार के लिए बेसबॉल की प्रतियोगिताएँ होती है। टेलीविज़न के दृश्यों को देखकर लाखों व्यक्ति प्रशंसा करते हैं। नर्तकियाँ रात्रि-क्लबों में मशीन की तरह अंग चालन करती हैं। किन्तु इन सबके बारे में सबसे बड़ी बात यह नहीं है कि ये मशीन की तरह हैं बल्कि यह यह है कि ये मशीनी-जीवन वाले लाखों करोड़ों व्यक्तियों का मानसिक खिंचाव दूर करती हैं।

इसी ढाँचे में अमेरिकी शहर ने अपना चरित्र विकसित किया है जो टे केनेकोर दे टॉकविले या ब्राइस के वर्णनों से भिन्न है। इस पर मिट्टी या मौसम का उतना असर नहीं। यह उतना धार्मिक नहीं अपितु अधिक सन्देहवादी है। मिलता कार्य काम भ्रम और ईश्वर के इनसाफ के सम्बन्ध में यह कम विश्वास रखता है। ये सब इसके व्यक्तित्व को स्थायित्व प्रदान करते हैं। सार्वजनिक स्कूलों रास्तों बसों या बाजारों में छोटे मोटे झगड़े होते ही रहते हैं। इसलिए अब वह उनकी उतनी चिन्ता नहीं करता। यदि इनके प्रति आदमी सीमित प्रतिवाद का दृष्टिकोण न अपनाये तो जीवन ही दूभर हो जाए। स्नए मैंसे और यौन क्रियाओं के सम्बन्ध में वह प्रकाश प्रौढ़ हो जाता है क्योंकि शहरों की भीड़ भाड़ में ही वह बढ़ता है जहाँ कुछ भी अनावृत नहीं रहता। कठिनाइयों और मानव-कृत आर्थिक विपत्तियों के प्रति वह समबुद्धि का भाव रखता है। वह फ़िज़ूलखर्ची नहीं करता। काम के समय में वह पूरी तरह समय बचाता[1] है पर आराम के समय उसी तरह बरबाद भी करता है। उसके व्यक्तित्व के पृथक विकास वेषभूषा की एकता और स्वाद के निर्माण सावधानी और पहली ही भेंट में किसी को प्रभावित करने की क्षमता पर बल देता है। इसने सब के स्थान पर चिन्ता प्राकृतिक शक्तियों से—खतरे के स्थान पर—सुरक्षा और दूसरों की राय की चिन्ता स्थापित कर ली है।

इसका अर्थ यह हुआ कि नागर जीवन ने नर-नारियों को उनकी सहज प्रवृत्तियों से दूर कर दिया है। नगर मानवताहीनता तनाव और अमेरिकी जीवन की अनुरूपता (कन्फ़ॉर्मिज्म) का मूल नहीं बल्कि उसका आवरण है। या दूसरे शब्दों में नगर संस्कृति के मूल्यों का युद्ध-स्थल है।

गन्दी बस्तियों के अतिरिक्त प्रत्येक नगर में पाप के अड्डे और अपराध की समस्या है। यदि किसी पाप कर्म की जाँच पर सारे राष्ट्र का ध्यान आकर्षित

1 Economizes time.

हो जाता है या कोई अखबार उस पर ज़ोर देता है या नगर-सुधार की चर्चा ज़ोर पकड़ती है पुलिस-दल में सक्रियता आ जाती है। ऐसे अवसरों पर छोटे अपराधियों वेश्याओं या संदिग्ध हालतों में रहने वाले लोगों को भी पकड़ लिया जाता है। किन्तु नगर-सुधार आन्दोलन थोड़े समय का होता है। अपराधियों और राजनीति तथा रैकेटों[1] और सम्भ्रान्त व्यापारियों का सम्बन्ध इतना घनिष्ठ है कि इस सम्बन्ध में कुछ कर सकना मुश्किल है। बहुत-से नगरों में राजनीतिक अधिकार की परम्परा नाई की दुकान से चली है—ये नाई गन्दी बस्तियों में रहने वालों की कमज़ोरियों से परिचित होते हैं। इन्होंने राजनीतिक कृपा का वादा उनसे किया और उन्होंने इनके प्रति भक्ति की शपथ खाई। बाद में वही राजनीतिक नेता ठेकेदार बन जाता है। फिर दैवात् उसी वर्ग से उसका काम चलता है। इस प्रकार शायद ही कोई बड़ा नगर ऐसा हो जहाँ का प्रबन्ध अपराध राजनीतिक भ्रष्टाचार और व्यापारिक कृपा की त्रिमूर्ति से प्रभावित न हुआ हो।

नगर की 'मशीन' का नाम ही इसलिए पड़ा कि इसे अवैधानिक रूप में कुछ लोग राजनीतिक शक्ति के बनाए रखने के लिए प्रयोग में लाते हैं। नगरों में अपराध का भी मशीनीकरण हो चुका है। अपराधियों के गिरोह और रैकेट राष्ट्रीय स्तर पर सक्रियता दिखाते हैं। फिर भी इस मशीनीस्वरूप की राजनीति और अपराध—दोनों क्षेत्रों में क्षति भी हो सकती है। राजनीतिक मशीन तो किसी बॉस[2] के द्वारा चालित होती है जो नितान्त स्वामिभक्त होता है। इस मशीन का उद्देश्य जातीय गुटों के मतों पर अक्षुण्ण अधिकार रखना और इस प्रकार अधिवासियों की अधिकारहीनता का फायदा उठाना था। पेशेवर राजनीतिज्ञों का जातीय गुटों से सम्बन्ध भावनात्मक-भक्ति के आदान-प्रदान रूप में ही था। इस मशीन में भी सामन्तशाही की भाँति दर्जाबन्दी है। किन्तु मशीन का बाहरी ढाँचा उसके वास्तविक स्वरूप को छिपाए रहता है। इसी प्रकार अपराध की मशीन का एक छोर है सामन्ती बदमाश पकड़ते हैं और दूसरी छोर से व्यापारी। रैकेटों के राजा अपने शिकारों से अवैध वसूली करते रहते हैं।

अब नगरों के शासन की समस्या अपराध और भ्रष्टाचार से आगे पहुँच चुकी है। बड़े शहरों के शासन में जो बातें सामने आ रही हैं उनकी ओर पीछे के राजनीतिक विचारकों का ध्यान ही नहीं गया था। अमेरिका अपने इतिहास के अधिकांश भाग में कृषक देश था। इसलिए उसकी शासन की व्यवस्था ढीली-ढाली थी। नगरपालिकाओं में कभी स्थायी-ढंग महानगरों की कल्पना ही न

1. Rackets.
2. Boss.

की थी। न्यूयार्क का बजट अधिकांश राज्यों से बड़ा होता है। इसका शासन संघीय शासन के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण है। न्यूयार्क में पुलिस शिक्षा रास्तों पुलों हार्बर, ट्रक हवाई अड्डे सार्वजनिक अस्पताल रेल न्याय आदि की समस्याएँ दुरूह हैं।

शासन के ये सब अंग अपने में महत्त्वपूर्ण हैं। ठीक-ठीक तौर पर ही ये एक शासन के अन्तर्गत हैं। जैसी प्राविधिक नागरिक सेवा अमेरिकी संघ के अन्तर्गत है, जैसा राजनीतिक नेतृत्व अमेरिकी राष्ट्रपति देता है उसी प्रकार की व्यवस्था की आवश्यकता अमेरिकी नगरों को है। नगर प्रबन्धक आन्दोलनों में की जाने वाली माँगों में यदि नगर को और अधिक राजनीतिक अधिकार दे दिये जाएँ तो स्थिति अच्छी हो सकती है।

अमेरिका के बड़े नगरों के बारे में सबसे बड़ी बात यह है कि अब ये इतने बड़े हो चुके हैं कि फट पड़ेंगे। न्यूयार्क क्लीवलैण्ड शिकागो सब अपने पिछले नगर हैं। इन्होंने अपना अलग व्यक्तित्व बना लिया है। अब ये बड़ी इकाई में आत्म-शासी इकाइयों के रूप में हैं। किन्तु कठिनाई तो उपनगरों को लेकर है जो इन महानगरों के अंग तो हैं पर ये शासन का खर्च बर्दाश्त नहीं करते। जैसे वेस्टचेस्टर से जर्सी सिटी तक एक क्रम है उसी प्रकार औद्योगिक कनक्टिकट और मस्साचुसेट्स की एक पट्टी है। ऐसी ही पट्टियाँ बफलो पिट्सबर्ग शिकागो और लास एंजिल्स के चारों ओर हैं जो सैकड़ों मील तक चली गई हैं। इनमें रसायन उद्योग मोटर और हवाई जहाजों में काम करने वाले मजदूर भरे पड़े हैं। ये नगर नहीं बल्कि एक बृहत्तर औद्योगिक साम्राज्य के प्रान्त हैं।

अमेरिका के अनेक वास्तुकारों और आयोजकों ने कल्पना की है कि जिस प्रकार ये दैत्याकार टुकड़े अपनी सीमा में रखे जा सकते हैं—केन्द्रीय नगर का नया कर दें और फिर से योजनानुसार बसा दें। किनारे के विकास को सुयोजित कर दें। सम्पूर्ण नगर को एक इकाई मानकर भी उसे अनेक छोटी-छोटी इकाइयों में विभाजित कर दें। इन इकाइयों में काम करने के रहने के और आमोद-प्रमोद के केन्द्र हों। यह कल्पना गतिशील कल्पना है। किन्तु आश्चर्य ही होगा यदि अमेरिकी जो अब तक अपने शहरों के सम्बन्ध में योजनाहीनता को बर्दाश्त करते रहे हैं भविष्य में इस प्रकार विशद स्तर पर बनाई गई किसी योजना को अमल में लायेंगे।

एक ही काम है जिसमें कुछ समन्वित कार्य हुआ है वह है शहरों के पुनर्नवीकरण का। 1955 तक 200 शहरों में ऐसे काम हुए। कुछ में मात्रा कम थी कुछ में अधिक। केन्द्रीय क्षेत्रों में जो अंश अवनति को प्राप्त हो चुके हैं उन्हें गिराकर फिर से बनाया जा रहा है। जो स्थान स्वास्थ्यकर हैं

उनको सुरक्षित रखा जा रहा है। पिट्सबर्ग और सेंटलुई में यह कार्य प्रशंसापूर्ण साहस के साथ किया जा रहा है अन्यत्र नहीं। उस पर जो कुछ खर्च हो रहा है वह मुनाफ़े के लिए तो ठीक था पर वर्तमान को देखते हुए व्यर्थ है। किन्तु इन सबसे एक तथ्य तो हाथ आता ही है कि अब यह माना जा चुका है कि शहरों के पुनर्विकास में सरकार की ज़िम्मेदारी भी है।

न्यू डील के दौर में सबसे पहले यह बात स्वीकार की गई कि बड़े शहरों की आवास-व्यवस्था, स्वास्थ्य और बेकारी के समय सहायता-जैसे राष्ट्रीय दृष्टि के महत्वपूर्ण कार्य संघीय सहायता के बिना नहीं चल सकते। इसका विरोधी सिद्धान्त राज्यों के अधिकार का था जिसके अनुसार कहा गया कि राज्यों को इस सम्बन्ध में अधिकार और उत्तरदायित्व देना चाहिए। किन्तु इन राज्यों के विधानमण्डलों में देहाती क्षेत्र के विधायकों का बहुमत है इसलिए बड़े नगरों ने इस योजना का बड़ा विरोध किया। उन्होंने संघीय सरकार से सीधा सम्पर्क बनाने पर ज़ोर दिया।

तथ्य यह है कि संघीयता का जो पूर्व स्वरूप था उसे बड़े शहरों के विस्तार ने नष्ट कर दिया है। एक नया सन्तुलन कायम रखना पड़ेगा जो केन्द्र और परिधि के बीच ही नहीं बल्कि बड़े नगरों के रूप में केन्द्रों और वाशिंगटन तथा राज्यों की राजधानियों की परिधि के बीच हो। इस प्रकार एक नया सहबंधन तैयार हो रहा है शहरों की आवश्यकताओं और संघीय सहायता का जो राज्यों पर आश्रिता को समाप्त कर रहा है। डेमोक्रेट पार्टी इस सहबंधन का विशिष्ट क्षेत्रों में अधिक समर्थन करती है। पर रिपब्लिकनों ने भी सरकारी और निजी क्षेत्र में आवास-व्यवस्था के लिए संघीय सहायता दी है। गन्दी बस्तियों की सफ़ाई और वहाँ के लोगों को फिर से बसाने तथा सस्ती बस्तियों में जल और सीवर-व्यवस्था के लिए भी उन्होंने अपने शासन-काल में सहायता दी है। इस सहायता से विस्तृत नगर परियोजना को गति मिली है और अब यह आशा हो चली है कि एक या दो पीढ़ियों में नगरों के पुराने भागों का उद्धार हो जाएगा और नए [illegible] भी [illegible] सुगम हो जाएगा और वे भागों भी रहन-सहन के योग्य बने रहने [illegible] जाएँगे।

अभी तक [illegible] पर्याप्त [illegible] में ही नगरों में सम्बन्ध रखती है। किन्तु 1013 [illegible] आगे नगर-परियोजना पर अपनी छाया डाल दी है। [illegible] औद्योगिक बस्तियाँ परमाणु बम और [illegible] के द्वारा और [illegible] सीमा में है। इसका एक उत्तर यह है कि [illegible] उद्योग [illegible] किन्तु [illegible] बातें। विकेन्द्रीकरण प्रारम्भ [illegible] हो गया है। अब तमाम शहरों में निरन्तर [illegible] नगरों में [illegible] है। [illegible] के पड़ोस में बाजार [illegible]

लिए हैं। किन्तु इस विकेन्द्रीकरण में भी एक औद्योगिक और जनसंख्या की पट्टी बना दी है। बड़े शहरों के बाहर ये बसे तो गए हैं पर इसमें पारमाणविक युद्ध के समय की समस्या हल नहीं हुई है। अभी भी ऐसे क्षेत्र हैं जो खतरे में पड़ सकते हैं। हाँ, अब उनकी रेखा पतली अवश्य पड़ चुकी है।

इसका सबसे सटीक उत्तर उनका है जो कहते हैं कि विकेन्द्रीकरण और जमीन के अन्दर उद्योगों को ले जाकर हम जानों को बचा सकते हैं पर सभ्यता को नहीं। नगर अमरिका की अपार शक्ति के बड़े हैं। यदि आत्मघाती युद्ध[1] में ये नगर न बचेंगे तो सभ्यता भी न बचेगी। दोनों के भाग्य एक साथ जुड़े हैं। दोनों को बचाने का तरीका है कि हम उस शक्ति में विश्वास रखें जिससे ये शहर बड़े हुए।

10 उपनगरों की क्रान्ति

चालीस के बीच अमेरिका का आकाश से लिया गया चित्र पचासे में लिए गए चित्र से काफी भिन्न है। फार्मों कस्बों और बड़े नगरों के मध्य पहले जहाँ खुली जमीन थी अब वहाँ लगभग सघन बस्ती और आबादी है। यह रेखा मस्साचुसट्स से उत्तरी कैरोलिना तक शिकागो से डीट्रायट तथा बफलो और फिर पिट्सबर्ग तक और सानफ्रांसिस्को से मैक्सिको की सीमा तक चली जाती है। पहले जो खुले स्थान थे वे अब तेजी से भर रहे हैं। छोटे नगरों और बड़े शहरों से आबादी इन खुली जगहों में गई है। यह आबादी का विकेन्द्रीकरण ही नहीं है बल्कि बीच के स्थानों में गमन भी है। उपनगर और शहरों का विस्तार इसी का परिणाम है।

अमेरिका में उपनगरों का विकास शहरों के स्थान पर और उसके पूरक रूप में हुआ है। स्थान के प्रतिबिम्बस्वरूप उपनगरों का उदय इतनी तेजी से हुआ है और उसके परिणाम इतने दूरगामी हुए हैं कि इन्हें क्रान्तिकारी कहा जा सकता है। इस सदी के बीसे में ही यह परिवर्तन शुरू हो चुका था। उस समय हूवरों और कांग्रेस के चुनाव के लिए क्षेत्र के रूप में ही इसकी चर्चा थी। इसमें कई छोटे शहरों का पश्च प्रदेश[2] था। उन्नीसवीं सदी के अन्त में ही धनी मानी व्यक्ति यहाँ बस रहे थे। किन्तु शताब्दी के परिवर्तन-काल में रेलें आ चुकी थीं जो घर और नौकरी के स्थान के बीच दौड़ रही थीं। सदी का तीसा मोटरों का काल था। इस समय में मोटरें भी सेवा के लिए प्रस्तुत हो चुकी थीं। तीस के मंदी के समय गति समय की प्रतीक्षा कर रही थी। दूसरे महायुद्ध के पश्चात् यह फिर तेज हो गई। पचासे में यह गति और तेज हुई। जहाँ पास के

1 Suicidal war
2 Hinterland

मैदान और स्नान भंडार थे या पशु के खेत थे अब वहाँ पूरा समाज बस गया। विभागीय स्टोरों की शाखाएँ भी अब वहाँ घुस गई और इस प्रकार शहरों के बाजारों का इजारा भी बिखरने लगा।

उपनगर अब बड़े नगर का शयन प्रदेश या डार्मिटरी[1] न रहा। वह शहर से जुड़ा हुआ तो था पर उसका अपना सामुदायिक जीवन था। अमेरिकी जीवन में इससे कुछ ऐसी बात हो गई जो पहले न थी। जनता और स्थान के बीच एक नया सम्बन्ध पैदा हुआ। केवल यही नहीं कहा जा सकता कि शहर अति विस्तृत हो गया था बल्कि जीवन का एक ऐसा स्वरूप प्रकट हुआ था कि जिसमें नगर इतना बढ़ा कि उपनगर बन गए और ये उपनगर भी शहर का स्वरूप बदलने लगे। उपनगरों ने अपने शयन प्रदेश बनाए। नगर उपनगर और शयन प्रदेश तीनों न मिलकर एक ऐसे स्वरूप को जन्म दिया जिसे मैं क्लस्टर सिटी अर्थात् गुच्छे-जैसा नगर कहता हूँ।

एक परिभाषा के अनुसार उपनगरवासी वह व्यक्ति है जो शहर में काम करता है ऐसी जगह रहता है जहाँ अधिक स्थान हो और इन दोनों के बीच पाया जाता है। अनुमान है कि 1933 में अमेरिका में ऐसे व्यक्तियों की संख्या तीन करोड़ थी। 104 में इसकी संख्या दो करोड़ दस लाख थी। इनमें एक करोड़ दस लाख व्यक्ति बड़े शहर के बीच पुराने उपनगरों में रहते थे। एक करोड़ सात लाख नए उपनगरों में रहते थे जो शहर के बाहर थे और राजनीतिक दृष्टि से स्वतंत्र थे। एक दूसरी परिभाषा के अनुसार जिसमें उपनगरों के किनारों को शामिल कर लिया जाता है उपनगरवासियों की संख्या चार करोड़ बीस लाख थी।

पिछले पचास में उपनगर-वास उत्तर-पूर्व महाद्वीपों सुदूर पश्चिम में ही सीमित न था बल्कि दक्षिण पूर्व दक्षिण-पश्चिम और मैदानों में भी फैल चुका था। मध्यक क्षेत्र में केवल गहरे दक्षिण[2] को छोड़कर उपनगर हैं। वहाँ भी अमेरिका के उपनगर हैं। उपनगर-वास अब अमेरिका में प्रमुख हो रहा है। 1931 से 10, 1 के बीच अब अमेरिका की आबादी 25 प्रतिशत बढ़ी उपनगर वासियों की संख्या में - प्रतिशत की वृद्धि हुई। 1910 से 10.1 के बीच नगरीय परिनिर्दिष्ट[3] महानगरों में निवास करने वालों की संख्या में 11 प्रतिशत की वृद्धि हुई। नगर के चारों ओर के उपनगरों के कुल की जनसंख्या में 3. प्रतिशत की वृद्धि हुई। उपनगरों के चारों ओर नई उपनगरों में रहने वालों की संख्या में 41 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इस प्रकार बड़े नगरों (और छोटे शहरों) से उप

1 Dormitories
2 Deep South
3 'Standard metropolitan Central Cities.

नगरों की ओर और उपनगरों से उनके चारों ओर के घेरे में आबादी खिसकी है। आशा यह है कि यह खिसकाव तब तक जारी रहेगा जब तक उपनगरों के अपने-अपने उपनगर न बन जाएंगे और अधिकांश अमेरिकी लगातार बस उप नगरों और गुच्छे नगरों[1] के अर्द्ध-उपनगरों में रहने नहीं पहुँच जाते।

जो हो रहा है उसका अर्थ है कि अमेरिका फिर बस रहा है। जहाँ सुविधा हो खुली जगह हो बच्चों को टहलने के लिए घास हो अच्छे स्कूल हों कार के लिए गैराज हो और धुंआ हुआ समुदाय हो लोग बस रहे हैं। जिस प्रकार कार सबके लिए सुलभ हो गई है। उसी प्रकार टेलीविजन घर घर में आधुनिक सभ्यता को पहुँचा रहा है। अब महानगर के केन्द्र से उपनगर दूर भी बस सकते हैं। इबेनेजर हावर्ड ने इंग्लैण्ड में जिस उद्यान-नगर' या 'सिमटते छोटे शहर'[2] की कल्पना की थी अमेरिकी उपनगर उससे भिन्न हैं। अमेरिका में वे इतने सुयोजित नहीं हैं केन्द्रीय शहर से वे खुली जगह के द्वारा इतने अलग भी नहीं। अमेरिकियों को इतनी फुर्सत कहाँ कि वे किसी योजना की प्रतीक्षा करें। काम की ही ओर जब दृष्टि हो तो बीच में जगह कौन छोड़ेगा ?

सारा विकास टेढ़ा-मेढ़ा हुआ है। नौजवान वहाँ बसना चाहते थे जहाँ वे अपने बच्चों को अच्छी तरह पाल सकें और वे (अच्छ) मकान के आसपास किलकारी मार सकें। यदि उनके पास मकान बनवाने के लिए रुपया नहीं तो केन्द्रीय आवास प्रशासन से वे ऋण ले सकते थे या फिर संघीय सरकार के बीमे पर कहीं अन्यत्र से रुपया कर्ज ले सकते थे। 'वास्तविक-सम्पदा' की योजना[3] आप-से-आप लोकप्रिय हुई। क्योंकि मकान बनाने का खर्च बढ़ गया था। उधर इस योजना के अंतर्गत काफी जमीनें खरीदकर उन पर बड़ी संख्या में एक साथ मकान बनाते थे। इस कारण मकान सस्ते पड़ते थे। आसान दरों में ये मकान बेचे गए। नैगम संस्थाओं की नौकरियों में लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमना पड़ता इसलिए वे यही चाहते हैं कि जहाँ जाएँ आसानी स जड़ पकड़ सकें। वे तुरन्त पुराना मकान बेचकर नए स्थान में मकान ले लेते थे। छोटे शहरों की अवनति से अमरिकी समाज में जो रिक्तता आई थी उपनगरों न उसे भरा।

मैंने अभी कहा है कि उपनगरों में विकास टेढ़ा-मेढ़ा हुआ है। 'सुयोजित सामुदायिक जीवन' का प्रचार तो बहुत किया जाता है किन्तु सच बात तो यह है कि कुछ एक को छोड़कर इनमें योजना नाम की कोई चीज ही नहीं है। यहाँ वास्तविक-सम्पदा की योजना को जिसकी वजह से उपनगर बढ़े समझना जरूरी है। इसके अंतर्गत खुली जगह खरीद ली जाती, उसकी झाड़ियाँ और

1 Cluster cities.
2. Satellite town.
3. Real estate developments.

पेड़ साफ कर दिए जाते, ज़मीन को समतल करके टेढ़े-मेढ़े रास्ते सीधे कर दिये जाते, पानी, पाखाने आदि के नल बिछा दिए जाते, मकान बनाने के लिए छोटे-छोटे टुकड़े काट दिए जाते और नमूने के तौर पर कुछ मकान बना दिए जाते जो खरीददारों के लिए चुनने में सहायता कर सकते थे। मकान बनाने में बड़े पैमाने की प्रणाली अपनाई जाती और इतना सब करने का उद्देश्य यह होता कि अधिक-से-अधिक मुनाफा मिल सके। कुछ स्थानों में योजना इससे आगे भी बढ़ती थी। आमोद प्रमोद और अन्य कार्यों के लिए सामुदायिक केन्द्र भी बनाए जाते। स्कूल और चर्च के लिए भी ज़मीन छोड़ी जाती जिन्हें मकान मालिक बाद में बनाते थे। इस प्रकार एक ग्राम शासन[1] ही जन्म लेता था।

किन्तु सामान्यतया योजना 'वास्तविक-सम्पदा' की आवश्यकताओं तक ही सीमित रहती थी। बुलडोज़रों से ज़मीन समतल करने में खर्च तो कम अवश्य पड़ता था पर इससे जगह का सारा प्राकृतिक सौन्दर्य नष्ट हो जाता। बस्ती में बने हजारों मकान स्वास्थ्य अधिकारियों के लिए नितान्त सिर दर्द ही होते थे। पुरानी इटालवी या न्यू इंग्लैण्ड के नगरों की भांति बीच में जगह शायद ही छोड़ी जाती थी जो भविष्य के निवासियों के लिए चौक का काम कर सके। अधिकांश रूप से पैसे के लालच में इंच-इंच भूमि बेच दी जाती थी जिससे उद्यानों आदि के लिए ज़मीन ही नहीं बचती थी। कहते थे कि सारी बस्ती ही उद्यान होगी जिसका अर्थ यह था कि बस्ती में कोई उद्यान नहीं।

जब ग्रामवासी ये नए घर पाए—लोगों को मण्डलों में बांटने की नयी-समस्या उठ खड़ी हुई जिसकी ओर शुरू में ध्यान ही नहीं दिया गया था। इसमें काफ़ी राजनीतिक लड़ाई झगड़े भी हुए। मजेदार बात यह है कि जो लोग शहरों से सवारियों की भीड़ भाड़ की वजह से भागे थे उन्हें यहाँ भी वही समस्या फिर आ मिली। स्कूल लोगों के अनुपात से नहीं बढ़े। स्कूल का खर्च अधिकतर उद्योग चलाते हैं। यहाँ शहरों की तरह उद्योग भी नहीं थे। वास्तविक-सम्पदा योजना के अंतर्गत उपनगर निवास-क्षेत्रों के रूप में बढ़े। फैक्टरियाँ, दफ्तर और दुकानों का अभाव ही उसका मुख्य आकर्षण था। किन्तु थोड़े ही समय में उपनगरों के निवासियों और उनके आयोजकों को सीखना पड़ा कि किसी भी समाज में उद्योग और व्यापार का उसके वय-समूह और वर्ग-समूह, जाति-समूह और नवीनता तथा परम्परा का सन्तुलन होना आवश्यक है।

उपनगरों में इनमें से अधिकांश न था। ये एकदम नये, एकदम कच्चे डिज़ाइन में एकदम एक से, रचना में एकदम समन्वित और नितान्त बस्ती में बने थे। मन बहलाव और सामूहिक जीवन के काम की मांगों की पूर्ति के लिए ये एकदम

1. Village government.

बस्ती में विकसित हुए । सामूहिक गमन में जो सम्मिलित हुए, दोष उनका नहीं है क्योंकि वे तो परिस्थितियों के दबाव के कारण लाचार थे। उनके सामने उनके बच्चों का जीवन था । दोष उनका है जो उनके नेता या सरकारी अधिकारी थे । उन्होंने योजनाएँ बनाकर उपनगरों की वृद्धि का नियन्त्रण क्यों नहीं किया ? उपनगरों को दशकों में ही उन समस्याओं का सामना करना पड़ा जो अधिकांश शहरों को शताब्दियों तक भुगतना पड़ा था । इससे यह सिद्ध होता है कि अमेरिकनों ने अपने अनुभवों से कुछ भी नहीं सीखा । जो कमियाँ और बुराइयाँ सदियों से अमेरिकी शहरों में बतलाई जा रही थीं उनकी ओर उनका ध्यान गया ही नहीं । जब उन्हें एक नया अध्याय प्रारम्भ करने को मिला उन्होंने वह किया जो सबके सामने है ।

नये उपनगरों के बसने से वर्ग-रचना में भी परिवर्तन हुआ। पहले उपनगरों में धनी व्यापारियों साहूकारों और वकीलों के मकान थे । किन्तु अब धनी उपनगरों में इनसे अधिक संख्या दूसरों की है । लेविट टाउन या पार्क फारेस्ट जैसे क्षेत्रों में व्यवसायों वाले टैकनिशियन या बड़े निगमों के छोटे अधिकारी किराये पर या अपने मकानों में रहते हैं । हवाई उद्योगों और सुरक्षा उद्योगों के कारखानों के आस-पास कुशल कारीगरों की बस्तियाँ हैं ।

भौगोलिक दृष्टि से एक भीतरी उपनगर (शहर के नजदीक) और एक बाहरी उपनगर (शहर से काफ़ी दूर) होता है । इसमें एक कस्बा (देहात) भी जोड़ दीजिए जो उन लोगों का होता है जो सप्ताहांत वहाँ बिताते हैं या किसान होते हैं या कलाकार जिन्हें नियमित रूप से शहर से काम नहीं पड़ता । किन्तु वर्ग-रचना में भौगोलिक दूरी से अधिक आता है ।

उपनगरों का अमेरिका मुख्यतः मध्यवर्गीय है । यह बात उसके निर्माताओं विभागीय स्टोरों आदि ने भी स्वीकार की है । उपनगरों में जो मकान बने हैं वे मध्यम आय वालों के लिए मध्यम दाम के बनाये गए थे । किन्तु सत्य यह है कि नया मध्यवर्ग जिसमें निगमों और सरकार के अधिकारी विज्ञापन और विक्रय के अधिकारी टैकनिशियन व्यवसायों में लगे कर्मी और सफेदपोश कर्मचारी सम्मिलित हैं अमेरिका की वर्ग-व्यवस्था के विकास को प्रकट करते हैं । शहर के पड़ोस के हिंसापूर्ण वातावरण से तंग आकर वे ऐसे समाज में रहना चाहते हैं जो उनसे बेहतर होने के साथ-साथ बड़े नगरों के सांस्कृतिक वातावरण से दूर न हो । यह उन्हें स्टेटस का भाव देता है जिससे उनके आत्म सम्मान को तुष्टि मिलती है । यह उन्हें बड़े शहरों और छोटे शहरों दोनों के उत्तम अंश प्रदान करता है ।

नए मध्य-वर्ग में जो आन्तरिक परिवर्तन हुए हैं उन्होंने अपने मन में अपनी और समाज से अपने सम्बन्ध की जो तस्वीर खींची है उपनगर को गमन में

बाहरी जामा देने का प्रयत्न है। वे नगर के समुदाय से अपने को अलग करना चाहते हैं वे नगर में 'बनाम' होकर रहना नहीं चाहते। बड़े नगरों में तो कोई अपने ही मकान में रहने वाले पड़ोसियों को भी नहीं जानता है। वे संक्रमण काल से गुजर रहे हैं। इसलिए 'अस्थायित्व' से और भी घबराते हैं। इसलिए वे अपना घर बनाना चाहते हैं। वहाँ अपने पड़ोसियों से मिलकर वे अपना सुख-दुःख बाँट सकें। जहाँ अपनी कार के लिए उनका अपना गैराज हो और जब चाहें वे उसे बाहर ले जा सकें। वहाँ उनकी अपनी फुलवारी हो जिसे वे रुचि के अनुसार सजा सकें। यह एक वर्ग है जो गतिशील हो रहा है अर्थात् यह वर्ग अपने व्यक्तित्व की जड़ें जमा रहा है।

इस प्रकार उपनगर में बसने वाला अपना 'प्लाट' चुनता है, मकान की शैली चुनता है, मकान बनाने के लिए कर्ज लेता है। मकान बनाकर उसमें रहता है। उसकी पत्नी 'हाउस-ब्यूटीफुल' के आधार पर उसे सजाती है। वह अच्छे बाजारों में अच्छी दुकानों पर कार में चढ़कर जाती है जहाँ उसे आसानी से सब सामान मिल जाए। घर में रसोई के नए से नए उपकरण वह ले आती है। रहने के कमरे में एक टेलीविजन होता है। पति और पत्नी दोनों प्रतियोगिता के पहनावे से ऊब चुके हैं इसलिए वे लापरवाही के कपड़े पहनते हैं। इससे उनमें विश्राम का भी भाव आता है। घर में कोई नौकर नहीं। अधिक-से-अधिक हुआ तो किसी से बच्चों की देखभाल या सफाई करने के लिए थोड़े समय के लिए मजदूरनी रख ली। अन्यथा घर पर सब काम सब अपने हाथ से ही करते हैं। घर में छोटा-सा घास का मैदान है जिसकी कटाई या सिंचाई आदि वे स्वयं करते हैं। अपना खाना खुद पकाया जाता है। भोजन की किताबें पढ़कर वे स्वयं व्यंजनों के निर्माण के प्रयोग भी करते हैं। पति प्रायः दिनभर अपने काम से बाहर रहता है। घर आकर वह प्यारा पिता बन जाता है और बच्चों के साथ तब तक खेलता है जब तक वे सो न जाएँ। अनुमान लगाया गया है कि अपने जीवनकाल में घर से दफ्तर और दफ्तर से घर आने जाने में वह 6 लाख मील चलता है अर्थात् वह उतनी दूरी तय करता है जितने में 20 बार सारी दुनिया का चक्कर लगाया जा सकता है। इस सारी गतिशीलता के मूल में एक भावना काम करती है और वह है कि उसे 'उपनगर के जीवन में मध्य वर्ग का स्टेटस'[1] मिल जाए।

जीवन की एक रीति के रूप में भी उपनगरी जीवन अमेरिकी व्यक्तिवाद का इजहार करता है। इसका वर्गीय मानवीकरण और आश्चर्यजनक रूप तक मानकीकरण हो गया है। विलियम एच ह्वाइट जूनियर की नई मार्मिक

The middle-class status of suburbanite

जमन मैन' नाम पुस्तक में उपनगरों के जीवन का गहन अध्ययन प्रकट हुआ हुआ है। इस पुस्तक में आज के उदीयमान उपनगरी जीवन का चित्रण अच्छाई से हुआ है जो भविष्य का प्रमुख जीवन बन सकता है। उपनगर वासी को एक नए पड़ोस के भाव में अपने जीवन की नई जड़ें मिलीं जो पहले के अमेरिकी जीवन में अप्राप्य थीं। यहाँ वह पड़ोसी से अक्सर मिल जाता है। झगड़ा करने की किसे फुर्सत है? घरों के भीतर दरवाज़ नहीं (कम खर्चों और जगह का भाव देने के लिए) बाहर के दरवाज़ का भी कोई उपयोग नहीं। अब इनका स्थान फूल-पत्तियों की खिड़कियाँ ले रही हैं। जो भी नया व्यक्ति रहने के लिए आता है आशा के अनुरूप वह भी इस समाज में मिल जाता है। आत्मकेन्द्रिता को यहाँ बुरा माना जाता है। क्लब और सामूहिक कामों में सभी खुलकर भाग लेते हैं। चर्च की सदस्यता भी बढ़ चुकी है। औरतें भी अब सुबह शाम आपस में मिलती हैं। एकान्त का जीवन बिताने के अवसर कम हैं। अगर कोई किसी प्रकार का पर्दा करना चाहता है तो गुप्त रीति से करता है। शराब पीने में प्रयत्न इस बात का नहीं होता कि लोग जानें कि मैंने शराब पी है बल्कि प्रयत्न इस बात का होता है कि इतनी ही पी जाए कि कोई पहचान न ले या उससे किसी को किसी प्रकार की असुविधा न होने पाए। उन्होंने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए कारों के 'पूल' बना रखे हैं। इसी प्रकार साइकिलों पुस्तकों खिलौनों का प्राय सामुदायिक उपयोग होता है सब एक-दूसरे के निकट हैं प्रत्येक का जीवन प्रत्येक पर प्रकट है कोई अपनी समस्या अकेले ही नहीं भुगतता। ह्वाइट के शब्दों में उपनगरों के निवासी "माई बादर के कीपर" हैं।

इस प्रकार के जीवन में कुछ तो सीमा के जीवन-सहयोग का अंश है तथा कुछ सैनिक जीवन का और कुछ समाजवादी सामूहिकता का। जो लोग परमाणु-वादी व्यक्तित्व के विरुद्ध धार्मिक समुदाय के पुजारी हैं वे अमेरिकी मानव के मध्य 'बंधे हुए उपनगरों' को समुदाय की प्रवृत्ति की ओर बढ़ते देखकर थोड़ा काँप अवश्य जाएँगे। वय आय और वर्ग के सम्बन्ध में एकरूपता के कारण मानव और भी आनन्द-रहित हो गया। प्रारम्भ में उपनगरों में विवाहित युवा दम्पति ही गए जिनकी आय 6 000 या 7,000 डालर थी उनके बच्चे दस साल के नीचे के ही थे। धर्म के प्रति उनका दृष्टिकोण भी एक समान ही था। ये सहिष्णु गतिशील परिश्रमी महत्त्वाकांक्षी और भविष्य के प्रति आशान्वित थे।

किन्तु इस सारे समाज को एक वर्ग में ही रख देना भूल होगी। केवल इतना कहा जा सकता है कि नव अमेरिका का इतना अंश मध्यवर्गी है। बड़ा उपनगरी विकास इतना चमकीला न था जितना उससे पहले के और छोटे उपनगर थे। बड़े पैमाने पर मकान बने थे जिन्हें बेचना था। इसलिए क्रैतासिक

यहूदी प्रोटेस्टैंट (हब्शियों को छोड़कर) को भी मिला सबको रख लिया गया। कारू टैक्निशियन व्यवसायों वाले मजदूर, सफेदपोश सब एक ही स्थान में बस गए। आयु, आय और विश्वसनीयता सबकी समान थी। पहले के उपनगरों और शहरों के निवास भौगोलिक या सीमित क्षेत्र में उतनी लोकतान्त्रिकता न थी जितनी इन उपनगरों में। किन्तु इस काल्पनिक भय के कारण कि हब्शी वास्तविक सम्पदा का मूल्य घटा देंगे उन्हें नहीं लिया गया। यह स्पष्ट करता है कि लोकतन्त्र की उनकी कल्पना कितनी सीमित थी।

उपनगरी समाज अमेरिकी अर्थ-व्यवस्था के गतिशील तत्त्वों से बेहद सम्बद्ध था। मजदूर जब फोरमैन होता है, फोरमैन से दुकान अधीक्षक[1] या सेल्समैन से माध्यमिक मैनेजर और माध्यमिक मैनेजर से सेल्स मैनेजर वह एक प्रकार के उपनगर से दूसरे प्रकार के उपनगर में चला जाता है। जैसे-जैसे आमदनी बढ़ती जाती है मकानों का स्तर भी ऊँचा उठता जाता है। नये व्यवहार आदि आते हैं रुचि के नये मानदण्ड बनने लगते हैं और नये प्रकार के मित्र बनाए जाते हैं। कुछ यहाँ तक निम्नवर्ग के परिवार भी अपने लिए उपनगर खोज लेते हैं, उदाहरणार्थ प्लम्बर या बढ़ई का स्तर मजदूरों जैसा ही है पर ये भी आमदनी की सीमा से मध्यवर्गीय पड़ोस का भेद है। ये विभाजन मोटे तौर पर मध्यवर्ग की सीमा में ही है। आमदनी में आत्यन्तिक अंतर बड़े शहरों में ही अधिक होता है।

मेरा तात्पर्य यह नहीं कि उपनगरों का समाज (अमरिका) कन्फ़ार्मिस्ट (एक-रूप) समाज है। इसका वातावरण परिनिष्ठित है और जीवन की रीति एक सम है। फिर भी इसमें एकरूपता नहीं। उपनगरों में जो सामाजिक प्रतिष्ठा है उसका एक कारण जड़ पकड़ने की भावना है और कुछ जैसा मैं पहले कह चुका हूँ मातापिता और प्रजनन से सम्बद्ध है। कुछ अंशों में इसका कारण एक ही प्रकार का काम करने से आने वाली नीरसता को दूर करने की भावना भी है। दूसरे प्रकार के विश्वास और पृष्ठभूमि के लोगों से प्रतिष्ठा प्राप्त करने का अवसर, उनके साथ एक नया समाज निर्माण करने का अनुभव और सामूहिक कार्यों में भाग लेने की इच्छा उन लोगों के लिए पर्याप्त आकर्षण का कार्य करती है जिन्होंने अमरीकी नागरिक आदर्श और एक इंसान दोनों का अनुभव प्राप्त किया है। उपनगरों पर बाहर से एकरूपता लादी नहीं जा सकती। किन्तु वास्तविक सम्पन्नता और साधुतापूर्ण जीवन बिताने की कामना जैसे व्यावहारिक कारण हैं जो सब भेदभाव मिटाकर एकरूपता ला देते हैं। कुछ लोगों को इस बात का डर है कि यह वही समाज है जिसे [illegible] ढंग में बनायेगा—एक

1 Shop Superintendent.

पड़ोस, एक गिरोह, एक वर्ग और एक भावी समाज।

इस भय के पीछे तथ्य भी है। एरिक फ्रोम ने जब उपनगरों की 'मूल' प्रवृत्ति की टीका की तो 'स्वतन्त्रता से पलायन सिद्धान्त'[1] को वह एक नया तर्क दे रहा था। किन्तु जब 'सेन सोसायटी'[2] में वह इसका समाधान प्रस्तुत कर रहा था (जो 19वीं शताब्दी के फोरियरिस्ट समुदाय जैसा था) तो उसने इस तथ्य पर विचार नहीं किया कि इस समय उपनगरों में ही नए फोरियरिज्म के दर्शन होते हैं। व्यक्तिवाद का दोष है कि वह असमाजवादी होता है। सामुदायिक जीवन का दोष मानकीकरण और एकरूपता है।

उपनगरों में गए लोगों को ऐसा भय या विचार आता है। बल्कि उन्हें तो इससे एक प्रकार का रोमांच ही होता है क्योंकि इससे उनकी दृष्टि विस्तृत होती है और एक नया अनुभव प्राप्त होता है। जी० एम० ट्रेवेल्यान ने 18वीं शताब्दी के अंग्रेजी मध्यवर्ग के सम्बन्ध में कहा था "समय उनका था और वह सोने का था"[3]। यह बात अमेरिका के इस नये मध्यवर्ग पर उतनी ही लागू है।

किन्तु इस सोने में खोट की धारियाँ थीं और यह स्वर्णकाल भी बीतने ही वाला था। नया उपनगर एक वर्गीय था जिसमें मजदूर न थे इसलिए इसका कोई औद्योगिक आधार न था। संतुलित समाज के लिए मूल्य देना ही पड़ता है और वह मूल्य है अमेरिकी समाज की विविधता और कोलाहल से दूर भागने से इनकार करना और उसके अंगों को शक्ति के रूप में स्वीकार करना। जो लोग उपनगरों में गए वे यही सोचकर तो गए कि वहाँ उनके बच्चों की शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध हो सकेगा। किन्तु उस 'उत्तम' की प्राप्ति में सहायता देने के लिए उद्योगों को वे साथ नहीं ले गए जो 'कर' देकर शिक्षा की मदद करते। उन्होंने 'अवांछित' आय के लोगों को दूर रखा। फिर वे आश्चर्य करने लगे कि उनके स्कूल इतने महंगे क्यों हैं? अन्त में उपनगरों को औद्योगिक जीवन से सम्बन्ध जोड़ना ही पड़ा।

घर और नौकरी के सम्बन्ध का भी प्रश्न है। नगर आयोजना का आदर्श यह है कि आदमी अपने काम पर पैदल जा सके और वहाँ से पैदल घर आ सके। किन्तु जब उपनगरों का ठोस सत्य सामने आया तो ज्ञात हुआ कि वहाँ से जाना एक दम मोटरों पर ही निर्भर है और प्रतिदिन सुबह-शाम यातायात की समस्याओं से लड़ना पड़ता है। नया परिवर्तन यह है कि शहर के बहुत-से व्यापारिक और औद्योगिक कार्य-कलाप मध्य नगर से बाहर जा रहे हैं। कम

---

1 Escape-from-freedom thesis.

2. Sane Society

3 Meanwhile the hour was theirs and it was golden.

स्वरूप अब बहुत-से उपनगरवासियों को रोज शहर की दूरी नहीं मापनी पड़ेगी। अब उनके कार्यालय भी पास आ गए हैं। यदि यह प्रवृत्ति चालू रही तो उद्योग और निवास-क्षेत्रों का भी समन्वय हो जाएगा।

इसका अर्थ यह है कि 'मुक्त' नगर का गठन अब कुछ ढीला-ढाला होगा। फिर भी मोटरों पर उसकी निर्भरता तो रहेगी ही। हां घर और नौकरी का स्वरूप कुछ बदलेगा। अब रास्ता दोनों तरह से चालू होगा। अप्रत्याशित रूप में यह घटना फ्रैंक लायड रिट के ब्राडेकर सिटी[1] की कल्पना के अनुरूप है अमेरिकी और ब्रिटिश आयोजकों के आरामदेह और पृथक नए कस्बों की कल्पना से यह काफी दूर है। पीछे जब मैंने यह कहा कि अमेरिका में उपनगर संख्या में महत्व की दृष्टि से बढ़ेंगे इससे मेरा यह तात्पर्य नहीं कि वे आत्म सम्पन्न होंगे। भविष्य में उपनगर और नगर में समन्वय अवश्य होगा।

उदाहरणार्थ न्यूयार्क को ले लें। इसमें पांच बरो[2] मिलकर रहे हैं। ये सब मिलकर एक मजेदार नगर बना रहे हैं। इसका विस्तार कितना है यह जानना मुश्किल है क्योंकि नगर कई दिशाओं में बसा गया है। 1975 तक न्यूयार्क की आबादी दो करोड़ हो जाएगी जो कई स्वतन्त्र देशों की आबादी से अधिक है। उपनगरों में आबादी के बसे जाने से मध्य नगर का भी स्वरूप बदल रहा है। अब यह केवल एक अविकसित क्षेत्र के रूप में रह जाएगा। मध्यवर्ग के बाहर बस जाने से अमीरी और गरीबी का अन्तर सुस्पष्ट हो गया है।

किन्तु यह निश्चित है कि नगर या उपनगर अपने भरोसे नहीं जी सकते। मैंने पीछे बतलाया है कि उपनगर का नया जीवन क्या है और उसके कार्य क्या हैं? नगर उद्योग अर्थ-व्यवस्था फैशन मनोरंजन आदि के काम में अपना काम कर रहे हैं। नगर और उपनगर दोनों को मिलकर कोई तीसरा सामुदायिक जीवन विकसित करना पड़ेगा। यही जीवन कानून शासकों और परम्पराओं की कठिनाइयों को पार करेगा। यह सामुदायिक जीवन बने या नहीं इतना तो स्पष्ट है कि उपनगर शहरों के साथ रहेंगे और वे शहर के पिछलग्गू बनकर नहीं बल्कि बराबरी के दर्जे पर रहेंगे।

पर अब जो हो रहा है उसके लिए अमरीका का सामाजिक और सौन्दर्यात्मक दृष्टि से पर्याप्त मूल्य भी चुकाना पड़ रहा है। नगरों के बीच जो खुली जगह थी गुलजार नगर उसे तेजी से भर रहे हैं। इस भूमि में प्राय पर्याप्त खूबसूरती भी रहती है। पर अमरीकी अपने जीवन में एक ऐसा परिवर्तन ला रहे हैं जो गुण या दृष्टि से पर्याप्त होते हुए भी नई आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुरूप है। अमरीकी इसे अपने ही ढंग से कर रहे हैं। वे नये

1. Broadacre city
2. Boroughs

शहर तो बसा रहे हैं पर इस सम्बन्ध में ब्रिटेन के 'नये शहरों' से प्रेरणा नहीं ग्रहण करते। अब वे पुराने नगर-निवेश के नक्शों के अनुसार भी नहीं चल रहे हैं जिनमें शहरों के बीच हरी-भरी पट्टियों की व्यवस्था रहती थी। पुराने शहर के या नये उपनगर के बीच कोई संतुलन नहीं है। सन्तुलन यदि कहीं है तो पुरवेदार शहर के बीच हो सकता है पर मुझे इसमें भी संदेह ही है।

## 11 क्षेत्र: जनता और स्थान के बीच एकरूपता

यद्यपि एक 'अमेरिका' की आवश्यकता तो है पर सचमुच में कोई एक समन्वित अमेरिका है नहीं। अमेरिका के दस्तखत एक नहीं अनेक हैं। अमेरिका 48 राज्यों में विभाजित तो है ही। यद्यपि इन राज्यों की सीमाएँ किसी वस्तु को बाँधती तो नहीं पर प्रत्येक राज्य को अपने जीवन के ढंग पर गर्व है। इनका अपना पूर्वाग्रह और अपना निजी व्यक्तित्व है। कई राज्यों को मिला कर एक खंड बनता है। टर्नर के शब्दों में ये खंड 'यूरोप के राष्ट्रों की धुँधली छाया हैं।' राज्यों की भाँति ये खंड भी शतरंज के खाने की तरह हैं। प्रत्येक वास्तविकतावादी राजनीतिज्ञ को अपने चुनाव के आन्दोलन में खंडों के आकर्षण का सामना करना पड़ता है। उसकी पार्टी में ही खंडों के दबाव होते हैं। कांग्रेस में भी खंडों के गुट होते हैं।

किन्तु एक दूसरा सार्थक विभाजन भी है जिसका आधार जनता और स्थान पर्यावरण स्टाक अर्थ-व्यवस्था आदि इतिहास सजगता और जीवन का ढंग है। इसे क्षेत्र (Region) या उपखंड कहते हैं। राजनीतिक दृष्टि से खंड (Section) क्षेत्र हो सकता है। किन्तु राज्य का अंग अलगाववादी है जबकि क्षेत्र का समन्वयवादी। ऐसा हो सकता है कि अब किसी ऐतिहासिक प्रक्रिया का अनियोजित विकास हो पर बाद में तो इंजीनियरी और केन्द्रीय आयोजना से—जैसे नदी घाटी योजनाओं के माध्यम से—इनकी एकता को मजबूत ही किया गया है। ये क्षेत्र भारी भरकम अमेरिका को टुकड़ों की परिधि में बाँधते हैं। अमरीकी महाद्वीप इतना बड़ा है कि उसका कोई खास जीवन नहीं हो सकता। वस ही शहर इतने छोटे हैं कि उनके अकेले किसी प्रकार के जीवन का कोई अर्थ ही नहीं। 'गाँव और महाद्वीप के बीच' क्षेत्र आता है। अमरीकी जीवन में मानवीकरण और परमाणवीकरण की जो शक्तियाँ हैं उनकी प्रतिशक्ति के रूप में ये क्षेत्र और उपखंड काम करते हैं।

क्षेत्र की रूपरेखा जरा धुँधली है। इस सम्बन्ध में जितनी सूचियाँ बनी हैं उनमें कोई साम्य नहीं है। सामान्यतया न्यू इंग्लैंड मध्य अटलांटिक क्षेत्र ऊपरी-दक्षिण सुदूर-दक्षिण दक्षिण-पश्चिम महाझीलों का प्रदेश पर्वतीय क्षेत्र, सुदूर-पश्चिम और प्रशान्त उत्तर-पश्चिम के क्षेत्र बताए जाते हैं। ये भौगोलिक

आर्थिक और सांस्कृतिक इकाइयाँ हैं। कृषि के आधार पर भी समूह बनते हैं। जैसे रूई की खेती वाली पट्टी गेहूँ की पट्टी घाटों में चरने वाले चौपायों का क्षेत्र ऊपरी क्षेत्र पश्चिमी विशालता के चरागाहों का क्षेत्र।

इन क्षेत्रों के उपक्षेत्र भी हैं। एक भाँति[1] का निर्माण नदी घाटियों और बस्तियों को घेरकर होता है जैसे टैनेसी मिसूरी अरकान्सास मिसिसीपी कोलम्बिया ओहियो कोनेक्टिकट हडसन-मोहॉक, सेवाय सान्टफे, रेड कोलोराडो सैक्रामेन्टो मेरिमाक आदि। इनमें बहुत-से स्थानों में बाढ़-नियन्त्रण और जल विद्युत के कोष भी हैं इसलिए यहाँ टैक्निकल क्षेत्र भी बन सकते हैं। पहाड़ी ढाँचा का भी ऐसे ही एक-क्षेत्रीय ममता बन सकता है जिसमें राकीज और एपलाशियन्स ही नहीं बल्कि ह्वाइट माउन्टेंस ग्रीन माउन्टेंस बर्कशायर्स ओज़ार्क्स और पाकोनो भी सम्मिलित होंगे। 'अमेरिकन फोकवेज सीरीज़' की पुस्तकों के शीर्षकों से भी उपक्षेत्रों की ओर ध्यान आकृष्ट होता है जैसे, 'सेज ब्रश कन्ट्री' 'ब्लूग्रास कन्ट्री' 'नार्थ स्टार कन्ट्री' 'पामेटो कन्ट्री' 'डीप डेल्टा कन्ट्री' 'म्मोगु कन्ट्री' '[illegible] कन्ट्री' 'पाइनीवुड्स कन्ट्री' और 'पैन हैंडल कन्ट्री'। ऐसे उपक्षेत्रों का बहुरूपी चित्र बड़ा विस्तृत है। क्षेत्र तो एक ढाँचे में एक सांस्कृतिक इकाई है। यह ढाँचा पहाड़ या नदी का बेसिन या झील कस्बा या रेगिस्तान किसी भी तरह का हो सकता है। कभी यह कस्बों के अनुसार भी बन सकता है। विशेष व्यवसाय या 'स्टाक' और परम्परा की एकरूपता के आधार पर भी उपक्षेत्र बन सकता है। क्षेत्र के रूप भिन्न-भिन्न हो सकते हैं किन्तु किसी क्षेत्र या उपक्षेत्र के निर्माण के लिए मोटे तौर पर प्राकृतिक परिवेश की एकता और आर्थिक इकाई का होना आवश्यक है। ये सब सामुदायिक जीवन और समान इतिहास और ममता के निर्माण में सहायक होते हैं।

ये क्षेत्रीय प्रवृत्तियाँ ही अमरीकी वैविध्य को प्रकट करती हैं। जैसे अमरीकी 'स्टाक' में अनेक जातियाँ हैं वैसे ही अमरीका के विभिन्न क्षेत्रों के विभिन्न परिवेश हैं। इस वैविध्य ने अमरीका की एकता में सहायता की है।

प्राय: इसमें प्रतिस्पर्धा भी पैदा होती है। शहर और देहात के बीच बैर है। इसी कारण इलिनायस और शिकागो या न्यूयार्क सिटी में प्रतिद्वन्द्विता चलती रहती है। डिक्सीलैण्ड (दक्षिण) और बड़े शहरों में सदा खटपट चलती है। कभी-कभी एक ही क्षेत्र या राज्य में ऐसे अनेक उपक्षेत्र होते हैं जिनमें स्वभाव या परम्परा के अनेक भेद होते हैं। कैलिफोर्निया में हेनिमाल पहाड़ी के उत्तर और दक्षिण कैलिफोर्निया के क्षेत्र में स्वभाव आचरण का अन्तर है। मसीमासता व राजनीतिक इतिहास में पहाड़ी के अनेक प्रेसिडेंटों और

---

1 Type

खाड़ी वाले फ्रांसीसियों के संघर्ष का उल्लेख अवश्य होगा। दक्षिण में ही लाल मिट्टी और गर्दन वाले जार्जिया के पहाड़ियों का जीवन अटलान्टा के औद्योगिक क्षेत्र के लोगों के जीवन से भिन्न है।

1930-1940 के अमेरिकी विचारक वर्ग रेखाओं को चीरती क्षेत्रीय भक्ति के प्रति बड़े सावधान थे। वे 'क्षेत्रीय मन' की वास्तविकता को स्वीकार करने से कतराते थे। वे क्षेत्रीयता या उपक्षेत्रीयता को इतिहास का अंग मान कर प्रागौद्योगिक संस्कृति का अवशिष्ट बतलाते थे।

परिणाम यह हुआ कि क्षेत्रवाद प्रायः परम्परावादियों— विशेषकर दक्षिण के लेखकों तक ही सीमित रहा। 1920 के दक्षिण के भूमिवादियों ने इसे अनुदार, आर्थिक और राजनीतिक प्रोग्राम और एक साहित्यिक सिद्धान्त के रूप में बदल दिया। उन्होंने इसे उत्तर के पुष्ट मानवतावाद के विरुद्ध हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। दक्षिण के क्षेत्रवाद का एक दूसरा सम्प्रदाय भी था जिसका केन्द्र नार्थ कैरोलिना का विश्वविद्यालय था। यह इससे अधिक ऐकडमिक और उदार था। मजेदार बात यह है कि क्षेत्रवाद दक्षिण में ही अधिक फला-फूला। इसमें संदेह नहीं कि गुलाम-प्रथा गृहयुद्ध और पुनर्निर्माण के बड़े-बड़े मसलों पर दक्षिण और शेष अमेरिका के बीच खाई बड़ी विस्तृत हो चुकी थी। इसके अतिरिक्त भी जाति-व्यवस्था ग्रामीणवाद धर्मवाद और जीवन-यापन के गिरे स्तर के कारण दक्षिण के लेखकों में अपनी अलग इकाई मानकर दक्षिण में अलग संस्कृति की कल्पना का प्रचार हुआ।

यदि कोई पूछे कि अमेरिकी क्षेत्रवाद क्या है तो उसका उत्तर देने के लिए प्रत्येक क्षेत्र का परीक्षण करना पड़ेगा।

न्यू इंग्लैण्ड का कोई अकेला मन नहीं है। हो भी कैसे सकता है। ऊपरी उत्तर के मेन यांकी चाहे वह आलू की खेती करने वाला कृषक हो या सिपयार्ड का मजदूर या मछुआ और हाउसेटोनिक और कोनेक्टिकट घाटी का औद्योगिक मजदूर इनमें अन्तर स्पष्ट है। इसी प्रकार बोस्टन के स्टेट स्ट्रीट और हार्वर्ड यार्ड के पुराने अभिजात वर्ग और नये आइरिश प्रवास के राजनीतिक नेताओं में वेर्मोन्ट और न्यू हैम्पशायर के यांकी किसानों और न्यू पोर्ट या ग्रीनविच की अट्टालिकाओं के स्वामी धनिकों में यहाँ तक कि न्यू हैम्पशायर और वेर्मोन्ट के फ्रेंच कैथोलिक प्रवासियों और मेस्साचुसेट्स कोनक्टिकट और रोड आइलैण्ड के आइरिश कैथोलिकों और इटालियन कैथोलिकों में भी अन्तर है। पर एक बात है—पुरानी सांचे में चाहे जो भी नई धातु पड़ी हो सांचा टूटा नहीं है। कुछ लोगों को यांकी के अपने मूल स्थान में जीवित बच रहने में संदेह है। फिर भी न्यू इंग्लैण्ड की कोई संस्कृति है तो उसे मैं यांकी संस्कृति ही कहूँगा—चतुर, व्यक्तिवादी और अपनी मान्यताओं पर दृढ़।

अपने चरम काल में इसने महान् लेखकों और विचारकों की परम्परा को जन्म दिया है। इस परम्परा के प्रारम्भ में जोनाथन एडवर्ड्स जैसे कुछ कट्टर संत भी हुए हैं। पर उनकी कट्टरता स्वयं को कष्ट देने की ही थी। न्यू माक का स्वभाव उसके जलवायु जैसा समशीतोष्ण व कड़ा है—इसका एक ठेठी लिए हुए और भूमि-जैसा ही है जिसमें किसान यदि परिश्रम करे तो मजे में रह सकता है।

यद्यपि 'अन्तिम प्यूरिटन' अब प्राय नहीं रहे और जार्ज एपली जैसे चरित्र अधिकतर बीकन हिल और लुईबर्ग स्क्वायर के भवनों में खोए जाते हैं। न्यू इंग्लैंड के मन में एक सुनियन्त्रित शक्ति है जो उसकी प्यूरिटन परम्परा मिट्टी, जलवायु और इतिहास की उपज है। इस काल्विनिज्म[1] ने ही ट्रान्सेन्डेन्टलिज्म[2] और क्रान्तिकारी समतावादी आन्दोलनों और जोसिया टकर के पराकाष्ठावादी सिद्धान्तों का जन्म दिया। न्यू इंग्लैंड में एक संदेहवादिता है जो उसे यूटोपियनों और मेसियानिस्टों के बीच संतुलन बनाए रखने में मदद देती है। थोरो से फ्रास्ट तक इसका दर्शन रहा है—सीप्टिकता और इसका हास्य दक्षिणी पहाड़ों की लोककथाओं से अधिक ब्रिटेन की लोककथाओं के नजदीक रहा है। एमर्सन 'इंग्लिश ट्रेट्स'-जैसी पुस्तक इसी कारण लिख सका कि न्यू इंग्लैंड में पुराने इंग्लैंड के तत्त्व पर्याप्त मात्रा में सुरक्षित थे।

बोस्टन हाउस को 'सौरमण्डल की धुरी' कहा गया है। उसकी आत्म-निष्ठ एकान्तप्रियता और साथ ही अनुभव से प्राप्त चतुरता ही न्यू इंग्लैंड की विचारधारा का मध्यबिन्दु है। लोवेल के 'बिग्लो पेपर्स' से या थोरो की डायरियों में जो कुछ भी समुद्र में क्यों न हो अपना मानसिक सन्तुलन या न्यू इंग्लैंड के तट का ध्यान नहीं भूलते या रॉबर्ट फ्रास्ट की कविताओं में इसी विचारधारा के दर्शन होते हैं। हेनरी एडम्स में भी यही विचारधारा मिलती है। उन्होंने धनवान होते हुए भी राजनयिक राजपुरुषता मध्यकालीन गिरजाघरों व्यापारपथों के इतिहास और मानव-इतिहास में शक्ति के कानूनों की खोज की थी। ऐडम्स, लोवेल, कैबॉट, होम्स जैसे न्यू इंग्लैंड के परिवार बौद्धिक सामन्तवाद के नजदीक थे। उन्होंने अपनी रचनात्मक परम्पराओं को कायम रखते हुए अपनी वंश परम्पराओं में इसका विकास बनाए रखा।

फिर भी न्यू इंग्लैंड की मुख्य राजनैतिक देन सामन्तवाद के पक्ष में नहीं मारतन्त्र के पक्ष में है। इस लोकतन्त्र में सामन्तवाद का भी विचित्र मिश्रण है। कस्बा सभा का काल्विनिज्म व्यक्तिवाद के द्वारा संचित व्यापार, कस्बा

1 Calvinism.

2 Transcendentalism.

उद्योग और धन-संपदा के साथ क्रान्तिकारिता नहीं मिलेगी जो मतभेद के बावजूद परम्परा में फलती-फूलती है। न्यू इंग्लैण्ड की परम्परा मतभेद की परम्परा है। हेनरी ऐडम्स ने लिखा है कि "किसी वस्तु का प्रतिरोध करना न्यू इंग्लैण्ड का स्वभाव है। बच्चा संसार को प्रतिरोध की भावना से देखता है। पीढ़ियों से उसके पूर्ववर्ती धर्मों ने संसार को उस वस्तु के रूप में देखा है जो पाप-शक्तियों से भरा है जिन्हें मिटाना है और संसार का सुधार करना है। न्यू इंग्लैण्ड का निवासी बच्चा हो या जवान प्रतिद्वन्द्वी संसार से संघर्ष के कारण घृणा से भी प्रेम करना सीख गया है।" इस आत्म चित्र से यह स्पष्ट हो जाता है कि न्यू इंग्लैण्ड का स्वप्न क्या है?

कुछ दिनों से न्यू इंग्लैण्ड का कपड़ा-उद्योग दक्षिण या पश्चिम की ओर जा रहा है। इसके गोदाम खाली हैं और उसका आर्थिक प्रभुत्व समाप्त हो रहा है। इसके अर्थ-शास्त्री इस बात से चिंतित होकर क्षेत्रीय सर्वेक्षण कर रहे हैं ताकि आर्थिक पुनरुत्थान हो सके। शुरू में इसने नेतृत्व लिया पर अब वह इसका दण्ड भुगत रहा है क्योंकि उद्योग के क्षेत्र में उसकी टेकनोलॉजी पुरानी पड़ चुकी है। इसने जल-विद्युत योजनाओं का विरोध किया था। उसका भी परिणाम उसे भुगतना पड़ रहा है। प्यूरिटन सन्तों का धर्म तक तो नहीं रहा पर एक नई कैथोलिक आबादी आ गई है जो अपने धर्म के प्रति बड़ी आस्थावान है। हेनरी एडम्स ने औद्योगिकता के प्रभाव में पुरानी सामाजिक परम्परा के टूटने पर घबड़ाहट प्रकट की थी। अब इस घबड़ाहट का स्थान नई सामाजिक व्यवस्था की निश्चिन्त स्वीकृति ने ले लिया है।

फिर भी न्यू इंग्लैण्ड पारम्परिक मन के बीतने से अमेरिकी विचारधारा और अमरीकरण के माध्यम की महत्ता नष्ट हो गई है। हाथोर्न ने अमेरिकी दुःखी जीवन का बड़ी मार्मिकता से चित्रण किया है। मार्क्वेण्ड के कथा व्यंग ने उसका स्थान लेने की कोशिश की पर इसमें वह असफल ही रहा है। इसी प्रकार कॉटन मैथेर के 'दे मॉक ड्रूम' या जोनाथन एडवर्ड्स का स्थान 'यांकी सिटी' का संख्यात्मक सर्वेक्षण न ले सका। अमेरिकी साहित्य के आगे नेतृत्व का बोझ दक्षिण के लेखकों के कंधे पर पड़ा जिन्होंने एक दूसरे रूप में ही उसकी अभिव्यक्ति की।

न्यू इंग्लैण्ड की कुछ प्रवृत्तियों का मिताव्ययता से मखौल भी बनाया गया। यात्रा न करने के लिए खिड़की पाने पर एक बीकन हिल महिला कहती है "भला मैं यात्रा क्यों करूँ जब कि मैं स्वयं यहाँ हूँ?" एक दूसरी महिला से पूछा गया कि बोस्टन की महिलाएँ हैट कहाँ से पाती हैं तो उसने अत्यन्त सरल ढंग से जवाब दिया "हमारे हैट? क्यों हमारे पास हैट तो हैं?" न्यू इंग्लैण्ड के वैज्ञानिक एगासिज ने खबर दी कि 'न्यू इंग्लैण्ड विश्व के प्राचीनतम की सबसे

पुरानी जगह है।" दूसरे भागों के बहुत-से अमेरिकी न्यू इंग्लैण्ड के मूल पर गर्व
मे बुरा मानते हैं। विशेषकर ऐसी विचारधारा से कि बोस्टन एथेंस है और
कि उसका संस्कृति के क्षेत्र में एकाधिकार प्राप्त है। पेरी मिलर ने याद
दिलाया था कि ऐतिहासिक रूप इंग्लैण्ड वालों ने अबालिशनिज्म और हर
वाम के दंगों में अपनी जान जोखिम में डाली और वे यांकी मिश्नमरण में
सारे अमेरिका में फैल गए। उन्होंने भूमि हड़पने वालों और इजारेदारों से
लड़ाई करने की हिम्मत दिखाई। जहाँ भी वे गए उन्होंने वहाँ के समाज का
विस्तार पाया। वॉन विक ने कहा है कि न्यू इंग्लैण्ड वालों में प्यूरिटन और
बेलगाम लाभ की भावनाओं का मिश्रण है। इसमें भी दूसरी भावना ही अधिक
प्रबलती है। फिर भी उसने काफी निर्माण किया और न्यू इंग्लैण्ड अमेरिका के
किसी दूसरे क्षेत्र से अधिक अमरिकी मन का प्रतिनिधित्व करता है।

न्यू इंग्लैण्ड का मन और उसका सामाजिक ढाँचा अंशतः मध्य-पश्चिम में
भी स्थापित हुआ है। किन्तु न्यू इंग्लैण्ड की पथरीली कंजूस भूमि के स्थान पर
यहाँ वृक्ष-हीन घास के लम्बे मैदान हैं और वहाँ के गाँवों के स्थान पर यहाँ दूर
दूर घर हैं। न्यू इंग्लैण्ड का प्यूरिटनिज्म जब महाद्वीप में फैला तो वह आत्मभूत
बाढ़ी हो गया। कॉल्विनवाद की मनोवृत्ति का स्थान मैक्स के शब्दों में "बाइबिल
बेल्ट" ने ले लिया। जहाँ तक राजनीतिक दृष्टिकोणों का प्रश्न है न्यू इंग्लैण्ड
और मध्य-पश्चिम में बड़ी फर्क है जो मस्साचुसेट्स के एडम्स परिवार और लोहियों
के टॉफ्ट परिवार में है। ऐडम्स परिवार में आभिजात्य है कट्टरपंथी होते हुए
भी विरोध की भावना है किन्तु मध्य-पश्चिम का कन्जर्वेटिज्म—मैकिन्लेसी और
और हैने का हार्डिंग और टॉफ्ट का—कस्बों और व्यापारियों के मध्यवर्ग का
है जिसमें कल्पना शक्ति का अभाव और नीरसता है। मध्य-पश्चिम का रैडिक-
लिज्म भी मुख्यतः से कृषिक और पोपुलिस्ट है। इसमें उन कृषकों की
कल्पनाशीलता बोलती है जो दूरगामी धनिकों का विरोध करती है और जिसमें
स्कैण्डिनेवियन और जर्मन अल्प-संख्यकों का भी स्वर है। सच बात यह है कि
एक नहीं दो मध्य-पश्चिम हैं। एक है ओहियो इंडियाना इलिनायस और
मिशिगन का क्षेत्र जो मूलतः में कन्जर्वेटिव विचारधारा का गढ़ था और
दूसरा मिसूरी मिनेसोटा और विस्कॉन्सिन का क्षेत्र जो कृषक रैडिकल विचार
धारा का क्षेत्र है। दोनों लिंकनवादी के लिए 'गाल्पनिया की मातृभूमि'
है और दूसरा क्षेत्र सुधारवादी शासन का पालक रहा है। वर्तमान सदी
के पचास के मध्य में मिनेसोटा और मिशिगन ही मूल की रैडिकल विचारधारा
की परम्परा के एकमात्र वाहक रह गए थे।

टूमन और डील के समय में जो राजनीतिक भिन्नता था अब वह नहीं रहा।
मध्य पश्चिम की रैडिकल विचारधारा अब मन्द पड़ गई है। मध्य-पश्चिम का

पृथकतावाद वारेन हार्डिंग के साथ दफ़न हो गया। हाँ उसका प्रेत अब भी कभी कभी विदेशनीति के मुँडेरे पर टहलता नजर आता है। मध्य-पश्चिम कभी रिपब्लिकनों का गढ़ था पर अब वह स्थिति नहीं रही। अब उनका बहुमत इस क्षेत्र में घट गया है। विशाल उद्योग विशाल नगर और [illegible], बैंकों फाउंड्रियों आदि के उद्योगों में लग जाने के कारण अब यहाँ की राजनीति कृषि प्रधान नहीं रही। आज से 30-40 वर्ष पूर्व कहा जाता था कि मध्य पश्चिम की औद्योगिकता पूरब के मुकाबिले मामूली है। पर अब वह बात नहीं। मध्य-पश्चिम के भारी उद्योगों उपभोग वस्तुओं के उद्योगों प्रोसेसिंग वितरण और वित्त में सबकी व्यापार-शक्ति के लिए स्थान है। यह सच है कि राजनीति के क्षेत्र में सिनेटर जोसेफ़ मैकार्थी-जैसे [illegible] अब भी प्रकट हो जाते हैं। पर यह बात मध्य-पश्चिम के सम्बन्ध में ही नहीं है बल्कि दक्षिण में भी है और इसका कारण पूरब के प्रति द्वेष है। किन्तु मैकार्थी के सम्बन्ध में तो यह राष्ट्रीय घटना हो गया था।

'मध्य-पश्चिम के विलगाववाद'[1] जैसे प्रयोगों में अजीब लेबल का ख़तरा है। 'विदेशी' और 'रैडिकल' के प्रति भय और नापसन्दी का भाव मध्य-पश्चिम में ही नहीं दक्षिण में भी है। पर दक्षिण में इसका भय देहातवाद और जाति व्यवस्था के साथ वीरता के गुणों में छुपा है जब कि मध्य-पश्चिम में यह अमेरिका के बाहर के अज्ञात दुर्धर्ष विश्व के प्रति अविश्वास पैदा करता है और ऐसी भावना को जन्म देता है जिसमें उस विश्व से कोई वास्ता ही न रखा जाए। इस विलगाववाद के प्रतीक सिनेटर राबर्ट ए० टॉफ्ट थे। किन्तु अपनी मृत्यु के पूर्व वे आइज़नहावर की विदेश नीति की बहुत-सी बातों को मान चुके थे। गृह-निर्माण और स्वास्थ्य के क्षेत्र में सार्वजनिक हस्तक्षेप भी काफ़ी हद तक वे स्वीकार कर चुके थे। 'टॉफ्ट' से भी अधिक विलगाववादी जैफ़रसनवादी चार्ल्स ए० बियर्ड का 'महाद्वीपवाद' था। इसके अनुसार अमेरिका विदेशों के पचड़े में न पड़ तो अपने महाद्वीप में शान्तिपूर्वक जनतन्त्र का विकास कर सकता है। किन्तु ये दोनों विचारधाराएँ परमाणु अस्त्रों और मिसाइलों की ईजाद के बाद अमेरिका में पुरानी पड़ चुकी हैं।

ग्राहम हटन नामक एक अंग्रेज ने 'मिडवेस्ट एट नून' नामक पुस्तक में मध्य-पश्चिम के मन का सफलतापूर्वक अध्ययन किया है। उसका विचार है कि इसका निर्माण आत्यन्तिक जलवायु से हुआ है। जहाँ कोई हेमन्त या बसन्त नहीं केवल है गर्मी और जाड़ा। मैंने इस सम्बन्ध में [illegible] के अनुपातों की भी चर्चा की है जो [illegible] इसका कारण बतलाता

1. Midwest isolationism.

है। सिंक्लेयर लुइस और शेरवुड एंडरसन ने अमरीका के छोटे कस्बों के, हार्ट क्रेन, रिंग लार्डनर, वेस्ली नामक, ड्राइज़र ने तथा एडगर ली मास्टर्स ने, कुछ कवियों ने, हेमिंग्वे, इलियट ने और हेनरी जेम्स ने भी इण्डियाना (जिसका ड्राइज़र में) तथा मौरिस इलिनायस के वर्णन किये थे। इन्होंने अपने-अपने ढंग से इन समुदायों में मध्यवर्ग के प्रभाव पर प्रकाश डाला है। इनके कथन का सार यह है कि यद्यपि सम्पूर्ण अमेरिकी संस्कृति ही मध्यवर्ग की है फिर भी मध्य-पश्चिम अमेरिका के किसी भी अन्य भाग से अधिक तीक्ष्णता के साथ अमेरिकी समाज को प्रतिबिम्बित करता है। जब कोई लेखक उपन्यासकार कवि आदि या समाजशास्त्री मध्य-पश्चिम के सम्बन्ध में लिखता है तो वह यह जानता है कि इसका प्रभाव सारे अमेरिका पर पड़ेगा। बहुत दिनों से मध्य-पश्चिम अमेरिका के अन्य भागों से अधिक अमरीकी माना जाता है।

जो मध्य-पश्चिम वालों की अपने सम्बन्ध में यह कल्पना है। वे पूर्व को अधिक पतन का गढ़ मानते हैं, दक्षिण को युग के गौरव की अस्त उर्मियाँ में गिरा मानते हैं। उनकी दृष्टि में सुदूर-पश्चिम का अभी निर्माण ही नहीं हुआ है। अपने क्षेत्र के सम्बन्ध में उनकी धारणा है कि उसमें कन्जर्वेटिव और प्रगतिशील दोनों विचारधाराओं का श्रेष्ठ अंश सुरक्षित है। मध्य-पश्चिम वालों से या बाहरी व्यक्तियों से इस क्षेत्र के सम्बन्ध में जो पारस्परिक भाव बना रखे हैं वे ठीक नहीं। आन्तरिक निश्चय ही खण्डित होगा है और तब निराशा होती है। इस दुहरी भावना की एक धारा यहाँ के साहित्य में बराबर प्रवहमान रही है। जैसे ही मध्यवर्ग के आदर्शों और उसके अनुभूत अनुभवों में दूरी स्पष्ट हुई, साहित्य में निराशा की धारा प्रबल होने लगी। बीस वर्ष में मध्य-पश्चिम के 'प्यूरिटनवाद' के विरुद्ध ड्रेज़र ने विद्रोह किया। शेरवुड एंडरसन के 'वाइन्स बर्ग' कहानियों में उस आन्तरिक संघर्ष का चित्रण हुआ है जो मध्य-पश्चिम के स्वप्न की समाप्ति के अवसर पर होता है। एडगर ली मास्टर्स ने प्रारम्भिक अमेरिकियों के वंशजों के सम्बन्ध में एक पुस्तक लिखी है जिसका नाम है 'स्पून रिवर'। इसमें उसने दिखलाया है कि किस प्रकार उन्होंने अपनी आत्मा के प्रति विश्वासघात किया है। इनकी पुरानी शक्ति नष्ट हो चुकी है और पुराना विश्वास समाप्त हो चुका है। जीवन पर अधिकार समाप्त हो चुका है। पुरानी निष्ठा खत्म हो चुकी है।"

किन्तु मास्टर्स और उसके साथियों ने यह निर्णय लेने में कुछ जल्दी कर दी है। मध्य-पश्चिम की वह चतुर रचनात्मक शक्ति जिसने नए औद्योगिक साम्राज्य खड़े कर दिये हेनरी फोर्ड के साथ ही नहीं चली गई। अभी भी थोड़े समय पूर्व मशीन-यंत्र, एडिसन या टेलीकम्युनिकेशन के क्षेत्र में यह प्रतिभा प्रकट है। फिर कला की आविष्कारक प्रतिभा अभी विलुप्त नहीं हुई है। गुई सिंक्लेयर और बेट्स जैसे व्यक्तियों की गरम्परा जिसकी और हीगवट में अब भी जीवित है। राजनीतिक क्षेत्र में हेरोल्ड स्टासन जैसे व्यक्तियों ने सिद्ध कर

दिया है कि कैसे एक असामान्य सामान्य व्यक्ति बड़े-से-बड़े पद का सम्यक भार ग्रहण कर सकता है। कन्सास के सिपाही आइजनहावर ने रिपब्लिकनों में खोये नेतृत्व को पुनः चमकाने का प्रयत्न किया है। इंडियाना के वेन्डेलविल्की और इलिनायस के एडलाइ स्टीवेन्सन राजनीति में असफल रहे। किन्तु इन्होंने अमेरिकी परम्परा में पर्याप्त महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

अच्छा हो यदि मध्य-पश्चिम को आदर्शवादी ढंग से हम न 'अमेरिका का हृदय' कहें, न इसे हम *अमेरिकी मध्यवर्ग के 'चैम्बर ऑफ़ हॉरर्स'* के रूप में ही उपस्थित करें। सच तो यह है कि मध्य-पश्चिम प्राकृतिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि अनुभव की अन्य दृष्टियों से भी चौराहा है। उसने इसके गुण और दोष दोनों आत्मसात किये हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अनुभव करते हैं कि यह कभी भी 'क्षेत्र' नहीं रहा। अभी भी नहीं है। इसकी कोई भौगोलिक, आर्थिक, एथनिक या सांस्कृतिक इकाई नहीं है। इसमें सन्देह नहीं कि जिस अर्थ में सुदूर-दक्षिण या दक्षिण-पश्चिम या सुदूर-पश्चिम या न्यू इंग्लैण्ड ही क्षेत्र हैं यह नहीं है। *इसके गुण सम्पूर्ण अमेरिकी गुणों में घुलमिल गए हैं।*

सच तो यह है कि मध्य-पश्चिम की शेष अमेरिका से सम्बन्धों की कई स्थितियाँ हैं। एक समय था जब यह जंगली सीमान्त था। फिर यह औद्योगिक और नागरिक जीवन के विकास का प्रतीक बना। किन्तु 1950 के बाद न तो यह सीमान्त रहा न रातों-रात विकास की प्रयोगशाला ही। वास्तविकता यह है कि मध्य-पश्चिम नाम ही अब अनुपयुक्त हो गया है क्योंकि सच्चे पश्चिम वाले तो इसे पूरब का हिस्सा ही समझते हैं।

यह अमेरिका का मध्यप्रदेश या मध्यदेश हो गया। यह मध्य अमेरिका हो गया। इस रूप में भी यह औद्योगिक और सांस्कृतिक चौराहा बना रहा। किन्तु संस्थागत प्रवाह नया हो गया। इतिहासकार यह बात अवश्य लिखेगा कि मध्य-पश्चिम के निर्माण में अमेरिका का भी पर्याप्त निर्माण हुआ। मध्य-पश्चिम सीमा प्रान्त के निर्णायक गुण सुस्पष्ट हैं। यह भी सुस्पष्ट ही है कि गृह-युद्ध में मध्य-पश्चिम ने कितना निर्णायक हिस्सा लिया था। गृहयुद्ध को हम उत्तर और दक्षिण के बीच मध्य-पश्चिम के नियन्त्रण के लिए युद्ध की संज्ञा भी दे सकते हैं। मध्य-पश्चिम के बाजारों से रुपए बनाकर ही उद्योगपतियों ने सारे देश के औद्योगिक विकास को गति दी।

किन्तु 1950 के बाद जिस नये अमेरिका का उदय हो रहा है मध्य अमेरिका की शक्ल-सूरत उससे बहुत मिलती-जुलती है। व्यापारियों का प्रभाव फिर से बढ़ा है। राष्ट्रपति आइजनहावर के हृदय में भी उनके प्रति वही स्नेह है जो राष्ट्रपति ग्रांट के मन में था। धन की वैसी ही रेल-पेल है और जीवन के उद्देश्यों के प्रति वैसी ही अन्धेर-गर्दी है। यदि आप मध्य अमेरिका का सूक्ष्म अध्ययन

करें तो आपको विदित होगा कि उसमें भी सम्पूर्ण अमेरिका की ही भाँति कन्फ़ॉर्मिज़्म के प्रति झुकाव, अकेलेपन की भावना, मध्यवर्ग की रहन-सहन और विचारधारा पर ज़ोर, उपनगरी रहन-सहन के नए ढंग, पड़ोसियों से भाई-चारा स्थापित करने की भावना, अजनबी तथा वाम विचारों के प्रति असहिष्णुता, नैतिक मानदण्डों के प्रति अन्धेरगर्दी मिलेगी। इस प्रकार यदि न्यू इंग्लैण्ड अमेरिका का आभिजात्य संस्कृति का प्रतीक है तो मध्य-पश्चिम जन-संस्कृति का चौराहा।

न्यू इंग्लैण्ड की भाँति इसमें कोई टिकाऊ सामाजिक अभिजातवर्ग न था। मध्य वर्गों में भी न था। इसका लोकनायक व्यापारी है किन्तु इस अभिजात को काम इतनी तेज़ है कि उसमें किसी सामाजिक वर्ग को जन्म देने की फ़ुरसत नहीं है। शेष अमेरिका की भाँति इसकी मुख्य विशेषता यही है कि यह डवमगन है। अपने आसपास के सांस्कृतिक जलवायु का बैरोमीटर है। मध्य अमेरिकियों ने जहाँ एक ओर इसे मारस का जामा पहनाया है वहाँ इसे नीचा दर्जा भी दिया गया है। किन्तु यह अपनी ही गति से अपने आदर्शों की ओर बढ़ता गया है। उसे अपनी काम से इतनी फ़ुर्सत ही नहीं है कि वह रुककर सौन्दर्य के बारे में विचार करे। यह अमरीकी जीवन की असहिष्णुता का शिकार हो गया है। आज यह 'अपटन पुरुष' का केन्द्र-बिन्दु है। चाहे अच्छा या बुरा यह अमेरिका के अर्थ और उसके भविष्य का पर्याप्त रूप में वाहक है। यदि मध्य अमेरिका किसी सभ्यता का अनाकर्षक और दुस्साध्य प्रतीत हो तो उसे स्वीकार कर लेना चाहिए कि यह बात सारे अमेरिका पर लागू है।

जिसे दक्षिण कहते हैं वास्तव में उसमें तीन उपक्षेत्रीय संस्कृतियाँ हैं सुदूर दक्षिण, ऊपरी दक्षिण (राज्यों की एक सीमान्त पट्टी) और दक्षिण-पश्चिम। सुदूर दक्षिण एक ग्रामीण क्षेत्र बना रहा। यहाँ कृषि ही प्रधान है। यहाँ या तो नीग्रो गोरों के मुकाबिले बहुसंख्या में हैं (जैसे ब्लैकबेल्ट कण्ट्रीज़ में) या फिर उनकी इतनी संख्या अवश्य है कि 'महा भय' बना है। मोटे तौर पर इस क्षेत्र में जॉर्जिया, अलाबामा, मिसीसिपी, साउथ कैरोलिना, लुइसियाना और फ्लोरिडा शामिल हैं। वर्जीनिया, नार्थ कैरोलिना, केंटकी और टेनेसी ऊपरी दक्षिण की सीमान्त पट्टी में शामिल हैं। और टेक्सास, ओकलाहोमा तथा आरकन्सास एक दूसरी सीमान्त पट्टी है जो दक्षिण-पश्चिम की बगल में है। अधिकांश अमरीकी इन्हीं तीनों को दक्षिण कहते हैं। पर यह दक्षिण की इकाई भी अब खण्डित हो रही है।

दक्षिण के मन की अधिकांश विशेषताएँ खून की विरासत हैं। पुराने अभिजात वर्ग ने एक स्वामी वर्ग की कल्पना की थी। यह यूनानी 'रिपब्लिक' का ढाँचा। इसका जन्म बागान के मेलों और बगानों में हुआ। इसका धार्मिक

आधार प्लान्टेशन होते और सामाजिक आधार दास प्रथा रहती। इस स्वप्न की काल्पनिक व्याख्या कैल्हून और फिट्ज़ह्यू के राजनीतिक सिद्धान्तों में बसती रही और उनके अनुयायियों ने एक ऐसे दक्षिण को देखा जिसकी अपनी एक अलग संस्कृति है। किन्तु गृहयुद्ध और पुनर्निर्माण ने पुराने अभिजात वर्ग को समाप्त कर दिया और प्लान्टेशन प्रणाली भी इसी झटके में ध्वस्त हो गई। दक्षिण को गृहयुद्ध का गहरा मूल्य चुकाना पड़ा। सारे युवक कट मरे आर्थिक दिवाला पिट गया युद्ध के बाद दमन करने वाले सैनिकों की स्मृति अब भी ताजी है भ्रष्टाचार और घृणा ये सब उसी युद्ध के परिणाम हैं।

सन् 1880 में हेनरी ग्रेडी ने 'नये दक्षिण' की चर्चा प्रारम्भ की। तब से 80 साल हुए इसकी चर्चा होते। पर अब भी यह 'नया दक्षिण' भूत की ओर ही देखता है जिसमें भूत के प्रति मान और गौरव की भावना है। इसमें उत्तर के प्रति घृणा है। उत्तर वालों को यह अब भी विजेता के रूप में ही देखता है। इसमें दास प्रथा के प्रति अब भी अपराध की भावना है। हब्शियों से फिर मात खाने का भय उसे अब भी बना है। दक्षिण ही एक ऐसा भाग है जिसमें वर्तमान की चेतना और भविष्य की सम्भावनाओं के स्थान पर भूत के प्रति मोह है। वह यह नहीं देखता कि उसमें निर्माण की कितनी क्षमता है बल्कि वह भूत के प्रति गौरव और एक भय से पीड़ित है।

मेरे कहने का यह तात्पर्य नहीं कि दक्षिण का अकेला कोई मत है या वहाँ एक धर्म है। जब दक्षिण की चर्चा चलती है तो कोई पूछ सकता है कि 'किसका दक्षिण'। नीग्रो खेतिहर मजदूर या सामन्त का दक्षिण या गोरे कपड़ा मजदूर का दक्षिण या रुई के किसान का दक्षिण या बिक्री और वितरण के पेशे में लगे मध्य-वर्ग का दक्षिण या कोकाकोला या इन्श्योरेंस कम्पनी के प्रबन्धकों का दक्षिण या चैपलहिल शार्लोटिस विले मेम्फिस आस्टिन नाशन और फयेट विले के विश्वविद्यालयों का दक्षिण या बन्दरगाहों मजदूरों के संगठनों का दक्षिण या अखबार वालों का दक्षिण जो प्रतिदिन प्रचलित अन्ध मान्यताओं को चुनौती देते हैं? इसका मतलब यही हुआ कि दक्षिण तेजी से बदल रहा है। यहाँ भी दृष्टिकोण और वर्ग-व्यवस्था भी उसी स्थिति में है जैसी अमेरिका में अन्यत्र कहीं भी। दक्षिण कहने से जो कुछ सामने आता है उससे अधिक छिपा ही रहता है।

वर्गों के बीच विभाजन एक दम नया नहीं है। पुराने दक्षिण में भी प्लान्टर अभिजातों और लोकतान्त्रिक किसानों के बीच विभाजन था। इनमें पहला सर वाल्टर स्कॉट लार्ड बायरन और कार्लाइल के संसार में रहता था। वह ब्रिटेन के सामन्तवादियों के जीवन और विचारों की नकल करता था। प्रायः एक ही पीढ़ी का उसका अभिजात्य था। दूसरा वर्ग बहुत ही रूखा जंगली और

जैक्सनियन था। गृहयुद्ध में इसकी हार ने इन्हें एक कर दिया था। किन्तु पुनर्निर्माण के फलस्वरूप एक दूसरे वर्ग का उदय हुआ जो गोर्डन ग्रेडी और वैटरसन जैसे शिक्षित व्यापार जमाने युवक दावाओं का था। इसका आदर्श सहिष्णुता था। इनमें सिंह की आक्रमणकारी साहसिकता नहीं बल्कि लोमड़ी-जैसी चालाकी थी। ये उत्तर के पूंजीपतियों के साथ घुलमिलकर काम करते थे। सी० वान वुडवर्ड ने वह दस्तावेज भी पेश किया है जिसमें इन्होंने रिपब्लिकनों से गुप्त सौदा किया था जिसके फलस्वरूप पुनर्निर्माण के कारण उत्पन्न समस्या के समाधान के लिए प्रेसिडेंट हेस का चुनाव हुआ। जब कम आमदनी के गोरे अमरीकियों ने इनकी सत्ता के विरुद्ध बगावत की तो इस बगावत ने दक्षिणी पापुलिज्म का रूप धारण किया। टाम वॉटसन और बेन टिलमैन-जैसे व्यक्ति इसके नेता थे।

युद्ध पूर्व के जैक्सनियन डेमोक्रेटों की परम्परा में ही वॉटसन के दिनों के पोपुलिस्ट भी हैं। किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि पोपुलिस्टों की राजनीतिक और आर्थिक दुर्दशा ने अनुदार जातिवाद का रूप धारण कर लिया। वॉटसन और लौंग दोनों दक्षिण की स्मृति में आधे पौराणिक चरित्र बन गए हैं। उनका पोपुलिज्म नकारात्मक था जिसमें उत्तर के व्यापार और धन के प्रति विद्रोह की भावना थी। उनकी नाश्तिकवादिता का स्रोत विरोध में था इसलिए परिस्थितियों के बदलने से (वॉटसन के लिए) उनका जातिवाद सस्ती नेतागिरी और (लौंग के लिए) पापुलिस्ट सस्ती नेतागिरी में बदल जाना मुश्किल न था। वॉटसन एक दशाब्दी तक पर्दे के पीछे से जार्जिया के गवर्नरों को तोड़ता रहा और लौंग लुसियाना के अपने साम्राज्य पर निरंकुश रूप से जमा रहा। इन दोनों और इनके अनुयायियों के चरित्र यह बताते हैं कि दक्षिण वालों का पराजय था। इस स्मृति का कितना महंगा मूल्य चुकाना पड़ा था। अब जैक्सनियन डेमोक्रेटों का स्थान पोपुलिस्टों ने नहीं बल्कि दक्षिण के उदार डेमोक्रेटों ने ले लिया है। अखबारों विश्वविद्यालयों अदालतों विधानमण्डलों स्थानीय मामलों में इनका प्रमुख है। जातिवाद के प्रति इनके दृष्टिकोण में उदारता है और आर्थिक प्रश्नों पर भी इनका दृष्टिकोण कड़ा नहीं है।

फिर भी 'डिक्सी'[1] बदल रहा है, उसमें सामाजिक परिवर्तन बड़ी तेजी से आ रहे हैं। एक कहावत है कि रुई पश्चिम जा रही है, चौपाये पूरब आ रहे हैं, नीग्रो उत्तर जा रहे हैं, यांकी दक्षिण आ रहे हैं और रुपया देश में आ रहा है। 1930 से 1950 के 20 वर्षों में दक्षिण में कृषि के काम में लगे लोगों की संख्या पचास लाख से घटकर बत्तीस लाख हो गई। अभी न्यू डील और द्वितीय विश्वयुद्ध और आर्थिक तेजी तथा दक्षिण के उत्तर जाने के परिणामस्वरूप

1 Dixie

वर्तमान पचासे के बीच दक्षिण में कितने परिवर्तन हो गए हैं इसका ज्ञान 'एपिटाफ ऑन डिक्सी'[1] से हो सकता है।

पुराना कृषिप्रधान दक्षिण अब औद्योगिक बन गया है। बिजली और सस्ते मजदूरों के कारण अब उत्तर से उद्योग दक्षिण में खिसक रहे हैं। एक नया मध्यवर्ग जन्म ले रहा है जिसे भूत के वैभव के सपने भूल रहे हैं। अब दक्षिण का प्रतिनिधि चरित्र प्लांटेशन का किसान या महाजन का राजनीतिक नहीं बल्कि स्थानीय व्यापार मंडल का व्यक्ति है। 1950 की गणना में दक्षिण में (टेक्सास को लेकर) सात शहर—ह्यूस्टन न्यू ऑर्लीन्स अटलांटा डलास लुईविले बर्मिंघम और सान अन्टोनियो—ऐसे हैं जिनकी आबादी पाँच लाख से अधिक है। उपनगरी जीवन भी दक्षिण में पहुँच गया है। नई वर्ग-व्यवस्था के फलस्वरूप अब दक्षिण पर एक दल का प्रभुत्व नहीं रहा। कारखानों के आगमन से अब मजदूर भी संगठित होने लगे हैं। इसमें जितनी सफलता मिलेगी उतना ही गरीब अमेरिकी गोरा सजग होगा और फिर वह जातिवाद का शिकार उतनी सफलता और सरलतापूर्वक न हो सकेगा।

संघ ने राज्यों के अधिकारों के विरुद्ध कतिपय नागरिक अधिकार दिये हैं। कतिपय मुकदमों में सुप्रीम कोर्ट ने ये अधिकार मान लिए हैं। फलस्वरूप युवा हब्शियों को शिक्षा आदि के क्षेत्र में संघर्ष करने के अवसर मिल गए हैं। अब 'मतदान पर बराबर अधिकार का पर्याप्त ज्ञान हो गया है। 1932 से 1952 तक के सुदीर्घ काल में डेमोक्रेट शासन रहा। फलस्वरूप दक्षिण के बहुत-से सिनेटरों और कांग्रेस सदस्यों को शासन का अच्छा अनुभव प्राप्त हो गया है। जस्टिस ह्यूगो एम० ब्लैक द्वारा किए गए सुप्रीम कोर्ट के बहुत-से फैसलों से दक्षिण में प्रजातन्त्र का एक नया पर प्रगतिशील तत्त्व उभरा है। यह पोपुलिस्ट आन्दोलन और न्यू डील के सम्मिलित परिणामस्वरूप जन्मा है इसमें जातिवाद की दुर्गन्ध नहीं है। अलबामा की लाल मिट्टी में पैदा होने के कारण इसमें एक प्रकार का नैसर्गिक कड़ापन है जैसा धूप में पकाई मिट्टी में होता है। वर्जीनिया राजनीति के क्षेत्र में अब उतना उपजाऊ नहीं रहा जैसे जैफरसन मैडिसन मोनरो जान टेलर और एडमण्ड रफ़ीन्स की जन्मभूमि वर्जीनिया में ही थी। अब दक्षिण की राजनीति का केन्द्र सीमा के औद्योगिक राज्यों जैसे केन्टकी टेनेसी जार्जिया और अलबामा में चला गया है।

दक्षिण में ही अमेरिकी अनुभव की सबसे महत्त्वपूर्ण लड़ाई लड़ी जा रही है। इस युद्ध में एक प्रकार की हेकड़ी है जो 'पुराने ज़माने के धर्म' की विशेषता थी। दक्षिण की अपनी विशेष संस्कृति है जो संघर्ष के दिनों में और स्पष्ट

---

1 Epitaph on Dixie

होती है। दक्षिण में अपराध के किसी मुकदमे की सुनवाई के समय किसी जूरी को या अदालत के कमरे के बाहर घूमने-फिरने वालों को देखिए, दक्षिण के नृत्य में युवकों को या दक्षिण की किसी राजनीतिक सभा में भीड़ को देखिए, किसी दक्षिण के कारखाने में जहां हड़ताल है वहां के पिकेट को देखिए, या शनिवार की रात को बाजार में चले आइए आपको वास्तविक दक्षिण की संस्कृति के दर्शन मिलेंगे। धर्म का असली स्वरूप जितने नाना रूप में दक्षिण में मिलेगा अन्य किसी क्षेत्र में नहीं। राजनीति का प्रेम यहां अधिक आदिम रूप में और नारे एवं अधिक प्रारम्भिक रूप में मिलेंगे। गोरे नागरिकों की परिषद् जो हब्शियों के पार्थक्य-विरोध के विरोध में बनी वह यहां की स्थायी हिंसा की प्रतीक है। इसी प्रकार दक्षिण की उदारता भी अपनी दक्षिण उपज है। उसमें धार्मिक चेतना और मिशनरी भावना का पुट है। इस पचासे के मध्य में जितनी पुट यह दक्षिण में थी अन्य किसी क्षेत्र में नहीं। यहां मध्य के मार्ग पर आरूढ़ रहना जितना मुश्किल था उतना अन्यत्र कहीं नहीं।

तेजी से होने वाले परिवर्तनों के कारण एक नया दक्षिण जन्म ले रहा है। औद्योगीकरण और सीधे मार्गों के सडाकपन के प्रभाव के फलस्वरूप दक्षिण की एकमनस्कता घट रही है। यद्यपि हब्शियों के एकीकरण के विरुद्ध समान रूप से अब भी तीव्रता थी परन्तु अब ऐसी संभावना नहीं कि भविष्य में किसी प्रश्न पर गृहयुद्ध की भांति इस प्रकार की एकता का भाव रहेगा। जैसे जैसे दक्षिण धार्मिक औपनिवेशिकता और एक पार्टी-व्यवस्था से दूर होता जाएगा इसे नए उत्तरदायित्व ग्रहण करने पड़ेंगे और रचनात्मक कार्यों से इसका काम न चल सकेगा।

औद्योगिकता के भी कुछ चिह्न नजर आने लग गए हैं। फ्लायड हण्टर के डिवि-जन मर्सिस और रीजनल सिटीज़' के स्थानीय शक्ति के स्वरूप के अध्ययन में अटलांटा में शक्ति के लिए संघर्ष में एक समुदाय प्रतिबिम्बित हुआ है—विशेष कर दक्षिण क्षेत्र में। दक्षिण में वर्ग का स्वरूप अन्य भागों से अधिक कड़ा था। अब यह भी ढीला पड़ रहा है। वर्गों की पांच सतहें हैं—नीचे गरीब गोरे मध्यवर्ग पुराने अभिजात वर्ग के बचे-खुचे (कभी-कभी शक्ति सम्पन्न पर सामान्यतया पिसे हुए) और पुराने अभिजातवर्ग वाले। इनमें जितना विभाजन दक्षिण में स्पष्ट हुआ है उतना अन्यत्र कहीं नहीं। अब ये वर्ग भी सिमट रहे हैं। ऐसे गोरे भी हैं जो मध्यवर्ग में पहुंच रहे हैं। मजदूर संघों में गरीब गोरे अवशिष्ट भी हैं। पुराने अभिजातवर्ग वाले अब मध्यवर्ग में मिल रहे हैं क्योंकि उन्हें और नीचे गिर जाने का भय है। ऊंची आमदनी के वर्ग में आगमन भी तेजी से हो रहा है। 1930 से 1953 की चौथाई शताब्दी में सामान्य आय के स्तर में जितनी तेजी से वृद्धि हुई है उतनी तेजी से अन्य किसी भाग

में नहीं।

इन सब के परिणामस्वरूप दक्षिण में रचनात्मक साहित्य बड़ी तेजी से उठा है और अब वह अमेरिका के श्रेष्ठ साहित्य की पाँत में आ गया है। सच तो यह है कि दक्षिण का पुनर्जागरण मध्य-पश्चिम की बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ के साहित्यिक आन्दोलन और न्यू इंग्लैण्ड के 'गोल्डेन डे' के समानान्तर बसा है। एलेन-ग्लासगा से टॉमस उल्फे विलियम फ़ाकनर और यूडोरा वेल्टी तक राबर्ट पेन वारेन और टेनेसी इन सब में क्षेत्रीय संघर्ष और परिवर्तन के फलस्वरूप होने वाले लेखक के आन्तरिक प्रभाव की अभिव्यक्ति हुई है। मध्य-पश्चिम में भी ऐसा ही हुआ था जब ड्रेज़र, शेरउड एण्डरसन और सिन्क्लेयर लेविस ने अपने आस-पास के कृषि प्रधान और छोटे नगरों के संसार को औद्योगिक और बड़े नगरों के संसार में बदलते देखा था और इस परिवर्तन की चेतना की अभिव्यक्ति की थी। दक्षिण के लेखकों के सम्बन्ध में एक बात है और वह यह कि जब कि वे अनिच्छा से नये संसार में बढ़ते जा रहे हैं अपने देश के इतिहास के प्रति भावुकता के लिए भी वे बाध्य हैं। समानता को और आगे ले जाएँ तो कहेंगे कि वहाँ भी साहित्यिक पुनर्जागरण उसी काल में हुआ जब कि औद्योगीकरण के आगमन के कारण न्यू इंग्लैण्ड के लेखक और विचार एक अपनी काल्विनिस्ट परम्परा और मानव व्यक्तित्व के पुनर्मूल्यांकन को बाध्य हुए थे।

जब संस्कृति की रूपरेखा तेजी से बदलती है और कोई वस्तु जिसे हम चिरस्थायी समझते हैं तेजी से विलीन होने लगती है कला और साहित्य का उन्मुक्त प्रस्फुटन हो सकता है। हानि के इसी दर्द ने दक्षिण के लेखकों को दक्षिण और समय के प्रति जागरूक बना दिया है। इसीलिए वे समय के विभिन्न स्तरों पर जो एक-दूसरे से नितान्त पृथक हैं लिख रहे हैं। गृहयुद्ध के बाद जो दुःखान्त घटनाएँ हुई और जो तात्कालिक परिवर्तन हुए और उससे उनके मन में जो हिंसवृत्ति जगी उसकी ओर अमेरिकी और विदेशी दोनों आलोचक आकर्षित हुए हैं। फ़ाकनर के उपन्यासों में दक्षिण के अपराध और गर्व के प्रति वही भावना है जो हाथोर्न में प्यूरिटन न्यू इंग्लैण्ड के अपराध और गर्व की भावना के प्रति है। फ़ाकनर ने अपने जीवन में प्रतीक रूप में दक्षिण की स्थिति-व्यवस्था के प्रति चेतना और उसके भावनात्मक रूप को पुनर्जीवित करने की चेष्टा की थी। किन्तु उनका स्थान एक क्षेत्रीय लेखक से ऊँचा है क्योंकि अपनी प्रक्रिया में वह मानव की स्थिति के विरुद्ध असीम मूल्यों तक पहुँच सका है। यही बात राबर्ट पेन वारेन के उपन्यासों विशेषकर 'आल दि किंग्स मेन' पर लागू है। यही बात टामस उल्फे के सरकश ढंगों के सम्बन्ध में भी एक दूसरे रूप में सत्य है। शायद उल्फे ने अपने पिता की जो वास्तविक खोज की

वह उसकी अधिकार के सिद्धान्त की खोज थी। यह खोज इसीलिए और गहरी हो गई क्योंकि पुराने दक्षिण की संस्कृति और उसके मूल्यों से उसका सम्बन्ध विच्छिन्न हो चुका था। दक्षिण ने एक क्षेत्र के रूप में लेखकों के मन पर जबरदस्त अधिकार कर रखा है जितना किसी दूसरे क्षेत्र का अपने लेखकों पर नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपने लेखकों से कहता है कि या तो मुझे स्वीकार करो और पूजा करो नहीं तो मुझे अस्वीकृत कर दो। यदि मुझमें रहकर लिखते हो तो मेरे बारे में अवश्य लिखो।

फिर भी मज़ेदार बात है कि दक्षिण के वर्तमान लेखकों में जो बड़े-से बड़ा भी है वह लिलियन स्मिथ की भाँति सामाजिक यथार्थवादी नहीं है। स्मिथ ने अपनी पुस्तक 'स्ट्रेंज फ्रूट' में जाति-व्यवस्था और घृणा की विरासत के महत्व की कड़ी निन्दा की है। इससे एक मनोभावनात्मक गतिरोध पैदा होता है जिससे नीग्रो और श्वेत दोनों जातियों का स्वाभाविक विकास रुक जाता है। मैंने फाकनर, वारेन, वेल्टी, मकुलर्स आदि जिन लेखकों का जिक्र किया है उन्होंने इसका वर्णन अप्रत्यक्ष रूप में किया है—कल्पना, प्रतीक या अन्य अनैसर्गिक शैली में। वे जिस संसार में विचरते थे वह आज से भिन्न है। उनकी समानता हम रूस के तुर्गनेव और दास्तायवस्की से कर सकते हैं जिन्होंने एक अनैसर्गिक फॉर्म में सामन्ती समाज का चित्रण किया था जो उनकी आँखों के सामने ही लुप्त हो रहा था।

यद्यपि दक्षिण के लेखकों का मन अब भी 'पुराने दक्षिण' से प्रेरणा लेता है फिर भी उनकी रचनाओं में एक प्रकार का विप्लव है और यह विप्लव आधुनिक दक्षिण का विप्लव है। गरीबी और जाति की समस्या खत्म नहीं हुई है हाँ आर्थिक और राजनीतिक उन्नति के कारण दब अवश्य गई है। बहुत से दक्षिणी शहर बन गए हैं जहाँ गोरों और हब्शियों के अनुपात में कमी अवश्य आ गई है। फिर भी मिसीसिपी, अलबामा, जार्जिया, दक्षिण कैरोलिना जैसे राज्य भी हैं जहाँ आज भी गोरों को हब्शियों से घिर जाने का भय रहता है। इससे उनमें एक बाध्यता की भावना पैदा होती है जिसके कारण वे 'विदेशियों' और 'यहूदियों' से ही नहीं हब्शियों और उत्तर वालों से भी घृणा करते हैं। इस घृणा का उपयोग भी होता है जैसे आर्थिक और जाति-व्यवस्था को स्थिर रखने में। दक्षिण के गोरों और हब्शियों के सम्बन्धों में एक प्रकार का आकर्षण-विकर्षण का पैटर्न[1] भी है जिसका आधार [illegible] शारीरिक वैचित्र्य और यौन आकर्षण तथा गोरों की [illegible] की कड़ी आवश्यकता के बीच संघर्ष है।

---

1 Attraction-repulsion pattern.

हिंसा और मायूसी के साथ-साथ दक्षिण के जीवन में एक सौन्दर्य भी है। इस क्षेत्रीय चित्र के चित्रण में उसे छोड़ देने का मेरा इरादा नहीं है। दक्षिण का जो सांस्कृतिक पुण्य है उसने साहित्य का रूप क्यों लिया इसका भी कारण है। दक्षिण में शाब्दिक सौन्दय की परम्परा पुरानी है। वह दक्षिण के वक्ताओं पत्रकारों राजनीतिक विचारकों से और पीछे अंग्रेजी के रोमान्टिक स्कूल तक चली जाती है। इसी परम्परा में पुराने दक्षिण का पालन-पोषण हुआ था। दक्षिण के प्लांटेशनों (Plantation) के स्वामी सचमुच घोड़ों की पीठ पर रहते थे। दक्षिण में यह सैनिक परम्परा अब भी बनी ही है। सेना में आज भी दक्षिण के अफ़सरों की संख्या बहुत अधिक है।

इस सुस्पष्ट जीवन के प्रथम प्रेम की स्मृति के कारण दक्षिण के कुछ लोगों को अब भी भुलावा है कि दक्षिण संघीय क़ानूनों को न मानकर संघ से अलग रूप में रह सकता है। दक्षिण अपना इतिहास नहीं भूल पा रहा है। उसे अब भी याद है कि दासों के मामले में पैर पीछे हटाने के स्थान पर उसने युद्ध की विभीषिका को पसन्द किया था। उसे अब भी याद है कि पुर्ननिर्माण के काल में उसने अपने पैर जमाये रखे और उत्तर के रेडिकलों को परास्त किया। वह सोच सकता है कि नागरिक अधिकारों और पार्थक्यहीनता के इस तीसरे संघर्ष में वह अपनी स्वाधीनता बनाये रखेगा। किन्तु वह भूल जाता है कि पार्थक्य दक्षिण की कोई पुरानी संस्था नहीं है। जिमक्रो के क़ानून तो अभी हाल में बने हैं। इसलिए आश्चर्य की ही बात है कि इतिहास के प्रति एक इतनी व्यापक संस्कृति इतने अनैतिहासिक भुलावे में है।

इस भुलावे से एक बात का तो खुलासा हो ही जाता है कि क्यों दक्षिण ने जितने इतने प्रथम श्रेणी के उपन्यासकार नाटककार कवि और समालोचक उत्पन्न किये—कालहोउन के बाद कोई प्रथम श्रेणी का राजनीतिक विचारक पैदा नहीं किया। (जस्टिस ब्लैक को मैं विधि विचारक मानता हूँ राजनीतिक विचारक नहीं।) राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर चिन्तन करने के लिए आवश्यक है कि अपनी समस्याओं पर सीधे विचार किया जाए, जिसके लिए आज दक्षिण में वातावरण ही नहीं है। पिछले कुछ समय से दक्षिण में जो बौद्धिक प्रक्रिया है वह संवाद (dialogue) की नहीं बल्कि एकालाप (monologue) की है। संवाद निवृत्ति (persuasion) की जो कलाएँ हैं उनका स्थान दक्षिण में अलंकार-शास्त्र और शक्ति-शास्त्र ने ले लिया है। आज फिर दक्षिण ऐप राष्ट्र के राजनीतिक और सामाजिक ढाँचे में विलीन हो रहा है। उसकी रचनात्मक साहित्यिकता और क्षेत्रीय सांस्कृतिक शैली भी नष्ट हो जा सकती है।

दक्षिण-पश्चिम की संस्कृति को एक ओर दक्षिण की ओर दूसरी ओर बड़े

मैदान, बड़े रेगिस्तान और बड़े पहाड़ों की संस्कृति ने घेर रखा है। इसके एक ओर सुदूर दक्षिण की एक-फसली व्यवस्था और गोरों का प्रभुत्व है तो दूसरी ओर मध्य-पश्चिम के गेहूं के मैदान और तीसरी ओर पहाड़ों के चरागाहों के मैदान हैं। इसकी अर्थ-व्यवस्था के आधार हैं—तेल, पशु भूमि और टेक्सास और ओक्लाहोमा के नए उद्योग धंधे और पर्यटन तथा न्यू मैक्सिको एरिज़ोना और दक्षिण कैलिफोर्निया के सिंचित कृषि प्रदेश। दक्षिण से इसे गहराई और फुरसत का सौन्दर्य मिला है। इंडियनों की भूमि ही इसे नहीं मिली बल्कि इसने उनकी कला भी विरासत में ली। स्पेनिश संस्कृति और उसके मिशन वास्तु-कला को इसने पड़ोसी बड़े मैदान और पर्वतीय प्रदेश से लिया है। अपनी पशु भूमि और मरुभूमि से इसे स्थान और विस्तार की भावना मिलती है। इन सबके सम्मिलित प्रभाव से यह प्रदेश अपनी एक क्षेत्रीय संस्कृति विकसित कर रहा है। अभी उसका स्वरूप पूरी तरह स्पष्ट नहीं हुआ है पर वह निर्मित अवश्य हो रहा है।

आर्थिक विस्तार की दृष्टि से यह प्रदेश अमेरिका में सबसे तेजी से आगे बढ़ रहा है। इसमें 'बूम' की भावना का फिर से जन्म हो रहा है। मध्य पश्चिम में शुरू में जैसा बूस्ट हुआ था उसकी याद आज इस क्षेत्र को देखकर ताजी हो जाती है। डलास, ह्यूस्टन और लास एंजेल्स के पूंजीपतियों का उन्माद वैसा ही है जैसा शिकागो, क्लीवलैण्ड के पूंजीपतियों का पच्चीस वर्ष पहले था। अमेरिका के आधुनिक युग के धन-कुबेरों में कुछ टेक्सास के तेल धनियों की गणना है। दक्षिण-पश्चिम का विश्वास है कि सब-कुछ सम्भव है और कोई भी घटना घट सकती है।

पुराने मुद्दों के रूप में व्यक्तिवाद का सम्भवतः यह आखिरी गढ़ है। यह व्यक्तिवाद सार्वजनिक उपयोग और शक्ति के नियन्त्रण के विरुद्ध बड़े निगमों की पकड़ के रूप में प्रकट होता है। इसकी सबसे बड़ी जीत तब हुई जब वाशिंगटन ने [illegible] तट पर राज्य के नियन्त्रण से हटाकर तेल के भंडारों को निजी हाथ में दे दिया। मजदूर जितने असंगठित इस क्षेत्र में हैं अमेरिका में शायद ही कहीं हों। इसका कुछ तो यह कारण है कि स्पेनिश भाषी प्रवासियों और कृषि मजदूरों का स्तर कुछ नीचा है और कुछ यह भी कि दक्षिण-पश्चिम आधा सीमान्त प्रदेश है जहां मजदूरों की संघर्षशीलता वैसे ही कम होती है।

मैक्सिकन सीमा प्रदेश और कृषवाम उटाओं के अनन्य ऐतिहासिक मेल के कारण यहां जातीय विरोध के दर्शन खूब होते हैं। नवाजों[1] जुनियों[2] और

1 Navajo.
2. Zuni.

होपी[1] की सौन्दर्यपूर्ण संस्कृति को उद्योगों का आक्रमण सहना पड़ा। फलस्वरूप एथनिक खानों के लिए यह बड़ा उर्वर प्रदेश सिद्ध हुआ। टेक्सास के बड़े मैदानों के पशुओं और चरवाहों को लेकर एक समृद्ध लोकवार्ता का निर्माण हो गया। हाँ अब इंडियन स्लेनी और जेसुइटों तथा चरवाहों का स्थान पशुओं, तेलपतियों बड़े मैगम फ़ार्मों सेना के हवाई अड्डों और हवाई जहाज के कारखानों आरामदह होटलों विश्राम संरक्षण प्रोजेक्टों और जलविद्युत-बाँधों ने ले लिया है।

सबसे नये सीमा प्रदेश के रूप में दक्षिण-पश्चिम एक नये और अधिक शक्तिशाली लोकतन्त्र के शासन का दावा कर सकता है पर बात ऐसी नहीं। किन्तु राष्ट्रीय अनुभव की पुनरावृत्ति का अर्थ कोई जरूरी नहीं है कि राष्ट्रीय जीवन-शक्ति की भी पुनरावृत्ति हो। यह भी हो सकता है कि जैसे ट्रैफिक मशीन के पुर्जे बार-बार घूमते हैं वैसे ही मूल की पुनरावृत्ति हो। पीछे के सामाजिक संघटन की ओर पलटा खाया जा सकता है। आज जो परिस्थिति है वह मूल सीमान्त अनुभव में न थी। इसलिए यह विघटनकारी भी सिद्ध हो सकती है।

टेक्सास की परिस्थिति ऐसी ही उलझन पैदा करती है। सारे अमेरिका में टेक्सास से अधिक चर्चित स्पष्टित प्रशंसित और शापित प्रदेश दूसरा कोई नहीं। 'टेक्सन ऐसे क्यों हैं और क्या हैं' को स्पष्ट करने के लिए बड़े प्रयत्न हुए हैं परिणाम यहाँ का मुख्य शब्द 'स्केल' है स्थान और पूँजीवाद यहाँ आकर मिल हैं। इसीलिए यहाँ जो कुछ है वह बड़ा है। टेक्सन अधिक जोर से विश्वास और ठहाके के साथ बोलते हैं। उन्हें स्वर्णयुग में विश्वास है। धन वे तेजी से पैदा करते और आडम्बर के साथ खर्च करते हैं। टेक्सास के एक वरिष्ठ अर्थवेत्ता ने बतलाया है कि पिछले पचास में केवल हाउस्टन में 400 मिलियनायर[2] थे। इनमें से बहुतों ने अपना जीवन चरवाहों या फार्म मजदूर के रूप में शुरू किया था। तेल और 'बूम' के कारण वे अमीर बने। रोल्स रायस कारों और हीरों के प्रदर्शन में उन्होंने सबको पछाड़ दिया है। वे बुद्धिवाद के विरोधी हैं। (यहाँ के एक पत्रकार ने बड़े गर्व से कहा कि टेक्सास ने कोई कवि पैदा नहीं किया) इसका कारण है यहाँ अभिजातवर्ग की परम्परा का अभाव। इनके राजनैतिक भाव भी कच्चे हैं। धन और शक्ति यहाँ इतनी तेजी से आई कि लोकतन्त्र के लिए अति आवश्यक सहिष्णुता के विकास का पर्याप्त अवसर ही नहीं मिला। टेक्सास वयस्क होने से पूर्व ही धनी हो गया। प्रौढ़ता से पूर्व ही इसमें विश्वास आ गया।

---

1 Hopi.
2. Millionaires.

एक दूसरा दक्षिण-पश्चिम भी है—स्पेनी और इंडियनों का। यहाँ स्पेनी संस्कृति के खंडहरों पर आधुनिक औद्योगिक सभ्यता का निर्माण हुआ है। यह स्पेनी संस्कृति भी इंडियन संस्कृति के खंडहर पर बसी थी। इस दक्षिण-पश्चिम के जीवन का रूप टेक्सास और ओकलाहोमा के धूमधाले दक्षिण-पश्चिम से भिन्न है। इसके पास न तेल के कुएँ हैं न गगनचुम्बी मकान। इसके जीवन की गति मंद—आराम और फुर्सत की है। इंडियनों की मनोविकारशून्यता स्पेनी कैथोलिकवाद की तपस्या पहाड़ों रेगिस्तानों का ऐश्वर्य इसमें है। डी० एच० लॉरेन्स मेरी आस्टिन एडमंड विल्सन और जे० बी० प्रीस्टले जैसे लेखकों के लिए इसकी असीम प्रागैतिहासिक और रहस्यवादी है। इसी ने ढेरों लेखकों का अपनी ओर आकर्षित किया है।

इसी प्रकार सुदूर पश्चिम में भी भेद और विरोध है। प्रारंभिक काल के 'आगन्तुक' की मनोवृत्ति अभी भी यहाँ व्याप्त है। दक्षिण-पश्चिम की भाँति यह भी मानता है कि सब कुछ सम्भव है। इसमें प्रकृति का सौन्दर्य है। पहाड़ों और प्रशान्ततट के दृश्य तो अमेरिका भर में सर्वोत्तम हैं।

पहाड़ों और प्रशान्ततट के राज्यों में प्राकृतिक दृश्य की दृष्टि से अन्तर स्पष्ट है। पहाड़ ऊँचे सूखे और अगम हैं। प्रशान्ततट की भूमि उर्वर और हरी-भरी है। दोनों राज्यों की आर्थिक मनोवृत्ति और ढाँचे में भी भेद है। पहाड़ के क्षेत्र की आर्थिक व्यवस्था बाहरी है पूरब और मध्य-पश्चिम के निगम-साम्राज्यों के हाथों। इसके खनिज और अन्य साधनों पर उनका स्वामित्व है जो यहाँ से दूर बसते हैं। अनाकोंडा तांबा कम्पनी की कहानी मोन्टाना के इतिहास पर छाई ही नहीं है अपितु यह इस क्षेत्र के आर्थिक शोषण का भी प्रतीक है। पहले मैंने चर्चा की है कि किस प्रकार आबादी चरागाहों के कटाव के कारण पशु क्षेत्र से हटकर औद्योगिक क्षेत्रों में जा रही है। इस क्षेत्र की आशा इसी में है कि भूमि-संरक्षण के कार्य हो रहे हैं जल-विद्युत-बाँधों के बन जाने पर इस क्षेत्र की शक्ति का सदुपयोग हो सकेगा और तब यहाँ नये उद्योग शुरू सकेंगे। परमाणु शक्ति के द्वारा यहाँ की खनिज सम्पत्ति का भी उपयोग हो सकेगा।

प्रशान्ततट क्षेत्र की आर्थिक मनोवृत्ति एकदम भिन्न है। यहाँ की आबादी उदात्त और सम्पन्नता इतनी तेजी से बढ़ी है कि 'संतुलन विकास का नियम' कार्य कर रहा मालूम होता है। पूरब और मध्य-पश्चिम के विभाग कि जिनके कारण से वे सब यहाँ वनस्पति की भाँति जल्दी से फूल उठे प्रतीत होते हैं। मैदानों खनिजों और वनों के समृद्ध साधन बाजार में तब आये जब टेकनिकल ज्ञान अपनी चरम अवस्था में था। फलस्वरूप सीमान्त [illegible] और पूँजीवादी शक्ति और पूँजीवादी विरोधी दृष्टिकोण का यहाँ एक विचित्र सम्मिलन हो गया है। यहाँ सामाजिक और धर्म विचार के क्षेत्र में औद्योगिक पुरस्कार कुछ बाद में

माया। फलस्वरूप औद्योगिक मजदूर संघ यहाँ दूसरे क्षेत्रों से कुछ अधिक ठेठ हैं। इस दृष्टि से प्रशान्ततट का सामाजिक और राजनीतिक वातावरण टेक्सास से अधिक मिलता-जुलता है। दोनों क्षेत्र सीमान्त 'बूम' और औद्योगिक शक्ति के सम्मिलन के प्रतीक हैं। दोनों क्षेत्रों में सामान्य-जन के रंग-ढंग के प्रति मैत्री और विरोधी विचारों के प्रति अति असहिष्णुता है।

दोनों 'बूम' के क्षेत्रों में एक स्पष्ट अन्तर भी है। यह अन्तर बौद्धिक वातावरण में है। साहित्य में टेक्सास का कोई विशेष स्थान नहीं है, पर कैलिफोर्निया में साहित्य सदा से समृद्ध रहा है। ब्रेटहार्ट मार्कट्वेन, जॉन मुईर ऐम्ब्रोज बार्क्स पैक लंडन फ्रैंक नोरिस राबिन्सन जैफर्स ने सभी यहाँ की साहित्यिक उर्वरता की पुष्टि करते हैं।

अब पूरब या मध्य अटलांटिक क्षेत्र के सम्बन्ध में कुछ कहना है। यह एक तटीय पट्टी है जिसके एक ओर न्यू इंग्लैण्ड और दूसरी ओर दक्षिण, और एक ओर समुद्र और दूसरी ओर बड़ी-बड़ी झीलें हैं। पिट्सबर्ग और बफलो के आगे आप मध्य-पश्चिम में और वाशिंगटन के पार दक्षिण में लांग आइलैण्ड के बाद न्यू इंग्लैण्ड म पहुँच जाते हैं। इस पट्टी में ऊपर से नीचे तक औद्योगिक कारखाने हैं विशाल नगर हैं नये-पुराने उपनगर हैं। यहाँ निर्माण व्यापार, वित्त विज्ञापन के ही नहीं राष्ट्र के बौद्धिक और राजनीतिक जीवन के केन्द्र हैं। राष्ट्र के प्रारम्भ से ही इस क्षेत्र का अमेरिका में प्रमुख रहा है। इसलिए अमेरिकी जीवन में अपना स्थान बनाने की इसे कोई चिन्ता नहीं। एकेनिक वैविध्य से भरे कास्मोपोलिटन दृष्टिकोण वाले इन पूर्ण शहरी और औद्योगिक राज्यों को प्राय सच्चा क्षेत्र भी नहीं मानते। इनमें प्राकृतिक परिवेश की आवश्यकता नहीं। दक्षिण मध्य-पश्चिम और सुदूर-पश्चिम की भाँति इन्हें शक्ति के केन्द्रों के प्रति दुश्मनी का भाव नहीं सताता क्योंकि शक्ति के केन्द्र तो ये स्वयं हैं। एक दिशा में इनका मुँह यूरोप की ओर है तो दूसरी दिशा मे देश के बीच। इसलिए इनमें एक प्रकार का कमीनता का भाव है। ये मध्यप्रदेश (Interior) से शिकायत और अदावत[1] का भाव नहीं रखते।

निश्चय ही इस क्षत्र का हृदय स्वयं न्यूयार्क है। न्यूयार्क शहर और उसके उपनगर स्वयं मिलकर एक क्षेत्रीय नगर का रूप ले लेते हैं। प्राय चेतावनी देते हैं कि 'न्यूयार्क अमेरिका नहीं है' सो यह ठीक ही है। किन्तु कोई दूसरी क्षेत्रीय संस्कृति भी अमेरिका नहीं है। यह बात बार-बार दुहराने से ही स्पष्ट हो जाती है कि न्यूयार्क के प्रति कितनी दुश्मनी है। इससे यह भी प्रकट होता है कि न्यूयार्क की संस्कृति ने अमेरिका और विश्व को कितना प्रभावित

---

1 Grievances and resentments.

लिया है।

न्यूयार्क को दो विरासतें मिली हैं। एक पुरानी डच अभिजातवर्ग[1] की जिसका स्थान अब वित्त प्रतिभा और 'काफ़े समाज'[2] के नये अभिजातवर्ग ने ले लिया है और दूसरी है पश्चिमी यूरोप की बौद्धिक विरासत। यह विरासत कास्मोपोलिटन होते हुए भी अमरीकी है। यहीं से इसने सारे विश्व पर प्रभाव डाला है। इसकी आबादी में सारे संसार की जातियों का प्रतिनिधित्व है। हाल ही में न्यूयार्क की आबादी की धारा कुछ परिवर्तित भी हुई है। अब यह मुख्य रूप से कैथोलिक यहूदी हब्शी और प्यूर्टोरिकी हो गई है। किन्तु यह विभाजन निवास को आधार मानकर ही किया जा सकता है। क्षेत्रीय नगर के रूप में न्यूयार्क का विस्तार पड़ोसी दोनों तथा राज्यों तक चला जाता है क्योंकि न्यूयार्क में लाखों व्यक्ति ऐसे भी हैं जो रहते तो अन्यत्र हैं पर उनका सारा जीवन न्यूयार्क का है।

न्यूयार्क में लोगों का आना जारी है। युवक निरन्तर ही जीविका की खोज के लिए न्यूयार्क आते हैं। ये अमेरिका की मूर्ति को ताजी बनाये रखते हैं। प्रायः कहते हैं कि न्यूयार्क को निर्माण की शक्ति सारे राष्ट्र से मिलती है। पर-निर्मित वस्तुएँ कला और रंगमंच रेडियो टेलीविजन अखबार पत्रिकाएँ, विज्ञापन पुस्तकें विचार व्यवस्थापन के नमूने मजदूर संघ की टेकनीक बौद्धिक आन्दोलन—ये सब तो न्यूयार्क से बाहर देश भर को मिलती हैं। इसी शक्ति और सर्वसत्ता के कारण ही तो न्यूयार्क को सन्देह और भय की दृष्टि से देखते हैं और घृणा करते हैं। सबसे अधिक कटुता का भाव दक्षिण मध्य-पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम में है। कभी इसका कारण रसात्मक कभी ऐतिहासिक और कभी समकालीन निराशा होती है। इन सबके अतिरिक्त इस कटुता का कारण न्यूयार्क और पूरब के उदार बुद्धिवादियों द्वारा मध्य-पश्चिम की 'प्रान्तीयता' और दक्षिण की गोरों की प्रभुता पर आक्षेप भी है।

यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि 'बोहीमता' अमेरिका में कोई आन्दोलन नहीं एक तथ्य है जैसे अन्य बहुत-से तथ्य हैं। इसमें अमरीकी परिवेश और संस्कृति की अनेकता है। आन्दोलनों के विचार जहाँ आये भी हैं वे बाहर से आये। इन रोमांस आन्दोलनों ने अमेरिकियों का अपने क्षेत्र की विरासत के प्रति आकर्षण बनाया है और अपनी विलक्षणताओं के प्रति गर्व की भावना दी है। इससे उनकी कला साहित्य और लोकजीवन को सामग्री मिली है। तात्पर्य इस बात का है कि लोग अपने प्रति जागरूक होकर नहीं मतवादी (Cultist)

1. Old Dutch Aristocracy
2. Cafe Society

न हो जाएँ। किन्तु अमेरिका में केन्द्रीकरण की शक्तियाँ इससे प्रबल हैं कि वे ऐसी विचारधारा को जीने न देंगी।

क्षेत्रीय भेदों के महत्त्व को अधिक आँकने की सम्भावना अवश्य है। अमेरिका में परिवर्तन के दो प्रकार होते हैं, एक सारे देश में समान रूप से होता है दूसरा क्षेत्र विशेष तक सीमित रहता है। क्षेत्रीय परिवर्तन वैसे ही हैं जैसे पहिये के भीतर पहिया। इनमें कुछ तो बहुत छोटे और अल्प समाप्त हो जाने वाले होते हैं। किन्तु ये अमेरिकी वैविध्य के नमूने के एक आवश्यक अंग हैं। ऐसे व्यक्ति जो अमेरिका में नहीं गए हैं वे इसकी कल्पना किसी विशाल एकात्मक रूप में करते हैं।[1] अमेरिका के सम्बन्ध में सबसे बड़ी बात यह है कि इसमें भाषा वेशभूषा चेतना जीवन के तौर-तरीके गति विचारधारा आदि के क्षेत्र में एकता के साथ-साथ वैविध्य भी है। मेन के सफेद सरोवर (Pine) और नील पानी से लेकर बड़े लाल कंकरों और केलिफोर्निया तट तक बड़ी झीलों के बर्फ-जमाव से लेकर रेत और टेक्सास के गाल्वेस्टन तक तक अमेरिका में कोई एक सूत्र न मिलेगा जिसकी प्रशंसा या निन्दा की जाती है। इसका यह अर्थ नहीं कि अमेरिका असम्बद्ध स्थानीय विशेषताओं का एक जमघट है, बल्कि अमेरिका में एकता के साथ वैविध्य है। इन्हीं वैविध्यों को संक्षेप में क्षेत्र कहते हैं।

मानवीकरण की प्रवृत्तियाँ आज अमेरिका में पहले से मजबूत हैं। मुख्यतम से यह टेकनालॉजी की उपज है। क्षेत्रीय भेद स्पष्ट ही समाप्त हो रहे हैं। हार्टफोर्ड अटलांटा विलिंग्टन एवान्स डल्लास, डेन्वर और सीटल में आज जितनी समानता दीख पड़ेगी आज से पचीस वर्ष पूर्व उतनी समानता न थी। इनके उपनगरों और उन छोटे-छोटे नगरों में जो इनके चारों ओर छिटके हैं यह बात और सही है। यदि इनके तौर-तरीकों का अध्ययन करें तो पता चलेगा कि ये परस्पर परिवर्तनशील मार्गों से बने हैं। न्यू इंग्लैण्ड और दक्षिण में भी जहाँ क्षेत्रीयता की जड़ सदियों पुरानी है क्षेत्रीयता मिट रही है। क्षेत्रीय सत्य तो टिके रहे हैं पर क्षेत्रीय परिकल्पनाएँ जिन्दा हैं। हाँ अब क्षेत्रीय विभेदों की तीक्ष्णता घट रही है।

समाज या सामाजिक ढाँचे संस्कृति और सामुदायिक तौर-तरीकों में फर्क करना चाहिए। अपने सामाजिक ढाँचों में व्यापार और मजदूर प्रवृत्तियों में मशीन और मशीनी जीवन से वर्गों की दिशाओं में, परिवहन में वितरण व्यवस्था में, बड़े माध्यमों के उपयोग में विज्ञापन और विपणीकरण में दैनिक

1. Like a monstrous monolith hewn out of undifferentiated rocks

उपयोग की वस्तुओं और एक भावना में ढल सारे राष्ट्र के परिमिश्रित नमूनों में ढल रहे हैं। पत्र पत्रिकाओं, रेडियो सिनेमा और टेलीविजन में इन्हीं नमूनों के दर्शन होते हैं। किन्तु यहां एक सामूहिक जीवन का प्रश्न है जैसे जाति सम्बन्ध और उनके प्रति दृष्टिकोण कानूनी व्यवहार वास्तु और भवन घूमना और बातचीत करना, संगीत और नृत्य कला फुर्सत के समय का उपयोग मानसिक जीवन प्रेम और घृणा कैसे आदमी बढ़ता और मरता है स्थान के प्रति भावना लोग अभी भी अपनी स्वायत्तता की रक्षा किये जा रहे हैं। चढ़ाव की प्रक्रिया तो यहां भी है पर उसकी गति अत्यन्त मन्द है।

एक उदाहरण लें। संगीत का एक इडियम है जिसे जाज[1] कहते हैं। सारा संसार इसे लगभग अमेरिकन मानता है। यह न्यू ऑर्लिन्स में हब्शियों की एक चीज थी। यह उनकी अवस्था का एक गुण से उपजा है। अफ्रीका और वेस्टइंडियन के इडियमों से मूल ग्रहण करता हुआ न्यू ऑर्लिन्स में ही यह विकसित होता रहा। जब इसका अपना रूप बन गया तो यह ऐसे ही रूपों से मिला जो संपूर्ण और हार्लेम में बन रहे थे। यह सम्मिलित रूप राष्ट्र की धारा में आ मिला। अब यह केवल स्थानीय इडियम ही नहीं रहा। यही बात लोकगीतों की लोक-कथाओं और बैलाडों[2] पर भी लागू है। सुदूर पश्चिम की अवस्थाओं की कथाओं मिशन और न्यूमेक्सिको की वास्तुओं मिसीसिपी की रचनाओं सुदूर दक्षिण की पाक-कला मध्य-पश्चिम के धार्मिक पुनर्जन्म न्यू इंग्लैंड के विरोध की भावना न्यूयार्क के सभी मतवादों के सार का ग्रहण करने आदि की भी यही कथा है।

क्या यह स्थानीय रचनात्मक प्रतिभा समाप्त हो रही है? न्यू ऑर्लिन्स के निग्रो ने मुझे बतलाया है कि स्थानीय विकास की धाराएं टूट चुकी हैं। उन्होंने कहा कि बड़े माध्यमों और बड़े धन ने स्थानीय और लोक इकाई की भावना को नष्ट कर दिया है। निग्रो को तो इसी से प्रेरणा मिलती थी। अब जाज जैसी ताजी या आडम्बररहित वस्तु कभी पैदा नहीं होगी। इस कथन में सच्चाई भी है। और यह दुखद है। मेरे एक मित्र ने ऐसी बातें कही थीं। उन्हें एक अवसर प्राप्त हुआ जब वे बड़े माध्यम और बड़ा धन पा रहे थे पर उन्होंने वहीं रहना और लिखना पसन्द किया जहां वे शुरू करते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि स्थानीयता का एक ऐसा तत्त्व है जो अभी तक स्थानीय है।

शायद हम कभी यह जान भी न पाएंगे कि किन परिस्थितियों और प्रति

1 Jazz.
2 Ballads.

भागों के किस ऐतिहासिक संयोग से न्यू ऑर्लियन्स का 'जाज़' या न्यू इंग्लैण्ड की वैमत्यता[1] का निर्माण हुआ? इस रूप में क्षेत्रीय संस्कृति—स्थान जनता परम्परा का योगमेल अमेरिकी जीवन की मुख्य सामग्री है। अमेरिकी इतिहास में कभी एक क्षेत्र कभी दूसरा सांस्कृतिक रचनात्मकता का अगुआ रहा है और इस रूप में उसने राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण किया है। जब-जब ऐसा लगा कि एक जगह का सोता ख़त्म हो रहा है दूसरे स्थान पर दूसरे मूल्यवान खनिज पदार्थ निकल आए।

मेरे कहने का यह अभिप्राय नहीं कि क्षेत्रीयता ही अमेरिका को चौरस कन्फ़ॉर्मिस्ट देश होने से बचा सकती है। क्षेत्रीयता के समर्थक यह भूल जाते हैं कि क्षेत्रीयता में कठोर सांस्कृतिक अत्याचार भी छिप सकता है। आज राष्ट्र के मानवीकरण के नमूनों के विरुद्ध एक शक्ति है, पर मानवीकरण—जिसका सम्बन्ध जीवन के बाह्य से है—और आत्मा की अनुरूपता और अननुरूपता में अन्तर है। क्षेत्र अधिक कब्ज़े में आने लायक इकाई है इसलिए छोटे नगरों की भाँति अनुरूपता लाने के लिए इसका उपयोग भी अच्छी तरह हो सकता है।

क्षेत्रीय सभ्यता से यह आशा नहीं की जा सकती कि वह अमेरिका को दीमकघर समाज होने से बचा ले। यह कठिन कार्य तो उस व्यक्ति की स्वायत्त प्रवृत्तियाँ ही कर सकती हैं जो समूहों में रहकर भी समूह के अन्य व्यक्तियों की तरह व्यवहार करता है, जो अमेरिकी जीवन की विशाल दिशाओं और उनमें अपने स्थान के प्रति जागरूक है जिसे विभिन्न प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त हैं और जो उनके प्रति भी सजग है अपने और सीमित रूप में क्षेत्र व्यक्ति और राष्ट्रीय जीवन का निर्माण करने वाली निर्वैयक्तिक शक्तियों के बीच 'बफ़र' का काम कर सकता है। इस कार्य में अमेरिकी क्षेत्रीय संस्कृति अलगाव और मैत्री के बीच स्वस्थ संतुलन स्थापित कर सकती है।

1 Dissent

# 2

# अमेरिका में वर्ग और प्रतिष्ठा

## 1 वर्ग-मुक्त समाज

अमेरिकी समाज की मूल-कल्पना एक वर्गहीन समाज के रूप में की गई थी। उसके बसाए जाने और विकास की पृष्ठभूमि में जो विरासत थी वह प्रधानतः यूरोप की क्रान्तिकारी परम्परा से ली गई थी और प्रायः उसे अमेरिकी प्रयोग ने रूप दिया था। इस विरासत में ये चार परस्पर-सम्बद्ध तत्त्व थे : विशेष अधिकार के प्रति घृणा, मानवी समानता का विश्वव्यापक धर्म, सबके लिए समान अवसर के उन्मुक्त स्रोत और यह धारणा कि मान-प्रतिष्ठा जन्म या पद से नहीं अपने पुरुषार्थ से प्राप्त होती है।

अमेरिकी वर्गहीन समाज का रूप यही है। किसी भी व्यक्ति को दूसरे से कम या ज्यादा अवसर न मिले, प्रत्येक को अपनी प्रतिभा और पुरुषार्थ दिखाने का एक जैसा ही मौका मिले, किसी को भी किसी के कुल, पद या अधिकार के आगे न घुटने टेकने पड़ें और न सिर झुकाना पड़े और आदमी की प्रतिष्ठा और सम्मान उसके पुरुषार्थ और गुणों के कारण हो, इसी विचार को अमेरिकन राष्ट्र निर्माता जैफरसन ने एक ब्रिटिश क्रान्तिकारी के शब्दों में इस प्रकार प्रकट किया : "परमात्मा ने मुट्ठी भर आदमियों को राज करने और बहु-संख्यक लोगों को उनका गुलाम बनकर उनका भार ढोने के लिए पृथ्वी पर नहीं भेजा है।" अमेरिका के स्वाधीनता के घोषणा-पत्र में जैफरसन ने इसी भाव को इन शब्दों में व्यक्त किया : "सब आदमी समान जन्मे हैं।" इसका यह अर्थ नहीं है कि मनुष्यों में कोई वैयक्तिक भिन्नता नहीं होती, बल्कि यह कि जो अन्तर प्रकृति प्रदत्त हैं उनके अलावा मनुष्य के बनाये वर्ग, जाति या वंशगत के अन्तर और न जोड़ दिए जाएँ।

इस प्रकार समाज का एक ऐसा चित्र प्रकट होता है जिसमें न कोई दलित वर्ग है न कोई दास और जहाँ रक्त, जाति या स्थिति के अभिजातवर्गों का भी कोई स्थान नहीं है। केवल योग्यता और कार्य के द्वारा ही कोई प्रतिष्ठित के रूप में मान्यता प्राप्त कर सकता है। यूरोप के समाज में ऊँच-नीच और रक्त का मान था, अमेरिका में पुरुषार्थ और सफलता का। इन दोनों समाजों का यह अन्तर उनकी मूल कल्पना शक्ति में भी अन्तर का कारण बन गया। यहाँ भी

है 'दैवायत्तं कुले जन्म, मदायत्तं तु पौरुषम ।' ऊँचे कुल या जाति में जन्म लेना तो अपने हाथ में नहीं पर पुरुषार्थ अपने हाथ में है। कुल में जन्म मिलने के लिए मनुष्य को स्वयं कोई श्रम नहीं करना पड़ता और न वह अपने पुरुषार्थ से उसे बदल ही सकता है। जिस समाज में कुल या जन्म से श्रेष्ठता मानी जाती है उसमें विशेषाधिकार प्राप्त लोग हाथ भी नहीं हिलाना चाहते और दलितों में अपनी उन्नति की कोई आशा या कुछ करने का उत्साह नहीं रहता। पर जिस समाज में पुरुषार्थ की प्रतिष्ठा है और जहाँ आदमी अपने काम से ही उठता या गिरता है, वहाँ आशा और उत्साह छाया रहता है। यदि इस समाज को धनिकतन्त्र या अमीरों का समाज भी कहा जाए, तो ये धनिक या अमीर सब नव अमीर होते हैं और जिस समाज में अभिजातवर्ग के सभी सदस्य नवधनिक हों तो वस्तुतः उनमें से कोई अभिजात नहीं होता। सब अपनी मेहनत से नीचे से ऊपर उठे होते हैं और इसे ही वे लोग सम्मान का कारण मानते हैं। अमेरिका में 'बड़ी रियासतों' का स्थान 'बड़े भाग्य' (अपने प्रयत्न से खड़े किए गए बड़े कारबार) ने ले लिया है। पर जब कि रियासत और जमींदारी पुश्तैनी होती है वह कारबार अपनी इच्छा-निपुणता से की गई खुद की कमाई होते हैं। फिर लक्ष्मी स्थिर भी नहीं रहती कुछ उसे खो सकते हैं और कुछ कमा सकते हैं। अमेरिका में कहावत है कि तीन पुश्त में जहाँ के तहाँ यानि दादा ने कमाया, बाप ने उड़ाया और बेटा फिर बाँह चढ़ाकर मेहनत करने निकला।

ऐसे समाज में वर्ग-द्वेष और वर्ग-संघर्ष का खतरा नहीं है। यहाँ आशा और उत्साह का राज्य है सबको अपने उज्ज्वल भविष्य में भरोसा है। यही अमेरिका के आदर्श या सतयुगी समाज का चित्र है। यह गतिहीन या बँधा हुआ समाज नहीं यहाँ सबको मौका है। जो चाहे सो करे, अवसरों की लूट है जो लूट सके सो लूटे।

अमेरिका के लोगों को अपने इस स्वतन्त्र और श्रेणीहीन समाज में अंध विश्वास है। अपने आदर्श समाज का गुण गाते वे नहीं थकते। इस गुणगान और प्रचार की ऐसी अति कर दी गई है कि लोगों को इसमें अविश्वास होने लगता है।

अत्युत्साह के कारण अमेरिका के लोगों ने कुछ भ्रान्त धारणाएँ भी बना ली हैं एक धारणा यह है कि सफलता योग्यता से मिलती है इसलिए जो सफल होता है वह योग्य भी अवश्य होगा। पर यह जरूरी नहीं कि जो व्यक्ति सफल हो गया वही सबसे योग्य है और बाकी सब मूर्ख—और अयोग्य हैं। इस तर्क का यह अर्थ निकलता है कि इस समय जिन लोगों के हाथ में पैसा और शक्ति

है वे ही योग्य हैं और बाकी अयोग्य। इसलिए उनके हाथ में शक्ति बनी रहनी चाहिए।

परन्तु सभी को उन्नति का समान अवसर देने वाले समाज में भी सभी लोग ऊपर नहीं चढ़ पाते। कुछ ऊपर चढ़ते तो दूसरों को नीचे भी उतरना पड़ता। यही नीचे उतरने की क्रिया अमेरिकन समाज की तस्वीर को बिगाड़ देती है।

अमेरिकन समाज की इस स्वतन्त्रता का एक और परिणाम है। मनुष्य को जितनी स्वतन्त्रता होती है उतनी वह और चाहता है। जितना ही ऊँच नीच का भेद और विशेष अधिकार कम होता है उतना ही उसका विरोध अधिक तीव्र होता है। फ्रांसीसी राजनीति विचारक दि टॉकविल का कहना है कि विशेषाधिकार का यह विरोध इतना तीव्र होता है कि किसी का रत्ती भर भी विशेषाधिकार नहीं बर्दाश्त किया जाता। अमेरिकन समाज में उन्नति करने के अवसर की समानता जितनी अधिक है, लोगों की आकांक्षा और भूख भी उतनी ही अधिक है। दि टॉकविले के शब्दों में "यह आकांक्षा जितनी ही सन्तुष्ट होती है उतनी ही बढ़ती जाती है।" इससे अमेरिकन समाज में मानसिक गति उत्पन्न होती है जो आर्थिक गति के साथ-साथ चलती है। अमेरिका का नागरिक यह आशा करता है कि समाज उसकी सभी उचित आकांक्षाओं को पूरा करेगा। अमेरिकन नागरिक पक्षपात से ऐसी तीव्र घृणा करता है और सबको समान अवसर देने में जो अडिग विश्वास रखता है उसी से अमेरिका के समाज का क्रान्तिकारी और प्रगतिशील रूप कायम रहता है।

उन्नति की यह आकांक्षा समाज में ऊँच-नीच का भेद नहीं स्वीकार करती न यह सहन करती है कि किसी का अधिक अधिकार या हक हो। यह हर आदमी में यह आशा उत्पन्न करती है कि हम सुख-सम्पत्ति प्राप्त करें अमेरिका में जो जो भी अच्छी चीजें हो सकती हैं उन्हें पावें। साथ ही यह आकांक्षा असन्तोष और अधैर्य पैदा करती है। अमेरिका में नीग्रो लोग अपने अधिकारों के लिए जो संघर्ष कर रहे हैं वह उन्नति की इसी आकांक्षा से प्रेरित है। ज्यों-ज्यों उन्हें एक अधिकार मिलता है वह दूसरे की माँग करता है और यदि उसकी माँग पूरी नहीं होती तो उन्हें गहरा क्षोभ होता है। काम बढ़ने की, काम में और समाज में तरक्की करने की अपनी आमदनी बढ़ाने की इस इच्छा और आकांक्षा का कोई अन्त नहीं। यह समाज को सतत गतिशील रखती है।

अमेरिका में वर्गहीन समाज का अर्थ कुछ भिन्न है। इसका अर्थ ऊँचे अथवा नीचे वर्ग का अभाव नहीं है। इसका अर्थ यह है कि अमेरिका में वर्ग जाति नहीं बन जाता। यहाँ वर्गभेद होता है अगम्यता नहीं। यहाँ ऊँचे वर्ग में

दरवाजे बंद नहीं हैं इसमें बराबर आना-जाना लगा रहता है। मेडिसन और जान टेलर के समय से ही अमरिकी विचारकों का ध्यान इस बात पर गया है कि आर्थिक शक्तियाँ केवल राजनीति ही नहीं समाज का रूप भी निर्धारित करती हैं। वार्ड समर, स्माल गिडिंग्स वेबलेन कूल रास आदि प्रथम श्रेणी के अमरिकन समाजशास्त्रियों ने वर्ग के स्वरूप और समस्या पर बहुत विचार किया। अमेरिकन विचारकों का वर्गहीन समाज मार्क्सवादियों के वर्गहीन समाज से भिन्न है। अमेरिकन वर्गहीन समाज का अर्थ वास्तव में खुला या मुक्त वर्ग समाज है जिसमें सभी को ऊँचे वर्गों में प्रवेश करने का अधिकार और अवसर है।

इस समाज को वर्गहीन इस मान में कह सकते हैं कि इसमें वर्ग के दरवाजे कभी बन्द नहीं रहते और नये लोग बराबर ऊँचे वर्गों में प्रवेश करते रहते हैं और लोग ऊँचे वर्ग से नीचे भी आते रहते हैं। अमरिकी समाज की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि इसमें नीचे से ऊपर और ऊपर से नीचे का चढ़ाव उतार बराबर होता रहता है। सामाजिक मर्यादा और समृद्धि की सीढ़ी पर जितने लोग यहाँ चढ़ते और उतरते हैं उतने किसी भी दूसरे समाज में नहीं। इसका एक कारण तो यह है कि अमेरिका में आकर बसने वाले लोग यूरोप के बन्द समाज से जहाँ नीचे के लोगों को ऊपर चढ़ने का मौक़ा नहीं था असन्तुष्ट होकर आये थे और दूसरा कारण यह भी था कि अमेरिका को इस नई दुनिया में उन्नति करने का अनन्त क्षेत्र पड़ा था। जहाँ जमीन और प्राकृतिक सम्पदा की कमी नहीं रहती वहाँ वर्ग भेद की दुर्लंघ्य दीवारें नहीं खड़ी हो पातीं। ऐसा कठोर वर्ग-भेद तो वहीं पनपता है जहाँ भूमि और जीवन के साधन कम होते हैं। अमेरिका के विस्तीर्ण मैदानों में जिस खुले समाज का जन्म हुआ नगरों में भी वह बंध नहीं पाया। अमेरिका के नगरों में भी सम्पत्ति और सामाजिक मर्यादा की एक श्रेणी से दूसरी में उन्नति और अवनति का क्रम जारी रहा।

परन्तु इधर ऐसा दिखाई दिया है कि वर्गोन्नति का यह प्रवाह धीमा पड़ रहा है। कुछ विद्वानों का कहना है कि पहले के मुक़ाबले और अमरिका के नये सीमान्त प्रदेशों के मुक़ाबले वर्गोन्नति अब कम होती जा रही है। अगर यह ठीक है तो यह चिन्ता की बात है। पर अमेरिका में लोगों की आमदनी धन और शक्ति में जो व्यापक वृद्धि हुई है उसे देखते हुए यह बात ठीक नहीं जान पड़ती। अमेरिकन समाज की सीढ़ी के सिरे पर सदा से प्रचुर सम्पत्ति और तले गहरी ग़रीबी रही है परन्तु पिछले दशकों में जहाँ धनिकों का धन बढ़ा है, वहाँ ग़रीबों की ग़रीबी नहीं बढ़ी है बल्कि बहुतों की हालत अच्छी हो गई है।

अमेरिका की पिछली गहरी मंदी के समय एण्डरसन और डेविडसन ने कैलिफोर्निया में नीचे की श्रेणी की स्थिति का अध्ययन किया था। इससे पता चला कि बहुत-से लोगों का रोजगार उनके पिता के रोजगार से भिन्न है परन्तु उनकी आर्थिक श्रेणी वही बनी रही। यह भी देखने में आया कि बहुत-से लोग छोटी दुकान चलाने के बजाय क्लर्की, कारीगरी और सफेदपोश धन्धे अपनाना पसन्द करने लगे हैं। एक अन्य गवेषक लोमें ने हाल में एक पड़ताल की। इससे पता चला कि मेहनत-मजदूरी करने वाले 10 में से 7 आदमी और दफ्तरों में काम करने वालों में 10 में 8 आदमी शुरू से वही काम करते आ रहे हैं। मिल्स ने जिस जगह पड़ताल की वहां 10 में से 9 मजदूर शुरू से वही काम करते आ रहे थे और उन्होंने कोई तरक्की नहीं की थी। इसी प्रकार जो अच्छे रोजगारों या ऊंचे धन्धों के लोग थे उनमें से कोई भी नीची या मेहनत मजदूरी करने वाली श्रेणी से ऊपर उठकर नहीं आया था। परन्तु मिल्स ने यह भी देखा कि कारखानों में तीन में दो फोरमैन पहले मामूली मजदूर थे और छोटे व्यापारियों में पांच में चार नीची श्रेणी से उठे थे। नीची श्रेणियों की आमदनी या मजदूरी बढ़ने और अधिक कमाने वालों पर ज्यादा टैक्स लगने के कारण भी अमरिका में धन की विषमता या अमीर-गरीब का अन्तर घट रहा है यद्यपि अभी भी काफी विषमता बनी है जो बहुत-से अमेरिकावासियों की नजर में उनके मुक्त समाज के आदर्श के विपरीत है।

अमरिकन समाजशास्त्रियों ने इसकी भी बहुत जांच-पड़ताल की है कि सबसे ऊपर और सबसे नीचे के वर्गों में परिवर्तन का क्रम धीमा पड़ा है और रुकता गया है। सन् 1870 में टॉसिग और जोसलीन ने बड़े व्यापारियों के वर्ग की जो पड़ताल की उससे पता चला कि उनमें आधे ऐसे हैं जिनके पिता बड़े व्यापारी थे यद्यपि और बहुत की पीढ़ी के लोग नीचे से ही ऊपर उठे थे और पहले छोटी दुकानदारी आदि छोटे-मोटे धन्धे करते थे। कुछ लोगों का ख्याल है कि अमेरिकन समाज का ढांचा दिन पर दिन कड़ा होता जा रहा है और नीची श्रेणियों के लोगों के लिए ऊंची श्रेणियों में प्रवेश करना कठिन होता जा रहा है। चूंकि बड़े उद्योग और व्यवसाय चलाने के लिए अब बहुत पैसे की जरूरत पड़ती है इसलिए पूंजीपतियों के लड़कों को अधिक सुभीता रहता है और बड़े उद्योग व्यवसाय और सम्पत्ति उसी वर्ग के हाथ में बनी रहती है और दूसरों को धन कमाने का मौका नहीं मिलता।

परन्तु यह धारणा भी बिलकुल ठीक नहीं है कि शुरू में अमेरिकन समाज में वर्ग या श्रेणियां नहीं थीं और अब वर्ग भेद बढ़ता जा रहा है। अमरिका में शुरू में बसने वाले दलों में भी दो श्रेणियां थीं एक प्यूरिटन (प्रजातन्त्र और सुधारवादी साधारण वर्ग) और दूसरी कैवलियर (राजा के समर्थक ऊंच

घरानों के जमींदार) इन दोनों की रहन-सहन बिलकुल भिन्न ढंग की थी। प्यूरिटन लोग क्रान्तिकारी थे और ऊँच-नीच के घोर विरोधी थे पर कुछ दिनों के बाद उन्होंने इस श्रेणी भेद को स्वीकार कर लिया यद्यपि वे प्यूरिटन मत मानने वाले प्रत्येक व्यक्ति को उन्नति का पूरा अवसर देते थे। अमेरिका के दक्षिणी राज्यों में और उत्तर के कुछ राज्यों में समाज में संभ्रान्त और साधारण का भेद माना जाता था यद्यपि इस भेद का आधार संचित धन नहीं बल्कि सुसंस्कृति और नम्रता थी। अमेरिका के पुराने अखबारों को देखने से पता चलता है कि उस समय भी आर्थिक शक्ति और स्वार्थ के आधार पर राजनीतिक गुटों और दलों के बनने की प्रवृत्ति थी। इस समय के अनेक पैम्फलेटों में सामाजिक विषमता की कड़ी आलोचना मिलती है, इससे पता चलता है कि उस समय के समाज में श्रेणी-भेद विद्यमान था।

वस्तुतः यह धारणा ग़लत है कि पहले अमेरिकन समाज में वर्ग-भेद नहीं था और अब हो रहा है या पहले ऊपर के वर्ग में जाना सहज था और अब कठिन हो गया है, बल्कि पहले का स्पष्ट वर्ग-भेद अब अस्पष्ट हो गया है और श्रेणियों को काटने वाली रेखा धुंधली पड़ गई है, और अधिकांश जनता मध्यम वर्ग में आ गई है।

अमेरिका में वर्गोन्नति या वर्ग परिवर्तन की क्रिया किसी युग या प्रदेश में कभी अधिक रही और कभी कम। सबसे ज्यादा परिवर्तन नीची श्रेणियों में देखने में आता है, ख़ासकर कारख़ानों के मजदूरों में जो उन्नति करके छोटे दुकानदार, फ़ोरमैन दफ़्तरों-दुकानों और प्रबन्ध विभाग के कर्मचारी बन जाते हैं। अमेरिका में मध्यम श्रेणी का जितना विस्तार हुआ है उतना और कहीं नहीं हुआ है। मध्यम श्रेणी में और इस श्रेणी के एक वर्ग से दूसरे में प्रवेश करने का क्रम बराबर जारी रहता है। सबसे नीची श्रेणी के ग़रीब और बेहुनर मजदूरों के लिए उन्नति करना बड़ा दुष्कर है यद्यपि इनमें भी शिक्षा का प्रसार हो रहा है जिससे उन्नति करने में सुविधा मिलेगी। यद्यपि सबसे अधिक गति मध्यम श्रेणी में हुई है पर ऐसा न समझना चाहिए कि और श्रेणियों में परिवर्तन होता ही नहीं। अभी भी ऐसा बराबर देखने में आता है कि बहुत छोटा या नीची श्रेणी का आदमी उन्नति करके ऊपर चढ़ गया यद्यपि इसके लिए बड़ी योग्यता और दृढ़ संकल्प की ज़रूरत होती है।

पर सबसे बड़ा सवाल यह है कि सबसे ऊँची श्रेणियों में क्या हाल है? क्या वहाँ नवागन्तुकों के लिए जगह है? वहाँ दोनों बातें देखने में आती हैं। एक ओर तो पिता का पद सम्पत्ति और कारबार पुत्र को मिलता है और ऊँची श्रेणी पुश्तैनी बन रही है दूसरी ओर नीची श्रेणी से आये नये आदमी भी अपनी योग्यता के कारण व्यापार और उद्योग में संचालक, प्रबन्धक इंजीनियर आदि

के ऊँचे पद भी पाते रहते हैं।

वास्तव में 1950 के बाद में जो पड़ताल की गई है उससे पता चलता है कि इस समय में ऊँची श्रेणी में आना जारी और बढ़ी है। प्रबन्ध के ऊँचे पदों पर बहुत-से ऐसे हैं जो नीची श्रेणियों से आये हैं और इनमें से अधिकांश छोटे घरों के किसानों मजदूरों दुकानदारों आदि के लड़के थे।

परन्तु फ़ॉर्चून पत्रिका ने प्रबन्ध के 900 सबसे ऊँचे पदों की पड़ताल कराई जिससे यह पता चला कि अधिकांश ऊँचे पदों पर अच्छे घरानों के ही लोग हैं। करीब 43 प्रतिशत व्यापारियों के और 10 प्रतिशत वकील डाक्टरों आदि के लड़के थे। 20 प्रतिशत ऐसे थे कि जिनके पिता उस फ़र्म के मालिक या संचालक थे। बहुत थोड़े आदमी ऐसे जिनमें जो नीची श्रेणी से आये थे इनमें से 13 प्रतिशत से कम के घर वाले किसान और 8 प्रतिशत से भी कम मजदूर थे। 50 वर्ष से कम उम्र के अधिकारियों में 11 प्रतिशत से भी कम किसान और ढाई प्रतिशत से कम मजदूर परिवार के थे। इससे फ़ॉर्चून के सम्पादक ने यह नतीजा निकाला कि सबसे ऊँची जगहों पर अधिकतर ऊँचे घरों के ही लोग पहुँच पाते हैं साधारण घरों के लड़कों का उन पर पहुँचना बहुत ही कठिन है।

बड़े घरों के बच्चों को शिक्षा और हुनर सीखने का ज्यादा अच्छा मौका मिलता है और वे अपने पिता की जगह को पा लेते हैं परन्तु यदि उनमें पिता की योग्यता का अच्छा अंश न हुआ तो उनका उन पदों पर बने रहना कठिन है। नये आदमी आगे आते रहते हैं और ऐसे ही वे अपना कारबार खड़ा न कर पाएँ या करोड़ों की सम्पत्ति न जोड़ सकें पर वे ऊँचे पद पा जाते हैं और ऊँची श्रेणी के सदस्य बन जाते हैं। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि ऊँची श्रेणी में सम्पत्ति अवश्य थोड़े-से परिवारों में बनी रहती है पर नये आदमी अधिकार के पदों पर आते रहते हैं। इसी से अमेरिकन समाज का प्रवाह बना रहता है तथा ऊँची और नीची श्रेणियों में संघर्ष की नौबत नहीं आती।

अमेरिकन समाज के विश्लेषण में हमें वर्ग परिवर्तन के अलावा दो और बातों का अध्ययन करना है एक शक्ति के सूत्र और दूसरी सामाजिक प्रतिष्ठा का।

ऊपर यह देखने में आया है कि शक्ति अब कम खानदानों के मालिकों के हाथों से निकलकर कारखानों या कारबारों के मैनेजरों और कम्पनियों के हिस्सों में रुपया लगाने वालों ट्रेड-यूनियन या मजदूर संघों और सरकार के हाथों में भी गई है।

इसी तरह मध्यम वर्ग के लोगों का व्यापार के बजाय कारीगरी और अन्य विशिष्ट धन्धों की ओर झुकाव हो रहा है। पुराने धन्धों से ऊपर पहुँचना

छोटे दुकानदार मजदूर अल्पसंख्यक छोटे किसान और कारीगर लोग थे। न्यू डील कार्यक्रम का उद्देश्य साधारण जनता की उन्नति की बाधाओं को दूर करना था। बाधाएं पहुंचाने वाले बड़े-बड़े सर्वग्राही इजारेदार व्यापारी और पूंजीपति वर्ग के थे। मजदूर संगठन और राजनीतिक संगठन ही इस संघर्ष के मुख्य साधन थे। चूंकि ये साधन लोकतन्त्री थे इसलिए यह लड़ाई हिंसा से बची रही।

अमेरिका की परिशीलता या खुली समाज-व्यवस्था को ही यह श्रेय है कि सामाजिक संघर्ष ने हिंसात्मक रूप नहीं धारण किया जबकि इसके पूरे कारण मौजूद थे। एक तरफ बड़े व्यापारी थे जिन्होंने सारी शक्ति और सम्पत्ति हथिया ली थी और अपने अनुकूल कानून बनवा लिए थे। दूसरी ओर मामूली दुकानदार, कारीगर और कर्मचारी थे जिनकी रोजी इन पूंजीपतियों पर निर्भर है क्योंकि आर्थिक बागडोर इनके हाथ में है। अमेरिकन समाज आमदनी रहन-सहन और हैसियत के हिसाब से अनेक श्रेणियों में बंटा हुआ है। इन श्रेणियों के बीच का अन्तर बहुत स्पष्ट न हो पर प्रत्येक श्रेणी या समूह के लोगों पर आर्थिक उतार चढ़ाव तेजी-मन्दी करों में घट-बढ़ और कानूनों का एक-सा प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक समूह एक साथ काम करता और वोट देता है खासकर जब कोई उनका नेतृत्व करने को खड़ा होता है।

अमेरिका के कुछ समाजशास्त्रियों ने इधर यह पड़ताल की है कि विभिन्न वर्गों के लोगों के क्या विचार और झुकाव हैं? इससे पता चला कि अमेरिका के नीची और ऊंची श्रेणी के लोगों के विचारों और प्रवृत्तियों में जमीन-आसमान का फर्क है। शिकागो की गन्दी बस्ती में रहने वाले नीग्रो और शिकागो ट्रिब्यून के सम्पादक में दक्षिण के गरीब गोरे खेत-मजदूर और कारखाने के मालिक में और शहर के मामूली मजदूर या क्लर्क और बड़ी कम्पनी-संचालक में उतना ही अन्तर है जितना पुराने जमाने में एक नवाब या राजा और गरीब भोटिये में था। पर फर्क यह है कि अमेरिका में गरीब और मामूली आदमी यह जानता है कि वह भी मौका मिलने पर बड़ा आदमी बन सकता है और उसमें अपनी दरिद्रता के प्रति क्षोभ है उसके साथ उन्नति करने की आशा भी है। अमेरिका के वर्ग या श्रेणी संघर्ष की यही विशेषता है कि उसकी तह में असन्तोष के साथ-साथ आशा भी मौजूद है।

अमेरिका में ऊंची और नीची श्रेणियों के राजनीतिक और आर्थिक विचारों में बड़ा अन्तर है परन्तु नीची श्रेणी के लोग यह नहीं समझते कि वे हमेशा नीचे ही बने रहेंगे। दूसरे यह जानते हुए भी कि उनकी सारी आवश्यकताएं पूरी नहीं हो सकतीं नीची श्रेणियों के मन में द्वेष का भाव और निराशा या ग्लानि का भाव नहीं है। इसलिए उनका संघर्ष कभी जोर या क्रान्तिकारी रूप नहीं

धारण करता। उदारपंथी लोग इसे दस्तूरन समझते हैं जब कि दूसरे लोग इसे वर्ग मैत्री और मेल-मिलाप का अपूर्व उदाहरण और अमेरिकन समाज की अनोखी विशेषता बताते हैं।

आलोचकों का कहना है कि यह धारणा बिलकुल भ्रान्त है और लोग जानबूझ कर इसे फैला रहे हैं। परन्तु जब तक कि किसी धारणा का कोई-सा आधार न हो वह व्यापक नहीं हो सकती। वास्तव में अमेरिका की नीची श्रेणी में यह आशा दृढ़ता से जमी है कि कभी-न-कभी हमें भी उन्नति का मौका जरूर मिलेगा। इसी कारण उनमें वह निराशा नहीं आती जो क्रान्ति और वर्ग-युद्ध को जन्म देती है। अमेरिका में नीची श्रेणी में विद्रोह के नहीं करुणा के दृश्य दिखाई देते हैं। यहाँ हमें लोग विद्रोह करते नहीं ऊपर उठने के प्रयत्न में छटपटाते दिखाई देते हैं।

यह दृश्य हमें भले ही करुण दिखाई पड़े परन्तु इन लोगों में तो आशा ही का भाव है और उनकी इस आशा का कठोर आधार भी है। अमेरिका में आज मजदूर नीची मध्यम श्रेणी के बच्चों की शिक्षा की अधिक सुविधाएँ हैं शहरों में नई बस्तियाँ और मोहल्ले बन रहे हैं जहाँ गाँवों से उजड़े हुए घर-बार विहीन मजदूरों और छोटे लोगों को नई जड़ें जमाने का मौका मिला है, मजदूर संघों का बल बढ़ा है जिससे मालिकों को उनकी माँगें माननी पड़ती हैं। टेलीविजन आदि के प्रसार से लोगों को एक नई दुनिया की झलक मिली है। अमेरिका की 70 प्रतिशत जनता ऐसे इलाकों में रहती है, जहाँ सामाजिक प्रगति का क्रम तेजी से जारी है और हर चार में से तीन परिवारों को अपनी उन्नति की पूरी आशा रहती है। प्र स्वेल्ट की न्यू डील नीति ने जनसाधारण की उन्नति के मार्ग की बाधाओं को हटाने में बड़ा काम किया है और बाद के राष्ट्रपति भी इसी नीति पर चल रहे हैं। अस्तु इन सब बातों के कारण साधारण आदमी को यह समझने का कारण नहीं मिलता कि वह ऐसे समाज में है जहाँ उन्नति का कोई अवसर नहीं।

अवश्य ही अमेरिका में काफ़ी सामाजिक विषमता मौजूद है, पर उन्नति का रास्ता बन्द नहीं। बल्कि यही विषमता लोगों को उन्नति के लिए, इस विषमता को मिटाने के लिए, दूसरों के बराबर आने के लिए प्रेरित करती है। अस्तु, अमेरिका का समाज मार्क्सवादी अर्थ में श्रेणी या वर्ग रहित समाज नहीं है न अमेरिका का वर्ग-संघर्ष मार्क्सवादी नमूने का संघर्ष है इसकी जड़ मार्क्स के बहुत के राजनीतिक विचारों में है यह लोकतन्त्री ढंग का संघर्ष है।

# 3

## अमेरिका का जीवन-चक्र

### 1 संस्कृति और व्यक्तित्व

संस्कृति की विशेषता को समझने की एक कसौटी यह जानना है कि उसमें अपने जीवन-चक्र के प्रति मनुष्य के व्यक्तित्व का क्या रूप रहता है।

हमारे पुराने समाजों में चमत्कारिक और धार्मिक कर्मकाण्डों के कारण समाज के सामूहिक सम्बन्ध बहुत पास के थे और व्यक्ति के अपनी जाति से सम्बन्ध तथा उस जाति के प्रति भौतिक जगत् से सम्बन्ध आपस में घुल-मिलकर एक हो गए थे। वहाँ समाज व्यक्ति के जीवन-चक्र में इन संस्कारों के रूप में हस्तक्षेप करता था। बेलजियम के नृतत्वशास्त्री वान गनेप ने संस्कारों की इन संक्रमण स्थितियों को 'जीवन-यात्रा के संस्कार' (Rites of Passage) नाम से अभिहित किया है जिनके द्वारा व्यक्ति जीवन के प्रमुख अनुभवों की शृंखला में अधिक प्रवेश पाता था।

अन्य आधुनिक सभ्य देशों की भाँति अमेरिकावासियों ने भी इन 'जादू-टोने के चमत्कारिक समारोहों'[1] के प्रति अब अपनी सहज श्रद्धा खो दी है। इनका स्थान अब जन्म, यौवनोद्गम, विवाह और मृत्यु के अवसर पर होनेवाले छुट-पुट धार्मिक संस्कारों ने ले लिया और ये समारोह पूरे समुदाय द्वारा मनाये जाने के बजाय अब केवल परिवार और मित्रों तक ही सीमित रहते हैं। फिर भी जन्म से मृत्यु तक समाज अब भी अपने आचारों और नियमों द्वारा व्यक्ति के जीवन-चक्र के विभिन्न क्रमों को रूप देने के लिए उस पर प्रभाव डालता है। भले ही उनमें चमत्कारों का पुट शामिल न हो। एक अर्थ में अब समाज अमेरिकी समारोह 'जीवन-यात्रा के संस्कार' नहीं हैं बल्कि वैज्ञानिकों और डाक्टरों के समारोह हैं। जैसा डेविसनों ने कहा है अब उनके लिए कोर्टसिप (प्रेम में शामिल होने का संकेत या धार्मिक संस्कार) की अपेक्षा मेडिकल परीक्षणों का इलाज किया उतना महत्त्वपूर्ण संस्कार हो गया है।

संस्कृति और व्यक्तित्व में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। व्यक्ति संस्कृति का निर्माण करते हैं और संस्कृति व्यक्ति का। जैसे लोग होते हैं वैसी ही उनकी संस्कृति होती है। यदि व्यक्ति घटिया हैं तो संस्कृति कैसे बढ़िया होगी? पर संस्कृति

1 Magical Ceremonials.

की धुरी या कसौटी यही है कि वह व्यक्तित्व के विकास के लिए कैसा वाता-
वरण प्रस्तुत करती है।

सभी संस्कृतियों में जीवन की क्रिया एक-सी रहती है—जन्म जरा-मरण
बचपन यौवन ब्याह-शादी दाम्पत्य जीवन सन्तान का जनन पालन-पोषण
रोटी का धन्धा—ये जीवन के अविच्छिन्न अंग हैं जो सभी देश और काल में
उसी क्रम से चलते हैं। पर जीवन का बुनियादी ढाँचा एक होते हुए भी उस पर
जो इमारत खड़ी होती है उसमें बड़ी विभिन्नता रहती है। संस्कृति ही इस
बात का निर्णय करती है कि आदमी के कपड़े-लत्ते कैसे होंगे खानपान कैसा
होगा भाषा क्या होगी धर्म-कर्म क्या होगा काम धन्धा कैसा होगा किस
प्रकार उसके विवाह सम्बन्ध होंगे आचार-विचार, पसन्द-नापसन्द मान-अप
मान सम्पत्ति और धन की धारणा और जीवन के आदर्श किस प्रकार के होंगे।
इसी प्रकार की सैकड़ों बातें हैं जो मनुष्य को अपने समाज में परम्परा से प्राप्त
होती हैं और उसके जीवन को एक खास साँचे में ढालती हैं।

अमेरिका-जैसे व्यक्तिवादी देश में भी संस्कृति के ये तत्त्व मनुष्य के जीवन
में एकरूपता स्थापित करते हैं। साथ ही अमेरिका में अनेक उप-संस्कृतियाँ हैं
जो अपनी छाप डालती हैं। जैसे एक हब्शी खेत-मजदूर का जीवन एक गोरे
उद्योगपति के जीवन से भिन्न होगा। पर सब हब्शी मजदूरों के जीवन में एक
समानता मिलेगी जस सब गोरे उद्योगपतियों के जीवन में। दोनों अपने अपने
समाज के आचार-व्यवहार बोली-बानी विधि निषेध का पालन करेंगे। कुछ
हद तक उसे अपनी संस्कृति से जीवन में मदद मिलती है और कुछ हद तक
बाधा भी।

कहा जाता है कि अमरिका के समाज में निषेध या रोक-टोक अधिक है।
क्या यह सच है? जहाँ तक कामाचार या लैंगिक सम्बन्ध का प्रश्न है अमे-
रिका में अनब्याहे स्त्री-पुरुष में सम्बन्ध और एक ही लिंग में सम्बन्ध बहुत बुरा
समझा जाता है और इस पर कड़ी रोक है पर व्यवहार में काफ़ी ढिलाई है।
दूसरी ओर बच्चों को घर और स्कूल दोनों जगह बड़ी छूट मिली हुई है। इसी
तरह आवागमन सामाजिक व्यवहार और धर्म के मामले में लोगों का इतनी
अधिक आजादी है जितनी कभी भी किसी देश में हो सकती है। अमरिका म
माता पिता गुरु या सरकारी अधिकारियों का कोई रोबदाब नहीं। परन्तु
अमरिका में कुछ बातों म कड़ी रोक-टोक और कुछ में बहुत अधिक आजादी
है। वह एक पालाछोर की तरह है जो जल्दी जल्दी गहरे से उथले और उथले
से गहरे में डूबता उतराता रहता है। आजादी और रोकटोक के इस मिश्रण से
अमेरिकन विचार कुछ विमूढ़-सा हो जाता है साथ ही उसमें परिस्थितियों के
अनुसार अपने को ढाल लेने की क्षमता भी आ जाती है।

हमें यह भी देखना है कि अमरिका में जीवन का क्या प्रयोजन या उद्देश्य समझा जाता है ? अमरिका के आचार-शासन में कुछ बातों का निषेध कर जरूर दिया गया है पर किसी कर्तव्य या आचार-शासन का विधान और आग्रह नहीं है। व्यक्ति को अपने ढंग से चलने की पूरी स्वतन्त्रता दी गई है। वह इच्छानुसार जिससे चाहे प्रेम विवाह संतान उत्पत्ति काम-धन्धा मेल-जोल आमोद-मनोरंजन अपने नियम रहने-सहने की पूरी आजादी है। इस नियम से अमरिका का समाज बड़ा ही स्वच्छन्द है पर दूसरी ओर समाज में एक दबाव का वातावरण भी रहता है जिसमें हर आदमी के मन में यह लगा रहता है कि हम समय नहीं बर्बाद करना है। अच्छी जगह पाने के साथ-साथ दुनिया में सफलता पानी है। इस प्रकार का सामाजिक वातावरण व्यक्ति की स्वच्छन्दता को सीमित कर देता है।

हरेक समाज में कुछ ऐसे लोग होते हैं जो समाज के दायरे के बाहर या उसकी सीमा पर रहते हैं जो लीक छोड़कर चलते हैं जैसे कवि कलाकार संत और विद्रोही। अमेरिकन समाज ऐसे सामाजिक और राजनीतिक विद्रोहियों को काफी छूट देता है और उन्हें अपने ढंग से रहने देता है। यहाँ तक यौन आचार का उल्लंघन करने वाला को भी कानूनी दंड उतना नहीं दिया जाता जितनी सामाजिक घृणा। अमेरिकन समाज इन विद्रोहियों से ज्यादा छेड़-छाड़ नहीं करता बशर्ते वे भी उस समाज से छेड़-छाड़ न करें और अपनी राय अपने ही तक रखें।

हिन्दुस्तान में और अन्य देशों में भी पुराने ढंग के समाज में बहुत-से रीति रिवाज और काम-धन्धे पुश्तैनी परम्परा से चल आते हैं। बच्चे अपने माँ-बाप और घर के लोगों से उन्हें सीखते हैं। अमेरिका में यह परम्परा टूट गई है और हर पीढ़ी का नए सिरे से नई जगह और नये वातावरण में जीवन आरम्भ करना पड़ता है और सामाजिक कर्तव्यों को अपने अनुभव से सीखना पड़ता है। लगभग जो अमेरिकन लड़का या लड़की अपने परिवार से एकदम अलग किसी अनजाने नगर में गृहस्थी बसाता है उसे परम्परा से यह ज्ञान भी नहीं मिलता कि माँ-बाप का समाज से क्या व्यवहार करना चाहिए ? नतीजा यह होता है कि विज्ञापन और अपने चारों ओर जो फैशन और चलन देखते हैं उसी का पालन करने लगते हैं।

यह ठीक है कि इस प्रकार उनको सामाजिक आचार-विचार का बहुत स्पष्ट और निश्चित ज्ञान नहीं मिलता पर मोटे तौर पर उन्हें यह मालूम रहता है कि उन्हें समाज में किस ढंग से चलना है। लगभग यह सबको पता रहता है कि बच्चे को अपने [illegible] जीवन में सफल होना है लगातार पढ़ाई-लिखाई में आगे रहना है अपने माँ-बाप के अनुरूप या [illegible] होना है अच्छा काम

बच्चा पाता है नाम और पैसा कमाता है समाज से मिलकर रहता है सुख
और आनन्द पाता है।

अमेरिका के लोग ठोस बातों को ज्यादा महत्त्व देते हैं कल्पना को कम।
सौन्दर्य की अनुभूति रहस्य और विस्मय आदर्श और चारित्र्य का अपने में कोई
महत्त्व नहीं समझा जाता जब तक उसका सम्बन्ध किसी ठोस बात या काम से
न हो। यद्यपि ईसाई धर्म में तपस्या और त्याग का ऊँचा स्थान है पर अमेरिका
में इसका महत्त्व तभी है जब उससे कोई ठोस लाभ या प्राप्ति हो। आध्या
त्मिक उन्नति के लिए अमेरिकन कष्ट सहने या तप करने को तैयार नहीं पर
सेना में या खेलकूद में वह खुशी से कष्ट सहेगा। वह पहाड़ पर चढ़ता है तो
तपस्या के लिए नहीं अपनी सफलता या वीरता का झंडा गाड़ने के लिए।
सैनिक जीवन खेलकूद पर्वत-आरोहण के कष्ट का महत्त्व इसलिए है कि
इससे उसमें वह जीवटपन आता है जो जीवन-संघर्ष में विजय दिलाता है न
कि इसलिए कि इससे आत्मा का विकास होता है या व्यक्तित्व उठता है।

पुराने या आदिम लोगों को जीवन की क्रियाएँ विस्मय और रहस्यमयी
मालूम पड़ती हैं। इसी को लेकर उसने पुराणों की कहानियाँ गढ़ी हैं और
टोना टोटका मंत्र-पूजा और रीति-रस्में रची हैं। उनके पूज्य या वीर पुरुष
साधारण मनुष्य नहीं होते वे किसी देवी-देवता की सन्तान होते हैं न साधा
रण लोगों की तरह उनका पालन-पोषण होता है। वे घने जंगल में या नदी
में बहते हुए पाए जाते हैं, उनको कोई सिंहिनी या शेरनी दूध पिलाती है
उनका जीवन असाधारण घटनाओं से भरा होता है।

पर अमेरिका की वीर गाथाएँ दूसरे किस्म की होती हैं। अमेरिकन लोक
कथाओं के नायक विज्ञान के चमत्कार करते हैं बेशुमार दौलत कमाते हैं बड़ी
बड़ी कठिनाइयों पर विजय पाते हैं तेल के कुओं और सोने की खानों का पता
लगाते हैं।

पुरानी जातियों या राष्ट्रों के सामाजिक या धार्मिक संस्कारों में नाटक के
तत्त्व होते हैं जिसमें पुराना इतिहास दोहराया जाता है या आदर्शों को मूर्त
रूप दिया जाता है जैसे भारत की रामलीला। अमेरिका में इस प्रकार के
संस्कार नहीं हैं। अमेरिकन नवयुवक के आदर्श—खेलकूद के चैम्पियन विमान
के उड़ाके फोर्ड और रॉकफेलर जैसे उद्योग व्यवसाय के नेता एडीसन जैसे
वैज्ञानिक और सनसनी मचा देने वाले पत्रकार हैं।

इन्हीं आदर्शों को सामने रखकर अमेरिका का नवयुवक अपने को ढूँढता
अपनी प्रतिभा का अन्दाज करता है अपना लक्ष्य स्थिर करता है। अपने जीवन
की दिशा निर्धारित करता है। अवश्य ही यह काम आसान नहीं होता।
अधिकांश आदमी उलझकर रह जाते हैं भटकते हैं। विरले ही ऐसे होते हैं

जो उलझनों से निकलकर अपना अलग रास्ता बना पाते हैं। अधिकांश तो प्रवाह में ही बहते हैं। अस्तु व्यक्ति के जीवन पर संस्कृति की परम्परा का बहुत असर पड़ता है। अमेरिका की संस्कृति व्यक्तित्व को दबाती नहीं उसे अपने ढंग से बढ़ने और विकसने का अवसर देती है। अवश्य ही अमेरिका में समाज के कुछ ऐसे भी वर्ग हैं जहाँ व्यक्ति को प्रचलित तौर-तरीकों से अलग चलने का प्रोत्साहन नहीं दिया जाता फिर भी ऐसे समाज की मर्यादाएँ व्यक्तित्व के विकास या व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को अवरुद्ध नहीं कर पातीं। अमेरिका का समाज कुछ क्षेत्रों में ढीला है और कुछ में कठोर, पर इसके जोड़ों के बीच से व्यक्ति के विकास का काफी अवकाश मिलता है।

वास्तव में प्रश्न यह नहीं है कि अमेरिका के समाज में व्यक्तिगत विभिन्नता के लिए स्थान है या नहीं। बल्कि यह है कि क्या समाज का वातावरण ऐसा है जिसमें व्यक्ति को अपने को जानने और अपनी राह निकालने का प्रोत्साहन मिल सकता है या नहीं? नीचे हम इसी दृष्टि से अमेरिकन समाज की परीक्षा करेंगे।

## २ अमेरिका में कौटुम्बिक जीवन

अमेरिका के पारिवारिक जीवन का बहुत विकृत चित्र खींचा जाता है। तलाक, व्यभिचार, बिगड़े हुए बच्चे यही सब बाहरी लोगों को किताबों और फिल्मों आदि में मिलता है। अमेरिका के दाम्पत्य जीवन पर डा० किंसे की रिपोर्ट और बच्चों पर डा० स्पाक और मर्सेल की किताबों से यही धारणा बनती है।

वास्तविक स्थिति भी काफी गम्भीर है। अमेरिका के नवयुवक और नवयुवती प्रेम में पड़कर जल्दी विवाह कर बैठते हैं फिर एक दूसरे से ऊबकर घाट-घाट का पानी पीते हैं। अन्त में उन्माद हो जाता है और एक मर्द या औरत के तीन-तीन पुनर्विवाह तक हो जाते हैं। इससे पारिवारिक जीवन चौपट हो जाता है। बच्चे माता पिता के प्रेम से वंचित होकर बिगड़ जाते हैं और अनेक प्रकार की सामाजिक विकृतियाँ पैदा होती हैं।

पर यह तस्वीर ठीक नहीं है। इसमें अमेरिकन परिवार की कमजोरियों को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया गया है। इन कमजोरियों और दोषों के बावजूद अमेरिका का कौटुम्बिक ढाँचा मजबूत है। यह सांस्कृतिक विकास का नहीं परिवर्तनशीलता का द्योतक है। यदि अमेरिका की पारिवारिक व्यवस्था खराब होती तो उस पर आधारित समाज भी खराब होता। अमेरिका का पूरा सामाजिक ढाँचा पारस्परिक विचार-प्रदर्शन समानता का सिद्धान्त अपने मन का काम धंधा करने की स्वतन्त्रता और सुन्दर भविष्य में विश्वास एवं स्पर्धा और योग्यता

सिद्ध होता। क्योंकि इन्हीं बातों पर अमेरिका की कुटुम्ब-व्यवस्था की बुनियाद है। अमेरिका के समाज और आचार-विचार की कुछ बातें आपको अच्छी लगेंगी कुछ बुरी पर अमेरिका का कुटुम्ब अमेरिका के जीवन का अंग है और उसमें उसके गुण-दोष दोनों मौजूद हैं।

यूरोप के परिवार की शकल अमेरिका में आकर बदल गयी। यूरोप में पिता परिवार का मुखिया होता है खेती-बारी या काम-काज वही करता है पर अमेरिका में पिता की स्थिति दूसरी है। उसके लड़के उसे छोड़कर चले जाते हैं और अपना धंधा अलग करते हैं। लड़कियां भी ब्याह करके अपना अलग घर बसाती हैं। पहले जैसे बड़े परिवार या कुनबे जिसमें तीन पीढ़ियां एक साथ रहती थीं और मिल-जुलकर अपने खेत में काम करती थीं या पारिवारिक दुकान और कारबार चलाती थीं अब नहीं रहे। अब तो परिवार छोटा होता है पति-पत्नी और छोटे लड़के-लड़कियां। पुराना परिवार केवल भरण-पोषण ही नहीं शिक्षा संस्कृति धार्मिक आचार और विचार व नाते रिश्तेदारों से सम्बन्ध बनाए रखने का साधन होता था अब परिवार उसी हद तक यह काम नहीं करता।

पर इसका यह अर्थ नहीं कि परिवार का अब कोई उपयोग ही न रहा। अब परिवार केवल पति की कमाई पर ही नहीं पत्नी की कमाई पर भी चलता है और खर्च में पत्नी और लड़कियों की पसंद ही मुख्य रहती है। घर का रूप अभी भी क़ायम है यद्यपि स्थान या घर बदलने की प्रवृत्ति बढ़ गई है। अब यह शिक्षा और धर्म का साधन उतना नहीं रहता जितना संस्कृति का। अब इसकी बुनियाद पितृभक्ति या पतिभक्ति पर ही नहीं परिवार के सब सदस्यों की स्वतंत्रता पर है। अब परिवार का मुख्य उद्देश्य सामाजिक कर्तव्य का पालन नहीं सबके हित का ख़याल रखना और हिल-मिल कर रहना है। परिवार का जीवन आज्ञा पालन के लिए नहीं आनन्द प्राप्ति के लिए है।

और यह कोई भेद की बात नहीं है। परिवार का सबसे पुराना काम संतान की उत्पत्ति और लालन-पालन तो अब भी उसका मुख्य काम है। पति और पत्नी पिता और पुत्र भाई और बहन का सम्बन्ध अब परम्परा से उतना बंधा नहीं है उसमें स्वतन्त्रता या बराबरी का भाव अधिक है पर इसका यह अर्थ नहीं कि अब वह पहले से कमज़ोर या ख़राब हो गया है। जिस प्रकार अमेरिका ने अपनी वेशभूषा आचार विचार व्यापार-उद्योग समाज शासन और क़ानून आदि में समय और स्थिति के अनुसार परिवर्तन किया है उसी प्रकार अपने परिवार के ढांचे में भी परम्परा और ज़िम्मेदारी का ख़्याल रखते हुए परिवर्तन किया है।

अमेरिका का परिवार मुस्लिम, हिन्दू या चीनी परिवार से बहुत भिन्न है।

मुस्लिम परिवार में स्त्रियों का दर्जा नीचा होता है और पुरुष कई ब्याह कर सकता है। हिन्दू सम्मिलित परिवार का संचालन दादी या बड़ी-बूढ़ी औरतें करती हैं चीनी परिवार में पिता की आज्ञा-पालन पर बड़ा जोर दिया जाता है और घर का सबसे बूढ़ा व्यक्ति मुखिया होता है। रूस में परिवार का बहुत सा काम सरकार ने अपने ऊपर उठा लिया है। अमेरिका का परिवार एक तो बहुत छोटा हो गया है इसमें चाचा ताऊ, दादा दादी बुआ चाची भतीजे भांजों को स्थान नहीं रहा। इसका कार्य-क्षेत्र भी बहुत संकुचित हो गया है। उद्योग और धंधा सब कारखानों और दफ्तरों में होता है पढ़ाई स्कूल में धर्म गिरजा घर में रोगी की देखभाल अस्पताल में और झगड़ों का निपटारा अदालत में होता है यहां तक कि बच्चों के पथ प्रदर्शन का काम भी मनोवैज्ञानिक का छीन लिया गया है। परिवार अब विवाहित जोड़ों और बच्चों के रहने की जगह रह गया है।

अमेरिकन परिवार को पांच प्रकारों या वर्गों में रखा जा सकता है। इनमें चार बहुत कुछ पुराने ढंग के हैं। एक मध्य पश्चिम या न्यू इंग्लैण्ड का देहाती परिवार है यह काफी बड़ा होता है और इसमें लड़के ही खेती और घर का काम सम्भालते हैं और बड़े होकर तथा शादी-ब्याह करके परिवार में ही रहते हैं अलग नहीं होते। दूसरे किस्म में अधिकांश दक्षिण के बड़े जमींदार घराने या न्यू इंग्लैण्ड के पुराने शहरों के रईस घराने आते हैं। धन सम्पत्ति और प्रतिष्ठा के कारण ये परिवार बंधे रहते हैं और न अपना शहर या प्रदेश भी नहीं छोड़ते इसलिए पारिवारिक बंधन भी इनमें मजबूत रहता है। तीसरे पूर्वी यूरोप के स्लाव दक्षिण यूरोप के इटालियन तथा आयरिश और यहूदी परिवार हैं जिन्हें अमेरिका आये दो-तीन पीढ़ियां बीत चुकी हैं। ये अपनी पुरानी स्वदेशीय परम्परा को काफी हद तक बनाए रखते हैं फिर भी इनकी नई और पुरानी पीढ़ियों में काफी अन्तर देखने में आता है। चौथे नीग्रो परिवार हैं इनमें दक्षिण के खेतों में मजदूरी करने वाले नीग्रो भी हैं जिनकी एक अलग जाति हो गई है और उत्तर के नीग्रो भी हैं जो कल-कारखानों में काम करते हैं और जहां अच्छा काम या पैसा मिल जाने को तैयार रहते हैं ये परिवार का बंधन बहुत नहीं मानते। मर्द अक्सर काम पर बाहर रहता है। स्त्री भी अक्सर किसी कारखाने में या घर में नौकरी करती है और बाहर रहती है और बच्चों की देख रेख बड़े दादा-दादी करते हैं।

पांचवां किस्म शहरों में रहनेवाले मध्यवर्गीय परिवार की है यही सबसे प्रधान और बड़ी श्रेणी है इसमें पिता के बजाय माता की प्रधानता रहती है। शिल्प और टेक्नोलॉजी के विकास के कारण अमेरिका मिलों और मशीनों के देश के शहरों और कारखानों का देश बन गया है अब ही काम की तलाश में

लाखों अमेरिकन नर-नारी देश के एक भाग से दूसरे भाग में जाकर बसे और बसते रहते हैं। इन्हीं परिवर्तनों से अमेरिका के मध्यवर्गीय परिवार का जन्म हुआ। ऊँचे और मध्यम वर्ग की स्त्रियाँ घरेलू काम मशीनों की सहायता से करती हैं इसलिए उन्हें उतनी ही फुर्सत और सुविधा रहती है जितनी पुराने जमाने में उन अमीर घरों की स्त्रियों को रहती थी जिनके यहाँ काम करने के लिए गुलामों की फौज रहती थी। इन सब कारणों से स्त्रियों में स्वतन्त्रता और आत्मनिर्भरता का भाव अधिक आ गया है। प्रेम और विवाह की स्वतंत्रता हो गई है। पति और पिता की भक्ति का महत्त्व घट गया है और स्त्री तथा संतान की स्वतन्त्रता बढ़ गई है। अब हमें अमेरिकन समाज के ढाँचे की परीक्षा करनी है। देखना है कि इसमें कितनी स्थिरता है पारिवारिक वातावरण और सम्बन्ध कैसे हैं परिवार का समाज से क्या सम्बन्ध है?

सबसे पहली बात जो कोई बाहरी देखता है वह यह कि अमेरिकन परिवार में पिता की बहुत नहीं चलती। अपने दफ्तर या धंधे में वह इतना व्यस्त रहता है कि परिवार की देख रेख में अधिक ध्यान नहीं दे पाता। यद्यपि उसे परिवार का मुखिया तो समझा जाता है पर व्यवहार में स्त्री ही के हाथ में सारे अधिकार रहते हैं। और बच्चों पर यह अधिकार चलता भी बहुत कम है। बच्चे नहीं मानते कि माँ-बाप की आज्ञा-पालन हमारा धर्म या कर्तव्य है। माता-पिता से जवाब-सवाल करते हैं और समझते हैं कि खाने-पीने और व्यवहार में जो वे परिवार की बात मानते हैं उसके बदले में उनकी भी बात मानी जानी चाहिए।

पर ऐसा न समझना चाहिए कि सभी अमेरिकन बच्चे उच्छृंखल या बिगड़े हुए होते हैं। अच्छे परिवारों में माता-पिता और बच्चों में स्नेह और सहयोग रहता है। माँ-बाप जो पैसा बचाते हैं उसके लिए बच्चे झगड़ते नहीं वह पूरे परिवार के सैर-सपाटे पर खर्च होता है। वास्तव में परिवार की स्थिरता और माता-पिता का अधिकार केवल डंडे के जोर पर कायम नहीं रह सकता। इसलिए अमेरिकन माता पिता अपनी संतान का मन रखने का प्रयत्न करते हैं। अक्सर ऐसा होता है कि माता या पिता एक बच्चे पर अधिक प्रेम दिखाते हैं, इससे दूसरे बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। अमरिका में एक-दूसरे की देखा देखी चलने की भी बहुत प्रवृत्ति है। माता-पिता और संतान भी बराबर पड़ोसी या परिचित परिवारों का उदाहरण दिया करते हैं और जैसा वे करते हैं वैसा स्वयं करना चाहते हैं। सब मिलाकर हम कह सकते हैं कि अमेरिकन परिवार में सभी सदस्यों को काफ़ी स्वतंत्रता रहती है।

इससे बुराइयाँ भी पैदा हो जाती हैं। बहुत-से परिवार टूट जाते हैं। माता-पिता अक्सर नहीं जानते कि उन्हें बच्चों से कैसा आचरण करना चाहिए,

उनको ऐसी आदतें डालनी चाहिएँ। उनका आचरण भी अक्सर अच्छा नहीं रहता। वे संतान के प्रति अपना कर्तव्य नहीं निभा पाते। चूँकि अमेरिकन परिवार बिरादरी के बंधन में नहीं बंधे रहते प्रत्येक परिवार दूसरों से स्वतंत्र होता है इसलिए एक परिवार यदि बिगड़ता है तो दूसरे उसे रस्ता नहीं दिखा पाते। हरेक परिवार अपने ही रास्ते चलता है।

सच है कि अमेरिकन परिवारों की इसी स्वतंत्रता और पृथक्ता के कारण वहाँ कोई राजनीतिक तानाशाही या अधिनायक राज्य नहीं कायम हो सकता। इसका एक कारण यह हो सकता है कि जो संतान अपने पिता की तानाशाही और मनमानी का विरोध करती है वह बड़े होने पर राजनीतिक तानाशाही को भी सहन नहीं करती है। परन्तु अमेरिका में जो राजनीतिक स्वतंत्रता और लोकतंत्र का वातावरण है, उसी के कारण पारिवारिक लोकतंत्र भी है जिसके कारण माता-पिता संतान की इच्छा से चलने की कोशिश करते हैं उन पर रोब नहीं गाँठते। चूँकि परिवार ही समाज की और राष्ट्र की सबसे छोटी इकाई है इसलिए पारिवारिक लोकतंत्र में पले लड़के-लड़की राजनीतिक अधिनायकता को भी बर्दाश्त नहीं करेंगे न आँख मूँदकर किसी नेता के पीछे चलेंगे यद्यपि इधर अमेरिका में गतानुगतिकता की प्रवृत्ति दिखाई पड़ी है।

अब वे दिन गए जिसका वर्णन क्लेरेंस डे के उपन्यास 'लाइफ विद फादर' में मिलता है जिसमें पिता परिवार का शासक था। अब तो अमेरिकन कार्टूनों में यह दिखाया जाता है कि माँ और बच्चे पिता पर शासन करते हैं। वस्तुतः कुछ मन की मौज और कुछ समाज में स्वतंत्रता की प्रवृत्ति दोनों कारणों से अमेरिकन पिता ने अपने अधिकारों में कटौती स्वीकार कर ली है और अब तो यूरोप और दक्षिण अमेरिका भी अमेरिकन पारिवारिक स्वतंत्रता को पसंद करने लगे हैं और उसी ढंग पर चल रहे हैं।

अमेरिकन दम्पति अपने बच्चों के लालन-पालन के साथ स्वयं भी आनन्द मनाया करते हैं। वे मनोविनोद और परिवार आयोजन में विश्वास करते हैं। अमेरिका में विवाह के समय स्त्री की उम्र साधारणतः 20 वर्ष होती है और 30 वर्ष की उम्र तक वह अपनी इच्छानुसार बच्चे पैदा कर लेती है, और इसके बाद सन्तान उत्पन्न करना बन्द कर देती है। पाँच-छः साल के हो जाने पर बच्चों को उनकी देख रेख की ज़रूरत नहीं पड़ती और माता-पिता को अपना आनन्द लेने का भी काफी मौका मिल जाता है पर तब तक अमेरिकन माता अपना सारा प्यार अपने दुधमुँहे बच्चे और बच्चों के लालन-पालन पर देती है। परिवार की व्यवस्था का भार माता के सिर पर ही पड़ता है, पिता केवल कमाई में लगा रहता है।

अमेरिकन बच्चों के मनोविज्ञान और पालन-पोषण सम्बन्धी किताबें और पत्र

पत्रिकाएँ पढ़ती है और यही बच्चे को पालती-पोसती और आचार-व्यवहार सिखाती है। अमेरिकन बच्चा घर में माता और पाठशाला में मुक्मानी[1] के प्रभाव से बड़ा होता है। कभी-कभी इसका प्रभाव बड़ा बुरा भी होता है। बचपन में स्त्रैणता आ जाती है। माँ पर अत्यधिक निर्भरता के कारण कर्म क्षेत्र में जाकर वह घबरा जाता है वह पुरुषोचित व्यवहार करना नहीं जानता। अक्सर बड़ा होकर वह इस जनाने शासन से विद्रोह भी करता है। दूसरी ओर लड़की पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है या तो वह ऐसा मर्द ढूँढ़ती है जो उसके बाप की तरह स्त्रैण न हो और उस पर शासन करे, या वह ऐसा मर्द चाहती है, जो उसकी आज्ञा पर चले।

अमेरिका में एक जगह से दूसरी जगह जाने और अपना काम और रहने की जगह बदलने का क्रम इतना अधिक लगा रहता है कि हर अमेरिकन एक घर का सपना देखता है जिसे वह अपना कह सके जहाँ वह स्थिर होकर रह सके गृहस्थी जमा सके बाल-बच्चों के साथ सुख से जीवन बिता सके। अमेरिकन नवयुवक और नवयुवती बड़े चाव से पत्र-पत्रिकाओं में घरों के नक्शे और चित्र देखते हैं और अपने लिए वैसे एक घर की कल्पना करते हैं। इसी कारण दूसरे महायुद्ध के बाद अमेरिका में मकान बनाने के उद्योग में बड़ी तेजी आई। अच्छे मकान को अमरिकन लोग बहुत महत्त्व देते हैं। अमेरिका में बच्चों में अपराध की बढ़ती हुई प्रवृत्ति का मूल कारण ही मकानों की अच्छी व्यवस्था का न होना बताया जाता है। अमेरिका में यह विश्वास किया जाता है कि अच्छा मोहल्ला होगा तो अच्छे चरित्र भी होंगे। और खराब मोहल्लों म चरित्र खराब होगा।

लेखक यह नहीं मानता कि अमेरिका में कुटुम्ब या परिवार का जीवन टूट रहा है। यह ठीक है कि यहाँ पिता-पुत्र में उतना घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं है जितना चीनी या हिन्दुस्तानी पिता-पुत्र म है। यह भी ठीक है कि यहाँ का परिवार पुरानी परम्परा या रूढ़ियों की उतनी रक्षा नहीं करता जितनी और देशों में होती है। इसका कारण यह है कि अमरिका रूढ़ियों से बंधकर नहीं रहना चाहता। पिता-पुत्र का सम्बन्ध भी सामाजिक परिस्थितियों और देश-काल के अनुसार बदलता रहता है।

अमेरिका म तलाक अधिक होते हैं। पर इससे यह न समझना चाहिए कि यहाँ के लोग विवाह के बंधन के महत्त्व को नहीं समझते। वे विवाह सम्बन्ध का आधार प्रेम और पति-पत्नी दोनों के हित को मानते हैं। तलाक के बाद भी वे पुनर्विवाह करते हैं इसी से जाहिर है कि वे विवाह के महत्त्व को समझते

---

1 Female school-teacher

है। रहा तलाक का बच्चों पर प्रभाव सो अधिकांश बच्चे अपने को नई परिस्थिति के अनुसार बना लेते हैं और पुनर्विवाह के बाद नये परिवार के अंग बन जाते हैं। वास्तव में माता-पिता के अलग या तलाक होने का बच्चों पर इतना बुरा असर नहीं पड़ता जितना उनमें कलह, विरोध और फूट का।

कुछ लोगों का ख्याल है कि गरीब या निचले वर्ग के लोगों का पारिवारिक या दाम्पत्य जीवन ज्यादा सुखी और अच्छा होता है पर वास्तविकता इसके विपरीत है। आंकड़ों से पता चलता है कि निचले वर्ग में तलाक अधिक होते हैं। कुछ हद तक यह बात ठीक है कि निचले वर्ग के स्त्री-पुरुष का शारीरिक या यौन-सम्बन्ध ऊंचे वर्ग के मुकाबले से ज्यादा अच्छा होता है पर गरीबी के कारण भी स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध खराब हो जाते हैं और गृहस्थी टूट जाती है। कुछ हद तक यह बात ठीक है कि तलाक उच्च वर्ग की बीमारी है और वहीं से निचले वर्ग में आई और अब इसमें तलाक अधिक होने लगे हैं। किन्तु यह न समझना चाहिए कि विवाह-विच्छेद निचले वर्ग में अब बढ़ गया है। पहले भी यह बहुत होता था। पहले इस वर्ग के स्त्री-पुरुष एक दूसरे को छोड़ दिया करते थे, कानूनी तलाक नहीं लेते थे, अब लेने लगे हैं।

अमेरिका का औसत परिवार मध्यम श्रेणी का है और यह बात गलत है कि मध्यम श्रेणी के परिवार में विवाह विच्छेद और अस्थिरता अधिक है। कुछ बातों में मध्यम श्रेणी का परिवार अगुआ होता है जैसे 'संतति-निरोध' में। कम बच्चे होने से स्त्री का स्वास्थ्य अच्छा रहता है और बच्चे की देखभाल भी अच्छी होती है इसलिए संतति-निरोध का चलन बढ़ा इतना बढ़ा कि कुछ लोगों को जनसंख्या घटने की चिन्ता होने लगी। पर इधर शिक्षित नवविवाहित दम्पति यह अनुभव करने लगे हैं कि बच्चों से ही घर में आनन्द-मंगल रहता है इसलिए जनसंख्या बढ़ी है। अमेरिकन परिवार की अस्थिरता की बहुत चर्चा होती है पर अब साधारणतः अमेरिकन गृहस्थ अनुभव करने लगे हैं कि परिवार का आधार महज स्त्री-पुरुष के लगाव में नहीं बल्कि बाल-बच्चों में, अपनत्व से भरे हुए घर में, बंधु-बान्धवों और समाज के बीच रहने में है।

3. माता पिता और बच्चे

अमेरिका में बच्चों का स्वास्थ्य और दीर्घ जीविता अन्य यूरोपीय देशों से अधिक होती है। केवल एक दशक के भीतर बच्चों की मृत्यु-संख्या में काफी कमी हुई। सन् 1930 में बच्चों की मृत्यु-संख्या का औसत 1,000 पर 64.6 था जब कि 1940 में घटकर 1,000 पर [illegible] हो गया। बच्चों के लालन पालन के तरीकों और उनके व्यवहार और कामों के अध्ययन पर भी इधर

बहुत ध्यान दिया जा रहा है। सैकड़ों मनोवैज्ञानिक और समाज-सेवक छिप कर बच्चों के व्यवहार को देखते हैं और टेप तथा मूवी कैमरा पर उनके खेल कूद, लड़ाई-दंगा और आचार-व्यवहार की फोटो उतारते हैं और रिकार्ड लेते हैं और फिर संग्रहीत जानकारी का विश्लेषण और अध्ययन करके बच्चों के स्वभाव को समझने की कोशिश करते हैं।

पिछड़े देशों में गरीबी और अत्यधिक सन्तान उत्पत्ति के कारण बच्चों का पालन-पोषण तथा शिक्षा-दीक्षा ठीक तौर पर नहीं हो पाती। पौष्टिक भोजन की उपलब्धि तो असंभव है ही पर अमेरिका में यह बात नहीं है। कैथोलिक सम्प्रदाय को छोड़कर और सब लोग गर्भ-निरोध के द्वारा बच्चों की संख्या कम रखते हैं। फिर भी बहुत-से बच्चे अभी भी गन्दगी और गरीबी में रहते हैं और खाने-पीने खेलने और पढ़ने की उचित सुविधा नहीं पाते तथा आवारागर्दी नशाखोरी और अपराध की आदतें सीखते हैं। अनेक शहरों में स्कूलों और बाल स्वास्थ्य केन्द्रों की कमी है। अभी भी 10 वर्ष से कम उम्र के करीब *0-30 लाख लड़कों को रोजी कमाने के लिए मजदूरी करनी पड़ती है जिससे उनकी पढ़ाई में बाधा होती है। फिर भी सब मिलाकर अमेरिका के अधिकांश बच्चे सुख से रहते हैं। सुख से ही नहीं रहते बल्कि अधिक लाड़ से बिगड़ भी जाते हैं। अमेरिका की समस्या बच्चों के शारीरिक और भौतिक सुख या विकास की नहीं बल्कि उनके मानसिक और चारित्रिक विकास की है।

अमेरिका में बच्चों के पालन-पोषण को बड़ा महत्व दिया जाता है। बच्चे पैदा करने के पहले माँ-बाप खूब सोच-विचार कर लेते हैं कि हम बच्चे पर कितना खर्च कर पाएँगे उसको अच्छी शिक्षा दे सकेंगे अच्छी सोसाइटी में रख सकेंगे या नहीं? बच्चों को जनाया भी उसी तरह जाता है जैसे कारखाने में माल तैयार होता है। अच्छे अस्पताल में सब प्रकार की छूत बचाने का पूरा ध्यान रखते हुए डाक्टर या नर्स बच्चे को जनाते हैं। कुछ मास तक तो बच्चे को ऐसा बचाकर रखा जाता है जैसे किसी रेफ्रिजरेटर में कोई चीज रखी जाए। कभी-कभी तो इसका नतीजा यह होता है कि बच्चे माँ-बाप या परिवार के स्वाभाविक प्यार और चुम्माचाटी से वंचित रह जाते हैं और परिणामस्वरूप अपने माँ-बाप से लगाव नहीं रखते।

खासकर मध्य वर्ग के माता-पिता तो बिलकुल किताबी ढंग से अपने बच्चों को पालते हैं। उसे सहज स्नेह देने के बजाय वे उसे मनोवैज्ञानिक प्रयोग का विषय बना लेते हैं। वे यह देखते रहते हैं कि किताबों में जिस उम्र में बच्चे में जितना विकास बताया गया है उतना उनके बच्चे में हो रहा है या नहीं। बच्चों की आदतों के बारे में किताबों में जो लिखा रहता है उसी से वे अपने बच्चों का मिलान किया करते हैं। जैसे बच्चा अँगूठा चूसता है या बिस्तर में

पेशाब करे या तुतलाय तो उसे क्या समझना चाहिए। वे यही सोचा करते हैं कि हमारा बच्चा मन्द है या अत्यन्त गम्भीर है या ढीठ, घमण्डी है गन्दा है या मनमौजी है। अमरीकन दम्पति इसी बहस में पड़े रहते हैं कि एक बच्चा होना अच्छा या कई होना। अकेले होने से बच्चे के मन पर बुरा असर होता है या कई भाई-बहन होने से उसमें ईर्ष्या-द्वेष आ जाता है। बच्चे पर कड़ाई रखना अच्छा या स्वतन्त्रता देना?

बच्चों के पालन-पोषण पर अमेरिका में जितना ध्यान दिया जाता है और जितनी चर्चा होती है उतनी शायद ही कहीं और होती हो। और यह स्वाभाविक भी है क्योंकि खाना पकाने, बर्तन और कपड़ा आदि धोने तथा अन्य घरेलू काम करने की मशीनों के आविष्कार से अब स्त्रियों को ज्यादा फुर्सत मिलती है और बच्चों के लालन-पालन पर वे ज्यादा ध्यान दे सकती हैं। और जब सामाजिक व राजनीतिक सुधारों की धूम मची तो बालकों के पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा पर भी इसका असर पड़ना ही था। यूरोप में फ्रायड ने मनोविज्ञान के क्षेत्र में जो नए सिद्धान्त स्थापित किए उनमें यह बताया गया कि पाँच वर्ष की उम्र तक बचपन के जो संस्कार बनते हैं उसी से उसके जीवन का ढाँचा बन जाता है। यही नहीं कुछ लोग तो यहाँ तक कहते हैं कि जन्म से छः महीने की ही अवधि निर्णायक होती है बल्कि जन्म के पहले ही माँ के पेट में ही बच्चों पर भविष्य की छाप पड़ जाती है। स्वभावतः इससे माता-पिताओं को यह चिन्ता होनी स्वाभाविक थी कि जन्म से ही बच्चे में उचित संस्कार डाले जाएँ। अमेरिका के मनोविज्ञान विशारद जान बी० वाटसन के सिद्धान्त ने इस प्रवृत्ति को और भी बढ़ावा दिया। उनका कहना था कि डर, गुस्सा और प्रेम की प्रवृत्तियाँ तो जन्म-जात होती हैं इनके अलावा बच्चे का मन कोरा कागज है जिस पर जो चाहे संस्कार डाला जा सकता है। बस अमेरिका में बच्चों के साहित्य की बाढ़ आ गई। बच्चों को किस प्रकार पालना-पोसना चाहिए इस विषय का नया शास्त्र-विज्ञान निकला और कुछ विशेषज्ञ बन गए, मानो होड़ लगने लगी और माता-पिता आँख मूँदकर विशेषज्ञों और किताबों की सलाह पर चलने लगे।

कुछ दिनों के बाद इसकी भी प्रतिक्रिया हुई और लोग किताबी सिद्धान्तों के बजाय मातृ-स्नेह और स्वाभाविक प्रवृत्ति पर अधिक भरोसा करने लगे। फिर भी अमेरिका के खासकर मध्यम वर्ग के लोगों में बच्चों की शिक्षा करने उनको समझने उनका ठीक तौर से पालने की काफी चर्चा पाई जाती है।

पर नीची श्रेणियों के मजदूरों और किसानों में बच्चों पर इतना ध्यान नहीं दिया जाता क्योंकि उनको इतनी फुर्सत नहीं मिलती कि वे किताबें पढ़ें और विचार करें। माँ और सन्तान का सम्बन्ध अधिक स्वाभाविक और कम

समाज का होता है। जिन बातों में मध्यम श्रेणी के लोग बच्चों पर रोक लगाते हैं उनमें नीची श्रेणी के लोग ज्यादा छूट देते हैं जैसे—यौन सम्बन्ध सफाई कपड़ा-लत्ता तथा व्यवहार व आचरण। दूसरी ओर कुछ बातों में नीची श्रेणी के माता-पिता अधिक कड़ाई से काम लेते हैं। उनके बच्चों को माँ-बाप से जबान लड़ाने या उनकी बात काटने की छूट नहीं मिलती। नीची श्रेणी के बच्चों की समस्या आवारागर्दी और अपराध-वृत्ति की है, जिसका कारण गरीबी कुसंगति खेल-कूद और उचित शिक्षा का अभाव पिता की शराबखोरी उपेक्षा आदि हैं। हब्शी और पोर्टोरिको जाति के बच्चों की हालत तो और भी बुरी होती है क्योंकि उन्हें अपमान और भेद भाव का सामना करना पड़ता है। ऊँची या मध्यम श्रेणी के बच्चे भी बिगड़ते हैं पर दूसरे कारणों से जैसे अधिक लाड़-प्यार और रोक टोक के कारण। नीची श्रेणी के माता-पिता अपने बच्चों को बोझ समझते हैं और अक्सर उनको उन्हीं के भरोसे छोड़कर सिनेमा या टेलीविजन देखने चले जाते हैं। गरीबों के बच्चों को काम करना और कमाना पड़ता है और अपने छोटे भाई-बहनों की देख रेख भी। जबकि सम्पन्न घरों के लड़कों को खुदगर्जी की आदत पड़ जाती है और वे यह आशा करते हैं कि हमारे माँ-बाप हमारी सारी फ़र्माइशें पूरी करें।

बच्चों पर ज़रूरत से ज्यादा ध्यान देने का एक कारण यह भी है कि अमेरिका के बहुत-से मध्यम श्रेणी के परिवार नीची श्रेणी से उठे हैं या देहात से शहर में आए हैं। एक ओर वे स्वयं पुरानी परम्परा से कट जाते हैं, दूसरी ओर वे खुद भी यह चाहते हैं कि उनका बच्चा ऐसे ढंग से पले कि ऊँचे समाज में प्रवेश कर सके। और देशों में बच्चा अपने समाज बिरादरी कुल और पेशे की परम्परा में पलता है जब कि अमेरिका में पुरानी परम्परा नहीं है और माता-पिता का ध्यान इसी पर रहता है कि हमारा बच्चा ऐसे ढंग से पले कि समाज में सफल हो नाम और प्रभाव प्राप्त करे। बच्चों में सही आदर्श डालने को वे ऐसे व्यस्त रहते हैं कि उनका काम पुरानी दुनिया की 'परी की कहानियों' और 'पुराणों की कथाओं' से नहीं चलता। उन्होंने अपने बच्चों के लिए जो साहित्य रचा है, उसमें बच्चे या तो बड़ी चतुराई दिखाते हैं या बेवकूफी। जीवन का जो पाठ पुरानी सभ्यता की कथा-कहानियों में मिलता है और जिसको अमेरिकन माता पिता गपोड़ा और मूर्खता भरा समझकर तिरस्कृत करते हैं वह इन नई कहानियों में नहीं मिलता और फलतः अमेरिकन बच्चा मार-धाड़ और अपराध के 'कामिकों' की ओर झुकता है। अपना अमेरिकन बच्चे के आदर्श पुरुष-स्त्री पुराणों के महापुरुष न होकर बेसबाल के खिलाड़ी और मुक्केबाज या टेलीविजन के अभिनेता और कलाकार होते हैं।

अमेरिका के साधारण युवक या युवती को स्नेह और मान की बड़ी भूख

होती है। सफलता की दौड़ में और कैरियर या जिन्दगी बनाने में वह हृदय की भूख नहीं पूरी कर पाता। प्रेमी या प्रेमिका से जो कुछ पाने का स्वप्न वह देखता है वह वास्तविक दाम्पत्य जीवन में नहीं पूरा होता इसलिए अपने दिल का सारा प्यार वह बच्चे पर उड़ेल देना चाहता है। बच्चे की चाह अमेरिका में इतनी जबर्दस्त है कि अनाथालय के बच्चों को गोद लेने के लिए लोग लम्बी रकमें देते हैं। माता-पिता के प्रेम का आधिक्य भी बच्चे के लिए बहुत स्वस्थ नहीं होता। चूंकि अमेरिकन परिवार अधिकतर अपने में ही केन्द्रित और दूसरों से अलग रहते हैं बच्चे का प्यार नाते-रिश्तेदारों में बँटने के बजाय माता-पिता पर और अक्सर माता-पिता दोनों के बजाय एक ही पर, माता पर या पिता पर ही केन्द्रित हो जाता है। या तो बच्चा माता-पिता के प्यार या व्यक्तित्व से दब जाता है या माँ-बाप बच्चे के इशारों पर नाचते और अत्यधिक लाड़ करके उसे बिगाड़ देते हैं। दोनों दशाओं में बच्चे का स्वस्थ मानसिक विकास नहीं हो पाता।

कभी-कभी तो माँ-बाप बच्चों को देवता के आसन पर बिठा देते हैं और अपने को बिलकुल हेठा कर देते हैं। खासकर दूसरे देशों से आकर अमेरिका में नए बसे आम या नीची मजदूर या बनिया पेशों से उठे लोग तो अपने बच्चों को अपने मन की पुरानी नीची परम्परा से बचाये रहते हैं और उनको ऊँचे समाज की रहन सिखाने का अत्यधिक ध्यान रहते हैं। फल यह होता है कि बच्चे अपने माँ-बाप और कुल को नीचा समझने लगते हैं और उनसे नाता स्वीकार करने में भी लजाते हैं। वे टेलीविजन सिनेमा और खेल के हीरो से अपने माँ-बाप की तुलना करते हैं और उनको नीचा पाते हैं। माँ-बाप बच्चों की जितनी ही अधिक खातिर करते हैं उतनी ही कम बच्चे उनकी करते हैं। अक्सर अमेरिकन माँ-बाप अपने बच्चों से मान पाने के लिए व्यग्र रहते हैं। अमेरिकन स्त्री और पुरुष अपनी जवानी और सुन्दरता की रक्षा के लिए बहुत व्यग्र रहते हैं कारण पिता समझता है कि उसकी पुत्री और माता समझती है कि उसका पुत्र इसी से उसका अनुरक्त रहेगा।

परन्तु इससे अमेरिका के माता पिता के बारे में बुरी धारणा न बनानी चाहिए। यह भी याद रखना चाहिए कि पुराने ढंग के समाज में बच्चों को कुछ भी अधिकार न थे और माता-पिता उन्हें बहुत दबाकर रखते थे। इसकी प्रतिक्रियास्वरूप अमेरिका के माता पिता बच्चों को बहुत अधिक छूट दे देते हैं। पर इससे लाभ भी हुआ है। बच्चे पर डर से जोर से शासन करने के बजाय उसका स्नेह प्राप्त करना अच्छा है। इससे बच्चों के उचित लालन-पालन का महत्व भी अनुभव किया गया है।

धीरे-धीरे अमेरिकन माता-पिता भी अधिक संतुलित हुए। सन् 1950 तक

'बच्चावाद का पागलपन'¹ कम हो गया था और अमेरिकन दम्पति बेंजामिन स्पोक की इस सलाह पर चलने लगे कि अपने बच्चों से स्वाभाविक व्यवहार करना चाहिए। अमेरिकन लोग अब समझने लगे हैं कि बच्चों को ठीक संस्कार देने के लिए माता-पिता को अपने आचरण और व्यवहार से उनके आगे उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। यदि पिता अपने को हीन समझेगा तो बालक में आत्म सम्मान कैसे उत्पन्न हो सकता है। बच्चे का स्वाभाविक स्वस्थ विकास तभी होगा, जब न तो माता पिता उसे हद से ज्यादा दबाएँ और न हद से ज्यादा छूट दें। यदि माता-पिता हमेशा संतान के बारे में चिन्तित रहें एक ओर खूब प्यार दिखाएँ और दूसरी ओर बच्चे के अपने मन के अनुसार न चलने और अपनी आशा के अनुसार न निकलने पर विरक्ति दिखाएँ तो बच्चे पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसी तरह यदि माँ-बाप बच्चे के सुख और उन्नति के लिए खूब कष्ट उठाएँ, उसे अच्छे स्कूल और समाज में भेजने के लिए खुद दरिद्रता से रहें तो भी बच्चे का चरित्र ठीक से नहीं बनता। अस्तु अच्छा यही है कि बच्चे को कुटुम्ब के जीवन में अपना उचित स्थान पाने का मौका दिया जाए, अपनी उपयोगिता जिम्मेदारी और महत्व समझने दिया जाए। अपने भाई-बहनों और इष्ट मित्रों के बच्चों के सम्पर्क में आने और अपनी योग्यता का ठीक अन्दाज़ लगाने और सामाजिक सम्बन्धों को सीखने का मौका दिया जाए। अपने माता पिता के अलावा अन्य वयस्क लोगों से मिलने-जुलने का मौका दिया जाए और इस प्रकार स्वाभाविक ढंग से बढ़ने और समाज में स्थान ग्रहण करने योग्य बनने दिया जाए।

### 4 जब बच्चे बड़े होने लगते हैं

ब्रिटेन में स्कूल जाने की उम्र होने पर लड़के को एकदम घर से उठाकर स्कूल भेज दिया जाता है जहाँ वह छात्रावास में रहता है और अपने साथियों से भली-बुरी आदतें सीखता है। अमेरिका के लोग अपने बच्चे का एकदम से घर नहीं छुड़ाते। वे उसे छुट्टी में बच्चों के शिविर में भेज देते हैं और जब उसे घर से अलग रहने का कुछ अभ्यास हो जाता है तब उसे छात्रावास में भेजते हैं। छात्रावासों में अधिकतर अच्छे घरों के ही लड़के रहते हैं। अन्त में सेना में जाकर अमेरिकन किशोर अपने पैरों पर खड़ा होना सीखता है। पर बहुत-से ऐसे लोग भी हैं जो अपने बच्चे को अलग नहीं करना चाहते दूसरी ओर साधारण या गरीब वर्ग के लोग हैं जिनके बच्चे स्कूली पढ़ाई समाप्त करते ही जीवन के धक्के खाने को छोड़ दिये जाते हैं। कुछ मध्यम वर्ग के लोग भी बालक

की जिम्मेदारी लेने से डरते हैं और इस ख्याल से उन्हें किसी भी सैनिक स्कूल में भेज देते हैं कि वहाँ उसे डिसिप्लिन और स्वावलम्बन की आदत पड़ेगी।

अमेरिका में स्पर्धा की प्रवृत्ति प्रधान है। क्या घर में क्या बाहर लड़का यही सीखता है कि हमें आगे बढ़ना है। अमेरिका की अधिकांश जनसंख्या ऐसे लोगों की है जो धन या उन्नति की आशा में दूसरे देशों से आकर बसे। अतः बच्चों के मन में यह भाव भर जाता है कि हम अपने माता पिता से ऊपर उठना है ऊँचे समाज में बैठना है ऊँचे घर में शादी करनी है रुपया कमाना है अच्छा घर बनाना है। ऐसे स्पर्धात्मक वातावरण में अन्तर्मुखी स्वभाव के प्राणी का स्थान कहाँ? यदि कोई लड़का ऐसा हुआ तो समझा जाता है कि उसका स्वस्थ विकास नहीं हुआ और मानसिक चिकित्सक को दिखाने की जरूरत है।

कोई आदमी कहाँ तक उन्नति कर सकता है इसकी सीमा अमेरिका में नहीं बाँधी जाती। समझा जाता है कि उन्नति के द्वार सबके लिए खुले हैं कुछ अक्ल हो तो कोई भी ऊँचे से ऊँचा पद पा सकता है राष्ट्रपति हो सकता है। इससे अमेरिकन लड़के-लड़की में सहज ही अदम्य आशावाद आ जाता है। बचपन से ही वह समृद्धि के वातावरण में रहता है। उसे अपने माँ-बाप से सब चीजें मिलती जाती हैं। खिलौने की बन्दूक के बाद बिजली के खिलौने की रेल और उसके बाद सचमुच की मोटरगाड़ी एक के बाद एक चीजें उम्र के मुताबिक अनायास मिलती जाती हैं।

इसका एक नतीजा यह भी होता है कि अमेरिकन बालक को निराशा और विफलता के धक्के सहने का अभ्यास नहीं हो पाता। वे जीवन में विफलता के लिए तैयार नहीं होते।

यूरोप या पुराने देशों में सब तरफ घेरे बने रहते हैं और नवयुवक और नवयुवती ऐसा अनुभव करते हैं कि उन्हें इन घेरों का लाँघना है। पर अमेरिकन किशोर के आगे अपार क्षेत्र खुला है वह जितनी दूर चाहे जा सकता है। उसे बचपन से ही महान् सफलता की कहानियाँ सुनने को मिलती हैं। उसे यदि कोई चिन्ता रहती है तो यही कि इस दौड़ में कहीं मैं पीछे न छूट जाऊँ। निराशा या दुःख का उसके जीवन में कोई स्थान नहीं।

इसी प्रकार अधिकारहीन वर्गों के युवक भी अपने घरों को छोड़कर आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं और यदि उन्हें सफलता नहीं मिलती तो वे अपने ही को दोष देते हैं यह नहीं समझते कि हमारा भाग्य असामान्य था।

अमेरिकन लड़का यह कभी नहीं भूलने पाता कि वह ऐसी दुनिया में रह रहा है जो बाहुबल से आगे दौड़ रही है। रेल मोटर, हवाई जहाज जिनके द्वारा से वह घिरा रहता है इस निरन्तर दौड़ के प्रतीक हैं। जिस हवा में वह

साँस लेता है वह अविराम गति और स्पर्धा से भरी है। जो वह पढ़ता है जो देखता है और जो आदर्श उसके सामने रहते हैं वे सब इसी उन्नति की दौड़ के प्रतीक होते हैं।

उससे आशा की जाती है कि वह असम्भव को सम्भव कर दिखावे इसी प्रकार वह भी अपने माता पिता और समाज से इतनी आशायें करता है जो पूरी नहीं होतीं। उसके माँ-बाप स्वयं जीवन की भाग-दौड़ में इतने व्यस्त रहते हैं कि जिस पर ध्यान देने या उसे समझने की फ़ुर्सत नहीं पाते। स्कूल और पादरी भी उसे वह सहानुभूति नहीं दे पाते अतः वे अवांछित कार्यों की ओर झुकते हैं। टेलीविजन नाच और हत्याबाजी तक तो गनीमत है पर अपराध और हत्या जिसकी खबरें आए दिन मोटे मोटे अक्षरों में छपती हैं वास्तव में बड़ी चिन्ताजनक और भयानक बातें हैं। इसी प्रकार स्कूली लड़कियों के व्यभिचार बढ़ना भी है।

टामस वुल्फे (यू कांट गो होम अगेन) जैसे उपन्यासकारों ने रात को सड़कों पर हुड़दंग करने वाले गिरोहों का बड़ा ही यथार्थवादी और रोमांचकारी चित्रण किया है। वास्तव में अमेरिका का किशोर इन्हीं गिरोहों से जीवन का पाठ पढ़ता है। यह गिरोह विद्रोह और अपराध के बीच की पतली रेखा पर खड़ा रहता है। विद्रोही लड़कों का गिरोह प्रथम मारपीट और कभी-कभी अपराध के रूप में माता पिता अध्यापक और पुलिस के अधिकार को चुनौती देता है। गिरोह के जीवन में ही अमेरिकन किशोर को नेतृत्व आज्ञा-पालन साथियों से वफ़ादारी बहादुरी और कष्ट सहिष्णुता का सबक सीखने को मिलता है। यहीं उसे स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध का ज्ञान होता है। यहाँ वह सीखता है कि अपनी ताक़त और हिम्मत के बल पर अपने साथियों का सम्मान और उनके अगुआ होने का गौरव पाया जा सकता है पैसे या कराने के बल पर नहीं। पर गिरोह उसे मारपीट बलात्कार हत्या और लूट आदि जघन्य अपराध की ओर भी प्रवृत्त करता है। यद्यपि सब लड़के इतनी दूर नहीं जाते।

शहरों में मजदूर श्रेणी के लड़कों के लिए गिरोहबन्दी का जो स्थान है वही स्थान शिक्षित वर्ग के लड़कों के लिए कालेज जीवन का है। कालेज में पढ़ाई को इतना महत्त्व नहीं दिया जाता जितना खेलकूद कालेज के राजनीति और सामाजिक जीवन को। अमेरिकन नवयुवक खेलकूद में चमकने और पापुलर बनने की जी-तोड़ कोशिश करते हैं। यहाँ अमेरिकन किशोर की उमड़ती हुई शक्ति और उत्साह को अभिव्यक्ति का बहुत अच्छा क्षेत्र मिलता है।

अमेरिकन बालक या बालिका ज्यों-ज्यों बढ़ते हैं त्यों-त्यों वे अपनी स्वतन्त्र सत्ता को जताने की कोशिश करते हैं। वे अपने माता-पिता और स्कूल-कालेज के अधिकारियों के शासन से विद्रोह करके अपनी स्वतन्त्रता घोषित करते हैं।

परिवार के घेरे से निकलकर वह अपने को स्वतन्त्र पाने के साथ-साथ अकेला भी पाता है।

जिन परिवारों में माता-पिता अपने सयाने लड़के-लड़कियों से मित्रता और स्नेह बरतते हैं उनके साथ सैर-सपाटे को जाते हैं आनन्द मनाते हैं वहाँ नवयुवक अकेलापन नहीं अनुभव करता। परन्तु ऐसे परिवार भी हैं जहाँ किशोर या किशोरियों को यह सहानुभूतिपूर्ण पारिवारिक जीवन नहीं मिलता। अनेक ऐसे परिवार भी होते हैं जहाँ माता पिता दोनों काम-धन्धा करते हैं। और लड़के-लड़कियों को समय नहीं दे पाते। कुछ ऐसे परिवार भी हैं जहाँ पिता नशे में धुत रहते हैं। गरीबी की मार भी सन्तान-स्नेह की धारा को सुखा देती है। पर अनेक अमीर परिवारों में भी स्नेह का अभाव रहता है। ऐसे स्नेहहीन परिवारों में भी सयाने लड़कों को सबसे अधिक कठिनाइयाँ होती हैं।

बहुत-से युवक गरीब या नीची जातों के घरों से होते हैं पर मध्यम श्रेणी के बीच रहते हैं और उस समाज में प्रवेश पाना चाहते हैं। किन्तु उन्हें इस समाज में आने का मौका नहीं मिलता अतः वे कुण्ठा और असफलता के शिकार होते हैं।

अमेरिका में युवक को उन्नति के अवसर जितने अधिक हैं उतनी ही महत्त्वाकांक्षा भी उनमें है। पर इसी के साथ चिन्ता और व्यग्रता और विफल होने पर व्यक्तित्व का टूटना भी उतना ही अधिक होता है।

अमेरिका में बचपन में सब बच्चे एक साथ खेलते और एक-दूसरे को बराबर समझते हैं पर जैसे वे बड़े होते हैं धीरे-धीरे उन्हें सिखाया जाता है। उन्हें यह बताया जाता है कि गोरे लड़कों को नीग्रो से न मिलना जुलना चाहिए। इसी तरह लड़के में यह बात भी कूट-कूटकर भरी जाती है कि तुम्हें अपनी योग्यता के अधिक-से-अधिक दाम खड़े करने हैं उससे अधिक-से अधिक फायदा उठाना है। बड़े होने पर अक्सर युवक को शहर बड़ा छोटा दिखाई देता है और वे लोग बड़े बेवकूफ लगते हैं जिनके बीच उसका बचपन बीता है। भौतिक सफलता को सबसे अधिक महत्त्व देने के कारण उन सब गुणों को बेकार समझा जाता है जिनसे रुपए कमाने में मदद नहीं मिलती। यदि कोई लड़का कल्पनाशील या भाव-प्रवण है और अकेले में बैठकर मनन-चिन्तन करता है तो उसका मजाक उड़ाया जाता है। लड़कों को यह उपदेश दिया जाता है कि सबसे खूब मिलो-जुलो लोकप्रिय बनो, मगर किन्हीं खास बातों में जिनसे काम निकले वाली मध्य समाज की लोकप्रियता से। बहुधा इसका नतीजा यह होता है कि युवक को उन लोगों से मिलना पड़ता है जिनसे वह मिलना नहीं चाहता और उन लोगों से दूर रहना पड़ता है जिनसे उसका अपना मन मिलता है। इससे

मन में एक प्रकार का सूनापन और अकेलापन आ जाता है। समाज में रहकर भी आदमी अपने मन के मीत के लिए तरसता रहता है।

बचपन से ही लड़के को अपने भविष्य के धन्धे के लिए तैयारी करनी पड़ती है और यदि वह पेशा या धन्धा उसके मन के माफ़िक न हुआ तो अपना मन मारना पड़ता है। ज़रा-सा बड़ा होने पर लड़का घास काटने, सड़क से बर्फ़ हटाने, सुबेरा से जाने बच्चों को सम्हालने के छोटे-मोटे काम करने लगता है और अपना पैसा जोड़कर अपने मन की चीज़ ख़रीदता है। इस प्रकार वह पैसे या पूँजी की क़दर सीख जाता है। वह ऐसे धन्धे और कारीगरी सीखने में लग जाता है, जो आगे उसके काम आएँगी। इन कामों में मिली सफलता से उसके माँ-बाप उसके भविष्य की सफलता का अन्दाज़ लगाते हैं और इसी से वह भी अपनी योग्यता का अन्दाज़ लगाता है।

अमेरिका में लड़का अपने मन का काम-धन्धा करने को स्वतन्त्र है। पर व्यवहार में यह स्वतन्त्रता काफ़ी सीमित है। ग़रीब घरों के लड़कों को बहुत मौक़े नहीं मिलते, उनके काम-धन्धे बन्धे हुए हैं। फलतः इस वर्ग में कुण्ठा और क्षोभ भी काफ़ी है। मध्यम वर्ग के लड़के भी शुरू से अपना ध्यान उस धन्धे या व्यवसाय पर रखते हैं जो पसन्द करता है। कालेज में वह ऐसे ही विषय लेता है, जिनसे धन्धा पाने में मदद मिले न कि ऐसे विषय जिनसे बुद्धि विकसित हो और दृष्टि उदार बने। अमेरिकन लड़का या लड़की शरीर से सयाना पहले हो जाता है पर मन से बच्चा रहता है। यौन सम्बन्ध के मामले में अमेरिकन समाज काफ़ी कड़ाई बरतता है। आजकल हर अमेरिकन किशोर को कुछ साल फ़ौज में काम करना पड़ता है। फ़ौज में यौनाचार के मामले में काफ़ी छूट रहती है और स्त्रियों से सम्बन्ध या मैथुन बुरा नहीं समझा जाता फिर भी फ़ौज के जीवन में स्त्रियों को स्थान नहीं और इसके कारण अमेरिकन तरुण कुछ दिनों तक काम-धन्धा करके ब्याह करने और गृहस्थी बसाने का मौक़ा नहीं पाता।

अमेरिकन किशोर के सामने आदर्श या नमूने का भी बड़ा प्रभाव रहता है। लड़का अपने पिता की नक़ल करता है। पिता अधिकतर दफ़्तर या पेढ़ी में काम करता है। दफ़्तर या पेढ़ी में रोमांचकारी घटनाओं की क्या गुंजाइश। अमेरिका में शुरू में आकर बसने वाले लोगों को जंगली जानवरों और आदिवासियों का मुक़ाबला करना पड़ता था। अमेरिकन किशोर को शिकार और लड़ाई की इन कहानियों में आज भी बहुत मज़ा आता है यद्यपि अब उसके जीवन में इनका कोई स्थान नहीं। शिकार तो वह कर नहीं सकता पर आवारागर्दों का जीवन उसे बहुत आकर्षित करता है। मार्क ट्वैन आदि लेखकों ने ऐसे लड़कों की बहुत कहानियाँ लिखी हैं जो नहाता नहीं बाल बिखेरे और

गन्दे कपड़े पहने घूमता है, स्कूल से भागता है, शरारत करता है और औरतों या लड़कियों का मजाक उड़ाता है। अमेरिकन घरों में स्त्रियों का शासन रहता है और स्कूलों म भी स्त्रियां पढ़ाती हैं, इसलिए उनकी अवज्ञा करना मर्दानगी मानी जाती है। बदमाशों की कहानियां और वैज्ञानिक उपन्यास पढ़ने का भी अमेरिकन लड़कों को बड़ा शौक होता है। शहरी लड़कों को गलियों में मारपीट करने, सिगार पीने, गाली बकने और दोलाचार की बातें सुनने में वही मनमौजीदार मजा मिलता है जो उनके पूर्वजों को जंगलियों से लड़ाई करने में आता था। इन बातों को वह मर्दानगी समझता है।

लड़कपन से निकलकर किशोरवय में आने पर अमेरिकन लड़का वयस्क पुरुष के अनुभव ढूंढता है। वह पार्टियों और नाचों में जाता है। उसकी इच्छा होती है कि उसकी अपनी मोटर हो और वह लड़कियों से मिले-जुले। इसके लिए वह काम-धन्धा करके पैसा जोड़ता है। लड़कियों के मिलने-जुलने में यौन-भावना उतनी प्रधान नहीं जितनी यह उत्सुकता कि वयस्क पुरुष का जीवन कैसा होता है। वयस्क पुरुषों की तरह आचरण करने में अमेरिकन किशोर मोटर और हवाई जहाज दौड़ाता है, फिल्म और टेलीविजन का सितारा बनने की कोशिश करता है और तरह-तरह के कामों में हाथ अजमाता है और दर-दर की खाक छानता है। अमेरिकन युवक लेखकों की शुरू की रचनाओं में अधिकतर इसी उम्र के युवक के अनुभवों की कहानी रहती है और किताब की जिल्द पर बड़े गर्व से इसका उल्लेख किया जाता है कि लेखक ने गुरू से अनुभव किये हैं।

मेरे कहने का यह अर्थ नहीं कि सब अमेरिकन लड़के भेड़ की तरह एक ही लकीर पर चलते हैं और व्यक्तिगत विशेषता या लीक छोड़कर चलने वाले का अमेरिका म अभाव है। अमेरिकन युवक का एकमात्र उद्देश्य व्यवसाय-धन्धे में सफलता ही नहीं यद्यपि यह मुख्य उद्देश्य है, बल्कि आत्माभिव्यक्ति भी है और कुछ युवक अपने रास्ते पर चलने की कोशिश करते हैं और इसमें सफल भी होते हैं। एक हद तक वे दूसरों की तरह काम-काज करते हैं और रहते हैं, इसके साथ कुछ-सी बातों में वे अपने ढंग पर चलते हैं। इस दिशा में अक्सर व्यक्ति और समाज में संघर्ष भी होता है और परिणाम दुःखद भी होता है। पर धीरे-धीरे अमेरिकन किशोर व्यक्ति और समष्टि में समन्वय करना सीख रहा है और इस प्रकार अधिक सबल व्यक्तित्व का विकास कर रहा है।

5 डोरिंग, प्रेम और विवाह

प्रेम का अमेरिका के जीवन में बहुत बड़ा स्थान है। ठेठ अमेरिकन युवक ऐसी वनिता का सपना देखता है जो हालीवुड की तारिका से टक्कर ले

और हरेक अमेरिकन लड़की ऐसे प्रभी का दिल जीतना की कामना करती है जिस पर लड़कियाँ जान दें। बचपन में अमेरिकन लड़का या लड़की माता-पिता के स्नेह की जो मिठाई चखता है, वह उसकी प्रेम की प्यास को और भी तीव्र कर देती है। अमेरिकन प्रेम बड़ा रोमांटिक होता है। अमेरिकन प्रेमी या प्रेमिका समझती है कि उसके सच्चे प्रेम का पात्र कोई एक ही है और इसी प्रमी या प्रेमिका की तलाश उसका खास ध्येय होता है और सब बातों में अमेरिकन पुरुषार्थवादी होता है पर प्रेम के मामले में वह भाग्यवादी होता है और सब बातों में वह अपना भाग्य का निर्माता स्वयं बनता है, पर प्रेम के आगे उसका बस नहीं चलता। प्रेम की शक्ति उसके लिए अत्यन्त रहस्यमय और दुर्निवार होती है। वह ऐसे जीवन साथी को ढूंढता है जो उसके जीवन के सूनेपन को दूर कर सके और उसके अपूर्ण व्यक्तित्व को पूर्णता दे सके।

अमेरिकन युवक अपने प्रेम व्यापार में अपने जीवन-संगी की खोज में भी उसी तीव्र स्पर्धा से जुटता है, जिससे वह व्यापार या व्यवसाय में सफलता प्राप्त करता है। उसके समाज में प्रेम और व्यवसाय में सफलता पौरुष की प्रतीक मानी जाती है। प्रेम के अखाड़े को वह अपने पौरुष या मर्दानगी का परीक्षा-स्थल समझता है। अपनी मर्दानगी दिखाकर अपनी प्रेमिका का हृदय जीतने के लिए वह आतुर रहता है।

प्रेम का यह खेल या कोर्टशिप करीब 17 वर्ष की उम्र से शुरू होता है इस समय वह यौन सम्बन्ध के लिए पूरा सक्षम होता है। इस उम्र से लेकर अगले 5-6 वर्ष तक अमरिकन किशोर-किशोरी प्रेम का खेल खुलकर खेलते हैं और स्त्री-पुरुष सम्बन्ध का स्वाद चखते हैं। इन वर्षों में डेटिंग (मुलाकात) मोटर की सैर, नाच आलिंगन और चुम्बन की धूम रहती है। चूंकि अमेरिका म प्रेम के बाद विवाह होता है विवाह तय नहीं किया जाता, इसलिए लड़के-लड़कियों को कोर्टशिप या मिलने-जुलने में काफी छूट दी जाती है। ऊंची श्रेणियों में यह मिलना-जुलना कालेज पार्टी या नाइट क्लबों में होता है मध्यम श्रेणी में सिनेमाघरों गिरजाघरों या सैरगाहों में और छोटी श्रेणी में मेलों या सस्ती सरायों आदि में। पर सभी श्रेणियों में 'डेटिंग' या संकेत सबसे ज्यादा प्रचलित है। डेटिंग की प्रथा अमेरिका की खासियत है। इसमें लड़के या लड़की मिलने की कोई तारीख या समय स्थिर कर लेते हैं। जिस लड़की की जितनी ज्यादा डेटिंग होती है वह उतनी 'पापुलर' या सफल समझी जाती है। यदि एक ही लड़की और लड़का बार-बार डेट करें या मिलें तो समझा जाता है कि उनमें प्रेम हो गया है। यदि नई-नई लड़कियों से डेट तय हो तो इसका अर्थ है कि अभी तक युवक प्रेम बंधन में नहीं बंधा है। जो लड़का या लड़की जितने ज्यादा आकर्षक होते हैं उनके डेट की मांग उतनी ही अधिक रहती है।

डेटिंग में होता क्या है ? यह एक प्रकार से प्रेम का उन्मुक्त या अंतरंग है। आलिंगन चुम्बन कर स्पर्श की परिणति शरीर समर्पण या संभोग में होती है। किशोर इसी के लिए चेष्टा करता है और किशोरी इसी को बचाती है, पर हमेशा बचा भी नहीं पाती। बहुत-सी डेटें इसी चरम परिणाम पर पहुँच भी जाती हैं और फलस्वरूप अमेरिका के समाज में यौन स्वेच्छाचार काफ़ी पाया जाता है। पर डेटिंग या प्रेम को यह अंतरंग महज़ बेलगाम स्वेच्छाचार या यौवन की उच्छृंखलता नहीं है। इसका मूल उद्देश्य है उपयुक्त जीवनसाथी की तलाश। यह एक प्रकार का प्रयोग या ट्रायल है जिससे किशोर या किशोरी यह जानने की कोशिश करते हैं कि वे एक-दूसरे के साथ सुखी रह सकते हैं या नहीं। इसलिए वे आलिंगन और चुम्बन में बहुत दूर तक जाते हुए भी यथा-सम्भव संभोग को बचाते हैं। डेटिंग के साथ-साथ जोड़ा बाँध लेते हैं और लगातार एक-दूसरे से मिलते और पेटिंग (आलिंगन अंगस्पर्श) करते हैं। अक्सर यह जोड़ाबंदी हाई स्कूल या कालेज से ही शुरू हो जाती है और कालेज छोड़ने तक अर्थात् 4-6 वर्ष तक चलती है। अक्सर इस प्रकार जोड़ों में सगाई या वाग्दान भी हो जाता है। इसे एक प्रकार का विवाह या दाम्पत्य प्रयोग-सा कहना चाहिए। इस प्रकार वे युवक-युवती एक प्रकार का विवाहित जीवन बिताने का अवसर पा जाते हैं जो आर्थिक कारणों या अन्य कारणों से विवाह करने की स्थिति में नहीं होते। किंसे का अनुमान है कि कालेज जाने वाले 60 प्रतिशत विद्यार्थी इस प्रकार की डेटिंग या अर्ध-मैथुन का अनुभव प्राप्त कर चुके होते हैं।

अमेरिकन लोग प्रेम को विवाह के लिए आवश्यक समझते हैं और उनके *प्रेम की परिणति विवाह ही होता है पर विवाह के बाद यह औपन्यासिक प्रेम* एक सपना-सा लगता है। प्रेम की रंगीन दुनिया विवाह की तेज़ रोशनी में गायब हो जाती है। सिनेमा-फिल्मों और प्रेम-कहानियों से प्रेम के जिस संसार की सृष्टि होती है वह नून तेल लकड़ी के धन्धे और बाल-बच्चों की किल्लतों में गायब हो जाता है। फलस्वरूप अमेरिकन युवक या युवती को ऐसा लगता है मानो उसने धोखा खाया हो। फिर भी प्रेम की मृगतृष्णा बनी रहती है। स्त्री उपन्यासों के पृष्ठों में अपने खोये प्रीतम को ढूँढती है और पुरुष क्लब और दफ़्तर में अपनी निराशा को भुलाने की कोशिश करता है या कोठे में झाँकता है। अनेक दम्पति विवाहित जीवन की कटु वास्तविकता से संगति बैठाने में सफल भी होते हैं और विवाह के पूर्व के औपन्यासिक प्रेम को दाम्पत्य प्रेम का रूप देने में सफल होते हैं पर अनेक ऐसे सफल या सुखी नहीं होते। वे मन-ही मन घुटते रहते हैं और पर-पुरुष या पर-स्त्री से प्रेम की भूख मिटाने की कोशिश करते हैं या तलाक़ का सहारा लेते हैं। पर तलाक़ के बाद वे फिर से विवाह भी

करते हैं। इससे पता चलता है कि विवाह बन्धन या दाम्पत्य जीवन में उनका
विश्वास बना रहता है, वे केवल यह समझते हैं कि उनका चुनाव ग़लत था।
औपन्यासिक प्रेम की इन विफलताओं को देखकर कुछ लोग कह सकते हैं कि
इस प्रकार के प्रेम-विवाह से पुराने ढंग से विवाह अच्छे, पर अमेरिकन लोग ऐसा
नहीं समझते। प्रेम करने की ओर अपने जीवन साथी को चुनने की स्वतंत्रता
अमेरिकी समाज की स्वतंत्रता का अभिन्न अंग है। अमेरिकन जिस प्रकार अपना
व्यवसाय चुनने को स्वतंत्र है उसी प्रकार अपना जोड़ा चुनने को भी।

परन्तु व्यवहार मे यह स्वतंत्रता काफ़ी सीमित है। श्रेणी आय जाति और
भौगोलिक बन्धन को तोड़ना काफ़ी कठिन होता है। मध्यम वर्ग की किशोरी
किसी करोड़पति के लड़के से प्रेम और ब्याह का सपना भले ही देखे पर उसे
अपने ही वर्ग और अक्सर अपने ही मोहल्ले के किसी युवक से संतोष करना
पड़ता है। इसी प्रकार युवक भी चाहे सिनेमा तारिका को मन मे बसाये पर
मिलती उसे साधारण अपने वर्ग की लड़की ही है। पैसे का भी काफ़ी महत्व
रहता है। पैसे के लिए ही शादी करने के नाम से अमेरिकन युवती भड़कती
है पर पैसे के साथ प्रेम हो तो सोने में सुगंध आ जाती है। इसके अलावा वर्ग
चेतना या संस्कार भी अमर्यादित रूप से प्रेमी के चुनाव को प्रभावित करते हैं।

अमेरिकन विवाह का लक्ष्य सुख है। प्रेम को वह इसलिए ज़रूरी मानता
है कि उसकी समझ में प्रेम रहित विवाह से सुख नहीं मिल सकता। इस पर यह
भी कहा जा सकता है कि अमेरिकन विवाह शारीरिक सुख पर आश्रित है और
जहाँ पति-पत्नी एक-दूसरे से ऊबे वहीं सम्बन्ध टूटने की नौबत आई। पर बात
ऐसी नहीं है। सहवास के साथ-साथ गृहस्थी में भी स्त्री-पुरुष सुख पाते हैं।
चलती गृहस्थी के पुरुष को वैसा ही आत्मसंतोष मिलता है जैसा चलते व्यवसाय
में और स्त्री को अपने बच्चों में समाज में सम्मान और हैसियत में सफलता
और संतोष प्राप्त होता है।

कहते हैं कि अपढ़ पति यह चाहता है कि उसकी पत्नी घर के प्रबन्ध में
निपुण हो समझदार हो वफ़ादार हो और भोजन अच्छा बना सके। अंग्रेज
पत्नी चाहती है कि पति समझदार हो विनोदी हो सच्चरित्र हो और उदार
हो। अपढ़ सुन्दरता व्यवसाय-निपुणता या पैसा कमाने में कुशलता और काम
शक्ति पर उतना ज़ोर नहीं देते। दूसरी ओर अमेरिका में सुन्दरता आकर्षण
पैसा कमाने की क्षमता और काम संतुष्टि को अधिक महत्व दिया जाता है।
अर्थात् इंग्लैण्ड में उन गुणों पर ज़ोर दिया जाता है जिनसे गृहस्थी चलती है
और पति-पत्नी मे निभाव होता है जबकि अमेरिका में सहवास सुख पर। इससे
एक बुरा नतीजा यह होता है कि अमेरिकन पति-पत्नी इसी चिन्ता में पड़ जाते
है कि वे एक-दूसरे को शारीरिक सुख देने में असमर्थ तो नहीं। इसके लिए व

कामशास्त्र आदि पढ़ते हैं। इस प्रकार की पढ़ाई से कुछ लाभ भी होता है क्योंकि इससे अनेक भ्रांत धारणाएँ और झूठा डर दूर हो जाता है।

काम-शक्ति के बारे में यह चिन्ता कामुकता की द्योतक नहीं है। अगर ऐसा होता तो अमेरिकन दम्पत्ति व्यभिचार की ओर झुकते जैसा यूरोप में होता है। इससे यही सूचित होता है कि अमेरिकन स्त्री-पुरुष यह समझते हैं कि कामतुष्टि से दाम्पत्य प्रेम और दृढ़ होता है। अमेरिकन पुरुष स्त्री को आज्ञाकारिणी दासी या वशवर्तिनी के रूप में नहीं प्रेममयी साथिन के रूप में देखना चाहता है और चाहता है कि स्त्री-पुरुष दोनों सहवास से समान सुख पाएँ। स्त्री या पुरुष किसी का व्यक्तित्व दब नहीं और दोनों को समानरूप से आनन्द मिले।

अमरिकन स्त्री और पुरुष दोनों अकेलेपन से बहुत घबराते हैं। इसलिए तलाक के बाद अधिकांश स्त्री-पुरुष फिर से ब्याह करते हैं। अमेरिकन अखबारों में एक प्रेम पीड़ितों का स्तंभ होता है। इसमें स्त्री-पुरुष अपने विवाहित जीवन की या प्रेमी-प्रेमिका सम्बन्धी कठिनाइयाँ एवं समस्याएँ पेश करते हैं और उसको सुलझाने के लिए सलाह माँगते हैं। इससे पता चलता है कि अकेलेपन या सूनेपन को दूर करने वाले साथी की अमेरिकन स्त्री पुरुष को कितनी चाह और तलाश रहती है।

कुछ लोगों का ख्याल है कि अमेरिका में विवाह की प्रथा टूट रही है पर आँकड़ों से यह बात गलत सिद्ध होती है। 1940 के दशक में जनसंख्या में 14½ प्रतिशत वृद्धि हुई पर विवाहित दम्पत्तियों की संख्या में 24 प्रतिशत वृद्धि हुई। परिस्थितियाँ अधिक उम्र में ब्याह करने के पक्ष में हैं। व्यावसायिक और शिल्पिक शिक्षा में अधिक समय लगता है और रहन-सहन का स्तर भी काफ़ी ऊँचा हुआ है फिर भी प्रवृत्ति जल्दी ब्याह करने की है। ब्याह के समय लड़की की औसत उम्र करीब 20·4 वर्ष है और लड़के की 22·23 साल। इसका कारण कुछ लोग यह बताते हैं कि अमरिकन लड़की कमाई करने से घबराती है और पुरुष पर आश्रित रहना चाहती है और कुछ लोग इसका कारण काम-वासना बताते हैं। परन्तु ये दोनों बातें ठीक नहीं क्योंकि जैसा पहले बताया जा चुका है कि विवाह के पहले भी अमरिकन लड़के-लड़कियाँ जोड़ा बाँधकर रहते हैं और काम-वासना को संतुष्ट कर लेते हैं। दूसरी ओर काम-धन्धा करने वाली विवाहित स्त्रियों की संख्या भी कम नहीं है।

वास्तव में जल्दी ब्याह करने की प्रवृत्ति का कारण स्त्री की काम-वासना या कमाई करने से घबराहट नहीं बल्कि सुख की चाह है जो अपनी गृहस्थी और अपने बच्चों से मिलता है। इसके अलावा अमरिका में विवाहित स्त्री की समाज में इज्जत भी अधिक होती है। पुरुष इसलिए जल्दी ब्याह करना चाहता है कि उसे बसती हुई गृहस्थी का स्वामी होने में वैसा ही आनन्द आता है जैसा

बसते हुए कारबार में। साथ ही गृह प्रबन्ध में निपुण मेहमानदारी और डाक्टर पार्टी का अच्छा प्रबन्ध करने वाली बच्चों को अच्छी तरह रखने वाली अच्छा कपड़ा-लत्ता पहनने वाली आकर्षक और मिलनसार पत्नी से समाज में पति की मर्यादा बढ़ती है। दूसरी तरफ़ पति अच्छे पद पर हुआ समाज में हैसियत और इज्ज़त हुई, अच्छे लोगों से मिलना-जुलना हुआ तो स्त्री की भी इज्ज़त बढ़ती है। विवाह को जुआ समझते हुए, विफलता का खतरा उठाते हुए भी इन्हीं कारणों से अमरिकन नवयुवक और नवयुवती जल्दी ब्याह करते हैं। अमेरिका में ब्याह के खतरे को काफ़ी बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाता है। यहाँ ऐसी किताबों की भरमार है जिनमें हाई स्कूल पास लड़के-लड़कियों को जीवन साथी के गलत चुनाव के खतरे से आगाह किया जाता है और सही चुनाव के तरीके और कसौटियाँ बताई जाती हैं। उसे बताया जाता है कि स्त्री-पुरुष की रुचि में समानता होनी चाहिए। पर विवाह की सफलता और दाम्पत्य सुख अक्सर इन स्थूल बातों पर नहीं बल्कि मन की ऐसी प्रवृत्तियों के मेल जाने पर निर्भर होती है, जिसके बारे में पहले से कुछ नहीं मालूम रहता है।

विवाह विच्छेद के कारणों पर अमेरिका में बहुत खोज-बीन की गई है। स्वभाव का न मिलना पति-पत्नी में परस्पर आकर्षण का नष्ट हो जाना, व्यभिचार, रुपये-पैसे की तंगी कलह आदि तलाक और विवाह सम्बन्ध टूटने के सबसे साधारण कारण बताए जाते हैं। विशेषज्ञों ने तो आँकड़ों का अध्ययन करके यह भी बताया है कि सबसे खतरनाक उम्र क्या होती है। पर विच्छेद का वास्तविक कारण होता है बचपन में पड़े संस्कार और घर का वातावरण समाज में व्याप्त आर्थिक स्पर्धा और तनाव चमक-दमक और भोग-विलास पर ज़ोर। अमेरिकन लोग विवाह से आशा भी इतनी करते हैं जितनी पूरी नहीं हो सकती। वे शायद समझते हैं कि विवाह से स्वर्ग के द्वार खुल जाएँगे। फलतः निराशा स्वाभाविक है।

अमेरिकन दाम्पत्य जीवन का मज़ाक अमेरिका के व्यंग चित्रों में खूब उड़ाया जाता है। दिन की दीवानी पत्नी और ऊबा हुआ पति पत्नी के खरीदे हुए दर्जनों हैट का बिल चुकाने वाला पति दफ़्तर से थका-मांदा घर आकर पत्नी के मगज़ चाटने वाली बातों से परेशान पति दूसरी औरतों पर ताक-झाँक करने वाला पति और पुलिस के सिपाही की तरह कड़ी नज़र रखने वाली पत्नी इन कार्टूनों के प्रिय विषय होते हैं। इन व्यंग चित्रों में भी अमरिका के दाम्पत्य जीवन की समस्याओं की एक झलक मिलती है। अमेरिका में पति या पत्नी के दुराचार को पाप-पुण्य या नैतिकता की नहीं बल्कि मानसिक स्वास्थ्य की समस्या समझा जाता है। अमेरिकन मनोवैज्ञानिकों का ख्याल है कि अधिकतर अधेड़ अवस्था के पुरुष अपने पुरुषत्व की परीक्षा के लिए व्यभिचार की ओर भुकते हैं। अमेरिका

में व्यभिचार मुख्यतः तभी बुरा समझा जाता है जब इससे विवाह-विच्छेद या घर के टूटने की नौबत आ जाए।

तलाक और विवाह-विच्छेद की बढ़ती हुई संख्या पर अमेरिकन समाज शास्त्रियों ने बहुत चिन्ता प्रकट की है। उनको डर है कि यदि इनकी संख्या बढ़ती गई तो अमेरिकन सभ्यता ही छिन्न भिन्न हो जाएगी। प्रेम और विवाह का जो मनोहर सपना अमेरिकन युवक-युवती बनाते हैं उसे तलाक का निर्मम थपेड़ा चूर-चूर कर देता है। इसलिए कुछ लेखक तलाक का इस प्रकार वर्णन करते हैं जैसे मौत का।

बहुत-से लोगों की धारणा है कि तलाक की बीमारी तो केवल बड़े लोगों की बीमारी है क्योंकि पैसे की अधिकता के कारण इस वर्ग में मानसिक विकृतियां और उलझनें अधिक आ जाती हैं। मेहनत-मजदूरी करने वालों के सीधे-सादे जीवन में तलाक और विवाह-विच्छेद की गुंजाइश बहुत कम है। कुछ हद तक ऐश-आराम विलास और फैशन का तलाक से सम्बन्ध अवश्य है। पर आंकड़ों को देखने से पता चलता है कि अमेरिका में तलाक और विवाह-विच्छेद केवल धनिक वर्ग तक ही सीमित नहीं है बल्कि क्लर्कों और बाबुओं साधारण कर्मचारियों और श्रमिकों में मैनेजरों डिरेक्टरों और ऊंचे पदाधिकारियों के मुकाबले विवाह विच्छेद की घटनाएं अधिक होती हैं।

इसका एक कारण तो यह होता है कि रुपए-पैसे की तंगी के कारण स्त्री पुरुष के मिजाज में चिड़चिड़ाहट आ जाती है और घर में रोज कलह मचने लगती है। यदि आमदनी अधिक हो तो यह नौबत नहीं आती। दूसरे अमीर घर की स्त्री यह भी देखती है कि तलाकशुदा और परित्यक्ता स्त्री को कैसी तंगी में रहना पड़ता है इसलिए अक्सर पति की ज्यादती होने पर भी वह दब जाती है और विवाह-विच्छेद की नौबत नहीं आने देती। पर मेहनत-मजदूरी करने वाली स्त्री क्यों दुष्ट पति को तरह दे उसके लिए तो जैसे कंता घर रहे वैसे रहे विदेस। दूसरी ओर हालीवुड के सिनेमा-स्टारों के नित्य-प्रति के तलाकों की जो खबरें अखबारों में छपती हैं उन्हें पढ़कर यही धारणा होती है कि अमेरिका में पैसेवाले लोग विवाह को खेलवाड़ समझते हैं। मंदी के दिनों में ऊंचे वर्ग में तलाकों की संख्या में कमी आ गई थी इससे भी पता चलता है कि जीवन की ठोस वास्तविकता से वास्ता पड़ने पर दाम्पत्य सम्बन्ध में गंभीरता आ जाती है।

तलाक का स्त्री-पुरुष पर क्या प्रभाव पड़ता है? क्या इससे उनका जीवन चौपट हो जाता है? गूड (W Goode) ने इस विषय में काफी छानबीन करके यह देखा कि तलाक का असर बहुत दिनों तक नहीं रहता। अक्सर तलाक मंजूर होने के बाद ही तुरन्त नए स्त्री-पुरुषों से मुलाकातें (डेटिंग) शुरू हो जाती हैं और

अधिकांश लोग पिछले कटु अनुभव से सबक लेकर दूसरे विवाह में ज्यादा सफल भी होते हैं। पर यह भी देखने में आता है कि पुनर्विवाहित व्यक्तियों में तलाक की घटनाएँ अधिक होती हैं। फिर भी जहाँ तक स्त्रियों का सम्बन्ध है एक बार तलाक के अनुभव के बाद दूसरे ब्याह में वे ज्यादा सावधान रहती हैं और निभाने की ज्यादा कोशिश करती हैं और अधिकतर सफल भी होती हैं।

तलाक से सबसे ज्यादा कष्ट और हानि बच्चों को होती है। माता-पिता के झगड़े घर के टूटने और पिता से अलग होने का बच्चों के मन पर बुरा प्रभाव पड़ता है। अमेरिका के क़ानून में तलाक होने पर बच्चों की सुपुर्दगी माँ को दी जाती है। पर चाहे माता हो या पिता एक से तो बच्चे का नाता टूटता ही है। किन्तु बहुत-सी स्त्रियों का यह भी कहना है कि तलाक के बाद दूसरे पति से विवाह होने पर भी उनके बच्चे अधिक सुखी रहते हैं बजाय माता-पिता के कलह से भरे घर में रहने से।

तलाक या विवाह-विच्छेद की अधिकता के बावजूद अमेरिका में विवाह के प्रति आस्था बढ़ी ही है, घटी नहीं। विवाह से सुख मिल सकता है, विवाह सफल हो सकता है, यह विश्वास पहले से अधिक है। अमेरिकन लोग यह अधिकाधिक अनुभव करने लगे हैं कि क़ानूनी बंदिश या धार्मिक और सामाजिक निषेध तलाक रोकने और विवाह सम्बन्ध को बनाए रखने में उतना कारगार नहीं जितना पति-पत्नी का हार्दिक प्रेम और मन का मिलाप। वे समझते हैं कि ब्याह पति पत्नी की साझे की दुकान या गुजारे का समझौता नहीं बल्कि आनन्द और सुख की सम्मिलित खोज है और इसमें शारीरिक सुख या काम-तुष्टि का बहुत महत्त्व है। वास्तव में काम-तुष्टि को महत्त्व देने से विवाह-विच्छेद की गुंजाइश बढ़ गई है क्योंकि अमेरिकन लोग यह मानते हैं कि ऐसा सम्बन्ध क़ायम रखने से कोई लाभ नहीं जिसमें पति-पत्नी एक-दूसरे को शारीरिक रूप से संतुष्ट न कर सकें। ऐसे प्रेमहीन दाम्पत्य जीवन से व्यभिचार अच्छा। इस नई प्रवृत्ति के कारण पुरानी नैतिकता के मानदंड भी उलट-पलट गए हैं। विवाह के पूर्व सहवास या व्यभिचार को अब उतना बुरा नहीं समझा जाता जितना निष्फल विवाह का समझा जाता है। अब विवाह की सफलता की कसौटी यह है कि पति-पत्नी एक-दूसरे की काम-तुष्टि कर सकें बाल-बच्चों को प्रेम से रखें और विवाह सम्बन्ध को बन्धन या बलपूर्वक का संग नहीं स्वतन्त्रता स्वेच्छा और स्नेहपूर्ण सहवास समझें। विवाह सम्बन्ध की सफलता इसी में है कि उनमें पति पत्नी दोनों की सर्जन और रचना-शक्ति का विकास हो।

## 6 अमेरिकन समाज में स्त्रियों की स्थिति

अमेरिका में इस समय स्त्रियों को जितनी स्वतंत्रता और अधिकार है,

उतने पहले कभी नहीं थे। वे हर काम में पुरुषों का मुकाबला कर सकती हैं फिर भी उन्हें संतोष नहीं है। सरकारी नौकरी व्यापार डाक्टरी विज्ञान में ऊँचे पद पाने पर भी उसे संतोष नहीं होता क्योंकि इसके साथ वह पत्नी माता और स्त्री भी रहना चाहती है। अपनी स्त्रियोचित प्रवृत्तियों व अपनी महत्वाकांक्षाओं में मेल न कर पाने के कारण वह कुण्ठा और निराशा की शिकार बनती है।

अमेरिका में सयानी लड़कियों की स्थिति सयाने लड़कों से भिन्न होती है। कम आमदनी वाले वर्ग में लड़की एक प्रकार का बोझ बन जाती है। लड़कों की तरह वह कमाई नहीं करती। मध्यम वर्ग में लड़कियों के लिए ऊँचा वर ढूँढने की समस्या भी कठिन होती है। लड़कों की तरह वह गिरोह बनाकर काम नहीं कर पाती ज्यादा-से ज्यादा अपनी सखियों से कानाफूसी कर लेती है। इस कारण वह अपने को उपेक्षित-सी समझती है जो कि उसके पहनने ओढ़ने पर उसकी माँ काफी ध्यान देती है उसके पिता उसे बहुत दुलार करते हैं और अन्य देशों के मुकाबले उसे स्वतंत्रता भी बहुत अधिक दी जाती है। फिर भी लड़कों के मुकाबले उसे कम स्वतंत्रता रहती है और वह माँ-बाप पर अधिक आश्रित रहती है इस कारण उसमें आश्रय खोजने की आदत पड़ जाती है और वह पति का सहारा ढूँढती है।

लड़कों के मुकाबले उसकी चाल-ढाल पर अधिक निगरानी रखी जाती है। वह स्वयं भी इस बात का ख्याल रखती है कि समाज में उसकी बदनामी न हो। वह इस ढंग से रहे कि उसकी शादी अच्छी हो इसलिए वह बहुत बचाकर चलती है। छोटे नगरों में तो उसे और भी दबकर रहना पड़ता है क्योंकि छोटे समाज में बदनामी बहुत जल्दी फैलती है इसलिए अमेरिकन किशोरी बड़े नगरों में रहना पसंद करती है जहाँ उँगली उठाने वाले न हों पर यहाँ भी वह दुविधा में पड़ी रहती है। एक ओर तो उसका मन उसे दुनिया के अनुभव लेने को प्रेरित करता है दूसरी ओर वह उसे खतरों से सावधान भी करता रहता है इसलिए वह सुरक्षा का आश्रय ढूँढती है जो उसे सहारा और सुख दे सके। नीग्रो कैथोलिक अल्पसंख्यक जातियों में तो लड़कियों पर बंधन और भी अधिक है। फलत अमेरिकन स्त्री के सामने एक ही मुख्य कार्य और रहस्य रह जाता है कि वह अपने को किस प्रकार अधिक-से-अधिक आकर्षक बनाए। अमेरिकन पुरुष ने अपने लिए शक्ति और अधिकार का क्षेत्र चुन लिया है और सुन्दरता मोहकता को स्त्रियों के लिए छोड़ दिया है। 10 से 60 वर्ष के बीच अमेरिकन स्त्री चाहे वह टाइपिस्ट हो या समाज सेविका चाहे दुकान पर सौदा बेचती हो या सिनेमा की अभिनेत्री हो एक ही धुन में रहती है कि वह कैसे अधिक-से-अधिक आकर्षक और मोहिनी बने उसके अंगों में उभड़ापन और साथ उसकी वेष भूषा

में नवीनता और निरालापन कैसे लावे कैसे वह अपनी जिन्दादिली चुलबुलेपन और खूबसूरती से पुरुषों पर जादू कर सके। अमरीकन फिल्मों में भी स्त्री का यही रूप देखने को मिलता है। सायमन डि बोवियर के शब्दों में अमेरिका में औरत के रूप में जन्म लेने से ही औरत नहीं बनती उसे औरत बनना पड़ता है।'

अमेरिका की औरत जानती है कि सौन्दर्य सजावट से बिकता है, इसलिए वह अपने रंगरूप और रूप के सौदे को खूब सजाती है। सजावट के साधन भी दुनिया भर से अमेरिका में सबसे अधिक हैं। वहाँ बाजारों में नये-से-नये कपड़े गहने और शृंगार-सामग्री पटी पड़ी रहती है। साधारण लोगों के लिए यही चीजें नकल या इमीटेशन में सस्ते दामों में भी मिलती हैं। अमेरिकन औरत चाहे अमीर हो या गरीब वह अपने को नये-से-नये प्रसाधनों से सजाकर रखती है ताकि अपने रूप-जाल में वह अपनी कल्पना के स्वर्णमृग को फाँस सके। सभी को सफलता नहीं मिलती और ज्यों-ज्यों उम्र बीतती है और वर मिलने में देर होती है त्यों-त्यों प्रयत्न द्विगुणित होता है।

अमेरिकन फिल्मों मैगजीनों और विज्ञापनों ने अमेरिकन सुन्दरी की एक तस्वीर खींच दी है। सिर से पैर सुडौल, शरीर के ऊपरी भाग से लम्बी टाँगें पतली कमर, कसे नितम्ब लम्बी गरदन उभरे स्तन गोल चेहरा, बड़ी-बड़ी अपनी ओर बुलाती हुई आँखें सुनहरे या लाल केश सचकदार अप और भोला मगर कातिलाना अंदाज यह है अमेरिकन पुरुष के सपने की सुन्दरी का रूप और अमेरिकन युवती इसी नमूने के अनुरूप बनने की कोशिश करती है। यह रूप भी करीब सौ वर्ष में निखरा है और अब भी फैशन बदलते रहते हैं। सोसाइटी या समाज में चलने वाली औरतों को बिलकुल लेटेस्ट या ताजा-तरीन फैशन में रहना जरूरी है। हर मौके के लिए अलग फैशन है। दफ्तर में जाने के लिए अलग सैर-सपाटे के लिए अलग डिनर के लिए अलग समुद्र तट के लिए अलग सवेरे के लिए अलग शाम के लिए अलग और हर ऋतु के लिए अलग पोशाक जूते मोजे हैंडबैग और दस्ताने आदि। बाल सँवारने का ढंग अलग-अलग रहता है। अमीर औरतों के लिए तो कोई दिक्कत नहीं होती साधारण श्रेणी की स्त्रियाँ भी इमिटेशन या सस्ती चीजों से काम चला लेती हैं।

फैशन के साथ ही स्मार्ट या चुस्त-दुरुस्त स्त्रियाँ अपनी व्यक्तिगत मौलिकता भी प्रकट करने की कोशिश करती हैं। मौलिकता और नयापन लाने की खोज में वे पत्रिकाओं के पन्ने उलटती हैं। फिल्मों से भी आइडियाज मिलते हैं। शृंगार की चीजों के विक्रेता भी नये-नये फैशन निकालने की फिक्र में रहते हैं और अपनी चीजों को चलाने के लिए धुआँधार विज्ञापनबाजी का सहारा लेते हैं। विज्ञापनों को बनाने में बड़ा दिमाग लड़ाया जाता है। इन विज्ञापनों के

जरिये व्यापारी लोग अमेरिकन स्त्रियों के दिमाग में यही भरते रहते हैं कि तुम्हारा फैशन पुराना पड़ गया है तुम जो पोशाक और जूते पहनती हो जो लिपस्टिक लगाती हो वह पसी पसी चलने लगी है अब नया फ़ैशन यह है। फैशन के दुकानदार यह भी जानते हैं कि केवल करोड़पतियों के बल पर उनका रोजगार नहीं चल सकता इसलिए उनके विज्ञापनों में यही दिखाने की कोशिश रहती है कि उनकी नई डिजाइनें सभी श्रेणियों के लिए उपयुक्त हैं और सभी की सामर्थ्य के भीतर हैं। बहुत-सी स्त्रियाँ अपनी पोशाक खुद सीना और बनाना चाहती हैं इनके लिए नई-नई डिजाइनों या नमूनों की किताबें घर बैठे आ जाती हैं। अमेरिकन स्त्रियों की फैशन-पसंदी के बल पर अरबों रुपयों के कारबार चलते हैं।

यह तो हुआ अमेरिकन स्त्री का एक रूप—सुन्दरता और शृंगार-प्रिय फैशन परस्त। उसके अन्य रूप भी हैं सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में भी उसने बहुत प्रगति की है। सबसे पहले तो मर्दों के बराबर राजनीतिक स्वत्वों और वोट के अधिकार के लिए उसने संघर्ष किया। इसके बाद यौन सम्बन्ध में बराबरी का आन्दोलन चला जिसका धर्मध्वजी प्यूरिटन ईसाई तत्वों ने कड़ा विरोध किया। इसके साथ ही वेष-भूषा में क्रान्ति हुई पुराने लम्बे लपक झपक कपड़ों के बजाय चुस्त शरीर के उभार को प्रकट करने वाले कपड़े चले स्त्रियाँ भी तैरने की पोशाक पहनकर तैरने लगीं खेलने की पोशाक पहनकर खेलकूद में भाग लेने लगीं मोटर और हवाई जहाज चलाने लगीं। चौथी क्रान्ति या महान परिवर्तन गृहस्थी के काम खासकर पाकशाला और खाना बनाने के ढंग में हुआ। डिब्बा बन्द खाद्य पदार्थों के चलने और बिजली के चूल्हे और गरम मशीनों के कारण घर का काम काफ़ी सरल हो गया और अमेरिकन स्त्री को काफ़ी फुर्सत मिलने लगी और अनेक स्त्रियों को दफ्तरों दुकानों स्कूलों आदि में काम करने का सुभीता हो गया फलस्वरूप श्रमिक या काम-धंधे के क्षेत्र में भी एक क्रान्ति हुई। सन् 1920 म काम-धन्धा करने वाली स्त्रियों की संख्या 80 लाख थी सन् 1955 में 2०0 लाख हो गई और जो पूरी श्रमिक संख्या का 30 प्रतिशत है। पहल-पहल विवाहित कामगार स्त्रियों की संख्या अविवाहित स्त्रियों से अधिक हो गई यद्यपि दफ्तरों में काम करने वाली स्त्रियों में अधिकतर अविवाहित ही होती हैं। ये परिवर्तन एक के बाद एक हुए एक परिवर्तन से दूसरा निकलता गया।

एक बात में अमेरिकन स्त्री काफ़ी भाग्यवती है। अंदाज है कि अमेरिका की ~0 प्रतिशत दौलत स्त्रियों के हाथ है। बैंकों में 60 प्रतिशत बचत खाते (savings a/c) इनके नाम में हैं ~0 प्रतिशत बीमा पालिसियों का भुगतान उनके नाम होता है बड़ी कम्पनियों के 50 प्रतिशत से अधिक बढ़िया (gilt-edge)

हिस्से भी स्त्रियों के नाम हैं और प्राय: 60 प्रतिशत मकानों पर भी उन्हीं के नाम चढ़े हैं इसके अलावा देश में जितनी खरीददारी होती है उसका तीन चौथाई उन्हीं के हाथों से होती है। पर एक बात है यह सब धन उनको अधिकतर पति के द्वारा ही मिलता है। अधिकांश कम्पनियों के शेयर और इमारती जायदाद की मालकिन विधवाएं होती हैं। इसके दो कारण हैं एक तो दिन रात कड़ी मेहनत करने के कारण अमेरिकन कारबारी अपनी स्त्री से पहले मर जाते हैं और अपनी विधवाओं के नाम जायदाद छोड़ जाते हैं और दूसरे अनेक अमीर अमेरिकन कम उम्र की स्त्रियों से ब्याह करते हैं और स्वभावतः पहले मरते हैं। पर जायदाद स्त्रियों की जायदाद या धन का प्रबन्ध भी अधिकतर पुरुषों वकीलों या ट्रस्टियों के हाथों होता है। थोड़ी ही स्त्रियां ऐसी हैं जो कम्पनियों की डायरेक्टर हों या कारबार का संचालन करती हों इसी तरह सरकारी या सार्वजनिक पदों पर भी स्त्रियां कम हैं। अधिकांश काम करने वाली साधारण या मध्यम वर्ग की हैं। अमीर स्त्रियां अधिकतर बैठे-बैठे अपने धन का भोग करती हैं।

ये सब अधिकार स्त्रियों को बिना संघर्ष के ही नहीं मिल गए। इनके लिए इस शताब्दी के शुरू में अमेरिकन स्त्रियों को कड़ा संघर्ष करना पड़ा है। इस आन्दोलन की नेत्रियों में एमावेसर्ड मेरी सायब फैनीराइट एलीनर रूजवेल्ट आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इनके फलस्वरूप हर क्षेत्र में स्त्रियों को पुरुषों के बराबर अधिकार मिले। परन्तु अधिकार मिल जाने पर भी अमेरिका में खास कर उद्योग-व्यापार, राजनीतिक, श्रम-संगठन आदि के क्षेत्रों में प्रधानता पुरुषों की ही है।

किन्तु समाज-सेवा के क्षेत्र में स्त्रियों ने बहुत काम किया है। जेलखानों के सुधार, पागलखानों गंदी बस्तियों के सुधार, मजदूरों बच्चों और स्त्रियों की भलाई और उनके हित के कानून बनवाने में अमेरिकन स्त्रियों की सेवाएँ बहु मुख्य हैं। हेलेन केलर, जूलिया लैथाप जेन एडम्स लिलियन वाल्ड आदि उन महिलाओं में हैं जिन्होंने अमेरिका के पीड़ित और पालतू प्राणियों की दशा पर ध्यान दिया। मैरिया ग्रविल ने जेम्स रसल लॉवेल का इन्हीं सुधारों के साथ के लिए कलम उठाने की प्रेरणा दी। राष्ट्रपति रूजवेल्ट के शासन के समाज कल्याणकारी कार्यों का श्रेय एलीनर रूजवेल्ट को है।

सभी देशों में पुरुषों के मुकाबले स्त्रियां कोमल करुणामयी और उदार होती हैं। माता और गृहिणी होने के नाते उनमें दया माया और वात्सल्य अधिक होता है। अमेरिका की स्त्रियां भी इसकी अपवाद नहीं। अमेरिका का तीव्र स्पर्धायुक्त वातावरण वहां के पुरुषों को अधिक कठोर और लड़ाकू बना देता है। स्त्रियां इस स्पर्धा-संघर्ष से अलग रहती हैं, फलतः उनमें कोमलता और उदारता

भी पुरुषों से अधिक मात्रा में होती है। यद्यपि राजनीति में अमेरिकन स्त्री वामपक्ष का समर्थन नहीं करती और पुरुषों की तरह वह भी अमेरिका की दो प्रमुख दक्षिणपंथी पार्टियों डमोक्रेट और रिपब्लिकन में बंटी है फिर भी इन दोनों पार्टियों के अन्दर स्त्रियाँ पुरुषों के मुकाबले प्रगतिशील और उदार नीतियों का अधिक समर्थन करती हैं। यूरोप की स्त्रियों की भाँति वे पादरियों के प्रभाव में नहीं रहतीं।

साहित्य रचना में भी अमेरिकन स्त्रियाँ यहाँ के पुरुषों से पीछे हैं। यहाँ भी कुछ अच्छी उपन्यास लेखिकाएँ (एडिथ वार्टन एलेन ग्लासगो विला कैथर) कवयित्रियाँ (एमिली डिकिंसन एडना मिले एलीनर वाइली) कहानी लेखिकाएँ (कैथरीन पोर्टर यूडोरा वेल्टी) और नाटक कार (लिलियन हैलमैन) हो गई हैं पर वे हावर्न मेलविल मार्क ट्वेन हेनरी जेम्स फाकनर, डमर, जैसे सशक्त लेखकों का मुकाबला नहीं कर सकती। शायद इसका कारण यह है कि अमेरिकन जीवन में तीव्र संघर्ष और हिंस्र स्पर्धा की प्रधानता होने के कारण यहाँ के साहित्य और कला-रूपों में भी इन्हीं तत्वों की प्रमुखता है, जो स्त्रियों की कोमल प्रतिभा को पनपने का उतना अवसर नहीं देता। कुछ लोग तो यहाँ तक कह देते हैं कि अमेरिका के हिंसा और पशुतामय जीवन में स्त्रियों का कोई स्थान नहीं। प्रारम्भ में जब यूरोप से लोग आकर यहाँ बसे तो स्त्री ने भी जंगल काटने खेती करने जंगली जानवरों तथा जंगली जातियों से लड़ने में अपने मर्द के कंधे से कंधा भिड़ाकर काम किया। पर अब वह जीवन के संघर्ष—व्यापार उद्योग विज्ञान आदि की तीव्र प्रतिस्पर्धा—से अलग हो गई है।

पर इसका यह अर्थ नहीं कि अमेरिका में स्त्री के लिए कोई काम नहीं रह गया है। बल्कि उसका काम बहुत बढ़ गया है। कमाई या व्यापार-धन्धे के काम तो जरूर पुरुषों के जिम्मे हैं पर घर का पूरा काम बच्चों का पालन और शिक्षा का प्रबन्ध बाजार हाट पार्टी और सामाजिक समारोहों आदि की व्यवस्था सब उसी को करनी पड़ती है और यह काम कोई हलका नहीं है। फिर भी अमेरिकन महिला अपना सही रास्ता नहीं निकाल पाई है। एक तरफ उसे मर्दों की बराबरी करने के लिए उकसाया जाता है और वह बाल कटाकर पतलून पहनकर, मुँह में सिगरेट दबाकर काकटेल का गिलास हाथ में लेकर पुरुषों से होड़ करती है। दूसरी तरफ उसका परम्परागत काम है अच्छे वर की खोज। माता पिता अपनी लड़की को अच्छी तरह पढ़ा लिखाकर, गुड़ा-सिंगारकर अच्छा कपड़ा-लत्ता पहनाकर उसे समाज में उतारते हैं ताकि अपने रूप-गुण से वह अच्छा वर ढूंढ ले। शादी के बाद क्या होगा इसकी चिन्ता माँ-बाप नहीं करते वे मान लेते हैं कि शादी के बाद लड़की दाम्पत्य जीवन के दायित्व

निभाएगी सीमित संख्या म बच्चे पैदा करेगी और उनका पालन-पोषण करेगी अपनी गृहस्थी चलाएगी और इसके साथ अपना आकर्षण बनाए रखेगी और अपने पति को बाजार की हवा खाने से रोकेगी। अमेरिकन लड़की के लिए सबसे बड़ा दुर्भाग्य यही माना जाता है कि वह किसी अच्छे युवक को आकृष्ट न कर सके और अनब्याही रह जाए। इसलिए कालेजों की पढ़ाई म और पत्र पत्रिकाओं में वर फाँसने की तरकीबें बताई जाती हैं। पर्वर के एक कार्टून में यह दिखाया गया है कि एक अमेरिकन युवती एक युवक को घसीटकर सब पर ले जा रही है। पर लोग यह नहीं समझते कि येन-केन प्रकारेण किसी लड़के को फाँसकर ब्याह कर लेने से ही लड़की की समस्याएं हल नहीं हो जाती। शादी के बाद भी स्त्री उतनी ही दुखी रह सकती है जितनी कोई अनब्याही स्त्री। स्त्री ही नहीं पुरुष को भी अपने जीवन-साथी से निराशा और वितृष्णा हो सकती है। ऐसे दम्पतियों की संख्या कम नहीं जो परस्पर मानसिक और शारीरिक सहवास से संतोष नहीं प्राप्त कर पाते।

यदि स्त्री गरीब हुई तो अपनी निराशा और कुण्ठा को त्याग का जामा पहनाने की कोशिश करती है और परिवार के लिए गुलामी और मशक्कत करती है और आत्म-बलिदान में संतोष ढूंढने की कोशिश करती है। अमीर स्त्री मनोविश्लेषकों या दाम्पत्य सम्बन्ध के विशेषज्ञ बनने वालों का सहारा ढूंढती है। किंसे आदि के अध्ययन से इस बात का पता चलता है कि विवाहित जीवन से असंतुष्ट स्त्रियों की संख्या काफी है। किसी को तो यह भी पता चला कि इस कारण कुछ पर-पुरुषों से भी सम्बन्ध कर लेती हैं। अमेरिकन स्त्री को केवल 'बेबी' पुकारे जाने से और गुड़िया की तरह संवारे-सिंगारे जाने से ही संतोष नहीं मिलता जब तक कि उसे मानसिक और बौद्धिक संतोष और जीवन की सार्थकता का अनुभव न मिले। पुरुष से लुका-छिपी खेलने से भी यह संतोष नहीं मिल सकता। असंतोष का एक कारण यह भी है कि लोग यह नहीं अनुभव करते कि कुछ स्त्री या पुरुष स्वभाव से कम ही कामुक होते हैं और इस कारण उन्हें असंतोष या अतृप्ति अनुभव करने की जरूरत नहीं।

वास्तव में अमेरिका म स्त्री का जीवन बड़ा अजब-सा गया है। किशोरावस्था में उसका एक-मात्र लक्ष्य अधिक-से अधिक आकर्षक और मोहक होना है, सारा जोर रूप-यौवन पर होता है बौद्धिक या मानसिक प्रतिभा या गुणों पर नहीं। विवाह के बाद माता बनने पर उसका एक-मात्र काम घर का प्रबन्ध और बच्चों का पालन हो जाता है। उधर उसके पति का व्यक्तित्व और महत्त्व बढ़ता है वह सार्वजनिक जीवन में ऊपर चढ़ता है पर स्त्री उसका साथ नहीं दे पाती। उसका तो प्रधान आकर्षण है उसका रूप-यौवन सो वह भी ढलने लगता है। फलतः ज्यों-ज्यों पति के जीवन में पूर्णता आती है, त्यों-त्यों पत्नी के जीवन में

रिक्तता और स्व-जीवन को बनाए रखने के लिए उसकी व्यग्रता बढ़ती जाती है। बच्चों के बड़े होने और शादी-ब्याह करके अपना घर बसा लेने पर तो स्त्री को जीवन खाली और निरर्थक मालूम देने लगता है और जब तक वह बूढ़ी होकर दादी नहीं बन जाती और धर्म-कर्म में नहीं लगती उसका जीवन खाली ही रहता है।

परन्तु इधर ऐसा मालूम दे रहा है कि अमेरिकन स्त्री अपना मार्ग पहचानने लगी है। वह समझ रही है कि उसकी सार्थकता मर्द की नकल करने में नहीं वरन् स्त्रीत्व की पूर्णता में है। अब वह अपने दाम्पत्य गार्हस्थ्य सामाजिक और व्यावसायिक जीवन में मेल बिठाना सीख रही है। अब वह समझ रही है कि माता और पत्नी बनने के साथ-साथ वह अपनी बौद्धिक प्रतिभा का भी पूर्ण विकास कर सकती है। स्त्रीत्व की पूर्णता के साथ ही वह व्यक्तित्व की पूर्णता प्राप्त कर सकती है। यदि उसमें विशेष बौद्धिक और कार्यक्षमता है तो इसी कारण उसे अपने स्त्रीत्व को त्यागने और दाम्पत्य तथा मातृत्व से वंचित रहने की ज़रूरत नहीं। वह पत्नी और माता होने के साथ-साथ अपना मनचाहा काम भी कर सकती है।

7 प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था की समस्याएँ

जवानी बीतने लगती है तो आदमी को आगे की चिन्ता होने लगती है। वह अपना लेखा-जोखा लगाने बैठता है। संसार की क्षणभंगुरता का भी आभास उसे होने लगता है। आत्मा की रिक्तता का अनुभव भी उसे पहले पहल इसी समय होता है। अमेरिका में तो यह अवस्था और भी दुखदायी होती है। हम बता चुके हैं कि अमेरिकन स्त्री अधेड़पन में पहुँचकर कैसा खालीपन अनुभव करती है। स्त्री ही नहीं पुरुष भी इस उम्र में अनेक चिन्ताओं में अभिभूत हो जाता है। एक ओर उसकी शारीरिक शक्ति घटने लगती है दूसरी ओर यह चिन्ता सताती है कि क्या हम इतना पैसा जोड़ पाए हैं जिससे बुढ़ौती आराम से कट जाए। इसी समय उसे अपने अन्दर के खालीपन और आध्यात्मिक दरिद्रता का भी भान होने लगता है। उसका दुःख और भी बढ़ता है जब वह देखता है कि उससे कम उम्र के लोग आगे बढ़े जा रहे हैं जीवन की दौड़ में वह पिछड़ रहा है। अमेरिका में प्रौढ़ता या परिपक्वता को कोई महत्त्व नहीं देता वहाँ सारा ज़ोर जवानी चुस्ती पैप या वैग पर है। प्रौढ़ता या वृद्धता का स्थान कूड़े के ढेर पर है। यदि आप किसी अधेड़ या बूढ़े को प्रसन्न करना चाहें तो केवल यह कह दें कि आप देखने में बिलकुल युवक लगते हैं।

अन्य देशों में वृद्धावस्था में आदमी में आन्तरिक शान्ति आत्मविश्वास और धीरता आ जाती है जो अमेरिका के बूढ़ों में नहीं होती। पूरब के देशों

में बूढ़ों की इज्जत की जाती है पर अमेरिका में तेजी-तर्रारी की क़दर होती
है जो जवानों में होता है बूढ़ों में नहीं। इसलिए यहाँ बूढ़ों की देख रेख की
जा सकती है उनकी झक और सनक की तरह दी जा सकती है पर उनको
आदर या मान नहीं मिल सकता। पितृभक्ति और पुरखों की पूजा की परम्परा
जो पुरानी दुनिया में पाई जाती है वह अमरिका में नहीं विकसित हो पाई है।
जैसे जवानी का एक ढंग होता है वैसे बुढ़ापे का भी। पर अमेरिका में
लोगों को यह ढंग नहीं आता कि उम्र ढलने के साथ भी आदमी अपना मान
कैसे बनाए रखे। अमेरिका में उम्र ढलते ही आदमी समझ लेता है कि अब
हम खत्म हो गए। वह देखता है कि उसका रूप चला गया मित्र चल गए,
काम-धन्धा समाज म मान-मर्यादा पद प्रतिष्ठा सब चली गई, उसके लिए कोई
स्थान नहीं रहा। बचा केवल जर्जर, खोखला शरीर। इसलिए बुढ़ापे का स्पष्ट
होते ही तन क साथ उसका मन भी मरने लगता है। अमेरिकी कुटुम्ब भी
पति-पत्नी का होता है और जिस छोटे से घर में व रहते हैं उसम बूढ़े दादा
के लिए जगह ही नहीं होती। और देशों म बूढ़े लोगों की उपयोगिता होती
है व सांस्कृतिक परम्परा के वाहक होते हैं पर अमेरिका में तो आदमी कमा
कर लाने के धन्धे में इतना डूबा रहता है कि इसके अलावा और कुछ नहीं
जानता और जहाँ वह इस काम से अलग हुआ कि वह और किसी काम का नहीं
रह जाता नई यहाँ तक कि पीढ़ी के बच्चों को शिक्षा-दीक्षा देने लायक भी नहीं
रहता। उसके लिए यही डर रहता है कि किसी दिन क्लब या बार में अकड़ा
जमाये सिरजाघर में जाए, डाक्टरों की हाज़िरी द पेटेंट दवाओं के विज्ञापन
आदि देख और परलोक की बातें करे। अपन गिरते स्वास्थ्य की चिन्ता में
अपनी लाचारी का रोना रोने में और दूसरों का दोष निकालने में ही उसका
सारा समय कटता है।

इस उम्र में वह नई बातों और नये विचारों की ओर भी नहीं झुक सकता।
इसके लिए वह पुरानी रूढ़ियों से ही चिपका रहता है और राजनीतिक और
सामाजिक विचारों मे दकियानूस बना रहता है। और अमेरिका में ऐसे
दकियानूस बूढ़ों की संख्या भी बढ़ रही है। चिकित्सा और स्वास्थ्य विज्ञान की
अभूतपूर्व उन्नति और नई खोजों से अमरिका में औसत उम्र काफ़ी बढ़ गई
है। सन् 1000 में अमेरिका में 05 वर्ष स अधिक उम्र के आदमियों की संख्या
30 साल कुल जनसंख्या की 4 प्रतिशत थी। इस प्रकार अमेरिका में दीर्घायु
अर्थात् वृद्ध लोगों की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है और आगे भी यही
क्रम है।

इसक साथ-साथ बूढ़ों की समस्या की ओर भी अधिक ध्यान जाने लगा
है। अमरिका में प्रेसिडेंट रूजवेल्ट के 'न्यू डील' यानी नव-व्यवस्था क अन्तर्गत

सन् 1935 में समाज कल्याण या योगक्षेम के कानून बनाये गए। सन् 1953 में इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 34 अरब डॉलर खर्च हो रहे थे जिनमें से करीब 16 अरब बूढ़ों की पेन्शनों आदि में दिये गए। मजदूर संगठनों के प्रयत्नों से लोहा, कोयला, मोटरकार, कपड़ा आदि बड़े-बड़े उद्योगों में करीब 70 लाख मजदूरों के पेन्शन की व्यवस्था शुरू हुई। परन्तु अभी भी करीब 60 लाख कामगार ऐसे हैं जिनके लिए पेन्शन की व्यवस्था नहीं है।

अमेरिका में रिटायरमेंट की समस्या भी विकट है। यहाँ के कारखानों में जिस प्रकार की मशीनों से और जिस गति से काम होता है उसमें जवान आदमी ही चल सकते हैं। 50 वर्ष और कभी-कभी 45 वर्ष की उम्र तक पहुँचते पहुँचते कर्मचारी हटा दिया जाता है और उसकी जगह जवान आदमी को दे दी जाती है। ये छूटे आदमी शरीर और दिमाग से दुरुस्त और हुनरमंद होते हैं फिर भी इनमें से छ के पीछे एक को ही दूसरा काम मिल पाता है। नतीजा यह है कि अधिकांश को तंगी उठानी पड़ती है। सन् 1950 में एक पड़ताल से पता चला कि ऐसे कुटुम्बों में जिनके मुखिया की आयु 65 या अधिक है करीब 30 प्रतिशत ऐसे हैं जिनकी वार्षिक आमदनी 1 000 डालर से कम है और करीब आधे परिवार ऐसे हैं जिनकी आय 2 000 डालर से कम है। अमेरिका के हिसाब से यह आमदनी बहुत कम है।

मध्यम और ऊँची आमदनी वालों को आर्थिक तंगी नहीं होती। रिटायरमेंट का अर्थ उनके लिए काफी रुपया कमाकर काम-काज से विश्राम लेकर केलिफोर्निया या फ्लोरिडा में किसी सुन्दर स्थान पर चैन से रहना है, धूप में बैठना, रेडियो टेलीविजन देखना और मनोरंजन करना है। डाक्टर लोग भी काम में व्यस्त लोगों को यही सलाह देते हैं क्योंकि अमरिका में सबसे ज्यादा मौतें हार्टफेल और अतिपरिश्रम के फलस्वरूप स्नायुओं के तनाव से होती हैं। पर रिटायर होने के बाद लोगों का जी और ऊबता है, उनका समय नहीं कटता। अपने काम-काज साथी-संगी से अलग होकर वे और भी बेचैन होने लगते हैं इसलिए डाक्टर अब यह सलाह देते हैं कि एकदम रिटायर होने या काम-काज से अलग होने के बजाय धीमे-धीमे हाथ खींचना चाहिए और दूसरी बातों में मन लगाना चाहिए।

मर्दों के मुकाबले अमेरिका में औरतों को इस उम्र में कम कठिनाई होती है क्योंकि उनकी अपेक्षा वे बुढ़ापे का मुकाबला करने के लिए अधिक तैयार रहती हैं। 35 वर्ष की उम्र में ही बुढ़ौती की छाया उन पर पड़ने लगती है और वह अपने ऊपर ज्यादा ध्यान देने लगती है और 50-55 वर्ष की उम्र तक तो बुढ़ापे के साथ उनका समझौता हो जाता है जब कि पुरुष तब तक भाग दौड़ कर सकता है, जब तक कि बुढ़ापा एकदम आकर सामने खड़ा नहीं हो

ाता। फलतः उसको एकदम से धक्का लगता है जैसे पूरे वेग से दौड़ती हुई टर को एकाएक ब्रेक लग जाए।

देखना यह है कि साधारण अमरिकन इस धक्के को कैसे बर्दाश्त करता । क्या वह इससे टूट जाता है या समझकर जीवन का दूसरा रास्ता पकड़ ता है। मध्य-पश्चिम अमेरिका के एक छोटे नगर में 65 वर्ष से अधिक उम्र लोगों से बातचीत करने पर उनमें से 10 प्रतिशत ने यह कहा कि हमें तो स वय में इतना आनन्द है कि हम चाहते हैं कि इसका अन्त न हो। 20 प्रति त ने कहा कि यह हमारे जीवन का सबसे अच्छा अंश है 40 प्रतिशत ने हा कि हमें कोई अकेलापन नहीं लगता और हमारा समय अच्छे कामों कटता है। इससे पता चलता है कि चार में से तीन आदमी बुढ़ापे में भी न्तुष्ट हैं। पर एक बात यह भी है कि अक्सर लोग अपने कष्ट को प्रकट हीं करते और पूछने पर यही कहते हैं कि हम मजे में हैं।

वृद्धावस्था में आदमी क्या सोचता है और कैसे रहता है यह बहुत कुछ श या समाज-विशेष के वातावरण पर निर्भर है और अमेरिका का वाता रण ऐसा है कि यहाँ मनुष्य सहज ही निवृत्ति-मार्ग पर नहीं चलता।

अमरिकन बुढ़ापे से इसलिए भी घबराते हैं कि इसके साथ मृत्यु की छाया ली रहती है। पुरानी संस्कृतियों में मृत्यु से लोग इतना घबराते या भय नहीं ाते हैं। पुराने ढंग के समाज में एशियाई देशों में अन्त्येष्टि संस्कार बड़ी विधि से और विस्तार से होता है पर अमेरिका में लोग मौत का नाम भी नहीं ना चाहते। यहाँ कोई मरता नहीं गुजर जाता है। मृत्यु-घर को वे ऐसा सजाते ! जैसे वह कोई बैंक हो। अन्त्येष्टि संस्कार वे ऐसा चुपचुपाते हुए करते हैं से वह कोई छिपाने की बात हो। पुरानी या पिछड़ी संस्कृतियों में मृत्यु को जीवन की सरलता को जिस धीरता और अनुद्विग्नता से स्वीकार किया जाता है वह अमरिका में नहीं मिलती। दूसरे देशों और सभ्यताओं में भी लोग मृत्यु का भय अनुभव करते हैं पर इसके साथ ही मृत्यु का रहस्य भी उन्हें आकर्षित करता है, उनका साहित्य भी इस रहस्य का उद्‌घाटन करने की चेष्टा करता है। वे जीवन के इस चरम और भयानक सत्य से भागते नहीं। पर अमेरिका की संस्कृति में जीवन और जीवित जगत् के ऐश्वर्य और शक्ति की प्रतिष्ठा है इसलिए मृत्यु की बात करना यहाँ निरर्थक समझा जाता है। अमरिका में इहलोक पर जोर है परलोक पर नहीं। अन्य देशों के दार्शनिकों ने कुछ परि स्थितियों में आत्महत्या का समर्थन किया है पर अमरिका में यह पागलपन और जीवन से पलायन समझा जाता है। अमरिकन विचारक और तत्त्ववादी नश्वरता और अमरता की समस्या में सिर नहीं खपाते।

4

# अमेरिका का समाज और राष्ट्रीय चरित्र

## 1 समाज का आधार

प्रसिद्ध राजनीतिक विचारक डि टॉकविले का कहना है कि लोकतंत्र तभी चल सकता है जब उसका एक धर्म और एक दर्शन हो। यों तो बुनियादी सिद्धान्तों की आवश्यकता तो प्रत्येक प्रकार के समाज को रहती है पर लोकतंत्र को विशेषरूप से रहती है। जहाँ एक सम्प्रदाय जाति या व्यक्ति विशेष का राज्य होता है, वहाँ एकता बनाए रखने में इतनी कठिनाई नहीं होती है, जितनी लोकतंत्र में। लोकतंत्र में सबको समानता रहती है और अपनी अपनी ढफली अलग बजाने की स्वतंत्रता भी। अमेरिका-जैसे देश में जहाँ अनेक जाति देश सम्प्रदाय और रंग के लोग बसे हैं एकता कायम रखना और भी कठिन हो जाता है और आश्चर्य है कि यहाँ इतनी एकता है।

प्राचीन रोम और ग्रीस में राज्य-एकता का आधार जातीयता और संस्कृति होती थी। मध्यकालीन यूरोप में कैथोलिक ईसाई धर्म एकता का आधार था। चीन और भारत में राज्य की बुनियाद जाति और धर्म पर थी। जापान में सम्राट् ईश्वर का अवतार माना जाता था। इंग्लैण्ड में वैधानिक राजतंत्र वस्तुतः एंग्लिकन चर्च और अमूल-प्रणाली पर राज्य का आधार है। रूस का आधार कम्युनिज्म है। अमेरिका में इस प्रकार का कोई आधार नहीं। न यहाँ कोई सामंत वर्ग है, न पुजारी वर्ग न सैनिक जाति न राजा न रईस। अमेरिका को बसाने वाले लोगों में धर्म में गहरी आस्था और समाज के प्रति अपना कर्तव्य निभाने की भावना थी। वे इस भाव से भी प्रेरित थे कि वे एक नये देश और नई व्यवस्था का निर्माण कर रहे हैं जिसमें हरेक आदमी को समान अवसर मिलना चाहिए। अर्थात् अमेरिकन लोकतंत्र की बुनियाद धार्मिक स्वतंत्रता और मनुष्य की समानता पर रखी गई है।

परन्तु जिस प्रकार का समाज यूरोप से आने वाले लोगों ने बनाया उसमें गहरा परिवर्तन हुआ। नाना देशों और जातियों के लोग अमेरिका में आकर बसे इनका रहन-सहन भाषा धर्म यहाँ तक कि रंग भी भिन्न भिन्न था। अमेरिका में जिस प्रकार की आर्थिक व्यवस्था विकसित हुई उसका मूलमंत्र स्पर्धा है। इसमें हरेक आदमी आगे बढ़ने की कोशिश करता है। यहाँ की हवा में व्यापारीपन भरा है। व्यापारी-समाज में सब चीज आदमी भी रुपए से तौला

जाता है। फिर अमेरिका की शक्ति बढ़ी। वह संसार की महाशक्तियों में गिना जाने लगा। उस पर अन्तर्राष्ट्रीय जिम्मेदारियाँ आ गईं। इन परिवर्तनों से अमेरिका के मूल सामाजिक रुचि और सामाजिक सिद्धान्त पर गहरा प्रभाव पड़ा। सन् 1840 और 1860 के बीच यहाँ भी कल-कारखानों की स्थापना के फलस्वरूप मजदूर वर्ग की सृष्टि हुई। पूँजीवादी व्यवस्था का विकास हुआ, विशाल व्यापार उद्योग-धन्धों की सृष्टि हुई। केवल आर्थिक व्यवस्था ही नहीं सामाजिक और नैतिक व्यवस्था पर भी व्यापार-उद्योग की व्यक्तिवादी पूँजीवादी प्रतिस्पर्धा का प्रभाव पड़ा जिसका मूलमंत्र यह था कि अपनी फिक्र आप करो यदि नहीं कर सकते तो भगवान् मालिक है। अमेरिका के मूल धार्मिक स्वतंत्रता और अवसर की समानता के सिद्धान्त ने आर्थिक क्षेत्र में मुक्त प्रतिस्पर्धा के सिद्धान्त को प्रतिष्ठित किया जिसमें समाज या राज्य आर्थिक क्षेत्र में कोई हस्तक्षेप या नियंत्रण नहीं करता और व्यक्ति को कमाने और जोड़ने को मुक्त छोड़ दिया जाता है। अर्थात् अमेरिका ने व्यक्तिवादी दर्शन अपनाया है समाजवादी नहीं।

अमेरिकन समाज का देवता पैसा है। पैसे की ताकत वहाँ पग-पग पर दिखाई पड़ती है। नाटक सिनेमा अस्पताल सब में पैसे वालों की अधिक पूछ होती है। स्कूलों में भी ज्यादा पैसे वाले और कम पैसे वाले बच्चों के पहनावे ओढ़ावे में साफ़ फ़र्क दिखाई देता है और बच्चे भी पैसे का महत्व समझते और अमीर-गरीब में फ़र्क करना जल्दी सीख जाते हैं। अमेरिका के व्यापार-प्रधान समाज में व्यापार और व्यवहार में दोस्ती का लिहाज नहीं किया जाता। कर्मचारी और मजदूर तथा मालिक या मैनेजर में कोई आपसदारी नहीं होती। कर्मचारी समझता है कि वह पैसे के लिए काम कर रहा है और उसका मालिक या कम्पनी भी पैसे से मतलब रखती है इसलिए वह काम भी भाड़ के टट्टू की तरह करता है। मनुष्यता दया परोपकार और आदर्श को थोथी बातचीत समझा जाता है और इस तरह के आदमियों की हँसी उड़ाई जाती है। आइडियलिस्ट[1] (आदर्शवादी) डू गुडर[2] (परोपकारी) एगहैड[3] (विचारक) आदि वहाँ हँसी या व्यंग के शब्द हैं।

इसका यह अर्थ नहीं कि अमेरिका में किसी के दिल में दया-माया होती ही नहीं। होती अवश्य है पर इसे दुर्बलता समझा जाता है। व्यापार और मोल भाव में दूसरों के झाँसे में आ जाने वाला घाटे में रहता है। इसलिए अमेरिका में लोग सावधान रहते हैं कि हम किसी के झाँसे में आकर कुछ खो न बैठें।

1 Idealists.
2. Do-gooders.
3. Egg-heads.

सरकार की ओर से समाजकल्याण के काम के भी अमेरिकावासी विरुद्ध हैं क्योंकि वे समझते हैं कि सरकारी सहायता का लाभ उठाने वाले मुफ्तखोर और कामचोर होते हैं। दूसरों की मदद करने का अर्थ दूसरों के मामले में टाँग अड़ाना है। साधारण अमेरिकन के मन में यही भाव भरा जाता है कि हम क्यों दूसरों के झगड़ों में पड़ें ? हमसे क्या मतलब ? मनोविज्ञान के क्षेत्र में अमेरिका की सबसे बड़ी देन है उसके प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक हेनरी स्टेक सुलिवन का इंटर पर्सनल रिलेशन (व्यक्ति प्रति व्यक्ति सम्बन्ध) का सिद्धान्त। अर्थात् सामाजिक सम्बन्ध को अमेरिकन 'वैज्ञानिक व्यक्ति प्रति व्यक्ति सम्बन्ध' का नाम देता है। उसकी समझ में समाज केवल व्यक्तियों का जमावड़ा मात्र है।

इसीलिए अमेरिकन जब कोई परोपकार का काम करता है तो उसके लिए वह स्वार्थ का आधार ढूँढता है। दूसरे देशों को सहायता देने का समर्थन इसलिए किया जाता है कि इससे अमेरिका के शत्रुओं का नुकसान होगा। अल्पसंख्यक नीग्रो आदि पिछड़े वर्गों को अधिकार देने का समर्थन इसलिए किया जाता है कि यदि आज तुम नीग्रोजनों पर अत्याचार होने दोगे तो कल तुम्हारे अधिकार भी छिन सकते हैं। यहूदियों या इण्डियनों पर अत्याचार का विरोध इसलिए करना चाहिए कि आज यहूदी मारे जाएँगे तो कल कैथोलिक भी मारे जा सकते हैं, इसके बाद अन्य सम्प्रदायों का नम्बर आ सकता है और अन्त में इस आधार पर भी लोगों की हत्या हो सकती है कि उनके बालों का रंग लाल है या वे अमुक नगर के निवासी हैं। इस प्रकार अमेरिका में अच्छे कामों का भी श्रेय मनुष्यता या इन्सानियत को नहीं स्वार्थ और खुदगर्जी को दिया जाता है। पर प्रश्न यह है कि महज स्वार्थ पर आधारित समाज कैसे इतना दृढ़ हो सकता है जैसे अमेरिका है।

इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि अमेरिका में सहनशीलता काफी है। यहाँ पोर्टोरिको आयरिश यहूदी इटालियन जर्मन नीग्रो चीनी आदि बीसों देशों से आये हुए लोग बस हैं जिनकी भाषा रीति-रिवाज रहन-सहन और धार्मिक आचार-विचार में बहुत भिन्नता है। अमेरिका में इन भिन्नताओं के प्रति सहिष्णुता बरती जाती है। बड़े-बड़े नगरों में भिन्न-भिन्न देशवासियों के अलग-अलग मोहल्ले हैं जहाँ वे अपने ढंग से रहते हैं। धीमे धीमे दो एक पीढ़ियों के बाद वे सर्वसाधारण में घुल मिल जाते हैं। यह सहनशीलता भी आर्थिक स्वतन्त्रता या अहस्तक्षेप (laissez faire) के सिद्धान्त का ही दूसरा रूप है जिस पर अमेरिका का पूँजीवाद या व्यक्तिगत उद्योग का समाज टिका है।

समाज में व्यापारी मनोवृत्ति की प्रधानता होने से जातीय भेद भाव रङ्गभेद वर्ग भेद के मिटने में भी मदद मिलती है। नीग्रो का रंग काला है पर उसके

यह ठीक है कि पैसा होने पर भी नीग्रो सभी जगह प्रवेश नहीं पा जाता, पर अमरीकन दुकानदार नीग्रोजनों की क्रय-शक्ति की उपेक्षा नहीं कर सकता। अनेक बड़ी दुकानों या डिपार्टमेंट स्टोरों पर हब्शी और यहूदी कर्मचारी रखे जाते हैं, ताकि इस जाति के ग्राहक आकृष्ट हों। कारखानों आदि में भी जब विभिन्न जाति के आदमी साथ-साथ काम करते हैं तो थोड़े दिनों में उनके बीच के भेद भाव मिट जाते हैं और उनमें एका हो जाता है और इसी एके पर समाज की नींव है।

समाजशास्त्रियों ने समुदाय और समाज में अन्तर किया है। समुदाय या कम्युनिटी ज्यादा घनिष्ठ होती है जैसे गांव में। और समाज अधिक फैला होता है, जैसे आधुनिक उद्योग प्रधान शहरी समाज। अमेरिका का आधुनिक औद्योगिक शहरी समाज पुराने संकीर्ण देहाती समाज से बहुत भिन्न है। यह उतना गहरा हुआ नहीं फिर भी इसके आधार में कुछ मूल विचार हैं। एक मूल विचार है न्याय का यानी सबके साथ निष्पक्षता से व्यवहार होना चाहिए और कमाने खाने का मौका मिलना चाहिए। अमरीका का क़ानून भी सबके लिए एक-सा है और जातीय भेद भाव के विरुद्ध और अपने स्वत्वों की रक्षा के लिए इस क़ानून का सहारा लिया जा सकता है और लिया जाता है जैसे गोरे स्कूलों में नीग्रो बच्चों की भर्ती के लिए। इसी तरह खेलकूद मुक्केबाज़ी टेलीविज़न और व्यापार में भी नीग्रो या अन्य जातियों के लोग आगे बढ़े हैं और सारा अमेरिका उन्हें 'हीरो' मानता है। इस प्रकार अमेरिकन समाज में एकता का निर्माण हुआ है।

८. संस्थाओं की भरमार

अमेरिका में संस्थाओं क्लबों और समितियों की भरमार है। अमेरिकन लोगों को संस्थाओं का सदस्य होने का इतना शौक होता है कि उसका नाम ही 'ज्वाएनर'[1] (संस्थाबाज) पड़ गया है। ये संस्थाएँ भी अगणित प्रकार की होती हैं। बागबानी के क्लब औरतों के क्लब गिरजाघरों के संघ छात्रों के संघ, व्यापार और उद्योगों के संगठन कारीगरों के क्लब और कू क्लक्स क्लान[2] जैसे गुप्त संगठनों—भाईचारों और बिरादरियों की जैसी भरमार अमेरिका में है वैसी और दुनिया में कहीं नहीं दिखाई देती।

न्यूबरी पोर्ट नामक एक 17000 आबादी के छोटे-से नगर में 800 से अधिक संस्थाएँ हैं जिनमें क़रीब 3[illegible]0 तो काफ़ी पुरानी स्थायी संस्थाएँ हैं। सन् 1950 में अनुमान लगाया गया था कि अमेरिका की बिरादरियों (फ्रटर्निटी) के

---

1 Joiner

2 Ku Klux Kaln.

क़रीब 2 करोड़ सदस्य थे स्त्रियों के क्लबों की संख्या क़रीब एक लाख थी छोटे क़स्बों और देहात के बालकों के 4-एच० क्लबों के क़रीब 20 लाख मेम्बर थे। कुल मिलाकर अमेरिका म कम-से-कम 10 करोड़ व्यक्ति किसी-न किसी संगठन के सदस्य थे।

जर्मन समाजशास्त्री मैक्स वेबर का कहना है कि ये क्लब और संगठन बड़े महत्त्व का काम करते हैं। ये अमेरिका के अत्यन्त व्यक्तिवाद बिखरे हुए व्यक्ति को सामाजिकता सिखाते हैं। एक प्रकार से ये वही काम करते हैं जो पुराने ज़माने में जाति या बिरादरी करती थी। अपने हम-पेशा और समान-रुचि के लोगों से मिलने-जुलने की इच्छा से ही लोग इन क्लबों में शामिल होते हैं। ये क्लब एक प्रकार से समाज के प्रवेश-द्वार होते हैं। जब कोई आदमी कहीं नई जगह जाकर बसता है तब उसे वहाँ के समाज में प्रवेश करने में कठिनाई होती है। क्लब या संस्था की सदस्यता इस गुटबंदी को तोड़ने और समाज में प्रवेश पाने में सहायक होती है। वास्तव में बात यह है कि अमेरिका के स्पर्धामय व्यक्तिवादी समाज में जहाँ सबको अपनी अपनी पड़ी रहती है, आदमी अपने को बड़ा अकेला और असहाय अनुभव करता है। ये क्लब और सभा-सोसाइटियाँ इस अकेलेपन को दूर करने के साधन हैं। इनमें जाकर वह अपने व्यवसाय जिस और समान-रुचि और विचार के लोगों से मिलता जुलता है, मित्रता जोड़ता है अपने व्यक्तिवाद का प्रभाव जमाने का अवसर पाता है। अमेरिका में मित्रता उतनी घनिष्ठ नहीं होती जितनी और देशों में। अमरीकन यह तो समझता है कि स्त्री-पुरुष में मन का मिलाप हो सकता है और वे आजीवन प्रगाढ़ स्नेह के बन्धन म बंध सकते हैं, पर वह यह नहीं समझता कि पुरुषों में भी आपस में ऐसा प्रगाढ़ प्रेम हो सकता है। बहुत गहरे स्नेह को वह भावुकता मानता है, क्लब या बिरादरी में तो वह एक-दूसरे को भाई या ब्रदर कहकर पुकार सकता है पर बाहर किसी को ऐसे पुकारते उसे शर्म आती है या वह व्यंग समझा जाएगा।

ये क्लब और संगठन भी नाना प्रकार के होते हैं। कुछ व्यवसाय या धन्धे विशेष के होते हैं कुछ सांस्कृतिक या किसी आदर्श के प्रचार या आन्दोलन के कुछ जातीय हैं जैसे अमेरिका में पहले आकर बसे अंग्रेजों या यूरोपियनों के 'मोल्ड अमेरिकन' जैसे या यहूदी नीग्रोज़ों के। कुछ बिलकुल सामाजिक होते हैं जैसे रईसों या बड़े आदमियों के क्लब। अमेरिका में पुरानी परम्परा और रीति रस्म जैसी चीज़ तो है नहीं इसलिए अमेरिका वाले अपने क्लबों की सदस्यता को धार्मिक विधि और रीति रिवाज का रूप दे देते हैं। बहुत-से क्लबों के नाम भी पूर्वी देशों के अनुकरण पर टैंपुल आदि होते हैं और सदस्य लोग कान्फ्रेंसों के समय लम्बे चोगे आदि पूर्वी पोशाक पहनकर सड़कों पर जलूस निकालते हैं।

गुप्त संगठनों में अमेरिका वालों को मजा आता है इससे उन्हें रहस्य रोमांच का बोध होता है, कू क्लक्स क्लान जैसे संगठन इसी मनोवृत्ति के उदाहरण हैं। ये संगठन बहुधा उपद्रव मारपीट और क्रूरता के काम करते हैं ये इस बात के द्योतक हैं कि अमेरिकन लोगों के स्वभाव में अभी प्रौढ़ता नहीं आई है जैसे अंधेरी कोठरियों में छिपकर अलीबाबा चालीस चोर के किस्से का अभिनय करते हैं और मार-काट के खेल खेलते हैं वैसे ही य अमेरिकन अपनी गुप्त संस्थाओं में करते हैं।

पुराने सैनिकों के संगठनों में यह मनोवृत्ति और साफ झलकती है। मूलतः ये संगठन फौज से छुट्टी पाये सैनिकों के हितों की रक्षा के लिए बने थे। मगर एक बार खून का स्वाद लग जाने पर छूटना कठिन हो जाता है, इसलिए ये संगठन युद्ध की भड़ास निकालने और हिंसा का शौक पूरा करने मे भी सहायक होते हैं। वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर अधेड़ अवस्था के लोग बरमस्त होकर होटलों और सड़कों पर भी उपद्रव मचाते हैं। सेना में रह लेने के कारण इनको देश-भक्ति की सनद मिल जाती है इसलिए ये लोग जिनको देश-हित के विरोधी समझते हैं उन पर आक्रमण करने का अधिकारी भी अपने को मान लेते हैं। वामपक्षी संगठन और धर्म या आदर्श के समर्थी लोग इनके खास शिकार होते हैं।

अधेड़ उम्र की औरतों और ऐसी औरतों के लिए, जिनके पति अपने कार बार में व्यस्त रहते हैं, ये क्लब खाली वक्त काटने के बहुत अच्छे साधन होते हैं। वे इन क्लबों में बैठकर साहित्य चर्चा कविता-पाठ नाटक आदि करती हैं।

यानवाली स्कूली शिक्षा और बाल-मनोविज्ञान सम्बन्धी संस्थाओं म भी स्त्रियाँ बड़ उत्साह से भाग लेती हैं। सामाजिक और नैतिक आन्दोलन के लिए भी बहुत-सी संस्थाएँ हैं जैसे शराबियों का सुधार, नीग्रो और अल्पसंख्यकों को नागरिक अधिकार दिलाने आदि क आन्दोलन। इसी तरह प्रगतिशील पुरातनी उदार, नरम और गरम विचारों क संगठन हैं। कैथोलिक प्रोटेस्टेंट यहूदी आदि धार्मिक सम्प्रदायों क संगठनों के अलावा नीग्रोजनों के जातीय संगठन भी हैं। कुछ समाज सेवा क संगठन हैं जिनमें सब सम्प्रदायों और जातियों के लोग भाग लेते हैं जैसे शिक्षा दान अस्पताल गरीबों को बचाने आदि के संगठन। अलग अलग शौक वालों क भी अपने क्लब और संगठन हैं।

इन संगठनों क द्वारा अमरिका में व्यक्तिवाद और सामाजिकता का संयम हुआ है। अपने अपने रास्ते पर चलने वाले लोग इन क्लबों के द्वारा अपने समानधर्मी लोगों के पास आते हैं। अमरिका म पड़ोस में रहने वाले भी एक-दूसरे से अपरिचित रहते हैं। इन क्लबों के जरिये लोग अपने वास्तविक पड़ोसियों या साथियों के अपने समान रुचि स्वभाव और शौक के लोगों के सम्पर्क में

जाते हैं। पर यह भी न समझ लेना चाहिए कि क्लब और संस्था बनाने की प्रवृत्ति सभी अमरिकनों में एक-समान है। वार्नर ने इस सम्बन्ध में जो पड़ताल की उससे पता चला कि पैसे वालों में यह प्रवृत्ति अधिक है। ऊँची श्रेणी के 72 प्रतिशत लोग क्लबों के मेम्बर थे उच्च मध्यम श्रेणी में 67 प्रतिशत मध्यम श्रेणी में 40 प्रतिशत और इससे नीचे की दो श्रेणियों में केवल 39 और 22 प्रतिशत। नीची श्रेणियों के क्लबों में वास्तव में क्लब कम और जातीय और चर्च वाली धार्मिक संगठन अधिक थे। ऊँची श्रेणियों के क्लब खाने-पीने के मिलने-जुलने के और सामाजिक जीवन को प्रभावित करने और अपनी सत्ता की रक्षा के लिए होते हैं जब कि मध्यम श्रेणी के लोग उन्नति करने या आगे बढ़ने के लिए क्लबों के मेम्बर होते हैं। नीची श्रेणी के लोगों को क्लबों का सदस्य बनने के लिए न समय होता है न पैसा। उनके शौक भी कम ही होते हैं। उनका मिलना-जुलना अपने नाते रिश्ते में ही अधिकतर होता है।

सभी क्लबों के सदस्य बड़े उत्साह से संस्था की कार्रवाइयों में भाग लेते हैं। संग इकट्ठा करते हैं बैठकों और वार्षिक सम्मेलनों में शामिल होते हैं। इन क्लबों से लोगों को लोकतन्त्री विधि से काम करने की शिक्षा मिलती है। इन्हीं से वे सीखते हैं कि म्यूनिसिपैलिटी या विधान सभा के अन्दर में जाकर देश का इन्तजाम कैसे करना चाहिए। सबसे बड़ा लाभ तो यह होता है कि इनके द्वारा व्यक्तित्व का विस्तार होता है, गतिविधि बढ़ती है, आदमी अपने संकीर्ण दायरे से निकलकर अधिक विस्तीर्ण क्षेत्र में आता है। साधारण अमेरिकन मेल-जोल का बहुत इच्छुक होता है। क्लब उसकी इस भूख को तृप्त करते हैं।

एक बात और। वैज्ञानिक विकास के कारण अब काम के घण्टे घटे हैं और लोगों को छुट्टी और अवकाश अधिक मिलने लगा है। इस खाली समय को अच्छी तरह बिताने में क्लब और संस्थाएँ बहुत सहायक होती हैं।

अनेक संस्थाओं के वार्षिक सम्मेलनों में सारे देश भर से हजारों प्रतिनिधि आकर इकट्ठा होते हैं। कभी-कभी तो 1 लाख प्रतिनिधि तक जुट जाते हैं। अनेक बड़े कारबार वाले अपने एजेन्टों का सम्मेलन करते हैं जिससे उनसे व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित हो और फलस्वरूप कारबार बढ़े। पहले तो इस प्रकार के सम्मेलनों में केवल खान-पान और आमोद प्रमोद ही होता था पर अब इनमें कुछ गंभीरता आने लगी है। अनेक सम्मेलनों में एक क्षेत्र में काम करने वाले लोग अपनी समान रुचि के विषयों पर विचार विनिमय करते हैं और एक-दूसरे के अनुभवों और कठिनाइयों से लाभ उठाते हैं।

3. तौर-तरीका और व्यवहार

'महाजनो येन गतः स पंथः' अर्थात् लोगों में बड़े लोगों की नकल

बड़े लोगों की चाल करने की प्रवृत्ति होती है। पर अमेरिका में साधारणजन बड़े लोगों की चाल ढाल या फैशन की नकल की इतनी कोशिश नहीं करते जितनी उनके काम करने के तरीकों की। यहाँ उद्देश्य अपने को बड़े लोगों के जैसा दिखाने का नहीं बल्कि उनके समान बनने का होता है। अन्य पुराने देशों की भाँति अमेरिका में राजा-रईसों के पुश्तैनी वंश या ऊँची जाति नहीं है। साधारण स्थिति के लोग रुपया कमाकर ऊँची श्रेणी में प्रवेश किया करते हैं।

यूरोप से जो लोग 19वीं सदी में अमेरिका घूमने आते थे, उन्हें यह देखकर आश्चर्य होता था कि यहाँ जनसाधारण या छोटे लोग बड़े लोगों की कोई इज्जत नहीं करते न उनके सामने झुकते या विनम्रता दिखाते हैं। फ्रांस के प्रसिद्ध राजनीतिक विचारक दि टॉकविले ने इसकी प्रशंसा करते हुए लिखा है कि अमेरिका के लोग स्वाभिमानी होते हैं बड़े या छोटे सब एक-दूसरे के साथ बराबरी का बर्ताव करते हैं। पर अंग्रेज लेखिका श्रीमती ट्रोलोप (1832) को यह देखकर बड़ा धक्का लगा कि अमेरिका में ऊँच-नीच का भेद नहीं। उन्होंने लिखा कि यहाँ के लोग तम्बाकू खाते और सड़कों पर थूकते हैं स्त्रियों को लिहाज-शर्म नहीं लोग बड़े अशिष्ट और धृष्ट हैं। श्रीमती ट्रोलोप के पुत्र उपन्यासकार ऐंथनी ट्रोलोप को भी सन् 18 0 में यह ठीक लगा कि अमेरिका में छोटे या नीची श्रेणी के लोग ऊँचे लोगों के प्रति नम्र या विनीत नहीं होते पर उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि यह समता और आत्म-सम्मान की निशानी है।

पहले विश्वयुद्ध के बाद शायद यूरोप के अधिक सम्पर्क में आने के कारण अमेरिका में शिष्टाचार पर बहुत जोर दिया जाने लगा। शिष्टाचार पर पत्र पत्रिकाओं में लेख निकलने लगे और लाखों की संख्या में इस विषय की किताबें बिकीं। आज भी शिष्टाचार का काफी महत्व है यद्यपि इसका अब बदल गया है। शिष्टाचार का अर्थ अमीरी ठाठ, चमक-दमक बढ़िया फर्नीचर और दिखावा नहीं बल्कि सलीका सादगी और समाज में रख-रखाव समझा जाता है।

आर्थिक विकास के फलस्वरूप अमेरिका में मध्यम श्रेणी की संख्या बढ़ी और रहन-सहन भी ऊँचा हुआ। अतः सभ्य समाज में कैसा व्यवहार होता है यह जानने की भी उत्सुकता बढ़ी। यात्रा में कैसे कपड़े पहनने चाहिए और पार्टी में कैसे चिट्ठी कैसे लिखनी चाहिए, सभा में भाषण कैसे करना चाहिए, बच्चों को कैसे रखना चाहिए आदि बातों की जानकारी सभ्य समाज के लोगों के लिए आवश्यक हो गई। फर्क इतना ही है कि अन्य देशों में ऊँची श्रेणी के लोगों की वेशभूषा आचार-व्यवहार में अपने को दूसरे लोगों से अलग और ऊँचा दिखाने की कोशिश की जाती है जब कि अमेरिका में उद्देश्य बजाय अच्छी तरह रहना और पैसे का अच्छा उपयोग करना है ऊँचा दिखाना नहीं।

अमेरिका में अनेक जातियों और संस्कृतियों के लोगों का मेल हुआ है इस कारण यहाँ सामाजिक आचार में कुछ विभिन्नता भी दिखाई देती है। दक्षिण में और उत्तर के न्यू इंग्लैण्ड राज्य में इंग्लैण्ड से आये लोग काफी अरसे से बसे हैं और जमीन जायदाद वाले हैं इसलिए इनके आचार-व्यवहार में कुछ रस्मीपन और कठोरता अधिक है। इसके विपरीत शहरी इलाकों में जहाँ विभिन्न जातियों का मेल अधिक है लोगों का व्यवहार अधिक सहज और मिलनसारी का है और ऊँच-नीच का भाव नहीं है। पर जो लोग नये-नये अमीर होते हैं या जो लोग मेहनत मशक्कत का काम नहीं करते वे अपने को औरों से ऊँचा भी दिखाने की कोशिश करते हैं।

अमेरिका में जिस सामाजिक गुण पर सबसे ज्यादा जोर दिया जाता है वह है मिलनसारी दूसरों को प्रभावित और आकर्षित करने की योग्यता क्योंकि इसी से व्यवसाय-धन्धे में सफलता मिलती है।

बातचीत की कला अमेरिका में उतनी नहीं विकसित हुई है जितनी फ्रांस या अन्य पुराने सुसंस्कृत देशों में। बात-चीत हँसी-मजाक में अमेरिका के लोग बहुत कुछ फिल्मों की और टेलीविजन की नकल करते हैं। उसमें मौलिकता या विचारोत्तेजकता कम होती है व्यंग्य मजाक और चुटकुले अधिक। इंग्लैण्ड के डा॰ जानसन और पोप की हाजिरी जवाबी और पेरिस के साहित्यिक समाज की व्यञ्जकता और प्रतिभा अमेरिका में नहीं। चिट्ठी लिखने की कला भी अमेरिका में अब लुप्तप्राय है क्योंकि अब लोग टेलीफोन और तार से बात करते हैं बैठकर चिट्ठी लिखने की उनको फुरसत कहाँ।

सुरुचि का भी अमेरिका में अभाव बताया जाता है पर अमेरिका वाले सुरुचि का अर्थ मुट्ठी भर रईसों की रुचि या पैसा खींचने की नफासत नहीं समझते। अमरिका में मध्यम श्रेणी के अच्छे खाने-पहनने वाले लोगों की बहुत बड़ी संख्या है। ये सभी लोग अच्छे ढंग से रहना चाहते हैं और जीवन का आनन्द उठाना चाहते हैं। यहाँ संगीत की महफ़िलों में हजारों की उपस्थिति हो जाती है अच्छी पोशाक अच्छे नाटक सिनेमा और अच्छी जगह सैर-सपाटे का भी लोगों को बहुत शौक है। इनकी पसन्द उतनी नफीस या परिष्कृत तो नहीं होती जितनी यूरप के खानदानी रईसों की पर इसे नितान्त फूहड़ और बेढंग भी नहीं कहा जा सकता।

अमेरिका में ग्रीक और रोमन-कला जैसी पुरानी परम्परा भी नहीं है। इसलिए कला की परख और रुचि यहाँ कच्ची है। पिछली शताब्दी में यहाँ ग्रीक और रोमनकला की बड़ी नकल की भरमार थी। अमेरिका के अमीर लोग इटली और फ्रांस से नकली और सस्ती कलाकृतियों को आँख मूँदकर खरीद लाते थे और उनसे अपने घर सजाते थे। पर धीरे-धीरे अमेरिका में

भी सुरुचि का विकास होने लगा और लोग फूहड़ और सुन्दर चीज़ों में अन्तर करने लगे। अमेरिका में कला या सुरुचि मुट्ठी भर लोगों की नहीं लाखों आदमियों की चीज़ है। यह ठीक है कि फैशन और रुचि का नेतृत्व सबसे ऊँची श्रेणी के लोग करते हैं। अमेरिका में भी चोटी के लोग ही नये फैशन चलाते हैं, पर यूरोप या और देशों की भाँति, यह थोड़े से लोगों में ही सीमित नहीं रहता बल्कि यहाँ लाखों आदमियों में फैल जाता है। क्योंकि अमेरिका में लाखों आदमी ऐसे हैं जो उसी प्रकार के कपड़े-लत्ते और शौक सजावट का सामान खरीद सकते हैं, जो बड़े-से-बड़े लोग खरीदते हैं। अमेरिका में जब कपड़े या सजावट की नई डिज़ाइन निकलती है तो वह लाखों घरों में फैल जाती है। इस विस्तार से एक फ़ायदा भी हुआ है। वह भद्दापन और तड़क भड़क जो अमेरिका के नये अमीरों में पाई जाती है अब खत्म हो रही है और उसका स्थान सादगी और सुरुचि ले रही है।

मगर इससे यह न समझना चाहिए कि अमेरिका में वैयक्तिक रुचि है ही नहीं। यहाँ भी रुचि भेद पाया जाता है। सामूहिक या लोक-रुचि के अलावा लोगों की अपनी रुचि भी है। अमेरिका में धनकुबेर लोग टैक्स बचाने के लिए संसार भर से सुन्दर कला-कृतियों को खरीदने में करोड़ों रुपए खर्च करते हैं। दूसरी ओर बड़े-बड़े कारखाने हैं जो करोड़ों की संख्या में व्यवहार की वस्तुएँ बनाकर लोगों की रुचि को प्रभावित करते और गढ़ते हैं। इसके साथ-साथ ऐसे लोगों की भी कमी नहीं जिनकी अपनी व्यक्तिगत पसंद और ढंग होता है।

कुछ रुचि निर्माता भी होते हैं जो अपनी मौलिक प्रतिभा से लोगों की रुचि बदल देते हैं। जैसे जान रॉजर्स जैसे मूर्तिकार रिचार्ड हट जैसे वास्तुकार या एल्से दे वुल्फे जैसी सजावट विशेषज्ञ। सामाजिक और आर्थिक श्रेणियों की भाँति रुचि के हिसाब से भी ऊँची मध्यम और नीची रुचि की श्रेणियाँ बन गई हैं गो कि इनका आधार आमदनी या हैसियत नहीं है। ऊँची और नीची हाइब्रो[1] और लोब्रो[2] श्रेणियों में आदान प्रदान चलता रहा है। ऊँची रुचि वाले नीची या लोक रुचि से बराबर नई चीज़ें लेते रहते हैं जैसे जाज़ और संगीत और कामिक (व्यंग चित्र) शुरू में नीची या पापुलर रुचि की चीज़ें समझी जाती थीं बाद में ऊँची रुचि वालों ने इन्हें अपना लिया। मध्यम रुचि वाले वे हैं जो न ऊँचे में होते हैं और न नीचे में। ऊँची रुचि वाले इनका तिरस्कार करते हैं और ये स्वयं नीची रुचि की चीज़ों से घृणा करते हैं। ये लोग रुचि या मौलिकता-विहीन लीक पर चलने वाले मध्यम वर्ग के लोग होते हैं।

जैसे रहन-सहन में वैसे ही खान-पान के मामले में भी अमेरिका के धनी

---

1. Highbrows
2. Lowbrows

और मध्यम श्रेणी के लोगों में फ़र्क मिट-सा गया है। बड़े-बड़े व्यापारी नई डिज़ाइन की पोशाकें लाखों की तादाद में बनवाते और ऐसे दामों पर बेचते हैं कि मध्यम श्रेणी के लोग इन्हें खरीद सकें। कपड़े की किस्म और काट-छाँट में थोड़ा-बहुत फ़र्क रह सकता है, फिर भी पोशाक के देखने में अमीर या मध्यम वर्ग का फ़र्क नहीं पता चलता। पुरानी देशों में सैकड़ों वर्षों तक पहनने-ओढ़ने के ढंग में कोई खास परिवर्तन नहीं होता। जैसे वहाँ के जीवन में स्थिरता है वैसे ही वेश भूषा में। पर अमेरिका में तो नित्य फ़ैशन बदलते हैं। कभी स्त्रियों की स्कर्ट की लम्बाई बढ़ती है तो कभी घटती है। पहले तंग कोर्सेट पहना जाता था फिर बोरे की तरह ढीला-ढाला फ्रॉक फिर बदन के उभार को दिखानेवाली पोशाक। न्यू लुक या नई तर्ज़ निकलती है और तुरन्त पुरानी पड़ जाती है फिर और नई तर्ज़ चल पड़ती है।

एक अमेरिकन लेखक (थोर्स्टेन वेबलेन) का कहना है कि ये नये-नये फ़ैशन अमीर लोग अपनी अमीरी दिखाने के लिए चलाते हैं। पर वास्तव में फ़ैशन चलाने वाली औरतें अमीर सेठों की नहीं मध्यम वर्ग की कालेज की लड़कियाँ और वकील डाक्टर कारखाने के अधिकारी आदि सफ़ेदपोश वर्गों की स्त्रियाँ होती हैं जो यह दिखाना चाहती हैं कि कम पैसे में भी हम उतने ही सलीके से रह सकते हैं जैसे अमीर लोग। और नीची मध्यम श्रेणी की औरतें भी इनकी नकल करती हैं। मध्यम श्रेणी की स्त्रियाँ दूसरों को नीचा दिखाने या अपनी शान गाँठने के लिए नहीं बल्कि मौलिकता सूझ-बूझ और सर्जन शक्ति को प्रगट करने के लिए नई शैली या तर्ज़ों का आविष्कार करती हैं।

कुछ लोगों का कहना है कि कपड़े के फ़ैशन पर सामयिक घटनाओं या प्रवृत्तियों का प्रभाव पड़ता है। जैसे महायुद्ध के बाद सन् 1010 के दशक में अमेरिकन लड़कियों में लड़कों की बराबरी या होड़ करने की प्रवृत्ति पाई फलत: ऐसे ढीले-ढाले कपड़ों का फ़ैशन चला जिसमें लड़की-लड़के जैसी दिखाई पड़े। पर फ़ैशनों के बदलने का एक कारण यह भी है कि एक ही चीज़ से लोगों का जी ऊब जाता है। साथ ही यह भी स्पष्ट है कि ढीली-ढाली लम्बी पोशाकों के बजाय प्रवृत्ति ऐसे कपड़ों की ओर है जिनसे चलने-फिरने में ज़्यादा आसानी हो। अब अंगों को छिपाने के बजाय उनको दिखाने की प्रवृत्ति भी है। फ़ैशन और कपड़ों का शौक अक्सर जीवन की निराशाओं और विषमताओं को सहने में भी मदद देता है।

फ़ैशन के आविष्कारक और पोशाक बनाने वाले भी विज्ञापनों के ज़रिये नये नये तर्ज़ चलाने की कोशिश करते हैं। नाइलान नकली रेशम आदि नई किस्म के कपड़ों के आविष्कार से भी कपड़े बनाने वालों का बड़ा लाभ हुआ है। नई डिज़ाइनों का प्रचार करने के लिए व्यापारी लोग खूबसूरत लड़कियों या माडलों

को नय-नय कपड़े पहनाकर दिखाते हैं। कागज की लड़कियाँ नई तर्जों के प्रयोग में सबसे आगे रहती हैं। कभी वे पुराने जमाने के फैशनों को फिर से चलाती हैं तो कभी फौजी सिपाहियों की टोपी पहनती हैं कभी आदिवासियों के मोकासिन या जूते तो कभी हिन्दुस्तानी ढंग की कैप।

मर्दों की पोशाक की स्थिति उलटी है। इनकी पोशाक की तर्ज नहीं बदलती। व्यापार धन्धे की पोशाक अब भी उसी नीले सलेटी या कत्थई रंग की होती है जैसी 50 वर्ष पहले होती थी। कारखाने या कारबार के मालिक और मैनेजर तथा क्लर्क के कपड़ों में भी कोई फर्क नहीं होता सिवा इसके कि मालिक का कपड़ा महंगे किस्म का होगा और जरा अच्छा सिला होगा। हाँ मेहनत मजदूरी करने वालों के कपड़े अवश्य भिन्न होते हैं। इसी प्रकार खिलाड़ी की पोशाक और पश्चिम हार्लेम के नीग्रो छैला के कपड़े हालीवुड के अभिनेता की पोशाक और पश्चिम के काउबॉय के लम्बे बूट और परात जैसी टोपी अवश्य अलग विशिष्टता रखती हैं। अमेरिका में ढीलापन और निकम्मपन को एक समझा जाता है इसलिए पैसा होने पर भी लोग कपड़ों में चोंचलेबाजी नहीं दिखाते। कोई युवक अधिक बने-ठने तो लोग उस पर अप्राकृतिक व्यभिचार का शक करने लगते हैं। किन्तु इधर हाल में मर्दाने कपड़ों में कुछ रंगीली और नवीनता लाने की प्रवृत्ति दिखाई पड़ी है। यह प्रवृत्ति भी मध्यम श्रेणी में है अमीर या ऊँची श्रेणी में नहीं। ऊँची श्रेणी और पद के लोग कपड़ों में चोंचलेबाजी और तड़क भड़क नहीं करते इसे वे लोग बुरा समझते हैं। चोंचला और फैशन वे अपनी स्त्रियों के ही लिए छोड़ देते हैं। क्योंकि स्त्रियों का मुख्य धन्धा पुरुषों को आकृष्ट करना और उनका दिल लगाए रहना है।

## 4. अमेरिकन चरित्र

हर समाज में कुछ खास नमूने के या टिपिकल चरित्र होते हैं। जैसे भारत में बाबू, मसाउनी पंडित, मारवाड़ी सेठ आदि। अमेरिका में भी ऐसे खास चरित्र हैं। इनमें एक है फिक्सर[1] या मामला बैठाने वाला। ये लोग हर मामले को बैठाने का जिम्मा लेते हैं। मोटर तेज चलाने के कारण आपका चालान हुआ तो इसका मामला ये करा देंगे। सरकार का कोई काम हुआ किसी की सिफारिश लानी हुई तो ये आपका काम करा देंगे। आपको कोई चीज मंगानी हुई तो थोक के भाव पर या कमीशन पर दिला देंगे।

इन्हीं से सम्बन्धित दूसरी श्रेणी के लोग होते हैं अन्दर की बात जानने वाले। चाहे वाल स्ट्रीट मार्केट हो चाहे राष्ट्रपति भवन ये सारी पूरी खबर रखने का दावा करते हैं ये सब भेद जानते हैं। साथ ही खुद ये किसी बात में विश्वास

1 Fixer

नहीं करते सब की मीन-मेख निकालते हैं।

तीसरे प्रकार के लोग होते हैं अलग रहने वाले। ये लोग किसी झगड़े या विवाद में नहीं पड़ना चाहते इसीलिए किसी बात का जिम्मा नहीं लेते। चौथे प्रकार के लोग समाज के साथ चलने वाले होते हैं। इनका सिद्धान्त है 'महाजनो येन गतः स पन्थाः' जो हवा बहती है ये उसी के साथ हो जाते हैं। ये किसी नई बात या विचार का स्वागत नहीं करते पर जब वह बात पुरानी पड़ जाती है या सब लोग उसे मानने लगते हैं, तब ये भी उसी की दुहाई देने लगते हैं। ये लोग परदेसियों और नवागंतुकों का विरोध करते हैं और बड़े जोरों से अमेरिकन संस्कृति की दुहाई देते हैं।

इन्हीं से मिलता-जुलता एक और प्रकार होता है बंधे हुए ढर्रे कानून कायदे से चलने वालों का। इनमें अधिकांश वर्दीधारी लोग होते हैं—पुलिस दमकल रेल हवाई जहाज डाकतार और सबसे बड़ा संगठन अमेरिकन सेना के आदमी। एक बंधी परिस्थिति में रहने और बंधे हुए ढर्रे से काम करने की इनकी आदत पड़ जाती है और ये लोग लकीर के फकीर बन जाते हैं यद्यपि इनमें भी सबसे ऊँचे पदों पर आसीन लोग अपनी स्वतन्त्र बुद्धि बनाए रखते हैं।

एक और प्रकार है ऊपर बढ़ने वालों का। इनमें काफी प्रतिभा और मौलिकता होती है पर ये लोग अपनी सारी शक्ति का प्रयोग ऊँचा स्थान पाने और वहाँ जमे रहने में करते हैं। अमरीकी समाज में उतार-चढ़ाव बराबर लगा रहता है इसलिए ये लोग अपनी स्थिति को सुरक्षित बनाने की कोशिश में लगे रहते हैं और सभा संस्थाओं में बहुत शामिल होते हैं क्योंकि इससे हैसियत और प्रतिष्ठा मिलती है।

ऊपर अमेरिकन चरित्र या व्यक्तित्व के जितने नमूने गिनाये गए हैं वे सब इस बात के द्योतक हैं कि अमेरिका में अन्य वस्तुओं की भाँति व्यक्तित्व भी बिक्री की चीज मानी जाती है जिससे पैसे खड़े किये जा सकें। वास्तव में उद्देश्य पैसा खड़ा करना उतना नहीं रहता जितना अपने व्यक्तित्व को माँजना। यदि किसी चीज की माँग है तो वह उपयोगी है और ऐसे व्यक्तित्व का ही मूल्य है।

अमेरिका में चरित्र के कुछ अवांछनीय प्रकार भी हैं जैसे प्रचारक या विज्ञापनबाज। प्रचार और विज्ञापन की कला को जितना आगे अमेरिका वाले ले गए उतना और कोई नहीं। इसलिए प्रचार की बाढ़ भी वहाँ बहुत है। अखबार में अपना नाम और चित्र देखकर अमेरिकावासी का दिल खिल उठता है। बहुत-से लोग इसीलिए किसी संस्था या संगठन के सदस्य बनते हैं कि कभी अपने संगठन के पदाधिकारी के रूप में किसी विदेशी मित्र के साथ उनकी तस्वीर खिंच जाए। प्रचार की प्रवृत्ति इतनी बढ़ गई है कि जीवन की बिलकुल

निजी बातों का भी विज्ञापन करने से लोग नहीं हिचकिचाते। आत्म विज्ञापन की इस प्रवृत्ति के कारण सार्वजनिक जीवन में ऊँचाई प्राप्त करने के बाद लोग अपनी जीवनी लिखते हैं जिसमें अपनी कमजोरियों को स्वीकार करने के साथ-साथ वे दूसरों का भी पर्दाफाश कर देते हैं। भंडा फोड़ने या पोल खोलने में अमेरिका वालों को बड़ा आनन्द मिलता है। अखबारों में इस प्रकार के कालम जिनमें समाज के प्रमुख लोगों की कमजोरियों या निजी बातों का भंडा-फोड़ किया जाता है लोग बड़े चाव से पढ़ते हैं। बड़े लोगों की दुर्बलता को देखकर जनसाधारण को यह तसल्ली होती है कि ये भी हमारे ही जैसे हैं। इसी प्रवृत्ति का एक और रूप है। कुछ लोगों को बराबर दूसरों का भय लगा रहता है। वे बराबर यही शंका करते हैं कि लोग हमारे पीछे पड़े हैं। इन लोगों को सब जगह पंचमांगी और षडयन्त्रकारी कम्युनिस्ट फासिस्ट, यहूदी उपद्रवी ही नजर आते हैं। डर और शंका से ग्रस्त होकर ये लोग दूसरों के पीछे पड़े रहते हैं और खोद-विनोद किया करते हैं। ये हुए अवांछनीय प्रकार।

एक और प्रकार है उन लोगों का जो समाज के अनुरूप बनने की कोशिश करते हैं और इसी का दूसरा रूप है विद्रोही या वह व्यक्ति जो समाज से अपना मेल नहीं मिला पाता। समाज के अनुरूप बनने की प्रवृत्ति का कारण पैसे या पद का लाभ नहीं बल्कि जीवन के आँधी-तूफानों से बचने के लिए समाज की आड़ ली जाती है। दूसरी ओर है विद्रोही कलाकार कवि लेखक या आदर्शवादी जो किसी प्रकार के अन्याय या अविचार को सहन नहीं करता जो किसी भी मूल्य पर अपने सिद्धान्तों या विचारों को छोड़ने को तैयार नहीं होता। ऐसा व्यक्ति या तो समाज से लड़ता है या अलग हटकर अपने विचारों और स्वप्नों को कला या साहित्य का रूप देता है।

एक और टाइप है जो अमेरिका का खास टाइप या नमूना है कर्मठ, बड़े कारखाने बड़े संगठन बड़ी इमारतें खड़ी करने वाला इंजीनियर और व्यापारी या सारी दुनिया का चक्कर लगाने वाला सब कामों में हाथ लगाने को तैयार जीवट का धनी, अमेरिकन शिल्पी, यंत्रज्ञ या विशेषज्ञ। इसको सबसे अधिक आनन्द ऐसे काम में आता है जिसमें कुछ कर दिखाने का मौका मिले।

इन सब विभिन्न और विविध प्रकार के व्यक्तियों को मिलाकर हम अमेरिकन चरित्र का एक रूप खड़ा कर सकते हैं।

5. समाज की विकृतियाँ[1]

प्रत्येक समाज की अपनी अलग ढंग की विकृतियाँ भी होती हैं। अमेरिका

---

1 Disorders

की विकृतियाँ यूरोप से भिन्न हैं। यूरोप में यदि ब्लैकमार्केट वेश्यावृत्ति और
हत्याओं का जोर है तो अमेरिका में रैकिट, कालगर्ल चोरी और ठगी का जोर
है पर सबसे अधिक चिन्ता का विषय छोटी उम्र के लड़कों में अपराध की
बढ़ती हुई प्रवृत्ति है। दूसरे विश्वयुद्ध के पहले 10 से 16 वर्ष की उम्र के अप
राधियों की अनुमानित संख्या 170 000 से 200,000 के बीच थी अर्थात् इस
उम्र की जनसंख्या का एक प्रतिशत। सन् 1950 के दशक के मध्य यह संख्या
383 000 यानी 2 प्रतिशत हो गई और इसमें यदि उन लड़कों को भी जोड़ दिया
जाए, जिनको पुलिस ने अपराध करते पकड़ा पर मुकदमा नहीं चलाया तो संख्या
करीब 10 लाख पहुँच जाएगी। फेडरल ब्यूरो (केन्द्रीय बाल अपराध
विभाग) का अनुमान है कि सन् 1963 में यह संख्या 15 लाख होगी। 15-16
वर्ष की उम्र सबसे खतरनाक होती है सबसे अधिक अपराध इसी उम्र में किये
जाते हैं। अपराधियों में लड़कों की संख्या लड़कियों से पंचगुनी होती है क्योंकि
लड़कियों पर निगरानी अधिक होती है। गाँवों से शहरों में अपराध अधिक
होते हैं यद्यपि गाँवों में भी यह प्रवृत्ति बढ़ रही है। यह भी उल्लेखनीय है कि
सबसे अधिक बाल-अपराधी नीग्रो व अन्य पिछड़ी जातियों के होते हैं जिनको
देश के जीवन में उचित स्थान नहीं मिल सका है। बाल-अपराध के मुख्य कारण
शहरों में अत्यधिक घनी और गंदी बस्तियाँ गरीबी परिवार का दूषित वाता
वरण अथवा माँ-बाप की शराबखोरी आदि हैं।

अन्य अपराधों में सबसे अधिक अपराध चोरी राहजनी मोटरों की चोरी
आदि हैं। इस शताब्दी के मध्य में इन अपराधों में शहरों में करीब 150 लाख
आदमी प्रतिवर्ष पकड़े गए, पर जेल की सजा 20 में से 1 को ही मिल पाई।
ठगी गबन जालसाजी व्यापार में धोखाधड़ी फर्जी शेयरों के बिक्री जैसे 'चार
सौ बीस' के अपराध भी अमेरिका की व्यापारी संस्कृति की विशेषता है। पर
अमेरिका की सबसे बड़ी विशेषता है रैकेट और सिंडिकेट। रैकेट अपराध संग-
ठित रूप में है जिसमें गुण्डे-बदमाश बाकायदा नाइट क्लबों होटलों दुकानदारों
कारखानेदारों मजदूर संगठनों ट्रक कम्पनियों आदि से कर वसूलते हैं और न
देने पर तोड़-फोड़ लूट और जान से मार तक देते हैं। सिंडिकेट अपराध का
व्यावसायिक संगठन है इसमें व्यापारी ढंग से जुआखाने मद्यघर और व्यभिचार
के अड्डे चलाए जाते हैं। एक झटके में धनी हो जाने की प्रवृत्ति अमेरिका में बड़ी
प्रबल है। अमेरिका में सहसा अमीर हो जाने की घटनाएँ इतनी अधिक हुई हैं
कि सभी लोग गहरा दाँव लगाने के फेर में रहते हैं। स्लाट मशीन लाटरी,
घुड़दौड़ घुड़सवारी मुक्केबाजी आदि खेलों पर दाँव लगाने और पालिसी म या
नम्बरों पर सट्टा लगाने में करोड़ों का वारा-न्यारा हो जाता है। रिजर्व बैंक
की दैनिक रिपोर्टों और अखबारों में हर रोज सरकारी बुलेटिनों के नम्बर निकलते

है। पालिसी या नम्बर के सट्टे में इस पर दाँव लगाया जाता है कि आज कौन से नम्बर निकलेंगे। शिकागो शहर के गरीब नीग्रो मोहल्लों में इस प्रकार के सट्टों से 5 करोड़ डालरों की आमदनी होती है। स्लाट मशीनों से सालाना आय 2 अरब डालर है। जुए के इन प्रकारों से कुल मिलाकर साल में 15 अरब डालर से कम की आय नहीं होती। इतनी अधिक आमदनी शायद रसायन व्यापार को छोड़कर और किसी व्यापार से नहीं होती। कानून की पकड़ से बचने के लिए अपराधों के ये संगठन और व्यवसाय राजनीतिक दलों के नेताओं पुलिस अधिकारियों मजदूर संगठनों आदि से साँठ-गाँठ रखते हैं और अक्सर व्यापारी कम्पनियों की आड़ में अपना पाप का धन्धा चलाते हैं। केफावर और मेक्लेलन जैसे सीनेट के मेम्बर और अन्य सार्वजनिक कार्यकर्ता आदि समय-समय पर इन भ्रष्टाचारों का भंडा-फोड़ भी करते रहते हैं। फलस्वरूप कुछ लोगों को कैद हो गई, कुछ पदाधिकारी और मजदूर नेता निकाले गए और जुए का व्यापार करनेवाली कम्पनियों पर कुछ के टैक्स लगाये गए पर इन सब के बावजूद अपराध संगठन और व्यवसाय ज्यों-का-त्यों कायम रहा। ऐसा लगता है कि इस अपराध संगठन की जड़ें अमरिका की जमीन में इतनी गहरी गई हैं कि कानून और शासन के हाथ उसे उखाड़ने में असमर्थ हैं। यह भी एक विडम्बना है कि इतने सभ्य और कानून के पाबन्द देश का शासन और समाज अपराध संगठनों के आगे हार मान ले और जो संस्कृति प्रकृति की शक्तियों को वश में कर सके वह एक मानवी विकृति के सामने इतनी असहाय हो।

जुए के समान शराब पीने की लत भी अमेरिका में बड़े जोरों पर है। शुरू-शुरू में जब इंग्लैण्ड और यूरोप के लोग अमेरिका में आए तो उनका जीवन बड़ा कठोर और संघर्षमय था। तब शराब पीना भी बहादुरी में शुमार किया जाता था। खासकर खानों में काम करने वाले, सड़क पर बसने वाले और बड़े-बड़े पशुओं का रेवड़ रखने वाले तो खूब डटकर पीते थे। यद्यपि अब सभ्यता का बहुत प्रसार हो गया है पर पीने की आदत कम नहीं हुई है। जीवन की दौड़ भाग-दौड़ फिक्र और तनाव से शराब क्षण भर को छुटकारा दिला देती है। पर अधिकांश अमेरिका में सार्वजनिक स्थानों में शराब पीने पर रोक है और लोग अपने घरों में या फिर छुपे छिपे ही पीते हैं। सबसे अधिक शराबखोरी पूर्वी भाग में पश्चिमी समुद्रीतट पर (कैलीफोर्निया में देश में सबसे अधिक शराबखोरी है) और टैक्सास जैसे नई समृद्धि वाले राज्यों में है।

रात के बाजारों सड़क की सरायों पब्लिक शराबघरों के अलावा घरों में भी बार चलते हैं। होटलों में शराबखोरी के साथ कामुकता का भी नग्न प्रदर्शन होता है। उत्तेजक संगीत और नग्न या अर्धनग्न सुन्दरियों का नाच यहाँ की खास चीजें हैं। सन् 1920 के बाद स्त्रियों पर से भी बन्धन हटे और उन्हें समा

गता और स्वतंत्रता मिली उन्होंने भी होटलों में बैठकर पीने लगीं। काकटेल पार्टियों का अमेरिका में उतना ही प्रचार है जितना ब्रिटेन या भारत में चाय पार्टियों का। शराब पर रोक लगाने का आन्दोलन चला है और शराबबंदी के प्रश्न ने पूरे अमेरिका को दो दलों में बाँट दिया है। अमेरिका के गृहयुद्ध ने भी देश में इतना गहरा मतभेद या विवाद नहीं पैदा किया था जितना शराबबंदी के प्रश्न ने। और आज जो अमेरिका में अपराध-संगठन रैकेट और सिंडिकेट चल रहे हैं, इनकी शुरुआत शराबबंदी के दिनों में शराब के अवैध व्यापार से ही हुई थी। बहुत अधिक लोग शराब के अवैध व्यापार को प्रोत्साहन देते थे और पुलिस के विरुद्ध इन अपराधियों को मदद देते थे।

अनुमान है कि अमेरिका में शराब पीने वालों की संख्या करीब 4-5 करोड़ है इनमें 20-25 लाख को पियक्कड़ों की संज्ञा दी जा सकती है और करीब 5 लाख गहरे पियक्कड़ हैं। पीने की आदत छुड़ाने के लिए पियक्कड़ों ने अपने अलग दल बना रखे हैं जिनका नाम है अलकाहलिक्स अनानीमस[1] (गुमनाम पियक्कड़) इनके सदस्य एक-दूसरे को शराब की लत छोड़ने में सहायता देते हैं।

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद अफ़ीम या चरस पीने की लत भी बहुत बढ़ गई और इसके साथ अफ़ीम का अवैध व्यापार भी बढ़ा। अफ़ीमचियों की संख्या करीब 50-60 हजार है, जिनमें करीब 10-15 हजार बीस वर्ष की उम्र के हैं और अधिकांश शहरों के खासकर नीग्रो जाति के हैं।

शराबखोरी और अफ़ीमबाज़ी के साथ वेश्यावृत्ति गर्भपात अप्राकृतिक व्यभिचार और बच्चों से दुराचार-जैसी बुराइयों का भी उल्लेख किया जा सकता है।

इन बुराइयों और अपराधों पर अमरिका में कम चिन्ता नहीं है। यह सरासर गलत कि आज के ये भोले-भाले बच्चे या स्त्रियाँ कल बड़े होकर शराब खोर गुण्डे व्यभिचारी वेश्या और अपराधी बनेंगे हमारे युवक शराब की लत के शिकार बरबाद होंगे पर बिगड़ जाएँगे तलाक होंगे पागलखाने में जाएँगे या आत्महत्या करेंगे अमेरिका वाले चर्चा करते हैं। कितने तो समझते हैं कि ये अपराध शराबखोरी और दुराचार अमेरिकन सभ्यता को सर्वनाश की ओर ले जा रहे हैं।

पर एक दृष्टि से देखें तो कुछ हद तक अपराध की यह प्रवृत्ति भी अमरिकन के जोश और उद्यम की प्रवृत्ति से ही पैदा हुई है। अमेरिकावासियों को मारधाड़ की फिल्में देखने और कहानी पढ़ने में क्यों मज़ा आता है? इसलिए कि मार धाड़ करने वाले गैंगस्टर[2] में भी जोश और साहस है जो अमरिकन स्वभाव का

1 Alcoholics Anonymous.
2 Gangster

मूलमंत्र है। अपराध के संगठन और सिंडिकेट भी गहरा दाँव मारने और जल्दी-से-जल्दी रुपया कमाने की प्रवृत्ति के द्योतक हैं। ये अपराधी देखते हैं कि शेयर बाजार में हेरा-फेरी से या चतुरता और बेईमानी से लोग रातों-रात करोड़पति हो जाते हैं तो हम भी क्यों चूकें? अमेरिका के समाज का आधार है पैसा और पैसा जोड़ने की स्वतन्त्रता। अपराधी संगठन भी इसी प्रवृत्ति से प्रेरित होकर बनते हैं।

अफ़ीम के अवैध व्यापार को ही लीजिए। चोरी से अफ़ीम बेचने वालों को कच्ची उम्र के लड़के-लड़कियों को यह सत्यानाशी लत लगाते हिचक नहीं होती। आखिर वे भी तो अन्य व्यापारियों की भाँति अपने ग्राहक तैयार कर रहे हैं। जिस तरह व्यापारी मुनाफ़ा कमाने में उचित-अनुचित का विचार नहीं करता उसी तरह अपराध के ये व्यापारी भी किसी प्रकार का विचार नहीं करते। अधिकांश अपराध-व्यापारी और गुण्डा-संगठन के सरदार यहूदी आयरिश इटालियन आदि अत्यन्त गरीब तबके से आते हैं। अपराधों के ये संगठन भी अधिकतर उद्योग-व्यापार के नये केन्द्रों में बनते हैं जहाँ कानून और व्यवस्था जम नहीं पाई है। अपराधों की बाढ़ भी यूरोप से नये बसने वालों की बाढ़ के साथ आती है या सामाजिक परिवर्तनों नये उपायों के विकास के साथ। कारण यह है कि यूरोप या अन्य देशों से उखड़कर जो लोग अमेरिका आते हैं उन्हें यहाँ बिलकुल नये प्रकार का वातावरण मिलता है। भारी और गहरी स्पर्धा और छीना झपटी सभी मिलती है। फलतः वे भी बहती गंगा में हाथ धोने लगते हैं।

नीग्रो समाज में अफ़ीम कोकीन चरस आदि पीने की लत सबसे ज्यादा फैली है। इसका कारण गरीबी पिछड़ापन सामाजिक विशृंखलता बताया जाता है परन्तु वास्तविक कारण यह है कि नीग्रो को कल-कारखानों में मजदूरी से अच्छी कमाई हो जाती है पर सामाजिक और नैतिक आदर्श और परम्परा उनके सामने है नहीं इसलिए वे बुरी लत में पैसा फूँकते हैं।

असल में खतरा अपराधों और चोरबाज़ारी में उतना नहीं है क्योंकि इसकी प्रतिक्रिया में समाज का अन्तःकरण भी जागृत हुआ है। असल खतरा आस्था और विश्वास के अभाव में है। अपराधी लोग तो फिर भी शक्ति और सम्पत्ति में विश्वास करते हैं पर जब मनुष्य सब चीज़ों में विश्वास खो देता है तभी व्यक्तित्व टूट जाता है और समाज का भी पतन होता है।

## 6 आचरण और नैतिकता

प्रारम्भ से ही अमरीकन समाज नैतिकता को बहुत महत्त्व देता आया है। सन् 1920 में नई पीढ़ी के आचरण में जो क्रान्ति हुई सिगरेट और शराब पीने और लड़के-लड़कियों के स्वतन्त्रतापूर्वक मिलने और सहवास करने की जो

बाढ़ आई उस पर अमेरिका के पुरातनपंथी लोग बहुत ही चिन्तित हो उठे। उन्हें ऐसा लगा कि समाज की नींव बह रही है। फलतः इस उच्छृंखलता के विरुद्ध आवाज भी उठी और कानूनी कार्रवाई की माँग हुई। 19वीं सदी में लोगों में धैर्य और ईश्वर में भक्ति थी और अनैतिकता का मुकाबला धैर्य से किया जाता था। पर बाद में धर्म में आस्था घटने लगी फलतः नीति का आधार धार्मिक के बजाय लौकिक हो गया और अनाचार को मिटाने के लिए कानून का सहारा लिया जाने लगा।

उदाहरण के लिए गन्दी फिल्मों और किताबों पर सरकारी सेन्सर बिठाए गए। इसके अलावा कैथोलिक पादरी और कुछ अन्य गैर-सरकारी संस्थाएँ भी गन्दी किताबों और चित्रों पर नजर रखती हैं और आन्दोलनों के द्वारा प्रकाशकों को गन्दी किताबें वापस लेने को बाध्य करती हैं। पर नैतिकतावादी अनाचार की बाढ़ रोकने में कभी सफल न हो सके। पिछली सदी में लिपस्टिक लगाने सिगरेट पीने और थिएटर देखने का भी विरोध करते थे परन्तु अब इन्हें कोई बुरा नहीं समझते। पर सुधारकों या नैतिकवादियों की सबसे बड़ी हार शराबबन्दी के जमाने में हुई। बीसों साल के आन्दोलन के फलस्वरूप सुधारक लोग अमेरिका में शराब पर कानूनी रोक लगाने में सफल तो हुए, पर शराबबन्दी लागू होते ही अपराधों की बाढ़ आ गई। चोरी से शराब बनाने और बेचने का रोजगार जोरों से चल पड़ा। इसके कारण गुण्डे-बदमाशों की संख्या बढ़ी पुलिस और अदालत में भ्रष्टाचार बढ़ा राजनीति में भी बदमाशों और अपराधियों का प्रवेश हुआ राजनीतिक नेताओं और अपराध-संगठनों में साँठ-गाँठ होने लगी। फलस्वरूप अमेरिका वालों की समझ में आ गया कि केवल कानून के द्वारा सुधार नहीं किया जा सकता।

वास्तव में सभी देशों में कानून का कुछ हद तक उल्लंघन होता है। इंग्लैण्ड में पुराने जमाने के बहुत-से कानून अभी भी चल आ रहे हैं जिनका कोई पालन नहीं करता और जिनकी किसी को याद भी नहीं रही। अमेरिका में भी विवाह और स्त्री-पुरुष के अवैध सहवास सम्बन्धी कानूनों और नियमों का व्यापक रूप से उल्लंघन होता है। इसी प्रकार व्यापार के नाम पर अनेक प्रकार के रैकेट या चार-सौ-बीस चलते हैं। केफावर कमेटी के सामने एक मशहूर बदमाश विली मोरेती ने यहाँ तक कहा कि आप हमारे काम को तो अपराध कहते हैं पर सट्टा-बाजार में क्या होता है? किसी भी तरीके से रुपया कमाने पर कोई कानूनी रोक न होनी चाहिए।

टैक्स सम्बन्धी कानूनों के उल्लंघन का सबसे प्रचलित रूप एक्सपेन्स अका-उण्ट यानी व्यापार-खर्च की मद है। व्यापार-खर्च के नाम पर शराब की पार्टियाँ दी जाती हैं और नाइट (रात्रि) क्लबों में मौज की जाती है। कानूनन

इस प्रकार सरकारी टैक्स को दबाने पर क़ैद और जुर्माने की सज़ा हो सकती
है फिर भी यह धूमधाम चलता है। इसी प्रकार व्यापार में मोनोपली या
एकाधिकार के खिलाफ़ भी क़ानून है पर इसका भी उल्लंघन होता है। मज़दूर
और व्यवसाय संगठनों में भी बेइमानी और भ्रष्टाचार फैला हुआ है। शिक्षा
संस्थाएँ भी भ्रष्टाचार से बरी नहीं हैं। बास्केटबाल के मिले हुए मैच मिली
कुश्ती और इम्तिहान में नक़ल और बेइमानी इसके उदाहरण हैं। फिर भी
अपराध और बेइमानी में फ़र्क़ है। बेइमानी क़ानून की निगाह बचाकर की
जाती है और अपराध क़ानून को तोड़कर। उल्लंघन होने पर भी नियम-क़ानून
समाज के अन्तःकरण के प्रतीक हैं।

अमेरिकन समाज म जिस प्रकार नैतिकता और सुधार की प्रवृत्ति है उसी
प्रकार व्यक्तिवाद की। और शुरू से ही अमेरिका में ऐसे अनेक स्त्री-पुरुष रहे
हैं जिन्होंने समाज के नियमों को मनुष्य की सहज-प्रवृत्ति के विरुद्ध समझकर
उन्हें मानने से इनकार किया है। प्रसिद्ध लेखक मार्क ट्वेन की उक्ति है—
"हमारे सामाजिक नियम नकली हैं वे हमारी स्वाभाविक सहज स्वस्थ प्रवृत्तियों
को दबाने के लिए बनाये गए हैं।" दूसरी ओर ईसाई नीतिवादियों का ख्याल है
कि मनुष्य प्रकृति से पापी है इसलिए इस सहज पाप प्रवृत्ति को दबाना
आवश्यक है। इस प्रकार अमेरिका में शुरू स ही सहज स्वच्छन्दतावादी और
सुधारवादियों में द्वन्द्व रहा है।

प्रसिद्ध फ्रांसीसी विचारक डि टॉकविल ने सन् 1830 में ही कहा था कि
अमेरिका में नैतिक बन्धन बहुत कठोर हैं पर एक बार य टूटे तो फिर इनका
पुनः स्थापित होना कठिन हो जाएगा क्योंकि समानता की लहर छोटे और
बड़ों को एक कर देगी और फिर छोटे आदमियों का जो नैतिक स्तर है वही
पूरे समाज का स्तर बन जाएगा। बहुत हद तक डि टॉकविले की बात ठीक है।
अमेरिका में नैतिकता का जो स्तर या आदर्श प्रतिष्ठित हुआ वह उन साधा
रण मध्य वर्ग के गृहस्थों का था जो शुरू में अमेरिका में आकर बसे थे। ये
लोग कट्टर रूढ़िवादी थे और आँख मूँदकर बाइबिल का अक्षर-अक्षर मानते
थे। भोग-विलास शराब-चोरी दुराचार को हराम समझते थे। जीवन को
कठोर तपस्या शैतानी शक्तियों, प्रलोभनों के विरुद्ध अविराम संघर्ष मानते थे।
कल-कारखानों के विकास से अमेरिका में एक नये खुशहाल मध्यम वर्ग की
सृष्टि हुई जो नीचे से उठा था और जो जीवन का मज़ा लूटना चाहता था।
इसने पुराने कट्टरपन्थी नैतिक आचार को अस्वीकार तो नहीं किया किन्तु
व्यवहार में उसकी पूरी उपेक्षा की। निदान आज शराब, जुआ और व्यभिचार
को बुरा समझते हुए भी व्यवहार में साधारण अमेरिकन खुलकर इनका स्वाद
लेते हैं। औरत-मर्द दोनों छककर भी पी सकते हैं बशर्ते वे होश-हवास न खो

दें। जुआ खेलना भी बुरा नहीं, हाँ हारने पर पैसा जरूर चुका देना चाहिए। विवाह के पहले लड़की किसी लड़के से मिले-जुले और सम्भोग भी कर ले तो बुरा नहीं, यदि बदनामी न फैले या अन्त में उस लड़के से ब्याह हो जाए। पति-पत्नी भी पर स्त्री या पर-पुरुष से प्रेम और शारीरिक सम्बन्ध तक भी कर सकते हैं बशर्ते इसमें घर टूटने की नौबत न आए या तलाक के बाद फिर ब्याह हो जाए। वास्तव में अमेरिका की पुरानी नैतिकता अब पुरानी (आउट ऑफडेट) पड़ गई है पर नई नैतिकता अभी स्थापित नहीं हो सकी। इसलिए इस समय अमेरिका नैतिकता के संक्रान्तिकाल में से गुजर रहा है।

जहाँ तक व्यापक भ्रष्टाचार का सवाल है यह बात याद रखनी चाहिए कि जब समाज के सबसे ऊँचे वर्ग में भ्रष्टाचार की प्रतिष्ठा है तब छोटे लोगों से शुद्ध रहने की आशा नहीं की जा सकती। जब लोग देखते हैं कि छोटी मोटी चोरी करने पर तो जेल हो जाती है पर पैसे के जोर पर लोग सरकारी कर की करोड़ों की रकम हड़प करके बैठ जाते हैं या व्यापार में लाखों का हेर-फेर कर देते हैं, शासन और विधान-सभाओं को भी प्रभावित करके अपने मतलब के काम करवा लेते हैं तो उनको सत्य और ईमान पर कैसे श्रद्धा हो सकती है? बड़े व्यापारी मजदूर संगठनों और सरकारी अफसरी में भ्रष्टाचार की शिकायत करते हैं पर ये भूल जाते हैं कि इस भ्रष्टाचार में वे भी शामिल हैं। अमेरिका में पिछले सौ वर्ष में एक-से-एक बड़े-बड़े सार्वजनिक गोलमाल प्रकाश में आ चुके हैं। सन् 1860 के गृहयुद्ध में रद्दी बन्दूकों की सप्लाई से लेकर स्पेनिश युद्ध में सड़े हुए मांस, सन् 1920 में टीपाट डोम[1] का गोलमाल और सन् 1955-56 में प्राकृतिक गैस के भ्रष्टाचार इसके उदाहरण हैं। इस प्रकार के वातावरण में नैतिकता कैसे पनप सकती है? वास्तव में अमेरिका का मूल मंत्र पैसा है। यहाँ सफलता, शक्ति और ऐश्वर्य की प्रतिष्ठा है, शुद्धता और त्याग को यहाँ कौन पूछता है। बचपन से ही लड़का घर में टेलीविजन में, स्कूल में और समाज में येन-केन प्रकारेण सफलता पाने का ही पाठ पढ़ता है। यहाँ साधन की पवित्रता पर कोई ध्यान नहीं देता, सारा जोर साध्य पर है और साध्य है—धन और शक्ति। फिर भी नैतिकता यहाँ से एकदम नहीं मिट गई है। छोटी जगहों में वह अब भी बनी है। लड़ाई के दिनों में कई ऐसे नौजवान सिपाही ऐसे थे जिन्होंने पूरी छूट होने पर भी दुराचार नहीं किया। पर यह बात भी सच है कि छोटी जगहों से नित्य हजारों की तादाद में लड़के-लड़कियाँ बड़े शहरों में काम-काज के लिए आते हैं और वहाँ आकर नैतिकता के बन्धनों को तोड़ फेंकते हैं।

1 Teapot Dome

फन[1] अर्थात मजा लूटना इस समय अमेरिका में जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य है। बड़े लोग तो सदा से ही मजा लेते आए हैं पर अब अमेरिका में साधारण और मध्य वर्ग के बहुसंख्यक लोगों को भी मजा उठाने की सुविधा और साधन मिल गए हैं। मजा लेने की इस प्रवृत्ति के जोर पकड़ने का एक कारण यह भी है कि वहाँ पहले लोग परलोक को अधिक महत्त्व देते थे और इस जीवन को उसकी तैयारी का साधन मात्र मानते थे वहाँ आज का आदमी इहलोक को ही सब कुछ मानता है परलोक में वह विश्वास नहीं करता। वह तो यह मानता है—मौज से दुनिया को गाफिल जिन्दगानी फिर कहाँ ?

मजा लेने में सब कुछ आ जाता है—प्रेमियों की मुलाकात चुम्बन-आलिंगन मोटर की सैर आधी रात के क्लबों की मौज लेने और जुआ-व्यभिचार-जैसे अनैतिक काम भी। वास्तव में मौज लेने की चाह इतनी प्रबल हो गई है कि बहुधा मौज का भी मजा जाता रहता है। ऐसा प्रतीत होता है कि अमेरिका में प्रत्यक्ष नई पीढ़ी मौज और मजे के माध्यम द्वारा जीवन के अर्थ को खोजती है। वह अनैतिकता की आवश्यकता को अस्वीकार नहीं करती पर पुराने नैतिक मानदण्ड उसे सन्तोष नहीं दे पाते। वह नये आचार और नई नैतिकता की खोज में है और यही बात आशा बँधाती है। जो लोग अमेरिका में प्रचलित अनैतिकता या अनाचार को अमेरिकन समाज और संस्कृति के नाश की निशानी समझते हैं वे गलती करते हैं। वास्तव में वह जीवन के लिए प्रयोग और नये नैतिक मान की खोज है। आज अमेरिका में व्यक्ति को जितनी स्वतन्त्रता है उतनी कभी नहीं थी। अभी वह इस स्वतन्त्रता का सामाजिक नियमों और नैतिकता से मेल नहीं बिठा पाया है पर वह प्रयत्न इसी दिशा में कर रहा है।

7 अमेरिकन समाज में सेक्स

सभी समाजों में सेक्स या यौन-सम्बन्ध के नियम हैं। अमेरिकन समाजों में और बातों में तो बहुत स्वतंत्रता है पर सेक्स के मामले में काफी कड़ाई बरती जाती है। अमेरिकन लड़कों को घूमने-फिरने सिनेमा सैर-सपाटे आदि में तो बहुत स्वतंत्रता मिली हुई है पर यौन-सम्बन्ध में उन पर कड़ी निगरानी और बंधन रहता है। युवक से भी काम धन्धे और जीवन के अन्य विषयों में साहस से काम लेने और अच्छे-बुरे का विचार न करने की आशा की जाती है परन्तु सेक्स के मामलों में उसे भी सीमा के अन्दर रहना पड़ता है। विवाह के अतिरिक्त यहाँ यौन सम्बन्ध की इजाजत नहीं है।

सयाने होने पर लड़के और लड़की में यौन भावना जागृत होती है। पहली लड़ाई से पहले इस भावना का दमन करना पड़ता था पर सन् 1010 के बाद

1 Fun

संयम के बंधन ढीले पड़ गए। सैक्स के मामले में भी स्त्री को पुरुष के बराबर स्वतंत्रता मिल गई, फलतः इस विषय में काफ़ी स्वेच्छाचार फैला और उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया है। परन्तु आज भी यह भाव नहीं मिटा कि यौन स्वेच्छाचार पाप है या बुरा काम है।

सैक्स का व्यापार अमेरिका में आज खुले आम भी चलता है और छुपे छिपे भी। औरतों की नंगी टाँगों और छातियों का प्रदर्शन कलेण्डरों विज्ञापनों सिनेमा के इश्तहारों में सर्वत्र खुलकर होता है। हज़ार वर्ष बाद कोई इतिहासकार अमेरिका के किसी पुराने नगर के खण्डहरों को खोदकर निकाले तो उसे सर्वत्र औरत की टाँगों और छातियों के चित्रों की भरमार ही मिलेगी। यू॰ पी॰ और अमेरिका की फ़िल्मों म औरतों का नंगा चित्रण करने पर कड़ी रोक है। फिर भी फ़िल्मों मे नायिका के बाथ-टब में स्नान करने के दृश्य दिखाने और इसका विज्ञापन करने में लाखों रुपए फूंक दिये जाते हैं। अमेरिका में सैक्स या यौन स्वेच्छाचार की निंदा और भर्त्सना वामपंथी और पुरातन पंथी दोनों करते हैं। वामपंथी इस नगी शृंगारिकता को पूंजीवाद का अभिशाप बताते हैं तो दक्षिण पंथी कहते हैं कि यह आध्यात्मिकता की उपेक्षा और भौतिक सम्पत्ति को अत्यधिक ज़ोर देने का नतीजा है।

अमेरिका म स्त्री-पुरुष के यौनाचार का अध्ययन करके अल्फ ड सी॰ किंसे ने दो पुस्तकें लिखी हैं— अमेरिकन पुरुष का यौन व्यवहार और अमेरिकन स्त्री का यौन व्यवहार।[1] इन पुस्तकों ने बहुत प्रसिद्धि पाई है। इनमे किंसे और उनके सहायकों ने हजारों स्त्री पुरुषों से उनके यौन जीवन क बारे मे प्रश्न करके उनके तथ्य और आंकड़े दिए हैं। इन पुस्तकों की बहुत चर्चा और आलोचना हुई है पर इनसे बहुत-सी नई बातों का भी पता चला है। किंसे के अध्ययन से यह पता चलता है कि 17 18 वर्ष की उम्र म अमरीकन पुरुष में काम-शक्ति पूरी तरह विकसित हो जाती है जब कि स्त्री का यौन विकास धीमा होता है। स्त्री में काम की पूर्णता क़रीब 30 वर्ष की आयु में पहुंचती है उसके बाद वह 50-56 तक उसी तरह बनी रहती है। पुरुष में काम भाव का विकास और तीव्रता से होता है पर विराम भी उतनी ही तेज़ी से होता है। किंसे के अध्ययन से यह भी पता चला कि विवाह मे पहले संभोग और विवाह के बाद पर-स्त्री या पुरुष से सम्बन्ध काफ़ी प्रचलित है। पुरुष का पुरुष से यौन सम्बन्ध —बहुत-प्रेम भी काफ़ी चलता है। क़रीब 15,000 स्त्री-पुरुषों से बातचीत के बाद किंसे इस नतीजे पर पहुंचे कि संभोग या काम व्यापार की बातों या वर्णन से पुरुष को जितनी मानसिक उत्तेजना होती है उतनी स्त्री को नहीं।

---

[1] (i) Sexual Behavior in the Human Male and (ii) Sexual Behavior in the Human Female

किंसे की जाँच से यह भी पता चलता है कि पुरुष का यौन व्यवहार उसकी सामाजिक स्थिति और शिक्षा पर बहुत निर्भर है। सबसे अधिक यौन शक्ति या कामुकता निम्न मध्यम श्रेणी के उन पुरुषों में मिली जो हाई स्कूल से आगे नहीं बढ़े। कालेज जाने वाले पुरुषों में कामाचार सबसे कम है। पर काम सम्बन्ध या संभोग की अधिकता से ज्यादा महत्व काम व्यवहार के ढंग का है। पैटिंग[1] अर्थात् आलिंगन और अंगस्पर्श हाई स्कूल या कालेज कक्षा में शुरू होता है। संभोग हाई स्कूल कक्षाओं में अधिक और कालेज में कम पाया गया। ममता और चुम्बन कालेज कक्षाओं में सबसे अधिक प्रचलित है स्कूलों की कक्षा के लड़के-लड़की इससे कुछ हिचकते पाये गए। छोटी श्रेणियों में शुरू में तो स्वेच्छाचार की प्रवृत्ति अधिक होती है पर विवाह के बाद स्त्री-पुरुष धीमे-धीमे व्यभिचार से विमुख हो जाते हैं जब कि ऊँची श्रेणियों में विवाहित स्त्री-पुरुषों में व्यभिचार की प्रवृत्ति अधिक है।

स्त्रियों के यौन व्यवहार पर उनकी सामाजिक स्थिति अमीरी या ग़रीबी का उतना प्रभाव नहीं दिखाई पड़ा जितना इसका कि वे किस पीढ़ी में पैदा हुई। पहले विश्वयुद्ध के बाद जो स्त्रियों की पीढ़ी आई उसमें स्वच्छंदता पैटिंग और विवाह के पहले पुरुषों से मिलना-जुलना बहुत अधिक बढ़ गया। इसके बाद प्रत्येक पीढ़ी में स्त्रियों की कामाचार की स्वतन्त्रता बराबर बढ़ती हो गई है। एक परिवर्तन यह भी देखने में आया कि जहाँ पहले अधेड़ वय हो जाने के बाद लोग कामाचार और यौन सम्बन्ध कम करने लगते थे वहाँ अब इस पर जोर दिया जाता है कि यह उम्र कामाचार के लिए अधिक भी उपयुक्त है।

पर कामाचार की स्वतंत्रता बढ़ने के साथ इस विषय के नियम—कानूनों में कोई ढिलाई नहीं आई। ईसाई धर्म का रुख सैक्स के मामलों में जैसा कट्टर पहले था वैसा अब भी है। मसलन अपने ही लिंग के व्यक्ति से यौन सम्बन्ध का मनोवैज्ञानिक कारण पहले से अधिक समझा जाने लगा है फिर भी इसके लिए कानून में जैसे कड़े दंड निहित हैं उनमें कोई ढिलाई नहीं की गई है। सन् 1950 के करीब शासन और सार्वजनिक जीवन के ऊँचे पदों पर स्थित कुछ व्यक्तियों पर अप्राकृतिक मैथुनाचार अर्थात् लौंडेबाजी के आरोप किये गए। इसके फलस्वरूप अप्राकृतिक व्यभिचार या इस प्रकार की यौन विकृति के बारे में काफ़ी चर्चा हुई। कुछ लोगों का ख्याल है कि यह प्रवृत्ति पहले से बढ़ी है और इसका कारण पारिवारिक और सामाजिक जीवन का सुखी न होना है। कुछ लोगों का कहना है कि यदि दो पुरुष आपस में इस प्रकार का सम्बन्ध रखते हैं तो उन्हें रहने देना चाहिए, जब तक वे समाज को कोई हानि न पहुँचावें

1 Petting

उन्हें सजा देने या उनको तंग करने की जरूरत नहीं। कुछ लोगों का कहना है कि इस प्रकार का समलिंगी सहवास मानसिक विकृति का द्योतक है और इन लोगों का मनोविश्लेषण करना चाहिए और यह आदत छुड़ानी चाहिए, इनको समाज में कदापि फैलने न देना चाहिए, पर ऐसे लोगों से सहानुभूति से पेश आना चाहिए उन पर अत्याचार न करना चाहिए।

गर्भ-निरोध के उपकरणों का भी यौनाचार की स्वच्छंदता से काफ़ी सम्बन्ध है। सन् 1920 तक इनकी बिक्री पर कानूनी रोक थी पर अब इनका खूब प्रचार है। मूलतः इनका उपयोग दम्पति कम बच्चे या देर-देर से बच्चे पैदा करने के लिए करते हैं पर अविवाहित लोग भी अपनी काम-वासना तुष्ट करने के लिए इनका खुलकर इस्तेमाल करते हैं। गुप्त रोगों की अचूक दवा निकल आने से भी कामाचार को बढ़ावा मिला है। यद्यपि अमेरिका में वेश्यावृत्ति की प्रथा नहीं है दालमंडी या चावड़ी-जैसे वेश्याओं के कोठे नहीं होते पर इनके स्थान पर होटलों में काल-गर्ल[1] होती हैं जिनको फोन से बुलाया जा सकता है या बी-गर्ल[2] होती हैं जो कोई नौकरी या काम धन्धा करती हैं ऊपरी आमदनी के लिए, बाहर से आने वाले व्यापारियों और सैलानियों को भी खुश करने को तैयार रहती हैं। इनके अलावा लोग रखैल भी रखते हैं।

पर पैसा लेकर या देकर शरीर बेचने और खरीदने से कहीं अधिक संख्या शौक से व्यभिचार करने वालों की है। फ्रांस में व्यभिचार और पर-स्त्री गमन अधिकतर बड़े लोगों में प्रचलित था जबकि अमेरिका में समाज की सब श्रेणियों में यह व्यापक रूप से फैला है जो कि उच्चशिक्षितों[3] में कुछ अधिक है। हालीवुड का फिल्म-जगत् तो उन्मुक्त कामाचार के लिए बदनाम है ही पर व्यापारियों और सभ्य पेशों में भी यह कम नहीं है। स्त्री पुरुष के सहवास और मिलने-जुलने की छूट इतनी अधिक है कि वेश्याओं और रखैलों का सहारा लेने की जरूरत नहीं रही और इस स्वेच्छाचार में [illegible] पड़ा है। आधुनिक उपन्यासों में तो स्त्री पुरुष की चुनौती ऐसी दिखाई जाती है कि रतिक्रिया में क्रोध टपका पड़ता है।

किशोर वय के लड़के-लड़कियों में काम-वृत्ति का विकास और उत्तेजनीय है। बचपन से ही अमेरिका में लड़के-लड़कियाँ भोग विलास और कामुकता के वातावरण में रहते हैं। सिनेमा टेलीविजन पत्र पत्रिका नाच-गाना सब काम वासना को ही उत्तेजित करते हैं। नतीजा यह होता है कि सयाने होते-होते

---

1 Call-girl

2 B-girl.

3 Upper-cultured

लड़के-लड़की रति का स्वाद लेने को आतुर हो जाते हैं। 12-13 वर्ष की उम्र से ही पेटिंग अर्थात् अंगस्पर्श—आलिंगन शुरू हो जाता है। हाई स्कूल की लड़कियों के व्यभिचार कर्मों और रतिक्रीड़ा के क़िस्से अख़बारों में सनसनीख़ेज शीर्षकों में छपते हैं। बड़ा होहल्ला भी मचता है, सुधार की कोशिश भी की जाती है। नाबालिग अपराधियों को सुधार-स्कूलों और सुधार घरों में भी भेजा जाता है। नाबालिग लड़कियों से व्यभिचार करने वालों को कानूनन बलात्कार की सजा दी जा सकती है और अक्सर दी भी जाती है फिर भी स्थिति में कोई सुधार नहीं नज़र आता। किंसे का अनुमान है कि क़रीब 80 प्रतिशत अमरीकन मर्दों को दुराचार के लिए सज़ा दी जा सकती है। फिर भी किंसे को इस व्यापक कामाचार से कोई परेशानी नहीं होती। उसका कहना है कि संयम-नियम के पुराने दकियानूसी बन्धनों को हटा दिया जाए और काम या रति की प्रवृत्ति को दमन और अवरुद्ध न किया जाए तो यह लुका-छिपी ख़तम हो जाए और स्थिति सुधर जाए।

वास्तव में कट्टर ईसाई धर्म में स्त्री पुरुष के सहवास पर कड़ा प्रतिबंध है। बाइबिल के अनुसार केवल सन्तानोत्पत्ति के ही लिए संभोग किया जा सकता है सुख या कामवासना पूरी करने के लिए नहीं। अमेरिका के क़ानून और नैतिक नियम इसी सिद्धान्त पर बने हैं। इस कठोरता की प्रतिक्रिया ही हमें अमरीका की वर्तमान स्वच्छन्दता में दीख पड़ती है। पर इस स्वेच्छाचार की बाढ़ भी अब थम रही है। स्वस्थ यौन और काम-व्यवहार पर तो रोक अब चल नहीं सकती न रतिक्रिया और स्त्री-पुरुष सम्बन्ध को पाप या बुरा काम माना जा सकता है। सुख के लिए स्त्री-पुरुष रतिक्रीड़ा करें तो इसमें कुछ भी अनुचित नहीं है यह विचार अमरीका में अब आम तौर पर प्रचलित है। जिस प्रकार व्यक्ति के विकास या सफलता के लिए व्यवसाय और काम-धंधे में सफलता आवश्यक है उसी प्रकार काम-सम्बन्ध में भी। इस प्रकार यौनाचार या सैक्स के मामले में संतुलन की प्रवृत्ति दिखाई पड़ने लगी है।

### 8 जीवन का ध्येय और आनन्द की खोज

अमेरिका में जीवन का ध्येय और प्रयोजन क्या समझा जाता है? स्कूली किताबों से लेकर समाज-शास्त्र के ग्रन्थों में सब जगह स्वतन्त्रता समता स्पर्धा मितव्ययता ईमानदारी वफ़ादारी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और व्यावहारिकता को अमेरिका के ख़ास गुणों में गिनाया गया है। परन्तु वास्तव में अमरीकन नर नारी को प्रेरणा इस विश्वास से मिलती है कि आदमी में पुरुषार्थ हो तो वह जो चाहे सो कर सकता है। इसलिए अमेरिकी अपने जीवन से बहुत अधिक आशा करता है और यदि उसकी आशा पूरी नहीं होती तो उसे बहुत गहरा धक्का

सकता है।

अमेरिका में जीवन के पांच मुख्य लक्ष्य हैं सफलता प्रतिष्ठा पैसा अधिकार या शक्ति तथा प्राप्त धन या अधिकार की रक्षा। एक तरह से एक ही शब्द में यानी सफलता में ये सब आ जाते हैं। सफलता को जीवन का चरम लक्ष्य माननेवाले समाज में मनुष्य का सम्मान इस बात के लिए नहीं किया जाता कि वह क्या है बल्कि इसलिए किया जाता है कि उसने क्या किया है। क्योंकि सफलता की माप इससे नहीं होती कि आदमी क्या कर सकता है बल्कि इससे होती है कि उसने क्या कर दिखाया है।

इसलिए अमेरिकी सफलता की पूजा करते हैं और कल्पना में समय नहीं गंवाते। यहाँ उस लेखक की इज्जत है जिसकी किताब सबसे ज्यादा बिके उस राजनीतिज्ञ की इज्जत है जो हजारों वोटों से जीते उस व्यापारी की पूछ है जिसका हाथ लगते मिट्टी सोना हो जाए उस सटोरिये का नाम है जो एक सौदे में लाखों कमा ले उस खिलाड़ी की वाहवाही है जिसका हाट गोल में जाए उस संगीतकार की तारीफ है जिसकी चीज हिट हो जाए या उस सिनेमा स्टार की जिसकी तसवीर हर पत्रिका के मुख-पृष्ठ पर छपे। हारने वाले को यहां कोई पूछता नहीं जब तक कि वह फिर बहुत बड़ी सफलता न हासिल कर ले। जब कोई दीवालिया व्यापारी फिर से बड़ा दाँव मारे पराजित पहलवान फिर से चैम्पियन हो जाए या पुराना अभिनेता फिर से चमके तो उसकी प्रतिष्ठा पुनः स्थापित हो जाती है।

प्रतिष्ठा सफलता से मिलती है। अमेरिका में प्रतिष्ठा जाति और वंश से नहीं मोटर-गाड़ी रुपया-पैसा साज-संग आमदनी और औकात से आंकी जाती है। प्रतिष्ठा का अर्थ है कि दूसरे हमारे बारे में क्या सोचते हैं। एक तरह से ऐसी प्रतिष्ठा खोखली होती है क्योंकि यह दिखावे पर आश्रित होती है। और आदमी हर समय दिखावे के ही फेर में पड़ा रहता है।

प्रतिष्ठा कोई ठोस चीज नहीं है जब कि पैसा ठोस चीज है। अस्तु अमेरिका में सफलता बड़प्पन सबकी माप पैसे से की जाती है। पैसा कमाना ही जीवन का मुख्य लक्ष्य होता है। परन्तु अब अमेरिकन लोगों के मन में यह भाव भी आने लगा है कि पैसा ही सब कुछ नहीं है। पैसे के अलावा भी कुछ बातें हैं जिनका जीवन में महत्त्व है। हां पैसा न होने से जीवन में अन्य महत्त्वपूर्ण वस्तुओं को जैसे ज्ञान कला आदि को पाने में कठिनाई जरूर होती है। इसलिए पैसा बहुत आवश्यक है।

पैसे से मुकाबले की भी एक चीज है अधिकार और शक्ति। इससे मनुष्य को दूसरों को प्रभावित करने उन पर शासन करने का मौका मिलता है। सरकारी अफसर कारखानों और कम्पनियों के मैनेजर मजदूर-संगठनों के

पदाधिकारी फौज के अफसर अखबार और रेडियो के संचालक—सब इसी अधिकार के पुजारी हैं। यदि दूसरों के पास धन-दौलत और जमीन-जायदाद है तो इनके पास शक्ति है। फिर भी इस प्रकार के अधिकार की शक्ति का अमेरिका में उतना महत्त्व नहीं है जितना कम्युनिस्ट या नौकरशाही शासन-व्यवस्था मे होता है। सरकारी पदों के पीछे, जितना इन देशों म लोग दौड़ते हैं उतना अमेरिका में नहीं क्योंकि अमेरिका में महत्त्वाकांक्षी व्यक्तियों क लिए उद्योग व्यापार में ही बहुत बड़ा क्षेत्र खुला है।

'सफलता शक्ति प्रतिष्ठा और पैसे क लिए अमेरिकन लोग जितने व्यग्र रहते हैं उतने ही व्यग्र वे इस बात के लिए भी रहते हैं कि उन्होंने जो कुछ हासिल कर लिया है, वह सुरक्षित रहे। इसी कारण आज अमेरिकी नागरिक में जोखिम उठाने की प्रवृत्ति कम हो रही है। इसी कारण अमेरिका में बीमे का व्यापार बहुत बढ़ गया है। राज्य की नीति में भी सामाजिक सुरक्षा अर्थात् बेकारी बीमारी बुढ़ौती में मदद प्राविडेंट फंड और पेन्शन आदि जन हित कारी व्यवस्था करने पर जोर दिया जाता है।

अमरिकन नवयुवकों से बातचीत करने स पता चलता है कि अधिकांश युवक ऐसा काम चाहते हैं जिसमें आमदनी बंधी हुई हो भविष्य सुरक्षित हो। वे व्यापार-धन्धा करने के बजाय व्यापारी-कम्पनी और कारखानों में नौकरी करना ज्यादा पसन्द करते हैं। मकान मोटर, पत्नी दो या तीन बच्चे और 10 हजार डॉलर वार्षिक वतन हो तो व सन्तुष्ट हो जाएँगे। व्यापार से भले ही लाखों की कमाई हो सकती है पर निरन्तर जोखिम भी रहता है आदमी कभी अपने को सुरक्षित नहीं अनुभव करता। इसलिए आज अमेरिकन युवक व्यापार धन्ध की सतत अनिश्चितता अस्थिरता, जोखिम और बेचैनी स बचना चाहता है।

व्यापार-उद्योग के नेताओं को शिकायत है कि अमेरिकन युवक में साहस और उद्यम कम हो रहा है। पर युवक ही नहीं बोड़ों के मन में भी भय का अनिश्चय का और खतरा का भाव है। नीची श्रेणी के लोग सीधा मजदूर, छोटे कर्मचारी आर्थिक दृष्टि स सबसे अधिक परीशान हैं। इनसे पूछने पर पता चला कि इनमें स अधिकांश भाग कम वेतन पर नौकरी करने को तैयार हैं बशर्ते वह पक्की हो।

एक तरफ जोखिम उठाने से हिचक और सुरक्षित स्थिति की चाह है दूसरी और यह कहा जाता है कि अमेरिका म सबके लिए आगे बढ़ने का अवसर है। पर बिना खतरा उठाए, बिना साहस किए आगे कैसे बढ़ा जा सकता है? स्थिरता और गति दोनों एक साथ कैसे हो सकती हैं? बंधा हुआ समाज परि वर्तनशील कैसे हो सकता है? सुरक्षित स्थिति की इस चाह का एक अवांछित

परिणाम यह भी होता है कि जिसको अपनी रक्षा की पड़ी रहती है वह दूसरों से उलझना नहीं भरत सकता। दूसरों की मदद करने में उसे यह डर लगता है कि कहीं अपना नुकसान न हो जाए। होम करते हाथ न जल जाएँ।

अमेरिका के लोगों से पूछा जाए कि आपका जीवन में क्या लक्ष्य है तो अधिकांश यही जवाब देंगे कि हम आनन्द या सुख चाहते हैं। सुख या आनन्द का क्या अर्थ है? सुख का एक अर्थ तो वह था रईस लोगों की तरह मौज उड़ाना है। दूसरा अर्थ प्यूरिटन ईसाइयों के विचार में भगवान् के बनाए नियमों का पालन है जिससे सांसारिक सुख भी मिलता है। 19वीं सदी में भी कुछ लोगों में यह विचार प्रचलित था कि सुख या आनन्द भौतिक सफलता से ऊँची चीज है। एमर्सन के विचार से विश्व के आध्यात्मिक नियमों अर्थात् सत्य से आत्म-साक्षात्कार ही सच्चे सुख का द्वार है। विलियम जेम्स का कहना है कि बाहरी परिस्थितियों से मनुष्य की आन्तरिक प्रवृत्तियों का मेल होने से सुख मिलता है। उन्होंने सांस्कृतिक सफलता को सुख नहीं माना किन्तु उनकी परिभाषा से अमरीका में मेल मिलाने की—एडजस्टमेंट[1] की—प्रवृत्ति चल पड़ी। व्यावसायिक मार्ग-दर्शन अर्थात् मनोवैज्ञानिक परीक्षा से उनकी रुचि जानकर उनके पसन्द के व्यवसाय में लगाने का चलन इसी से हुआ। मानसिक स्वास्थ्य पर जोर देने की प्रवृत्ति भी विलियम जेम्स की इसी परिभाषा से पैदा हुई। परन्तु मानसिक स्वास्थ्य का यह अर्थ समझा जाने लगा कि मनुष्य अपने को बाहरी परिस्थितियों के अनुरूप बनाये अर्थात् ऐसे विचार या प्रवृत्तियों को छोड़ दे जो समाज से टक्कर खाती हों। यह जेम्स के विचारों का उलटा पक्ष है। जेम्स का अभिप्राय यह नहीं था कि व्यक्ति अपनी सत्य प्रवृत्ति की उपेक्षा करके भेड़ चाल चले। अपना व्यक्तित्व नष्ट कर दे। परन्तु अमरीका में आज जेम्स के अन्दर और बाहर के मेल का साधारणतः यही अर्थ लगाया जाता है कि समाज से व्यक्ति न टकराये क्योंकि इससे न्यूरोसिस[2] यानी कुण्ठा या मानसिक विकार पैदा होता है।

मानसिक विकार और कुण्ठा भी भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न होती है। यूरोप में व्यक्ति पुरानी परम्परा में विश्वास खो चुका है और नई दिशा ढूँढ़ता है पर उसे नई दिशा सूझती नहीं। अमरीका में व्यक्ति सतत परिवर्तनों की तेजी से घबराया हुआ है अस्थिरता से पीड़ित है अन्दर से शून्यता अनुभव करता है चिन्तित है कि हमारा क्या होगा। स्थिरता और सुरक्षा के लिए आतुर है।

---

1 Adjustment
2 Neurosis

कहते हैं कि यूरोप में व्यक्ति अहं की अति से पीड़ित है और अमेरिका में अहं के अभाव से। अमेरिका में व्यक्ति अपना स्थान नहीं जानता अपनी प्रकृति को नहीं पहचानता वह केवल दूसरों की धारणा के अनुसार चलने की कोशिश करता है। और ये धारणाएँ भी नित्य बदलती रहती हैं फलत: वह दिग्भ्रान्त है। अमरिका में भौतिक समृद्धि की अतिशयता है अतः आशा की जाती है कि व्यक्ति अधिक-से-अधिक बटोर ले। अधिकता की इतनी होड़ है कि व्यक्ति अपने को असमर्थ समझने लगता है। बाहर से भरा होने पर भी वह अन्दर से रिक्त होता है।

अमेरिका में फ्रायड के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। अमरिका की क्लार्क यूनिवर्सिटी की शताब्दी के समय फ्रायड का जो व्याख्यान हुआ उसने अमेरिका के मनोविज्ञान पर उसका सिक्का जमा दिया। अमेरिकन समाज में अस्थिरता चिन्ता और मानसिक तनाव इतना अधिक था कि फ्रायड के विचारों का वहाँ तत्काल प्रभाव हुआ। हिटलर के अत्याचारों से पीड़ित जर्मन और आस्ट्रियन मनोवैज्ञानिकों की जो बाढ़ अमेरिका में आई उसने फ्रायड के सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप दिया और अमेरिका में मनोविश्लेषण की ऐसी लहर चली कि यह अमेरिका की ही चीज मानी जाने लगी।

मनोविश्लेषण और मनोचिकित्सा के लिए अमेरिका बहुत ही उर्वर क्षेत्र भी था। कुछ विदेशी प्रेक्षकों ने तो पूरे अमेरिका को विशाल मानसिक अस्पताल या पागलखाने का नाम दिया है। विदेशी ही नहीं अमेरिकन लोग स्वयं भी अपने देश में मानसिक विकार की बाढ़ पर चिन्तित हैं। अनुमान है कि इस शताब्दी के मध्य में अमरिका में करीब 85 लाख आदमी अर्थात् प्रति 15 में 1 किसी-न-किसी प्रकार के मानसिक विकार से ग्रस्त थे। और प्राय: प्रति 10 में 1 को मानसिक चिकित्सा की जरूरत थी। मानसिक अस्पतालों में मिलाकर जितने अधिक रोगी थे उतने बाकी सब अस्पतालों में मिलाकर रहे होंगे और जितने मानसिक रोगी अस्पतालों में थे उतने ही बाहर भी थे। फौज में भर्ती के लिए जितने युवक बुलाये गए थे उनमें 10 लाख किसी-न-किसी मनोविकृति से ग्रस्त थे।

मनोविकार के भी विविध प्रकार हैं—एक प्रकार का विकार बड़े घरों की स्त्रियों में बहुत पाया जाता है ये स्त्रियाँ अपने को बीमार समझती हैं और अपने घर वालों को भी अपनी रुग्णता का विश्वास करा देती हैं और इस प्रकार उनको हमेशा परेशान किया करती हैं। ये वे स्त्रियाँ हैं जो चाहती हैं कि उनके पति उनके पीछे वैसे ही लगे रहें जैसे वे विवाह के पहले प्रणय या कोर्टशिप के समय लगे रहते थे। दूसरे प्रकार का विकार उन लड़के-लड़कियों में पाया

जाता है जो माँ-बाप की अत्यधिक छाया में रहने के कारण पंगु और पराव
लम्बी हो जाते हैं। एक टाइप या प्रकार है उन लड़कों का जो मातृप्रेम और
प्रभाव की अधिकता के कारण लड़कियों के सम्पर्क में नहीं आने पाते और दूसरे
लड़कों से अप्राकृतिक रति और प्रेम करने लगते हैं। समाज के भेदभाव और
अपमान से पीड़ित यहूदी और नीग्रो युवक भी अपने को वंचित और बहिष्कृत
समझने लगते हैं और मानसिक सन्तुलन खो बैठते हैं। एक और प्रकार है गाँवों
या छोटे शहरों में इसाई धर्म के कट्टर विधि-निषेध में पले युवकों का जो बड़े
शहरों में आकर विमूढ़ हो जाते हैं क्योंकि वे देखते हैं कि यहाँ वे आचार
विचार नहीं काम देते। पर सबसे बड़ी समस्या है 'सिजोफ्रेनिया'[1] या विभक्त,
अथवा विच्छिन्न व्यक्तित्व की जब व्यक्ति वास्तविक जगत् से अपनी आन्त
रिक प्रवृत्ति का मेल नहीं कर पाता और उससे विमुख होकर अपनी दुनिया
में रहने की कोशिश करता है फलतः वास्तविक और अन्तर-जगत् का संघर्ष
और व्यवधान बराबर बढ़ता जाता है। इस प्रकार का आत्म संघर्ष अमेरिका
में बहुत अधिक पाया जाता है जिस प्रकार मानसिक तनाव से उत्पन्न
हृदय और पेट की बीमारियाँ भी यहाँ अधिक पाई जाती हैं। इन सब मानसिक
बीमारियों और विकारों का मूल कारण यह है कि अमेरिका म व्यक्ति को
अपने अन्तर को सबसे प्रबल प्रवृत्तियों को चरितार्थ करने का मौका नहीं मिल
पाता। अपने अन्दर की इसी शून्यता और खोखलेपन को ढकने या भरने के
लिए अमेरिका में लोग पैसा और प्रतिष्ठा कमाने और उन्हें बनाए रखने के
लिए पागलों की भाँति दौड़-धूप करते हैं।

मनोविकार ग्रस्त लोगों की संख्या इतनी अधिक सीमातीत है कि मनो
विश्लेषकों और चिकित्सकों की कमी पड़ गई है अतः मनोचिकित्सा का प्रबन्ध
और चिकित्सकों की संख्या भी बढ़ रही है। पर जहाँ प्रत्येक व्यक्ति रोगी हो,
वहाँ चिकित्सा का प्रबन्ध भी कैसे हो इसलिए अब अमेरिका में शारीरिक
स्वास्थ्य की भाँति मानसिक स्वास्थ्य की उन्नति पर और शारीरिक रोगों की
भाँति मानसिक रोगों को रोकने पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। मानसिक
स्वास्थ्य ठीक रखने का सबसे अच्छा उपाय आन्तरिक प्रवृत्तियों को सामाजिक
या बाह्य परिस्थितियों के अनुकूल बनाना और उनमें मेल मिलाना माना जाता
है। फिर भी मनोविश्लेषण का अमेरिका में अत्यधिक प्रचार है। मनोविश्ले
षण कराने का फैशन या रिवाज चल पड़ा है और अखबारों में मनोविश्लेषण
के बारे में मज़ाक और व्यंग्यचित्र छपते हैं। इसके अलावा मनोविज्ञान और
आत्म-विश्लेषण पर भी बहुत जोर दिया जाता है। इस विषय पर बहुत-सी

---

1 Schizophrenia.

किताबें निकलती हैं और पत्र-पत्रिकाओं में लेख छपते हैं जिनमें हर श्रेणी और व्यवसाय के लोगों को बताया जाता है कि वे किस प्रकार अपने को पहचान सकते हैं अपनी प्रवृत्तियों को कैसे विकसित कर सकते हैं, कैसे आत्मोन्नति कर सकते हैं।

आत्मविश्लेषण और मनोविश्लेषण के प्रचार से एक लाभ भी हुआ है। इससे पता चलता है कि अमेरिका के लोगों में बाहरी या सामाजिक जीवन के बंधनों और दबावों से मुक्त होने की इच्छा कितनी प्रबल है। यह प्रवृत्ति सूचित करती है कि अमेरिका का आदमी आत्मिक प्रवृत्ति को पहचानने और उसे विकसित करने की कोशिश कर रहा है। इससे अमेरिकन संस्कृति को अपनी दिशा ढूंढने में मदद मिल रही है। इसमें सबसे बड़ा लाभ यह हुआ है कि लोग सुख या आनन्द की झूठी और खोखली परिभाषा को छोड़कर उसके सच्चे अर्थ को समझने की कोशिश कर रहे हैं। लीक पीटना छोड़कर तत्त्व की ओर जा रहे हैं।

# 5

# कलाएँ और पापुलर संस्कृति

## 1 अमेरिका में पापुलर संस्कृति[1]

अमरिका में जिस प्रकार की सभ्यता का विकास हुआ है वह कला के क्षेत्र में रचनात्मकता के लिए अनुकूल है या प्रतिकूल ? कला के क्षेत्र में पापुलर कलाओं का आभिजात्य कलाओं—निम्न या मध्यम वर्ग का उच्च वर्ग—पर कितना प्रभुत्व है।

इन दोनों प्रश्नों के मूल में एक मान्यता है कि कोई संस्कृति जो कुछ कलाओं के क्षेत्र में करती है वह उसके आन्तरिक गुणों को प्रकट करता है। कलाकार अपने को ऐसे रंग में ढाल सकता है जो काल और स्थान से परे है। फिर भी जो कुछ वह करता है और जिस प्रकार वह करता है उससे उसकी सभ्यता के सम्बन्ध में उतना ही पता चलता है जितना उसके बारे में। एथेन्स के यूनानी मत्स्य की मूर्ति का और गोथिक मीनार को अपोलोनी और फास्टियन संस्कृतियों के प्रतीक रूप में चुना था। प्रत्येक संस्कृति में कलाकार रचना की प्रक्रिया में जिस मार्ग से जाते हैं और उनके श्रोता या पाठक जिस रूप में उनका स्वागत करते या नहीं करते हैं उससे उस संस्कृति की आन्तरिक सांस्कृतिक शैली की झलक मिलती है।

यदि किसी कलाकार का सांस्कृतिक शैली से क्या सम्बन्ध है इसका ज्ञान प्राप्त करना हो तो इसके लिए वाल्ट ह्विटमैन की ओर देखना चाहिए। 'लीव्स ऑव ग्रास'[2] की भूमिका (1855 ई.) में उसने एक बड़े लोकतन्त्र में कवि के कर्तव्य पर प्रकाश डाला है। कवि या कलाकार का संक्षिप्त रूप मानते हुए उसने अमरिकी कलाकार और जनता के सम्बन्ध की व्याख्या की है। लगभग 16 वर्ष बाद जब अमरिकी संस्कृति में गृह-युद्ध जैसा दुष्काल बीत चुका था अपनी 'डेमोक्रेटिक विस्ताज़'[3] (1871) नामक पुस्तक में इसी प्रश्न पर फिर से विचार करते हुए उसने लिखा

'यूनाइटेड स्टेट्स में आज हमारी सबसे मौलिक आवश्यकता इस बात की है कि हममें ऐसे लेखक और साहित्यकार हों जैसे अब तक नहीं हुए जो

---

1 Popular culture
2 Leaves of Grass
3 Democratic Vistas

अधिक आधुनिक हमारी आवश्यकता के अनुकूल सारी अमेरिकी जनता के मन स्वाद विश्वास पर छा जाने वाले उनमें नये जीवन का संचार करने वाले उसे निर्णय बतलाने वाले राजनीति पर व्यय के मतदान के अधिकार से कहीं अधिक प्रभाव डालने वाले प्रेसिडेंट या कांग्रेस के चुनाव पर ही नहीं अपितु उस पर भी प्रभाव डालने वाले प्रकाश विकीर्णित करने वाले, उपयुक्त अध्यापक स्कूल आचार-व्यवहार और सबसे बड़ी बात राज्यों में राजनीतिक और बुद्धिजीवी आधार का धार्मिक चरित्र देने के योग्य हों। यह कार्य अब तक न स्कूल कर सके हैं न चर्च और न उनके पादरी। किन्तु उनके बिना राष्ट्र उसी प्रकार स्थायी नहीं हो सकता जैसे नींव के बिना मकान।

ये 'दैवी साहित्यिक'[1] पैदा हुए कि नहीं यह दूसरी बात है। हाँ दूसरे दूत अवश्य पैदा हुए हैं—'गैंगस्टर्स' और कमेडियन कामिक पुस्तकों के नाटककार, 'किंग्स ऑफ स्वात'[2] सिनेमा के 'देवी और देवता' और उनके प्रशंसकों की पत्रिकाएँ जिनमें छपे उनके चित्र बाल सवारने के ढंग और चुम्बन-प्रकार आज अमेरिकी समाज के विधायक बन गए हैं।

इसकी परवाह किये बिना कि ह्विटमैन उनका स्वागत करते कि नहीं वे आ गए हैं। इन्हें देखकर साहित्यिक नाक-भौंह सिकोड़ते ही हैं। 1855 की भूमिका में ह्विटमैन ने लिखा था कि "कवि का प्रमाण इस बात में है कि देश उसको उसी रूप में अपने में मिला लेता है कि नहीं जैसे वह देश को अपने में मिला लेता है। इस प्रकार का मेल हुआ है पर वह कवि और जनता में नहीं बल्कि वह जनता और लोक-संस्कृति के 'हीरो' जनों में हुआ है। फेनीमोर कूपर के बाद विख्यात सब अमेरिकी समालोचकों ने महान् राष्ट्रीय कला की प्रतीक्षा की है पर अन्त में कलाकार के प्रति संस्कृति के हार्दिक स्वागत की असफलता पर आँसू ही बहाये हैं। अब आलोचक कहते हैं कि स्वागत अधिक हार्दिक और श्रोता अधिक उदार हैं—पर गलत ढंग के कलाकारों के प्रति।

कलाओं और जनता के बीच आज अमेरिका में दुहरा सम्बन्ध स्थापित हो गया है। अभिजात्य कलाकार और जनता के बीच अवहेलना या कहें तो अपमान का भाव है किन्तु हाल के कुछ वर्षों में हेमिंग्वे और फॉकनर जैसे लेखकों की पुस्तकों के पेपर बैक[3] संस्करण करोड़ों की संख्या में बिके हैं। उनके चलचित्र और अभिनय भी हुए हैं। इस प्रकार ये भी लोकप्रिय हो चुके हैं और यदि

---

1 Divine literatus

2. Kings of Swat

3. Paper back.

से चाहें तो भी अपना असबाब नहीं बिछा सकते। पर चित्रकारों, मूर्तिकारों और संगीतकारों के सम्बन्ध में ऐसा नहीं कहा जा सकता। यहाँ तो अब भी कलाकार और जनता के बीच दरार है। लोक-संस्कृति के बीच दूसरी ओर अनालोचनात्मक और पूजा का भाव है।

प्रायः सभ्यता में दो संस्कृतियाँ होती हैं—एक शिक्षितों की दूसरी सामान्य जनता की। एक कला वर्ग की होती है और दूसरी जनता की। मैथ्यू आर्नल्ड ने पहली की परिभाषा में उसे किसी भी सभ्यता में जो सर्वोत्तम चिन्तन और कथन हुआ है उसका प्रतिनिधि बतलाया है। दूसरी संस्कृति वह है जिसे बहुजन मानव अनुभव करते और प्रयोग करते हैं। मानव शास्त्र में संस्कृति का जो आशय है उसमें ये दोनों आते हैं। (फिर भी प्रायः इसी अर्थ में 'संस्कृति' शब्द का प्रयोग किया है।)

लोक-संस्कृति का दूसरे अर्थ में (अर्थात् वह कुछ जनों की नहीं बल्कि बहुजनों की—अभिजात्य वर्ग की नहीं—संस्कृति है का) प्रयोग करते हुए किसी भी सभ्यता में उसे ही वास्तविक सत्य और सुन्दर मानते हैं। यूरोप में इस शताब्दी के समय एक समय न ही लोक संस्कृति और लोक-मन की खोज की थी। इसमें कोई शक नहीं कि रचनात्मकता पर पाकर कलाकारों की इजारेदारी नहीं है। निम्न वर्ग में भी नैसर्गिक कविता और लोक-चित्रकला या गलती है। कला को जो शक्ति मिलती है उसका अधिकांश तो इस सीधे-सादे और प्रजातन्त्र जनता के अनुभव से ही प्राप्त होता है। किन्तु अमेरिका में जिसे 'फोकसी कला'[1] कहते हैं जिसका सम्बन्ध हब्शियों और गोरे पहाड़ी समुदायों से है वह तो उत्तम रूप में लोक-कला है। फ्रैंक बोयस ने लिखा है कि "मौलिक मानवीय समस्याओं पर मुझे जनता का निर्णय वर्ग के निर्णय से अधिक स्वीकार्य होता है। जनता की कामनाएँ वर्ग की कामनाओं से अधिक मानवीय होती हैं।" पर इस कथन से मुझे जनता के प्रति असमीक्षात्मक भक्ति का भाव ही अधिक दीखता है। मैं तो यही समझता हूँ कि यह भावुकतापूर्ण विचारधारा की एक कड़ी है जिस पर जन-संस्कृति का आधार बना है। यद्यपि 'जाज़'[2] जैसे सांस्कृतिक मीडियम के सम्बन्ध में इस प्रकार के कथन में कुछ सत्य भी हो सकता है।

सच तो यह है कि अभिजात्य कला (elite art) और पापुलर आर्ट के काम भिन्न भिन्न हैं। चाहे हेनरी जेम्स हों या मार्सेल प्रूस्ट, टामस मान या आर्नल्ड शॉनबर्ग या फ्रैंक लायड राइट, अभिजात्य कला की प्रेरणा प्रायः उनके रचनाकारों का अपने जीवन के प्रति इनकी अभिव्यक्ति का एक अंग

---

1 Folksey art

2 Jazz.

ही होती है। लोक-संस्कृति की प्रेरणा (यहाँ मैं असली लोक-संस्कृति की कल्पना
करता हूँ किसी कृत्रिम संस्कृति की नहीं) कलाकार और श्रोता दोनों की शक्ति
हास्य और आत्म-तुष्टि की भावना की अभिव्यक्ति में है। इनमें से प्रत्येक
अमेरिकी रचनात्मकता का वैषम्य है। आभिजात्य-कला की मुख्य कमजोरी
आत्म की अवनति बुद्धि की हठी और जन-संस्कृति के प्रति अनादर की भावना
में है। लोक-संस्कृति की (अमेरिका में मध्य वर्ग का भी) कमजोरी रुचि के
सस्तेपन अनुशासन (discipline) के ढीलेपन अपनी समस्याओं से कतराने
और गहराई के भय में है।

जन माध्यमों और रिप्रोडक्शन के ईजाद ने आभिजात्य चित्रकारों
संगीतकारों और लेखकों की सफलताओं को करोड़ों व्यक्तियों के सम्मुख
ला दिया है जो पहले सम्भव न था। किन्तु अमरिका की पापुलर-संस्कृति
की सफलता इस बात में नहीं है कि उसने आभिजात्य-कला की सामग्री
को जनता तक पहुँचा दिया है बल्कि वह इसमें है कि वह नई पापुलर सामग्री
का निर्माण कर रही है। इसका आभिजात्य कला से सम्बन्ध गौण नहीं बल्कि
साम्राज्यवादी है। लोक-कला में घूमने की एक ऐसी जबरदस्त शक्ति है कि
वह बड़े-बड़े नाटककारों संगीतकारों और उपन्यासकारों की रचनाओं को भी
आत्मसात कर लेती है।

अमेरिकी कला के विद्यार्थी के लिए यह आवश्यक है कि पश्चिमी यूरोप
की परम्पराओं पर उसने अपनी जो धारणाएँ बना रखी हैं उनसे वह मुक्ति
प्राप्त करे। बप का यूनानी नायक वह नाटककार था जिसकी दुखान्त-रचना
पर उसे पुरस्कार मिला था। वेनिसवासी इटली वालों ने एक 'महान मास्टरपीस'
के रचयिता का स्वागत करने के लिए सड़क भर दी। गेटे के जर्मनी में कवि
राजकुमारों के दरबारों की शोभा बढ़ाता था। वैगनर के समय में संगीतकार
को 'हीरो' माना जाता था। किन्तु आधुनिक अमरिका में कवि संगीतकार
चित्रकार या ट्रैजेडियन को जनता की वाहवाही नहीं मिलती। इसलिए पश्चिमी
यूरोप के कला के वातावरण से अमरिका में न्यूयार्क या हालीवुड के अनुभव
प्राप्त करने के मूल्यों और धारणाओं में पर्याप्त परिवर्तन करना पड़ता है।
कुछ उपन्यासकारों का छोड़कर जिनकी पुस्तकें लाखों में बिकती हैं अन्य आभि-
जात्य कलाओं में अभी यूरोपीय सभ्यता की रचनात्मक परम्पराओं पर ही पल
रही हैं। अभी वे अमरिकी समाज-व्यवस्था की केन्द्र नहीं बन पाई हैं।

ऐसी बात नहीं कि अमेरिका जो कुछ यूरोपीय है उसे मक्कारानें[1] है। आभि-
रेवट जकरमन ने यूनानी मिथों को माइकेलो मूवमेन्ट में उतारा पर दूसरे

1 Recalled

जैफ़रसन ने फ्रांस के फ़िज़ियोक्रैट और दर्शन के सिद्धान्तों को अमरीकी क्रान्ति युद्ध के बीच अपनाया। अमेरिका के नगरवासों ने यूनानी रूपों को अमेरिकी ढंग से अपनाया। अमेरिका के नौ-रचनाकारों ने अपने क्लिपर जहाजों को यूनान के जहाजों की भांति रचना विधान की लघुता दी पर उन्हें ऐसा बनाया कि वे उनसे भी शक्तिशाली और तीव्रगामी हुए। कूपर और वाशिंगटन इरविंग ने यूरोप के रूपों को तो लिया पर उनमें एक नई महाद्वीपी अन्तर्वस्तु भर दी। प्लेटोनिस्ट एमर्सन ने यूनानी दार्शनिक के निरपेक्षवाद में यांकी चुस्ती भरी अपने पूर्वी ऋषियों के रहस्यवाद को अमेरिकी सामान्य बुद्धि के अनुसार अनुदित किया। लांगफ़ेलो, ह्विटियर, लोवेल, होम्स आदि ने यूरोप के कवियों से विचार उधार लिए, पर उनकी विषय-वस्तु देशी थी। पो की कविता एक संतप्त मन[1] का उद्गार ही तो थी जिसका बौद्धिक निवास यूरोप के रोमान्टिसिज़्म में था।

फिर भी अमेरिका को इस प्रकार यूरोपीय मानदंड से नापना वैसे ही है जैसे पारकाम के कवियों को एथेंस के नगर राज्यों के मानदंड से नापना। यद्यपि आधुनिक लेखकों में फ़ाकनर और स्टीनबेक जैसे लेखक यूरोप में भी आदर के रूप में पढ़े जाते हैं पर अमेरिका में यूरोपीय सभ्यता नहीं है। सलून या सही ढंग से बहुत-से अमरीकी ऐसा मानते हैं कि यूरोप की आभिजात्य कला मृत-संस्कृतियों की उपज है। उनकी स्थिति उन बर्बरों की-सी है जिन्होंने साम्राज्यों के पारम्परिक गढ़ तो जीत लिए और जो रोमा के साम्राज्य के सम्मुख भी झुकना नहीं चाहते। यद्यपि यह भी ठीक है कि आधुनिक अमरीकी कवियों में बहुत-से विश्व के किसी भी कवि की तुलना में खड़े हो सकते हैं और अमेरिका के अमूर्त (Abstract) कलाकारों ने अपनी रचनाओं से संसार में सर्वत्र हलचल मचा दी है। प्रश्न यह नहीं है कि अमेरिकी आभिजात्य-कला कितनी अच्छी है। प्रश्न यह है कि संस्कृति को सर्वांगीण रूप में लें तो उसकी कला का स्वाभाविक इतिहास क्या है?

आधुनिक कला के समर्थकों और विरोधियों ने इसके सम्बन्ध में बहुत-सी बेतुकी बातें लिखी हैं। किन्तु इतना तो स्पष्ट है कि इसमें एक वास्तविक विद्रोह की अभिव्यक्ति हुई है। 1850 के आसपास विलियम डीन हावेल्स ने सभा लेखकों[2] के विरुद्ध लिखा था। उस समय उसकी आवाज़ उपन्यास के जबरदस्त समर्थक के रूप में उठी थी। उसने जो शुष्क और कृत्रिम था उसका अस्वीकृत किया क्योंकि वह आभिजात्य कला को कमज़ोर बना रहा था। उसके बाद फ़्रैंक नौरिस

1. Tortured mind.
2. Salon writers.

स्टीफेन क्रेन, फ्रैंक नारिस एलन ग्लासगो और थियोडोर ड्रेसर का विद्रोहियों
का वर्ग आया जिन्होंने अमेरिकी उपन्यास के क्षेत्र में स्वाभाविकतावाद के युग
का श्रीगणेश किया। निश्चय ही अमेरिकी उपन्यास की रचनात्मकता आभिजात्य
कला का ही अंग है। विदेश उपन्यासकारों की पंक्ति मे अमेरिकी उपन्यासकारों
मे रूसी उपन्यासकारों का स्थान लिया। रूसियों के पहले फ्रांसीसी थे। फ्रांसीसी
उपन्यासकारों के भी पहले अंग्रेज थे। अंग्रेजों ने स्पेनिश उपन्यासकारों का स्थान
लिया था। इससे यही बात स्पष्ट होती है कि आभिजात्य कला के रूप भी अपने
ऊपर खतरा मोल लेकर ही लोक-शक्ति की अवहेलना कर सकते हैं। अमेरिकी
उपन्यास के विद्रोहियों के मन में ऐसी विषय-वस्तु और लोक-शक्ति के प्रति जो
भाव है यह वही है जो गिल्बर्ट सेल्डीज ने अमेरिकी लोक-संस्कृति के पक्ष में
दि सेवेन लिवली आर्ट्स[1] में व्यक्त किया था। 1850 के आसपास सेल्डीज ने
स्वीकारा कि बड़े माध्यमों के भावों में भी रोचक कलाओं की समानताएँ
दीपती हैं। किन्तु यह उसका भ्रम दृष्टि से दूर नहीं ले जाता।

हो सकता है कि आज की पापुलर-संस्कृति में उसकी अभिव्यक्तियों
और पथावलियों के बावजूद भी कल की आभिजात्य कला के बीज हों। किन्तु
आज तो अमेरिकियों की दृष्टि है जो मगज में तेरह उभार। आज तो उनका
ध्यान वस्तुविन्यास के धड़ल्ले से बिकने वाली पत्रिकाओं, मामूली कलाओं
रोमांचकारी हास्य पुस्तकों की ओर है। इन्हें पढ़ने वाले बालक होते हैं। ये किसी
भी उम्र के हो सकते हैं। उनका वास्ता किसी भी सम्प्रदाय से अधिक साम्प्रदाय
भारी है। उनका ध्यान आज पट्ठ की कासे की अमर मूर्ति का निर्माण करने
की ओर कम है। आज तो वे खिलाड़ियों के चित्र अखबारों में प्रकाशित करने
की ओर अधिक आकृष्ट हैं। रोसीवड या डाम क्लिफमाट के महाकाव्यों या ईनियस
या मि० ब्लूम में अब उनका मन उतना नहीं रमता जितना रेडियो के 'ड टाइम
सीरियल्स'[2] में।

इस प्रकार अमेरिकी संस्कृति का कलात्मक मूल्य चाहे जो हो इसे हम सीमांत
विपथन[3] की दृष्टि से नहीं देख सकते जिसे ज्यों-ज्यों रुग की रुचि सुधरेगी
और बर्बरता मिटेगी दूर किया जा सकता है। यह अमेरिकी संस्कृति की मुख्य
धारा का एक अंग है। यद्यपि अमेरिकी पापुलर कलाओं के सम्बन्ध में अनेक
बेहूदी बेतुकी बातें नहीं गई हैं किन्तु इस बात का उत्तर नहीं है कि बड़े माध्यम
आभिजात्य कला की महान् परम्परा का स्थान ले सकेंगे। इसका अर्थ यह नहीं

---

1 The Seven Lively Arts

2 Dayt me seria s.

3. Marginal aberration.

कि मात्र-संस्कृति आभिजात्य कलाओं से अधिक शक्तिशाली है। दोनों कलाएँ अपने-अपने क्षेत्रों में स्वतंत्र रूप से उन्नति करेंगी।

यही कारण है कि अमरीकी कला के विद्यार्थी को कैन्वास पर चित्र बनाने वाले कलाकारों का ही नहीं देखना है बल्कि उन्हें उन शौकिया फोटोग्राफरों को भी दृष्टि में रखना है जो अपने कैमरे लेकर लाखों की संख्या में निकलते हैं। भवन-निर्माण और डिज़ाइन के इतिहास में मुस्लिमान के स्काई-स्क्रेपर[1] और फ्रैंक लायड रिट के काठ और पत्थर के कवित्वपूर्ण निर्माणों का ही वर्णन न होगा बल्कि अमरीकी रसोईघर स्नानघर मोटर और हवाई जहाजों का भी स्थान होगा। चार्ल्स आइव्स और मैकडोनाल्ड से लेकर आरों कोपलैण्ड तक संगीतकारों ने अच्छे सिम्फोनी संगीत की रचना की है किन्तु अमेरिकी संगीत इतिहास का जितना प्रतिनिधि रूप गेर्शविन के 'पोर्गी एण्ड बेस'[2] में या मार्लीस के 'आर्ज' में निखरा है उतना अन्यत्र नहीं। इतिहासकार अमरीकी थियेटर की महान् परम्परा को ओनील से टेनेसी विलियम्स तक ले जाएगा। पर इस प्रक्रिया में वह संगीत कामदी[3] रंगमंच की अवहेलना करने का साहस नहीं कर सकता क्योंकि संगीत गीति कामदी और नृत्य की कुछ शक्तियाँ ओक्लाहोमा साउथ पैसिफिक या माई फेयर लेडी जैसे प्रयासों में अपनी चरमावस्था में उभरी हैं।

एलिस्टेयर कुक के शब्दों में अमेरिकी शैली का एक उपविभाग भी है जिसे पहले 'कोरस'[4] कहते थे। अब यही कारण एक प्रामाणिक 'बैले' के रूप में परिवर्तित हो गया है जिसका सम्मान विदेशों में उत्साह से हो रहा है। इसकी प्रेरणा विशुद्ध अमरीकी है। अब यह रूप स्वीडन फ्रांस इंग्लैण्ड में भी पहुँच चुका है। रूप का यह परिवर्तन कभी संभव न था यदि मीमान्स-कथाओं और ईरमैन बैलाड्री[5] के संगीतकारों का लोक (पापुलर) नृत्य सभा के साथ स्वर भरतों और संगीतकारों में संतुलित सम्बन्ध स्थापित न किया होता। इसी प्रकार बॉस्टन बॉब्स के विदूषक भावों में कोई बड़ा मनोरंजक न थे पर उनकी ही परम्परा में भाग लेकर चैपलीन की शैली का विकास हुआ। चैपलीन स्वांग उत्पन्न की कला के इतिहास में एक बड़ी हस्ती माना जाएगा। अमेरिकी 'चीज़केक'[6] और पिन अप लड़कियों के लाखों इश्तहारों में यूनानी वीनस का

---

1 Skyscrapers.
2 Porgy and Bess.
3 Musical-comedy
4 Chorus.
5 Railman balladry
6 Cheesecake

शान्त सौन्दर्य नहीं है पर इसी चौंकाऊ कला को ही देखकर अनातोल फ्रांस ने
कहा था कि जिस सभ्यता में ऐसी कला के उत्पादन की शक्ति है वह अपने
बुद्धिजीवियों के भय के बावजूद भी जिन्दा रहने की शक्ति रखती है।

पेशेवर पथों ने कलाभिरुचि के जो साँचे बनाए हैं उनका अमरीकी कला
मिस्पलिन में शायद ही कभी अनुगमन हुआ हो। इन पथों ने प्राय अपने पास
की चीजों की ही अवहेलना की है। फर्नेंड सीवर ने अमरीका की पापुलर-संस्कृति
के सम्बन्ध में सबसे जोरदार शब्दों में लिखा है। अमरीका में वर्षों रह लेने पर
उद्गार कहा अमेरिका की कुरुचि की कृपा से अब मैं अपना में 'सुरुचि' के
माने से घृणा करता हूँ। पर अभी चिन्ता की कोई बात नहीं। आपको
'प्राइम' पर बिकनेवाली हाथ से चित्रित टाइयों का अध्ययन करना चाहिए
बैंगनी और काली जमीन पर लाकोमोटिव और चार कबूतर या कसरिया जमीन
पर प्रफुल्लवन्या अप्सरा का। इस चित्रण में एक जैकेट है। फार्टीन्थ स्ट्रीट
फिफ्थ स्ट्रीट की रुचि से भ्रष्ट हो चुकी है। पर एवेन्यू-बी अभी समृद्ध है। इसके
बावजूद कि अब लोग यह जान जाएँ कि उनकी रुचि बुरी थी व सुरुचि की ओर
दौड़ते हैं फोर्टीन्थ स्ट्रीट और एवेन्यू-बी का तब तक निर्माण होता रहेगा जब
तक अमरीका में जवानी है। कुरुचि और चटकीले रंग तो कलाकार की इच्छा
और उसकी शक्ति के परिचायक हैं। चटकीली कमीजों पर स्वेटर पहने लड़कियाँ
अन्यमनस्क बालिकाएँ सड़क में रस्सों पर नगरवासियों से अधिक मिलती
जुलती हैं उतनी तो पेरिस की सड़कों पर भी कम मिलेंगी।"

इससे यह प्रतीत होता है कि जिस अवकाश-वर्ग के आलोचक और अकादमियाँ
कुरुचि समझते हैं और जो किसी भी मानदंड से खोटा और भ्रष्ट समझा जाएगा
उसमें अन्तर है। दूसरी दृष्टि में ये आलोचक यह भूल जाते हैं कि लोक-संस्कृति
की सारी शक्ति इस कारण नहीं नष्ट हो जाती कि कुछ सस्ती पापुलर कला
कार हैं या यह पापुलर-कला व्यावसायिक लोभ के कारण सस्ती बना दी जाती
है। अमेरिका की पापुलर कला की जो आलोचना हुई है उसमें मुख्य माध्यम की
प्राप्ति ही अधिक प्रतीत होती है। इसमें बड़े माध्यमों के पापों और पापुलर
की सामग्री—जिसका वे प्रयोग करते हैं और जिसे वे वाइड-माइन हैं—में अन्तर
नहीं किया गया है। डब्ल्यू० एच० ऑडेन ने उस पापुलर संस्कृति में जो 'जनता
से निकलती और उससे शक्ति ग्रहण करती है और उस पापुलर संस्कृति में जो
मात्र वह कला है जिसे जनसाधारणों में अधिकांश पसन्द करते हैं फर्क किया है।
पहले रूप में यह लोक कला (फोक आर्ट) है। दूसरे अर्थ में यह जो 'बाहर' या
पापुलर कला है। दोनों अर्थों में दरबारी या आभिजात्यों की कला का प्रवेश

1 Sins of the Big media

उसमें न होगा। इसमें शास्त्रीय-संगीत या शास्त्रीय-कला या गंभीर साहित्य आ सकते हैं। नये बड़े माध्यमों से इन्हें जनता चाह सकती है।

अपनी परिभाषा में मैं ग्रोडन की परिभाषा से सहमत नहीं। मस कैप 'सेम्मो' आर्म स्ट्रांग 'बेबी रोस' मार्टन और चेप्लीन की कला उस अर्थ में 'जनता से' नहीं निकलती जिस अर्थ में लोक-कथाएँ या नीग्रो रहस्यवादी आदि निकलते हैं। किन्तु ये पापुलर-कला मे सम्मिलित हैं क्योंकि इसका रूप देसी है जिसका निर्माण जन-रुचि और दैनदिन जीवन से हुआ है। न तो सभी 'पापुलर' चीजें जो धड़ल्ले से बिकती हैं पापुलर-संस्कृति में शामिल की जा सकती हैं। थ्यूकमर की सर्टोरिस'[1] जब पेपर बैक संस्करण में 2½ लाख बिकती है तब भी वह उसी प्रकार आभिजात्य कला और साहित्यिक परम्परा की उपज रहती है जब उसकी कुछ हजार प्रतियाँ बिकती थीं। जब ग्रैंड ओपेरा या सिम्फनी संगीत रेडियो से प्रसारित होने पर लाखों व्यक्तियों द्वारा सुना जाता है तब भी वह दरबारी संगीत ही रहता है। जब कोई ऐतिहासिक रोमांस नायिका के रंगीन चित्र वाले आवरण में छपकर किसी बुकस्टाल द्वारा 'एप्राप्त' होता है तब भी वह मध्यवर्गीय ढंग ही रहता है वह कोई पापुलर-संस्कृति का अंग नहीं बन जाता। इसलिए महत्त्व की बात यह है कि क्या कोई नया संगीत थियेटर चित्रकला वास्तु या नृत्य की कृति परम्परागत अभिव्यक्ति और रूप के ढाँचे को तोड़कर प्रतिदिन के अमेरिकी जीवन से रूप या इडियम प्राप्त करती है या नहीं?

यहाँ पापुलर-संस्कृति में श्रोताओं और पाठकों की बड़ी संख्या के महत्त्व को घटाने का प्रयत्न नहीं किया गया है किन्तु एक चेतावनी अवश्य दी गई है कि संख्या का बड़प्पन सब कुछ नहीं है। इसे हम पापुलर संस्कृति की कसौटी नहीं मान सकते। बड़े माध्यम जुटाना तो माध्यम के स्वामियों के हाथ में है। अतः महत्त्व की बात यह है कि सम्भाव्य श्रोता तो सबके हैं। आज अवकाशके क्षण में शान्ति होने से ऐसे श्रोताओं का उदय हो चुका है। और बड़े माध्यमों ने उन तक पहुँचना भी सम्भव कर दिया है। अमेरिका उस के सामान्य पाठक की भाँति सामान्य-श्रोता भी है। वह 'औसत आदमी' भी नहीं है। वह करोड़पति भी हो सकता है और दैनिक मजदूर भी। ज्ञाता भी और पीन अपराधी भी। कोई जरूरी नहीं कि वह शिक्षित भी हो। बात यह है कि अमेरिका में शिक्षा की परिभाषा भी निश्चित नहीं। अच्छा ही है कि उसे बहुमत मेजॉरिटी पुरुष—या—नारी या किसान भी कहते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि वह नये प्रभावों को ग्रहण करने के लिए तैयार रहता है। वह परम्परा से नहीं बँधा है। नये को अवसर देने के लिए प्रस्तुत है—यदि इसके प्रस्तोता

1 Sartoris.

और 'बाक्स-आफिस' वाले उसे अवसर दें।

ऐसा कोई सर्व-सामान्य नियम नहीं है जिससे यह बतलाया जा सके कि विश्व की कलाओं की परम्परा में कोई संस्कृति अच्छा या नगण्य कार्य करती है ? या किसी युग में कला क्यों उन्नति या अवनति की अवस्था में रहती है ? फ्रांसीसी राज्य क्रान्ति के बाद का युग फ्रांस में साहित्य की दृष्टि से कम उपजाऊ था। इससे यह निष्कर्ष निकालने की लालसा होती है कि सामाजिक उथल-पुथल का युग कला की दृष्टि से त्याग जाता है पर इंग्लैंड और जर्मन में उसी समय यूरोप के कतिपय सबसे बड़े पीठाकार पैदा हुए। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि हमें सामाजिक अवस्था और कलात्मक सर्जना म कोई सम्बन्ध मिल ही नहीं सकता। हाँ यह बात अवश्य है कि कोई एक सूत्र-सबन लागू न होगा।

अमेरिकी मुक्त अर्थ-व्यवस्था में अमेरिकी पापुलर-संस्कृति की शक्ति और गड़बड़ी दोनों के दर्शन होते हैं। जिन समाजों मे वर्ग विभाजन गहरी जड़ पकड़ चुका है उनमें आभिजात्य और पापुलर-कला में स्पष्ट भेद मिल सकता है। पर अमेरिका जैसे देश में जहाँ वर्ग-व्यवस्था अभी इस रूप म है वर्गों की सीमाएँ टूट जाती हैं। शास्त्रीय-कला अकादमियों से बाहर अब बाजार म आ रही है। लेखक साहित्यसभी से प्रारम्भ करके अपने जीवन काल म ही विशाल जनता में लोक प्रियता प्राप्त कर रहे हैं। अफलातून से बिकने वाली पुस्तकें सामान्य हो सकती हैं या एल्बीविटग। अब कामिक स्ट्रिप-सम्प्रदाय बुद्धि-जीवियों में भी फैल रहा है। निफानियों के भी लाखों श्रोता पैदा हो गए हैं। संगीत कामदियों रातोंरात कलासिक्स का पद प्राप्त कर सकती हैं। जाज और अमूर्त चित्रकला योरोपिया ही नहीं मध्य वर्ग में भी सम्प्रदाय पूजा का रूप धारण कर सकती हैं। 'लिटिल थिएटर ग्रुप सारे नक्शे पर उभर रहे हैं। साहित्य-सर्जना के छोटे-छोटे तिरते पूरब में केन्द्रित होने के बावजूद पश्चिम दक्षिण और मध्य-पश्चिम के अमरया शिव धर्मों में भी बन रहे हैं। सारी जनता ऑर्केस्ट्रों (अमेचस) की एक राष्ट्र बन रही है।

इसे कई प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है। किन्तु इसी से अमेरिकी जनता के रहन-सहन का ध्यान अवश्य रखना होगा। जो जनता वर्ग के ठप्पे को तोड़ सकती है वह कला के ठप्पे को भी तोड़ सकती है। वर्गविहीन मध्य वर्गीय समाज म किसी-न किसी प्रकार की शिक्षा सबको प्राप्त होती है। अब काल का विस्तार हो चुका है। अधिकांश की रुचि नए सांस्कृतिक अनुभवों की प्राप्ति में है। ऐसे समाज में आभिजात्य और पापुलर-कला का अन्तर धुंधला हो जाता है। वे शक्तियाँ जो कला के लिए विशाल श्रोतागण की सृष्टि करती हैं दोनों रूपों का समेट लेती हैं।

इसी नमूने को एक दूसरे ढंग से भी देखते हैं। वह यह कि जो सभ्यता अन्य बहुत-से क्षेत्रों में यूरोपीय मूल से सम्बन्ध तोड़ चुकी है वह अपनी समग्रता खोये बिना कैसे उसी मूल से जुड़ी रह सकती है। यूरोप-संस्कृति के प्रमुख कलारूप—चित्रकला शिल्पकला नाटक धार्मिक और धार्मिकेतर वास्तु, चैम सिम्फोनी और ओपेरा गीतिकाव्य आदि स्थिर वर्गों के समाज में पैदा हुए। उनका पोषण धनी और शासक वर्ग में हुआ। उन्हीं का या धार्मिक शक्तियों का संयोजन उन्होंने किया। केवल उपन्यास ही एक-मात्र ऐसी कला है जो औद्योगिक पूँजीवाद से पैदा हुई। इसने मध्य वर्ग की आवश्यकता की पूर्ति की। साहित्य को छोड़कर अन्य सभी कला-रूप ऐसे थे जिनका आनन्द एक स्थान पर बैठकर ही लिया जा सकता था।

अमरीकी समाज मूल गुथा नहीं बल्कि विस्तृत और बिखरा है। उसका कोई एक केन्द्र नहीं बल्कि प्रत्येक शहर में एक केन्द्र है। उनमें एक मध्य वर्ग है जिसके पास सब समारोहों के लिए पैसा और अवकाश है। इसीलिए रेडियो सिनेमा और टेलीविज़न का इतना विकास हुआ। ऐतिहासिक दृष्टि से उनके मूल पर्याप्त भिन्न हैं। इसलिए कोई एक परम्परा काफी समय तक उन पर अपना प्रभुत्व नहीं रख सकती। अमेरिकी सतत गतिमान हैं शारीरिक और प्रतीकात्मक दोनों रूपों में। इसलिए उनकी आवश्यकता ऐसी कलाएँ हैं जो क्षिप्र गति से चलें और गतिशील हों। अमेरिकी अर्थ-व्यवस्था पर बड़े उद्योगों का प्रभुत्व है इसीलिए कलाओं को भी उसने बड़े उद्योगों में बदल दिया है। कुछ कलाओं ने नए सामाजिक और आर्थिक आधार भी प्राप्त कर लिए हैं किन्तु इसके लिए उन्हें मूल्य भी गहरा चुकाना पड़ा है। इस सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा अगली पंक्तियों में होगी।

भौतिक संस्कृति से भिन्न लोकप्रिय-संस्कृति का सम्बन्ध इस बात से नहीं कि जनता क्या बनाती है बल्कि इस बात से है कि जनता कितनी पूर्ति (Make up) कर लेती है—खासी लय और इडियम ईमी और कथावस्तु कहानी और गीत तथा नाट्य रंगमंच अभिनय पर्दे पर परछाइयाँ। जो कुछ वे सेक पसन्द करते हैं* उसमें उनका असली रूप सामने आता है। जीवन के अधिक निर्णय और कल्पनाशील रूप में ही जनता की सांस्कृतिक शैली सबसे उत्तम ढंग से प्रकट होती है। यहीं हम उसे पकड़ सकते हैं।

* लेखक और पाठक

## (ख) अमरीकी उपन्यास

अपनी एक छोटी पुस्तक 'फेथ रीज़न ऐंड सिविलिज़ेशन'[1] में हेराल्ड लास्की

1 Faith Reason and Civilization

ने अमेरिका की उपलब्धि की प्रशंसा में कहा था (अमरिका ने) एकाएक एक ऐसे साहित्य की सृष्टि की है जो देखते-देखते सभ्य विचार परम्परा की मुख्य धारा का एक अंग बन गया। पर क्या अमेरिकी साहित्य इतनी जल्दी विश्व विचारधारा का अंग बन गया? इसका जो उत्तर पेरिंग्टन और वॉन ब्रुक्स जैसे अमेरिकी विचारधारा और साहित्य के इतिहासकारों ने दिया है उसमें एक इससे धीमे और क्रमिक विकास की बात कही गई है। शायद हेराल्ड लास्की को अमेरिकी उपन्यास से मुगालता हुआ होगा क्योंकि इसकी सारी उपलब्धि मुश्किल से एक शती की है।

यह अमेरिकी भूमि में ही पुष्पित क्यों हुआ? यूरोप में तो यह मध्य वर्ग को ही आकर्षित करता था जो औद्योगीकरण से पैदा हुआ था और एक नये संसार की खोज में उत्सुक था। अमेरिका में भी यही प्रक्रिया हुई पर उसमें कहीं अधिक क्षिप्र गति से। एक अति सघन समाज में जो अनुभवों का वैविध्य सामने आया उपन्यास को उससे वस्तु और पाठक मिल गए। नई और पुरानी विचार धारा में जो संघर्ष हुआ उससे उपन्यास को कलात्मक विरोध प्रकट करने का मौका मिला। नई विचारधाराएँ—जैसे डार्विन और मार्क्स कभी वाल्डफ इमर्सन थोरस हावर और फ्रायड के प्रभाव—परिस्थितियों और अनुभवों को नये मोड़ देती रहीं।

मुख्य कथा-वस्तुओं के अध्ययन से हम अमेरिकी उपन्यास के आन्तरिक जलवायु के परिवर्तन के इस क्रम का अध्ययन कर सकते हैं। हाथोर्न और मेलविल अमेरिकी उपन्यास के पिता माने जाते हैं। इनके उपन्यासों की मुख्य कथावस्तु है व्यक्ति का अपने मूल स्वभाव के बोझ से छुटकारे का प्रयत्न। दोनों रूपक के आचार्य थे। दोनों रूपक के माध्यम से भावी के अभिप्राय के बारे में अनिश्चित मध्य-वर्ग की अस्थिरता का चित्रण करते हैं। हाथोर्न एक अभाव की भावना से ओतप्रोत है। यह अभाव उसकी रचनाओं में दर्शक की अमिट छाप के रूप में व्यक्त होता है। वह बार-बार प्रश्न करता है कि क्या यह सम्पूर्ण जीवन किसी भूल की छाया तो नहीं है जिससे मनुष्य वंचित कर दिया गया है। सन्देह होता है कि 'दि स्कार्लेट लेटर'[1] का हाथोर्न कहीं इन्द्रिय-सुख का गुप्त विश्वासी तो नहीं है। मेलविल तो था ही। मेलविल की प्रारम्भिक रचनाओं में जहाँ उसने अपनी यात्राओं के अनुभवों का चित्र खींचा है उसमें कर्म और साहस की उद्दाम-लालसा के दर्शन होते हैं जो बाद में सम्पूर्ण अमेरिकी अनुभव का एक अंग बना। किन्तु उसके बाद के उपन्यासों में (जैसे पियरे[2] में) एक

---

1 The Scarlet Letter

2. Pierre

प्रकार की अपराध की भावना मिलती है जिसकी ओर ध्यान गए बिना नहीं रहता। इसी प्रकार 'मोबी डिक' में अपने आन्तरिक बन्धन से संघर्ष 'बनितो सेरिनो' में निरीह पर हिंसा का प्रभाव 'बिली बड' और 'दि कान्फिडेंस मैन' में छिप हुए पाप की भावना से ग्रसी गई मनुष्य की उत्तम शक्तियों का चित्रण हुआ है।

अमेरिकी उपन्यास के मध्य-काल में मार्क ट्वेन और हेनरी जेम्स दो शक्ति शाली व्यक्तित्व थे। 'हकलबरी फिन'[1] और ट्वेन के मध्य-पश्चिम में बाल्यपन के अन्य उपन्यास सीमा के स्वच्छ युग के अभिलेख हैं। इसी प्रकार उसका 'लाइफ आन दि मिसीसिपी' भी अमर है। जब उसने ईडन की ओर से ध्यान हटाकर प्रौढ़ समाज की ओर (और यह संसार भी कितनी नैतिक अन्धेर-गर्दी और ढोंग से भरा था) तो एक ज्वालामुखी ही फूट पड़ा। तब वह 'रहस्यमय आगंतुक' के चित्रण में समा गया और उसकी मानसिक स्थिरता प्रायः चूर-चूर हो गई। जेम्स के उपन्यासों में अमेरिकी उपन्यास एक नई दिशा में मुड़ता है और वह है तेजी से बदलती सामाजिक व्यवस्था में इन्द्रिय सुख के सूक्ष्म मन्तर की खोज। जेम्स ने यूरोप के वातावरण में अमेरिकी पात्रों का चित्रण किया। उसने अमेरिका से दूर हटने पर अमेरिकियों के चरित्र का अध्ययन किया। किन्तु जेम्स का मुख्य रूप उसकी अन्तदृष्टि में नहीं वरन् उसके चरित्रों को जिस प्रकार की नैतिक उभयमन्यता का सामना करना पड़ता है और तब जो निर्णय वे करते हैं उसमें है। यह मध्य-काल का जेम्स है विशेषकर 'दि बोस्टनियन्स' और 'प्रिंसेज कैसामसिमा' का।

चित्राकार ड्रेजर में प्रणाली की वास्तविकता जिसका वह नंगा चित्र देता है, मिलती है। थियोडोर ड्रेजर यथार्थवादी आन्दोलन का सबसे बड़ा व्यक्तित्व है। इसके आन्दोलन के पूर्ववर्ती कलाकार थे हावेल्स, स्टीफन क्रेन और नोरिस तथा सम्भवतः एमेल ग्लासगो भी। ड्रेजर ने प्रचलित पराजयता के बीच धार्मिक रोमांटिक या आदर्शवाद से भिन्न किसी नियम की खोज की जो उस समय के लिए स्वीकृत हो सके—वह स्वयं एक प्रारम्भिक विचारक (या कहें अनुभव कर्ता) था जिसने थोड़ा स्पेन्सर थोड़ा डारविन थोड़ा मार्क्स और मैकियावेलियन नैतिकता से भी कुछ उधार लेकर एक अपना दर्शन बनाने की चेष्टा की। कैथोलिक नैतिकता से वह विद्रोह करता था पर वह उससे बंधा था। सच तो यह है कि वह कल्पनाओं का एक अच्छा नाटककार था जिन्हें वह साहित्यिक ढांचे में बांधता था। उसके विकास में एक ऐसा चरण भी आया जब उसने अनुभव किया कि शक्ति और प्रतिभा हो तो मनुष्य स्वयं अपना संसार बना सकता है।

---

1 Huckleberry finn.

शरवुड एण्डर्सन में परदेसीयता की भावना गहरी हो चुकी थी। इसके अधि लोग पात-व्यापार मढीम और छोटे शहरों के नैतिक आधारों से दबकर अपने मौलिक स्वरूप में वापस चले जाने का प्रयत्न करते हैं। फैरेल का 'स्टड्स लौनिगान'[1] उदार भावनाओं और धर्म के संघर्ष का चित्रण करता है। डॉस पैसोस का यू० एस० ए० अप्राप्य प्रेरक शक्तियों के ताने-बाने बुनता है। इन शक्तियों में कोई धार्मिक एकता नहीं है। इनमें प्रत्येक सामाजिक शक्तियों से संचालित है जिसका उसे कोई भान नहीं है और न उन पर उसका कोई नियं त्रण ही है।

इस रूप में आधुनिक काल से पूर्व के कुछ उपन्यास सांस्कृतिक मूल्य स दीखते जिनमें सभ्यता और उसकी फूटों से पार भावनाओं के दर्शन होंगे। उनमें इस बात का इशारा है कि क्यों यूरोपीय और कुछ अमेरिकी आलोचक अमेरिकी उपन्यास को अमेरिकी जीवन के वैभव और उसके कष्टों का प्रतिबिम्ब मानते हैं? क्या अपने युग के सामाजिक और भावनात्मक मौसम का एक अंग होती है इसी आधार पर मास्वम काउली ने शताब्दी के मोड़ से अब तक के उपन्यासों की कथावस्तु की एक मनोरंजक परम्परा का पता लगाया है। इस शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में कथा-मनुष्य और प्रकृति को लेकर चलती है। किस प्रकार जैक लंडन भाँति का डारविनियन नायक अपने को कमजोर मानकर अपना वास्तविक स्थान उत्तरी ध्रुव के बर्फों में या जंगल में अथवा समुद्र में पाता है? 1920-30 के बीच की पीढ़ी में कलाकार और फ़िलिस्टाइन के संघर्ष की कथा मिलती है। थ्री सोल्जर्स दि जीनियस मेन स्ट्रीट[2] को देखिए। इस कथावस्तु को हम शताब्दी के मोड़ पर हेनरी जेम्स एडिथ व्हार्टन और एलेन ग्लासगो में भी पाते हैं किन्तु अब वह सामान्य वस्तु बन चुकी है। इस शताब्दी की दूसरी कथावस्तु है फिट्ज़ेराल्ड का अमेरिकी बाइरनिक नायक। 1930-40 के दशक में सर्वहारा उपन्यास का हड़ताली शहीद नायक है। (यद्यपि यदि गहरी छानबीन की जाए तो मालूम होगा कि उस काल में इसके उदाहरण उतने नहीं हैं जितने आज प्रतीत होते हैं।) अगले दशक के आरम्भ में कथाएँ विदेशों में जाने वाले या सेना में या बन्दरगाहों में नये प्रकार के जीवन का अनुभव करने वाले सैनिकों की होती थी। 1950-60 में काउली ने कई प्रमुख कथावस्तुएँ खोजीं हैं। जैसे बहुगामीता माँ के कारण उसका कलाकार पुत्र या साहस कथाएँ जिनमें 'मासूम' प्राय: न नैतिक पराजयवादपूर्ण विश्व में प्रतीक प्रमोद और प्रसादों की खोज करता फिरता है।

1 Studs Lonigan
2 Three Soldiers The Genius, Main Street

कि तीसरे और चौथे दशक बीते यह बात स्पष्ट हो गई कि ड्रेजर और सिंक्लेयर
लुई भी स्वाभाविकतावादी होने के साथ-साथ एक निश्चित ढाँचे में काम कर
रहे थे जो ब्रिटेन के डिकेंस और थैकरे और फ्रांस में बालज़ाक और ज़ोला से
भिन्न था।

सामाजिक प्रतिवाद और सुधार के माध्यम के रूप में अमेरिकी उपन्यास
की परम्परा काफ़ी अधिक लम्बी और घनी है। सामान्यतया इसकी ओर लोगों
का ध्यान नहीं जाता। यह परम्परा एच० एच० ब्रेकेनरिज से नेल्सन ऐल्ग्रेन तक
चली गई है। किन्तु यह सच है कि अधिक बलवती परम्परा वही है जिसकी
धारा मैंने बतलाई है जो समाज से विलगाव और अभ्यंतर में विचरण की है।
यह और भी ध्यान में इसलिए आती है क्योंकि अमेरिकी उपन्यासकारों से यह
आशा की जाती है कि वे अमेरिकी-संस्कृति में टाँग अड़ाने वाले और आशापूर्ण
झकझोरों का वर्णन करेंगे। वे मूर्त से पूर्व घटित होने और सामाजिक निर्माण
में लीन होने का चित्रण करेंगे। यह साहित्य को समाज का दर्पण मानने की
दलील के झुकाव को प्रकट करता है। अमेरिकी साहित्य का संस्कृति से सम्बन्ध
कहीं अधिक अप्रत्यक्ष और सूक्ष्म है। यद्यपि यह भी सच है कि साहित्य और
समाज का सम्बन्ध है क्योंकि कोई भी कला सामाजिक शून्य में पैदा नहीं होती।

अमेरिकी उपन्यासकारों ने जिस जलवायु में जन्म लिया है वह व्यक्तिगत असह
मति (Dissent) का रहा है जो धार्मिक और राजनीतिक परम्परा से मिलती
है। इस असहमति का उपयोग उपन्यास को सामाजिक परिवर्तन के लिए इस्ते
माल होने वाले हथियार के रूप में हो सकता था। फिर भी अमेरिकी उपन्यास
कार का मुख्य उद्देश्य सुधार ही था। अमेरिकी समाज एक खुला समाज है।
यहाँ सामाजिक समस्याओं पर राजनीति और अन्य संस्था के द्वारा और सीधा
आक्रमण भी किया जा सकता है। इसलिए जब उपन्यासकार समाज को धार आए
तो उसका उद्देश्य उसे बदलना नहीं बल्कि उसे अस्वीकार करना और उससे भाग
खड़ा होना था। इस प्रक्रिया में वह अन्तर्मुखी हो गया। अब वह अपनी ही नैतिक
और सामाजिक दुविधाओं की खोज करने लगा।

हेमिंग्वे तक। के समय तक यह स्पष्ट हो गया कि न्यू इंग्लैण्ड अभिजात्य
वर्ग का संसार उनके नियन्त्रण से बाहर जा चुका है। और कि अब परम्परागत
मूल्यों का कोई स्थान नहीं। इसके साथ-साथ समाज में भी परिवर्तन हुआ।
दस्तकारी का स्थान मशीन ने ले लिया। दर्जे का धंधा अब उद्योग और उत्पादन
पर आधारित हो गया। संश्लिष्ट दर्जेबंदी के स्थान पर व्यक्तिवाद आ गया।
प्राचीन रिपब्लिक और आज के जनतन्त्र के समाज के बीच एक व्यवधान आ
गया जिसका चित्रण शायद सबसे स्पष्ट ढंग से हॉवेल्स ने किया है। इस प्रका
अमेरिका में विचार जगत् में व्यक्तिवाद के दो छोर और समाज में ही गुंफन

व्यक्तिगत नैतिक निर्णयों पर जोर देता है। कभी-कभी ये निर्णय बड़े आश्चर्य-
कारी होते हैं। यह भी ऐसी ही स्थिति की देन था। जेम्स का प्रभाव इस प्रकार
की स्थिति में रहने वाले बुद्धिजीवियों और मध्यम वर्ग पर पर्याप्त रूप म पड़ा
है।

इस प्रकार अमेरिकी उपन्यास मुख्य रूप में असंतुष्ट (Dissidents) विद्रोही
लेखकों की देन है जो अपेक्षाकृत खुली समाज व्यवस्था क अंग हैं जहाँ व्यक्तिगत
समस्याओं क हल का कोई अधिनायकवादी छोटा रास्ता नहीं है। सच बात तो
यह है कि सभी उपन्यासकार असंतुष्ट (dissenter) भी नहीं हैं। फिर भी प्रत्येक
दल अपने लिए स्वयं नमूना तैयार करता है। अमेरिका में युवक जो सभ्यता के
सीमांत पर रहता है अपने समकालिकों क जीवन के सत्य को अस्वीकार करता
है। ये समकालिक उसे अयोग्य (misfit) करार देते हैं और वह अधिकांश
रूप में अस्त्र¹ की ओर झुकता है। बहुधा उसमें प्रतिभा तो कम पर स्थायी होती
है। अंततोगत्वा वह अपन समाज में घुल-मिल जाता है। किन्तु जीवन की एक
मंजिल पर वह विद्रोह का अभिनय करता है और विरोधी से अपनी साहित्यिक
खोज के माध्यम स संघर्ष करता है।

मैंने कहा है कि उपन्यास एक प्रवहमान समाज² का एक प्रवहमान रूप³ है।
प्रम की भूख और यौन सम्बन्धी हैरानियाँ विवाह में व्यक्तित्वों के संघर्ष पुराने
नैतिक विधि निषेधों और नई मान्यताओं में संघर्ष निजी और सामाजिक
नैतिकता की खोज ये कुछ एस प्रश्न हैं जिनके सम्बन्ध में अमरिकी समाज
कोई निश्चित हल नहीं प्रस्तुत करता। जहाँ बहुमत ने कोई स्वीकृत ध्येय और
मानक भी बनाए हैं अमरिकी युवा उपन्यासकार उसे चुनौती देता है। वह
सफलताओं के सम्बन्ध में नहीं बल्कि असफलताओं के सम्बन्ध में लिखता है,
वह परिपक्वावस्था की आवश्यकताओं के सम्बन्ध में नहीं बल्कि किशोरावस्था
के सम्बन्ध में लिखता है। शक्ति और धन के सम्बन्ध में नहीं बल्कि खोल आवेगों
के सम्बन्ध में लिखता है।

कुछ आलोचकों की शिकायत है कि अमरिकी उपन्यासकारों ने व्यापारियों
का चित्रण करन में उनक साथ न्याय नहीं किया है। इस प्रकार की शिकायत
करने वाल यह भूल जाते हैं कि उपन्यास म संतुलित मूल्यांकन नहीं होता।
उन्होंने उनका ऐसा चित्रण इसलिए नहीं किया कि व कोई क्रान्तिकारी या
मार्क्सवादी विचारधारा स दूषित थे। सच यह है कि संस्कृति व्यावहारिकता

1 Fiction.
2 Fluid Society
3. Fluid form

हीनता के वर्णन होते हैं। अमेरिकी उपन्यास में इन दोनों दशाओं के दर्शन ह
हैं अमेरिकी उपन्यास उस समय फूटा जब लोगों ने देखा कि धार्मिक कट्
से मुक्त होकर वे असीम और दुखान्त के स्वाभाविक ढांचे में ढल रहे हैं।

प्राचीन या मध्यकालीन बन्द समाज के युग में नायक अपने समय के च
और सफलताओं का प्रतीक होता है। इस प्रकार महाकाव्यों का नायक जाति
विजयों (जैसे 'इलियड' में) और परिभ्रमण (जैसे 'ओडेसी' में) या सामान्य धार्मि
अनुभव ('डिवाइन कॉमिडी' में) का प्रतीक था। किन्तु आधुनिक मानव अप
स्वयं नायक है। उसे अपना भार स्वयं ढोना है। यही सत्य है जिससे उपन्य
अपना आकार ग्रहण करता है। आज के अधिकांश उपन्यास प्रेम की मुठभे
सुख की खोज मन की दौड़ और आत्मा की यात्रा को लेकर निर्मित होते हैं
वे सफलता या असफलता में समाप्त होते हैं। उनका अंत विवाह की चाहन
में होता या फिर फाकनर की कहानियों की भांति अपराध और वर्ज्य मैथुन में
किन्तु सबदा प्रश्न यही रहता है कि मुख्य चरित्र ने क्या पाया और क्या खोया
उसका क्या हुआ? उपन्यास के दो धरातल होते हैं। एक सामाजिक अनुभ
का बाहरी धरातल और दूसरा स्वयं उसके मनोजगत का भीतरी धरातल
इसलिए उसमें सभ्यता के बहु-मिश्रणों को मिलाने की शक्ति का परिचय मिलत
है। उसमें सभ्यता के स्वीकृत मानदंडों व भिन्नताओं के चित्रण का अवस
होता है। यह वह साहित्यिक रूप है जिसमें उपन्यासकार अपने स्वप्न निराशाए
और प्रत-बाधाओं को अभिव्यक्ति देता है।

मध्य-युग में जब धर्म की तानाशाही थी और सामान्य व्यक्तियों को नीति
और धर्म के बड़े-बड़े फैसलों में बोलने का कोई अधिकार न था उपन्यास क
कोई मतलब ही न होता था। आज भी जहां तानाशाही है वहां उपन्यास फलते
फूलते नहीं दीखते। उपन्यास मुक्त और गतिशील समाज में फलता-फूलता है
18वीं शताब्दी का समाज ऐसा ही था जब उपन्यास का जन्म हुआ। इसलि
इस बात पर बहस करना बेकार है कि अमेरिकी उपन्यास की कथावस्तु निराशा
वादी और उसका माध्यम प्रतीकात्मक है। हाथोर्न और मेलविल भी ह
धर्मगुरुओं और प्रतिरवादी थे। किन्तु उनका समाज परिवर्तनशील होते हुए भ
सत्यान्मुखी न था। मेलविल और हारोल्ड लास्की ने इनके बारे में कहा था
इन्होंने प्यूरिटन के गलत समाज को तोड़ा क्योंकि ये आगे अपराध का शक्ति को देख
चुके थे। किन्तु यह मान्यता पर्याप्त नहीं है। उन्होंने भविष्य को देखकर नहीं लिख
बल्कि व उस युग में बद्ध थे जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं निर्णय करना पड़ता
है अपने मनोजगत् के भार ढोने पड़ते हैं दूसरों से सहानुभूति और एकात्मकत
प्राप्त करनी पड़ती है। इसका माध्यम सुस्थापित सम्प्रदाय नहीं होता। बल्कि
उन्हें स्वयं एक आत्म-ईमानदारी का नियम खोजना पड़ता है। हेनरी जेम

और 'टैम्पो' में पर्याप्त विभेद मिलेगा। बड़े माध्यमों ने स्पष्ट ही किस्सागोई की कला पर प्रभाव डाला है। आज कथा शैली से बढ़ती है। उसमें ज्यादा आधिकारिक और शैली साफ-सुथरी होती है। कथा शिल्प आधिकारिक और सुस्पष्ट होने से साहित्यिक सफलता निश्चित होती है।

*इस प्रकार यद्यपि अमेरिकी उपन्यास में अवनति के कोई चिह्न नहीं नजर* आते उसमें तुरन्त मशीनी सुविधाओं और कपटी साहित्यिक सस्तायों से खतरे अवश्य आ गए हैं। बड़े माध्यमों के चक्कर में आकर्षक महान् अमेरिकी उपन्यास' का स्वप्न छोड़ रहे हैं। किन्तु सब मिलाकर उपन्यास 'महान्' है क्योंकि उसमें अमेरिकी आत्मा का उपस्थापन और गहराई है।

मैंने अपने को उपन्यास तक सीमित इसलिए रखा है क्योंकि इसमें अमेरिकी सफलताएँ सबसे अधिक स्पष्ट हुई हैं। मैंने कहानी को इसलिए छोड़ दिया है कि सम्भवतः वह भविष्य का प्रतिनिधित्व करती है। गीति-साहित्य में अमेरिका का रेकर्ड आश्चर्यकर है। गीति में घोर उपयोगिता और विश्वशीलता पर होता है। पो और एमिली डिकिंसन ह्विटमैन हार्टक्रेन और इलियट (यदि इसे अमेरिकी मानें) फ्रास्ट मैकलीश पाउंड रॉबिन्सन जफर्स और वैलेस स्टीवेंस में अमेरिकी कविता ने पूरी और गीति क्षमता का परिचय दिया है जो अमरीकी मन के सम्बन्ध में पिटी-पिटायी धारणाओं को झूठा सिद्ध कराते हैं।

उन्नीसवीं शती में कविता कुछ हद तक पापुलर कला थी। लोक मन पर उसका प्रभाव था। लांगफेलो ह्विटियर, लॉवेल पो विलेट पूलिन फोस्टर और जेम्स ह्वाइट कोंब रिले इसके उदाहरण हैं। किन्तु इन कवियों का आधुनिक समालोचकों के लिए कोई विशेष महत्त्व नहीं है। *बीसवीं शताब्दी में जब कविता* में लोक-सामग्री का पर्याप्त प्रवेश हो चुका था अमेरिकी कविता अभिजात कला ही थी। अमेरिका ने कोई धर्म वर्ग सवर्ग या किर्पाणिप उत्पन्न नहीं किया जो जनमत और अभिजात वर्ग दोनों को प्रभावित कर सकता। ऐसा प्रतीत होता है कि युवा अमरीकी कवि को जो अपने लिए 'इडियम' की खोज कर रहा है अपना व्यक्तित्व बनाने में सारे समाज से अलग करना पड़ेगा। जनता भी कवि से अलग हो गई है। उसे मानो कवि के प्रति अपमान जैसा भाव है। विश्व विद्यालयों में कवियों के निवास का प्रबन्ध है। पर जैसा कार्मेन विपमन ने कहा है कि "विद्यार्थी रचनात्मक शिक्षा के लिए उसके साथ बैठकों को तो उत्सुक रहते हैं। पर विश्वविद्यालय छोड़ने पर वे कविता की कोई पुस्तक खरीदकर नहीं पढ़ते।'

इस संक्षिप्त सर्वेक्षण में मैं समालोचना का नहीं छोड़ सकता। 10"0 से 10.0 के वर्षों में इसका बड़ा विकास हुआ। यह अमरीकी साहित्य की परिपक्वावस्था का एक चिह्न है कि अमरीकी समालोचक—जैसे एडमंड विल्सन आर० पी०

ब्रैकमूर, वालविक वगैरह, कास्टाइस बर्के मास्कम काउली एलन टाटे मैकीवेल, साप्तानेस ट्रिलिंग मैक्सवैल मीजयर कैनेथबुर्के विटर्स ग्रक्रेड काजिम किसी भी स्कूल में स्थापित नहीं किए जा सकते। यद्यपि विभिन्न वर्गों को ध्यान में रखकर यह प्रयत्न अवश्य किया गया पर इसमें सफलता नहीं मिली। मैल्यू आर्नेल्ड ने कहा है कि समालोचना और कृतित्व के काल साहित्य में बदल-बदल कर आते रहते हैं। यदि यह सत्य हो तो कहना पड़ेगा कि अमेरिका में समालोचना का यह युग' आगे आने वाले रचनात्मक काल का अग्रदूत होगा।

## (ख) पाठक जगत् की क्रान्ति

पिछली पीढ़ी में पढ़ने के क्षेत्र में अमेरिका में क्रान्ति-जैसी ही चीज हुई है। यह क्रान्ति कागज की जंघी जिल्दों वाली सस्ती पुस्तकों के कारण हुई है जिन्होंने सम्पूर्ण अमेरिका को ही पाठकों का राष्ट्र बना दिया है। इसके कारण प्रकाशन के क्षेत्र में वृद्धि हो चुकी है जिससे प्रत्र ग्रन पुस्तकों का प्रकाशन व्यय जो कम पाठकों के लिए छपती है इतना बढ़ गया है कि कुछ ही प्रकाशक इसके लिए तैयार होते हैं। इस प्रकार 'सीमित पाठकों' (small audience) की संख्या घटी है और 'बड़े पाठकों (big audience) की संख्या काफी बढ़ी है।

'बेस्ट सलर्स' अर्थात् सबसे अच्छी बिकने वाली पुस्तकों की चर्चा अमेरिकी प्रकाशन इतिहास में सदा से रही है। फ्रैंक एल० मोट ने इस प्रकार की पुस्तकों का बड़ा सूक्ष्म अध्ययन किया है। उसने इस प्रकार की पुस्तक की परिभाषा करते हुए लिखा है कि "सबसे अच्छी बिकने वाली पुस्तक वह है जो अपने प्रकाशन के दस साल बाद आबादी की सौवीं संख्या में बिके। इस प्रकार 17वीं शताब्दी में माइकेल विग्गिलवर्थ की कविता-पुस्तक 'दि डे ग्रॉफ दि डूम' की जिसकी 1600 में 1000 प्रतियाँ बिकी थीं। 18वीं शती में 'मदर गूज' और टॉम पेने की 'कामन सेंस' तथा 19वीं शताब्दी में वाल्टेर स्कॉट की 'द लास्ट ग्रॉफ दि मोहिकन्स' हैरियेट बीचर स्टो की 'अंकिल टॉम्स केबिन' और श्रीमती साउथ वर्थ के उपन्यास प्रारम्भिक बीसवीं शती में जैसे स्ट्रैटन पोर्टर और हैरोल्ड बैल रिट सबसे अच्छे बिकते थे। हाल के वर्षों में 'गॉन विद दि विंड' फार-एवर एम्बर'[1] और पैरी मैसन की रहस्यवादी जैसी पुस्तकें सबसे अच्छी बिकी हैं। इन पुस्तकों की अमेरिकी मन का सूचक मानने का भ्रम होता है कि हम यह भूल जाते हैं कि ये पुस्तकें अस्थायी होती हैं। उन्हें पाठक उसी रूप में ग्रहण करता है जिस रूप में वन-पत्रिकाओं की कहानियाँ और रेडियो शोप ग्रापेरा।

अच्छी बिकने वाली पुस्तकों के होते हुए भी 'पुस्तक पढ़ने के लिए

1 Gone with the Wind Forever Amber

विशेष प्रयत्न की आवश्यकता रहती है। सभी जानते हैं कि राष्ट्रपति आइजनहावर ने कम पुस्तकें पढ़ी हैं। इसका एक कारण तो उनका व्यस्त जीवन रहा है किन्तु इसका मुख्य कारण यह है कि अमेरिका के कर्मशील मनुष्यों की भांति इन्होंने भी आँख और कान खुले रखकर ज्ञान प्राप्त किया है पढ़कर नहीं। अनुमान है कि आधे प्रौढ़ अमेरिकी कोई पुस्तक नहीं खरीदते। शेष आधे भी बहुत कम पुस्तकें खरीदते हैं। टेलीविजन के कारण बहुत बिकने वाली पत्रिकाओं को भी धक्का लगा है। टेलीविजन के दर्शक दूसरों की अपेक्षा कम किताबें पढ़ते हैं। कुछ परिवार ऐसे हैं जहाँ पढ़ने का शौक है पर ऐसे परिवारों से विद्यार्थियों की संख्या अन्य परिवारों से विश्वविद्यालयों आदि में बड़ी कम है।

अमेरिकी समाज में कागज की जिल्द की पुस्तकों (पेपरबैक) और पुस्तक-क्लबों के उदय से पढ़ने के क्षेत्र में पूरी क्रान्ति ही हो चुकी है। क्लबों ने पाठकों की संख्या में ही वृद्धि नहीं की है बल्कि वे पाठकों को परामर्श भी देते हैं। इनके माध्यम से लाखों अमेरिकीजनों ने अपनी पढ़ने की अभिरुचि बनाई है। अन्य उद्योगों की अपेक्षा पुस्तक उद्योग काफी पिछड़ा हुआ है। अमेरिका में बुक स्टोरों की संख्या 1400 है जब कि खाद्य स्टोरों की संख्या 5 लाख और पान पानघरों की संख्या $3\frac{1}{2}$ लाख है। इसी प्रकार गैस स्टेशनों की संख्या 2 लाख और औषधि स्टोरों की संख्या 50 हजार से अधिक है। पेपरबैक की क्रान्ति प्रति संस्करण में पुस्तकों की संख्या में वृद्धि और उत्पादन व्यय में कमी पुस्तकों के आकर्षक नामों के चुनाव और वितरण की प्रक्रिया में उन्नति से हुई है। अब औषध स्टोरों[1] अखबार के स्टैंडों खाद्य-बाजारों में किताबों की बिक्री का प्रबन्ध किया गया है। इस प्रकार पढ़ने की आदत अब अमेरिकी दैनिक जीवन के अत्यन्त निकट आ गई है।

इस शताब्दी के मध्य में अमेरिका में प्रतिवर्ष आधी बिलियन 'पेपर बुक्स' की बिक्री होती थी। इनमें पुस्तकों की संख्या लगभग 1000 थी। क्लोपैन गुई ने अनुमान लगाया है कि अर्ल स्टेनली गार्डनर, अर्स्किन काल्डवेल, थोर्न स्मिथ एर्मरी मलीन और मिकी स्पिलेन ये पाँच सबसे अधिक लोकप्रिय लेखक हैं। इन पाँचों में 3 हत्या और रहस्य की कहानियाँ लिखते हैं और स्पिलेन की रचनाओं में हिंसा और काम का जोर है। एक-दूसरे प्रकार की पुस्तकें भी जिसमें सामाजिक विज्ञान और साहित्य के भी कुछ क्लासिक शामिल हैं—लोकप्रिय हुई हैं। पेपरबैक की लोकप्रियता को देखकर यह प्रतीत होता है कि साहित्य की अच्छी पुस्तकें भी आगे लोकप्रिय होंगी। किन्तु क्या ये पानमेटी साहित्य

---

[1] Drugstores.

को संतुलित कर सकेंगी यह प्रश्न अभी पूर्णरूप से अनुत्तरित ही है। तात्पर्य यह है कि बड़ी संख्या म बिकने पर भी ये पुस्तकें अमेरिकी जनसंख्या के 20 प्रतिशत से अधिक द्वारा नहीं खरीदी जाती।

अमेरिकी पेपरबैक पुस्तकों के बाद जो श्रेणी आती है वह बड़ी निराशाजनक है। यही वह साहित्य है जो सड़कों के न्यूज स्टैंडों पर पड़ा रहता है। इसके कई स्थूल विभाग हैं जैसे विलक्षण साहित्य (कॉमिक किताबें कुडलियों के पन्ने सम्प्रदायवादी पत्रिकाएँ) रहस्य और साहस का साहित्य (हुडनिट्स[1] आतंक की कहानियाँ और वेस्टर्न्स) रोमांस (प्रेम की कथाएँ 'वास्तविक अनुभवों' के कार्नेग्राम और सिने-मन-पत्रिकाएँ) गुप्त पत्रिकाएँ (सिने-जगत् टेलीविजन और अन्य तथा म यौन-च्युतियों की कथाओं से पूर्ण इनकी खूब बिक्री होती है) यौन शोषण इस कैसे करें (कद कैसे दिखाएँ अमुक खेल कैसे खेलें?) आदि आदि। किसी भी न्यूज स्टैंड को देखें और आप पाएँगे कि वहाँ ऐसे साहित्य की भरमार रहती है। इन्हें देखकर तो अमेरिका क भविष्य के सम्बन्ध में विरहन का बचाना मुश्किल हो जाएगा।

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि भ्रष्टाचार मशीनों के कारण नहीं (मशीनें तो जो हम चाहे वही न छापेंगी) न ही जनता की अभिरुचि में कोई दोष है। जनता की अभिरुचि बनाई जाती है। इसके पीछे जनता की लापरवाही ही है। कॉमिक पुस्तकों (10 करोड़ प्रतियाँ प्रतिवर्ष अमेरिकी बाजारों म आती हैं) और स्लिक पत्रिकाओं म कोई बड़ा अंतर नहीं है। दामों के पीछे एक ही सूत्र है कि पाठक यह पसन्द करता है। पर कॉमिक पुस्तकों में हिंसा और आतंक का अंश अधिक रहता है और व अपेक्षाकृत युवा पाठकों द्वारा पढ़ी जाती हैं।

यह अन्तिम बात ही ऐसी है जिससे माता पिता व रूप म अमेरिकी चिंतित हैं। अभी हाल में इनकी और ध्यान गया है जो और चिन्ता का विषय है। वर्तमान सदी के चालीसे के मध्य कॉमिक पुस्तकों का अनुपात कुल पुस्तकों का 10 प्रतिशत था। एक दशक बाद उनका अनुपात तिहाई से अधिक हो गया। कॉमिक पुस्तकों का मूल है सामूहिकता अपराध और भय (harror) का मिश्रण। फलस्वरूप अमेरिकी नागरिकों में कच्ची उम्र म ही ये दुर्गुण प्रवृष्ट हो जाते हैं। इसका असर असामान्य बच्चों पर ही नहीं सामान्य बच्चों पर भी पड़ रहा है।

पेपरबैकों की यह क्रान्ति अभिजात और 'मोरोम पटन' के भ्रम को तोड़ दे सकती है। किन्तु इस पाखुसरी कारण का फल क्या होगा पता नहीं? अभी

1 Whodunits
2. Slick.

कई पीढ़ियों तक इसका पता न चल सकेगा। किन्तु इसका फल तब तक सामदायक न होगा जब तक पुस्तक-उद्योग वाले पालप्रेटी साहित्य के साथ-साथ अच्छी पुस्तकें भी पाठकों के हाथ में नहीं देंगे।

## ३. नायक पुराण-कथाएँ और माया

आज के अमेरिका म भी पुराण-कथाएँ (माइथोलॉजी) बन रही हैं। लोक साहित्य में इसके अवशिष्ट अभी भी हैं जिनकी अभिव्यक्ति होती रहती है। पापुलर कथाओं और गीतों के टाइप-व्यक्तियों के आसपास आज भी इनका तानाबाना बुना जाता है। इन सब में मूल बात एक है और वह है जनता की शक्ति जो कभी मूल नाम कभी सम्मिलित रूप से स्वतः कर्मशील रहती है।

जो कोई अमेरिका के लोक-साहित्य का अध्ययन करेगा उसे इस साहित्य के सातत्य और विच्छेद से आश्चर्य अवश्य होगा। सातत्य इस अर्थ में है कि पुराण-कथाओं के निर्माण की क्षमता अब भी सक्रिय है। किन्तु विच्छेद भी है अमेरिकी विद्यार्थी—चाहे शहरी हो या देहाती—पाल बनीयोन्स के बारे में जितना कम हो जानता है। अमेरिकियों की सतत प्रव्रजनशीलता और उपनिवेश वर्गों क निरन्तर आगमन के कारण पौराणिक भूत और वर्तमान में पर्याप्त विच्छेद है। अतः अब परम्परा से प्राप्त ऐस नायकों की प्राप्ति मुश्किल नहीं है जो सभी वर्गों को एक सूत्र में ग्रथित रख सकें अतः नये नायकों की खोज और आवश्यक हो जाती है।

जब मैं अमेरिकी नायकों की बात करता हूँ तो मेरे मन में उनके दो प्रकार होते हैं। एक इतिहास-पुस्तकों का नायक जैसे पुरानी सभ्यता का नायक होता है। उसमें स्वीकृत सांस्कृतिक लक्षण होते हैं और वह सामूहिक सफलता का प्रतीक होता है। वाशिंगटन लिंकन जफर्सन पोट आइजनहावर इनके आसपास गरिमा का एक वलय है जो अमेरिका को राष्ट्रीय पद देता है। किन्तु ये दूसरे प्रकार के नायकों से पावृत हैं। इस दूसरे प्रकार के नायक को हम देशी (Vernacular) नायक कह सकते हैं। यह इस अर्थ में क्योंकि ये अमेरिकी दैनिक जीवन की देन हैं। इन्हें हम मूल आदर्श भी कह सकते हैं जिसके चारों ओर अमेरिकी अपनी मनगढ़न्त कथाएँ रच सके हैं।

यह नायक अमेरिकी इतिहास-पुस्तकों के नायक से कम प्रभावशाली हो सकता है। सम्भवतः यह कोई सामान्य अमेरिकी ही है या कोई सामान्य शहरी लड़की होगी जो जॉन मॉप मार्क नहीं। इस नायक के पद का समय भी अल्प ही होता है। दिवालमाई की रोशनी की तरह यह घटाव से प्रज्ज्वलित होता है और फिर बुझ जाता है। प्रत्येक युग भी अपने नायक के सम्बन्ध म विभिन्न संकल्पना होती है। किन्तु जिस समय वह जन-मन पर राज करता है उस समय उसका प्रभाव

सेना या राजनीतिक पुरुषों से अलग ही होता है। यह जीवित छोटा-सा नायक अमेरिका को समझने के लिए भूत के बड़े-से-बड़े नायकों से अधिक महत्त्व का है।

कभी-कभी यह नायक दोनों प्रकारों का सम्मिलित रूप भी होता है। यह राष्ट्र की सफलताओं का प्रतीक और व्यक्तिगत आकांक्षाओं का प्रक्षेप भी होता है। व्यापारी नायक इसका एक उदाहरण है। पिछली पीढ़ियों में वह गेट्स ड्रियू गैरिम बैंडरबिल्ट रॉकफेलर मार्गन था पर सदा अर्जनशील तिजोरी पर ध्यान दिया हुआ। फिर भी युवकों द्वारा अनुकरण का सम्मान उसने प्राप्त किया। सूमानियों की भांति यह पुरुषों का पुंगव न था। बल्कि वह तो एक नितान्त अपूर्ण व्यक्ति था जिसने सामाजिक प्रयत्नों के एक खिंचाव का प्रतिनिधित्व किया। कार्नेगी ने हड़तालें तोड़ीं रॉकफेलर ने अपनी विरोधी कम्पनियों को तहस-नहस कर दिया। किन्तु एक वर्ग के प्रतिनिधि नायक के रूप में उनका सम्मान नहीं घटा। बल्कि वे राष्ट्रीय नायक माने गए। चूंकि जनता उनके निजी व्यक्तित्व से अपने को नहीं मिलाती वह उनकी सम्पदा को देखती है जिसे वह भी पाना चाहती है इसलिए ऐसे नायक के लिए चाहने लायक या गुणवान बनने की आवश्यकता नहीं। आधुनिक अमेरिका में इन अपूर्व 'पाइरेटों'[1] का स्थान फर्मों के मैनेजरों ने ले लिया है। इनके नाम व्यापार के पन्नों से बाहर नहीं छपते। नया व्यापारिक नायक संस्थागत ही आता है। वह अब ए० टी० एण्ड टी० या जेनरल मोटर्स बन गया है।

इन व्यापारी नायकों में मानवीय गर्मी नहीं होती जिसकी खोज अमेरिकी करते हैं। यह गर्मी सिनेमा टेलीविजन बास्केटबाल के नायकों में मिलती है। लियो लोवेन्थाल के शब्दों में अब 'कर्म की प्रतिमाओं' का स्थान 'आराम की प्रतिमाओं' ने ले लिया है।

अब हम एक तीसरे प्रकार के नायकों के क्षेत्र में पहुंचते हैं जो न तो राजनीति या व्यापार का मौलिक चरित्र है न बड़े माध्यमों का ही तो उस प्रक्रिया के दर्शन होते हैं जो पुराण-कथाओं का निर्माण करती है। यहीं हमें लोक-साहित्य के नायक के दर्शन होते हैं। यह वास्तविक या कथाओं का नायक दोनों हो सकता है।

इसका पहला प्रकार पौराणिक 'यांकी' है जो अमेरिकी क्रान्ति की देन है। मंदभाष तीखे स्वर वाला अभिव्यक्ति में पटु शायद घुमंतू फेरी वाला शायद एक नाविक या किसान मजाक-पसन्द और शपथों से पूर्ण। यह 'यांकी' का संक्षिप्त शब्द-चित्र है। 'यांकी' के बाद 'बैक वुड्समैन'[2] टाइप-व्यक्ति

---

1 Pirates.

2 Backwoodsman.

बना। कर्नल निम्रोद वाइल्डफायर यही था जिसने 'लायन ऑफ दि वेस्ट'
नाटक के नायक के रूप में देश-भर में धूम मचा दी। यह प्रारम्भिक बैक
वुड्समैन सरपट दौड़ता कौंव कौंव करता हिनहिनाता लम्बी नाचता और
अपने से ही बात करता था। वह स्वयं डवी कॉकेट भी हो सकता है जिसके
आधार पर इस निम्रोद वाइल्डफायर की सृष्टि का अनुमान है। इसी प्रकार
आगे नायक आये मसखरे मिक फिंक साम-स्लिक सामपैच या अन्य चरित्र
भी हैं जिनको लेकर अमरीकी कथाओं का ताना-बाना बुना गया।

बाद में जब जंगल कट गए और उनके स्थान पर 'लागिंग कैम्प' बन गए,
तेज नदियों पर स्टीम-नावें चलने लगीं ऐसे दिन गए लोक-साहित्य म नायकों
की श्रेणी में नये चरित्र आये। अब इनके आस-पास बड़ी-बड़ी कथाएँ बनने लगीं
जिनमें नये महाद्वीप के गुजरने की करुण-गाथा और सफलता कामों के चित्रण हुए
हैं। बिगनाथ उर्फ़ा बनियन को लकड़हारों का भाग्य देवता ही था पिकॉस
बिल जिम गड़रिये लड़कों का सांस्कृतिक नेता कहा गया है और जॉन हेनरी
या चीस मुर्रेल टोली का बड़ा नायक था बिली दि किड और जेसी-जेम्स जैसे
हत्यारे और जू-मैमरक मली पाखु का डालने वाला—ये सब नायक इसी युग
की कृतियाँ हैं।

इन सभी व्यक्तियों के सम्बन्ध में कथाएँ चलीं और उन पर बैलाड लिखे
गए। इनमें जो कुछ था वह सत्य कम झूठ ही अधिक था। कालान्तर में
अमेरिका में महापथ के विस्तार के प्रत्येक चरण के सम्बन्ध में कथाएँ बन
गईं। यह पुस्तकहीन समाज का साहित्य था। इसमें अधिकांश दक्षिण और
पश्चिम की विकसमान शक्ति की अभिव्यक्ति थे। इस लोक-साहित्य में धानी
बाजी अधिक थी। इसमें एक हास्य भी था। वह हास्य जिसका अन्त क्रूरता
पैनी घटना में होता है। यहाँ क्षमता भी थी जिसका साहित्य दूसरे ग्रिम्म
था था। इसमें भयंकर मूर्खता चतुरता और संयोगिक मज़ाक भी मिलेगा।
सभी कुछ एक जैसा न था। 'यांकी' की चरित्र चर्चा में 'स्प्रेड ईगल'[1] की
अराजक स्वच्छन्दता थी। बैकवुड्समैन में एक प्रकार का दृढ़तापूर्वक स्वीकरण
का असम्बद्ध भाव था। लोहपुरुष की कथाओं में कोरी कल्पना था और 'अप
राधी हत्याओं पर उदारतापूर्वक भावनाओं की चर्चा की गई थी। पर जो भी
हो अमेरिकी लोक-साहित्य में वही लोन्मुख था जो किसी संस्कृति के पकड़कर
चलने और गढ़ करने म होता है।

इन कथाओं की सामग्री दैनिक जीवन से ही ली गई है। इसका रूप
मार्ने और बैलाड था, सेटिंग स्थानीय थी और मूड 'मॉक-एपिक'[2] का था।

1 Spread eagle
2 Mock-epic.

स्थानों में वे सब से जो आसपास मिल सकते थे। कलाकारों और दर्शकों में कोई विभाजक रेखा भी न थी। भूमिकाएँ भी प्रायः बदलती रहती थीं। कभी कभी दर्शक भी कलाकार बन जाते थे। कहानियों, बैलाडों और लोक-कथा वस्तु में भी खूब परिवर्तन होते रहते थे। यहाँ तक कि मूल पाठ ही बिलकुल बदल जाता था।

अमेरिकी कथाओं का जीवन बड़ा छोटा होता है। उन्हें प्रायः लोग भूल ही जाते हैं। या फिर वे गम्भीर पुस्तकों या पत्र-पत्रिकाओं में सीमित रह जाती हैं। अमेरिकी इतिहास और पुराण-कथा में ऐसा प्रायः हुआ है कि कोई वास्तविक व्यक्ति अमेरिकी सामयिक लोक साहित्य का नायक बन जाता है। जब-जब ऐसा हुआ है 'बूम' मात्रा को पार कर गया है और एक प्रकार का उन्माद बनकर सारे देश पर छा गया है। सारे अखबार, सिनेमा, टेलीविजन सब पर एक ही चर्चा होती है। बच्चे उसकी रट लगाते हैं। 1950 के बाद ऐसा ही एक डेवी क्राकेट बूम आया था जब टोपियों, कोट-पैंट, पायजामा खिलौनों सब पर 'डेवी-क्राकेट' छा गया था। जितनी तेजी से बूम आता है उतनी तेजी से जाता भी है। ये 'डेवीक्राकेट' उन्माद के बाद युवकों में 'जेम्सडीन' का उन्माद आया। जेम्स डीन एक सिने कलाकार था जिसकी मृत्यु मोटर-दुर्घटना में हो गई थी। उसके मरने के कुछ महीने बाद ही युवकों ने उसे अमर बना दिया। उन्होंने उसके नाम पर 'जेम्स डीन क्लब' बनाया और यह मानने से इनकार कर दिया कि उनका नायक मर गया है। इन बूमों का असली स्वरूप क्या है इसका अध्ययन समाज-मनोवैज्ञानिकों को करना चाहिए। इसका सुराग इस बात में मिल सकता है कि इस मशीन के युग में जब सब कुछ निर्वैयक्तिक है जनता को कोई न कोई वास्तविक नायक बनाने की भूख अवश्य रहती है।

फिर भी इन अस्थायी बूमों के अलावा अमेरिकी कथा ने सामयिक अमेरिकी चरित्र का एक बहुत बड़ा आधार खोजा है। 'एबे लिंकन' की बातचीत में आप लोक-कथाओं की कुछ हास्यकर चीजें पा सकते हैं। लिंकन अपनी दुखद मृत्यु के बाद पुराण-कथा बन गया। मार्क ट्वेन का पाठक जानता है कि उसकी सफलता कभी भी सम्भव न थी यदि उसकी जड़ें लोक-स्मृति में न होतीं। कान्स्टेंस रूर्क ने शोध किया कि हेनरी जेम्स जैसे सुविख्यात उपन्यासकार ने भी अमेरिकी चरित्र का चित्रण पुराने ढंग में ही किया है। माना यह जाता है कि लोक-जीवन से एक दम दूर कलाकार को भी लोक-कथा-वस्तु प्रभावित करती है। स्टेनबेक, फॉकनर, काल्डवेल, वेल्टी, एलीसन और रिंग लारनर में भी लोक-आदर्शी परम्परा तक उभरने वाली अन्तःसलिला की भाँति सुस्पष्ट रहती है।

यह कथा-निर्माण की प्रक्रिया अब भी चल रही है। पश्चिम के नायक और डायम (यानी चवन्नियाँ) उपन्यासों का स्थान अब 'कॉमिक स्ट्रिपों' ने ले लिया है। पॉल बनियन और जान हेनरी जो स्वयं सीमान्त हर्कुलिस के साँचे में ढले थे सब सुपरमैन या डिक बन चुके हैं। बैक-वुड नायक भी लिल एब्नर बन चुका है। टाड बकी की जानवरों की कहानी अब पोगो और उसके साथी की हो चुकी है। 'सीमान्त के करामातों' ने अब लिमिअर और बिली सटन के करामातों की शक्ल धारण कर ली है।

यह कहना कि आधुनिक सामग्री पहले की सामग्री से घटिया है या कम महत्वपूर्ण है या अधिक मिलावटी है इस बात को नजर-अन्दाज करना है कि कथा-निर्माण की आवश्यकता जनता में से ही उठती है। और उन्हें जो कुछ भी सामग्री मिलती है उसी पर वे निर्भर रहते हैं। प्रत्येक काल में ऐसे व्यक्ति अवश्य होते हैं जिनके नाम-नाम कथाएँ बनती रहती हैं। प्रत्येक पीढ़ी में प्रतीकात्मक घटनाएँ भी होती हैं जैसे ईसाई युद्ध विपत्तियाँ परिवहन के नये साधन आदि। जिन समाजों में आबादी काफी समय से स्थायी होती है उनमें लोक-साहित्य परम्परागत सामूहिक स्मृतियों के रूप में होता है। न्यू इंग्लैण्ड व 'डाउन ईस्ट' में अब भी कुछ ऐसे स्थान हैं जहाँ ऐसा समाज है। किन्तु ऐसे समाज अमेरिका में कम ही हैं। यहाँ तो नागर-स्मृति की प्रक्रिया उतनी प्रकट नहीं है जितनी नायक-निर्माण द्वारा रचना कथाओं और मजाकों की है जो राष्ट्रीय जनता के मन पर छा जाती है। अमेरिका संस्कृति अपनी पुरानी कथाओं से सम्बन्ध तोड़कर नई कथाओं का निर्माण कर रही है। मैंने अन्यत्र कहा है कि अमेरिका में इतने गतिक और सजीव बल हैं कि उनके कारण प्रत्येक पीढ़ी में नये सिरे से प्रारम्भ करना आवश्यक हो जाता है। फिर भी अमेरिका ने विदेशी संस्कृतियों से जो कुछ लिया है उसे छोड़ नहीं दिया है।

अमेरिकी कथा में रचना-शक्ति कितनी है? क्या लोक-नायकों में अमेरिकी चरित्र की शक्ति और गहराई को अभिव्यक्त की है? क्या कहानियों और गीतों ने उनमें अमेरिकी अनुभव की भावात्मक महत्ता डाली है या वे केवल सतही रह गए हैं?

अमेरिका सभ्यता यूनान आदि के मुकाबिल अभी इतनी नई है कि इस प्रश्न का उत्तर देने का समय नहीं आया है। 'व्हाइट गॉडेस'[1] यूनानी दृष्टान्त लियो होमर या आर्थूरियन कथाओं का मौलिक ढाँचा पुराना है। इसी प्रकार मूसा आख्येद, पाम्पस या मागनाद का भी कथागत पर्याप्त प्राचीन है। अमेरिकी कथाओं में इन महान् कथाओं की गहराई अभी नहीं आ पाई

1 White goddess.

है। अभी कलाकारों को इससे इतनी प्रेरणा भी नहीं मिलती जितनी इन कथाओं से मिलती है। इसका कुछ कारण तो अमेरिकी चरित्र है जो बार बार पटरी से उतरता रहा है और बार-बार जिसकी हवा निकलती रही है। कुछ इस कारण भी कि वह कल्पना का पूर्ण स्नेह समर्पण नहीं करता, जब कि उसे आने का इतना खतरा भी है। किन्तु प्रधानतः यह सत्य है कि अमेरिकी चरित्र की दुःखान्त सीमाएं उसकी धार्मिक तल्लीनता और उसके उपन्यासों और लोक-साहित्य में हैं। इनका विस्तार तो हुआ है पर उनमें भावनात्मक समृद्धि नहीं आई है।

यह सामूहिक कल्पना सबसे अधिक भाषा के क्षेत्र में समृद्ध रूप में प्रकट हुई है। निश्चय ही अमेरिकी भाषा अमेरिकी अनुभव की सबसे समृद्ध उपज है। ऊबड़-खाबड़ ईमानदारीपूर्ण पुष्ट (मांसल) मुहावरे से भरी यह अमेरिकी शक्ति और उसकी लय को बड़ी सफाई से अभिव्यक्त करती है। यह राष्ट्रीय अनुभव का निर्माण कर रही है। शायद ही कोई दूसरी सभ्यता हो जिसने अपनी भाषा की विरासत को इतने कम समय में इतनी प्रौढ़ और अपनी आवश्यकतानुसार अपने काम का बना लिया हो। अमेरिकी शब्दों के हिज्जे 18वीं शताब्दी के अन्त से ब्रिटिश हिज्जे से काफ़ी भिन्न हैं। नोह वेब्स्टर के प्रयत्नों के फलस्वरूप अमेरिका ने अपने को सांस्कृतिक उपनिवेशवाद से मुक्त किया और अपनी स्वतन्त्र हिज्जे और उच्चारण-पद्धति बनाई। यद्यपि व्याकरण और वाक्य रचना-पद्धति धीरे-धीरे बदल रही है किन्तु शब्द-रचना तो इतनी तेज़ी से हो रही है कि उसे साहसपूर्ण ही कहा जाएगा। महाद्वीप के खुलने के साथ-साथ नये शब्द और नयी अभिव्यक्ति-पद्धति का निर्माण प्रारम्भ हो गया था। भाषा-रचना के समानान्तर उदाहरण के लिए एलिज़ाबेथ युग में जाना पड़ेगा जब सामान्य जनता की भाषा और नाटकों की भाषा एक-दूसरे को प्रभावित करती हुई तेज़ी से समृद्ध हुई।

अमेरिकी भाषा समृद्ध ही नहीं अपनी मातृ भाषा के मुकाबले इसमें एकरूपता भी अधिक है। इंग्लैंड में बोलियों का विकास इतने विभिन्न रूपों में हुआ है कि एक जगह का आदमी दूसरे भाग की बोली कठिनाई से समझ सकता है। मिडलैंड की बोली को पुरानी दक्षिण की बोली से अधिक प्रगतिशील और 'परिनिष्ठित' या 'सामान्य' इंग्लिश मानी गई। अमेरिका में ऐसी कोई कठिनाई नहीं आई। वहाँ किसी बोली को 'परिनिष्ठित' मानने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। कोई भी व्यक्ति अटलांटिक से प्रशान्त तट तक चला जाय उसे समझने या समझाने की कोई कठिनाई नहीं आयेगी। इसका कारण है अमेरिका की गतिशीलता। वहाँ जनता का इतना आवागमन है कि किसी बोली के स्थिर होने का अवसर ही नहीं है। बड़े माध्यमों के कारण नये शब्दों के अर्थों और

उच्चारणों का प्रसार प्रचार भी तुरन्त हो जाता है। टेलीविजन ने अमेरिकी भाषा को स्थिर करने में बड़े मदद दी है क्योंकि इसमें वाणी का संयोग चित्र से रहता है किन्तु भाषा की इस एकरूपता पर अत्यधिक जोर देने की आवश्यकता नहीं है। 'अमेरिकी लैंग्वेज' के 'दूसरे पूरक' में मेन्केन ने शब्दवार नये शब्दों का समाहार किया है। ये शब्द इतने स्थानीय हैं कि राष्ट्र के दूसरे भागों में इनका कोई तात्पर्य ही नहीं जानता। किन्तु परिश्रम से इनकी तालिका बनी है उससे यही सिद्ध होता कि स्थानीय भेद अल्प ही हैं।

इसी प्रकार 'अमेरिकी भाषा' के पार्थक्य में भी अतिरंजना है। अमेरिका में जो भाषा बोली जाती है उसका गठन भी वैसा ही है जैसा इंग्लैण्ड की भाषा का। मौलिक शब्दावली भी एक ही है। साहित्यिक संयम भी है। उच्चारण में पर्याप्त भेद भी है। पर अमेरिकी और ब्रिटिश उच्चारण में उतना भेद नहीं है जितना मिसीसिपी और ब्रुकलिन के अमेरिकियों के ही उच्चारण में है। फिर यह पर्याप्त भेद कहाँ है? भाषा का गठन साहित्य या विचारों के रूप तो एक ही है। अमेरिकी जॉनडवी और ब्रिटिश बर्ट्रेंड रसल या अमेरिकी सिन्क्लेयर लुई और ब्रिटिश एच० जी० वेल्स में क्या अन्तर है? मुख्यभेद मुहावरों में है जो बोलचाल के होते हैं। ये भेद लय और विभक्तियों में है। महत्ता की शक्ति और शब्दों के दैनदिन के प्रयोग में आने वाले शाहकर्मों में है।

जनता की भाषा सभ्यता का नमका होती है। इसमें देसी शब्द-संपत्ति अर्थों के रूप लय के साथ भाव तथा अर्थ में सूक्ष्म अन्तर सम्मिलित हैं जो समाज के सदस्य को एक होने का भाव देते हैं और दूसरी भाषा के प्रयोग करने वालों से अलग करते हैं। इसमें ही वे तत्व हैं जो हमें दूसरों से बड़ा होने का भाव देते हैं। यह बड़प्पन सांस्कृतिक राष्ट्रीयता का एक अंग है। अमेरिकी भाषा इंग्लैण्ड की भाषा से इतनी भिन्न नहीं है कि उसे एक पृथक भाषा की संज्ञा दी जा सके। किन्तु वह ब्रिटेन की अंग्रेजी से उतनी दूर भी अवश्य है जितनी अमेरिकन-संस्कृति ब्रिटिश-संस्कृति से दूर है।

यह पार्थक्य कैसे आया यह बताना मुश्किल नहीं है। अमेरिकियों ने अंग्रेजी भाषा और साहित्य से प्रारम्भ किया। किन्तु यह विरासत उस संस्कृति की थी जिसका क्रांति के पश्चात् कोई आधिपत्य न रह गया था। अमेरिकी भाषा भी इसीलिए तुरन्त स्वतन्त्रता की ओर बढ़ चली। उपनिवेशवाद से राजनीतिक मुक्ति की माँग थी कि सांस्कृतिक स्वतन्त्रता भी प्राप्त की जाए। सीमान्त किसान और बैकवुड्समैन जमीन का रोजगार करने वाले उपदेशक और अध्यापक प्रोमोटर और वकील फेरीवाले और देहाती बनिये मजदूर और खदानों के मालिक नहरों के मछुवे और स्टीम बोटों के चालक रेलें बिछाने वाले मजदूर देहाती पत्रों के संपादक समाचार पत्रों के संवाददाता शहरों में उन्नति करने

वाले चतुर युवक कहानियाँ कहने वाले इन सबने मिलकर 19वीं शताब्दी तक एक ऐसी भाषा का निर्माण किया जिसका अपना 'इडियम' था सब गति रूप और शक्ति भी अपनी थी। एन विलियम और विक्टोरिया के इंग्लैण्ड से इनमें एक विशाल समुद्र की दूरी थी। अमेरिकियों ने जान लिया कि वे अपनी शक्ति से कुछ बना रहे हैं। उन्होंने इसे क्लासिकल विरासत के रूप में नहीं बल्कि आकार निर्माण के यन्त्र के रूप में ग्रहण किया।

भाषा का देदीप्यमान पहले अखबारों में आया। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में। देहाती भंडारों शहर की सड़कों ऐंडी जैक्सन की बातचीत और लिंकन के भाषणों में भी इस भाषा के दर्शन हुए। रायल टीलर के नाटक 'दि कॉन्ट्रास्ट' में ब्रिटेन और अमेरिका की बोलियों में फ़र्क पहली बार दिखलाया गया। टीलर के 40 साल बाद लांगस्ट्रीट ने बोलचाल की अमरीकी भाषा को प्रथम श्रेणी की साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। लावेल 'बिगलो पेपर्स' और एच० स्टो की प्रारम्भिक कहानियों में न्यू इंग्लैण्ड की बोली का प्रथम बार साहित्य में प्रवेश हुआ। मार्क ट्वेन ने अपनी 'हकलबेरी फिन' एकदम बोली में लिखा किन्तु यह पाठकों का मनोरंजन तो कर रही थी पर स्वयं बोली बोलने वाले इससे प्रसन्न न थे किन्तु लेखक का अपना कर्म होता है। जब उन्होंने अपना काम कर दिया तो निश्चित हो गया कि विजय हो चुकी है। और अब इस प्रश्न को हल करने के लिए निर्णायक युद्ध न होंगे। अब यह खतरा न था कि अध्ययन के यूरोप का भाग्य अमेरिका को भी भोगना पड़ेगा। अब लिखने और बोलने की भाषा में पर्याप्त अन्तर था।

किन्तु इसके बाद भी अमरीकी साहित्य की कुछ श्रेष्ठ रचनाएँ क्लासिकल अंग्रेज़ी शैली में ही लिखी गईं। हेनरी जेम्स ने इसी शैली में लिखा। शिक्षकों विचारकों संपादकों राजनीतिक वक्ताओं साहित्यिक ब्राह्मणों में यही शैली चलती रही है। इसी बीच पापुलर कलाओं में नई बोली की शक्ति भर चली। चलचित्र सिनेमा संगीत सनसनीखेज़ अखबारों के सतम्भ अपराध और पैसकुल की रिपोर्टें रेडियो इस नई वाणी के हाथ में आ गए। इस समृद्धि के बिना इन कलाओं का अमेरिकी मन पर इतना प्रभाव न पड़ता। उपन्यास में भी इसका प्रवेश हुआ जिसके उदाहरण एंडर्सन, लुई, मार्कर हेमिंग्वे फैरल फॉकनर, स्टेनबेक आदि हैं। इन सबकी अपनी अपनी शैली और कला है पर ये सब इस नई बोली के आचार्य हैं। अमेरिकियों की दृष्टि में वाणी को तोड़कर उसे फिर से जोड़ना नहीं पड़ता जैसा कि ज्वायस ने किया था। अमेरिकी बोली के शब्द इतनी तेज़ी से निकलते हैं कि उन्हें पचाना मुश्किल है। किन्तु जो शब्द टिके रह जाते हैं वे अमरीकी अनुभव के एक अंश हैं।

यह समृद्धि सबसे पहले सीमान्त जीवन से आई। महाद्वीप के खुलने से

जंगली अतिशयोक्ति और दंभ की कहानियों की शुरुआत हुई। फिर नगर बसने और बहुत नये नाम मिले। भाषा की यह समृद्धि मजदूरों संघ-सूत्रों को अपराधों, युद्ध और सेनाओं और व्यापारियों की मुनाफे की मेहरबानी से भी आई। अन्त में विलास दर्शकों वाले खेलों रंगमंच और सिनेमा रेडियो सुगम संगीत नाच और नृत्य सराफा बाजार और मजदूर संघों ने इस समृद्धि में योग दिया। नये शब्द (और पुराने शब्दों के नए अर्थों में प्रयोग) सामान्यतः किसी पेशे के अन्दर से निकलते हैं या फिर उन कुछ लोगों के द्वारा निकलते हैं जो खेलों या कला का भक्तिपूर्वक ग्रहण करते हैं। शुरू में ये शब्द निरर्थक भी लग सकते हैं। किन्तु सतत प्रयोग से यह निरर्थकता छूट जाती है और ये शब्द जनता में घुल-मिल जाते हैं।

अमेरिकी भाषा की सफलता का रहस्य यह है कि अमेरिकी जीवन की भौतिक और सामाजिक तरलता ने भाषा की तरलता के लिए मार्ग खोल दिया है। जिस समाज में वर्गबन्दी होती है वहीं भाषा कई सतहों में बंट जाती है जैसे धार्मिक और धर्मेतर भाषा साहित्यिक और जनभाषा। अमेरिका में आभिजात्य वर्गों का अभाव है, इसलिए भाषा भी बंधने से बच रही है। यह एक ऐसा रचनात्मक यज्ञ है जिसमें गरीब-से-गरीब भी सम्मिलित है। सभी पापुलर कलाओं में पापुलर कला भाषा के निर्माण की कला है।

अमरिकी भाषा पर जो अनुदार प्रभाव पड़े हैं मैं उनसे इनकार नहीं करता। सबसे गहरा प्रभाव तो स्थानिकता का है। अमरिकियों में पर्याप्त भौगोलिक चालिता है। फिर भी जिस क्षेत्र या स्थान में आदमी रहेगा उसका प्रभाव उसकी बोली पर पड़ेगा ही। न्यू इंग्लैण्ड का परिवार अब दक्षिण में बसता है, तो उस पर वहां की बोली के लहजे का प्रभाव पड़ता ही है। आश्चर्य की बात है कि इंग्लैण्ड की विभिन्न बोलियों का प्रभाव विभिन्न क्षेत्रों में अब भी स्पष्ट है। गैर बोलियों वालों का इस सम्बन्ध में उन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं दीखता। अमेरिकी स्थानीय बोलियाँ इंग्लिश से कम विशिष्ट हैं। इंग्लैण्ड में हजारों वर्ष का इतिहास ऐसा है जब वहां सड़कों आदि का कोई अच्छा प्रबन्ध न था। इसके विपरीत अमेरिका में संचार-व्यवस्था बहुत ही अच्छी रही है। फिर भी जैसा लोमाक्स मायर ने कहा है कि बोलियों के फर्क का हम रेखाएं खींचकर दिखा सकते हैं।

मायर और मार्कम ने 'अमेरिकन इंग्लिश इन इट्स कल्चरल सेटिंग' नामक पुस्तक में 'बोलियों के समुदायों (speech communities) की चर्चा की है। इस पुस्तक में अमरिकी वाणी में स्थानीय भेदों पर पर्याप्त प्रकाश पड़ा है। इससे स्पष्ट होता है कि अमरिकी महाद्वीप में बोलियों के ऐसे समुदाय हैं जो एक-दूसरे से पर्याप्त विभिन्न हैं। हर एक के पास अपने कुछ ऐसे लहजे और ढंग

है जिससे वह दूसरों को पकड़ सकता है। इसी प्रकार आवश्यकतानुसार साहित्य की भाषा और बोलचाल की भाषा का प्रयोग होता है। इन सबके अतिरिक्त स्कूलों का प्रभाव भी है। सभी जगह अध्यापक सर्वथा नये प्रयोगों का प्रतिरोध करते हैं। 'शिक्षित' अमेरिकी भाषा के सम्बन्ध में 'शुद्धता' का दृष्टिकोण रखता है। ज्यों ज्यों अमेरिकी शिक्षा की सीढ़ी में ऊपर चढ़ते जाते हैं सामान्य जनता की बोली से उनका सम्पर्क छूटता जाता है। फिर भी वह बोली उनके जीवन में प्रविष्ट हो चुकी है। उन्हें अब इसका पता ही नहीं है कि जो शब्द वे बोलते हैं उनमें कौन-से साहित्य में प्रयुक्त हुए हैं और कौन-से उनके बोलियों के अनुदान के हैं।

अमेरिकी भाषा की शक्ति का एक कारण है कि यहाँ भाषा की शुद्धि के कोई स्थिर सिद्धान्त नहीं हैं। इसका उदाहरण मेन्केन के अमेरिकन लैंग्वेज की तीन जिल्दों में मिलेगा। मेन्केन के सम्मुख दो सिद्धान्त थे। एक यह कि वह अमेरिकी भाषा कैसे बोलनी चाहिए न कि वह कैसे बोली जाती है। दूसरा यह कि वह किसी परिनिष्ठित भाषा की कल्पना नहीं करता। उसके प्रयोग पर अधिक बल देता है। बड़े आश्चर्य की बात है कि लेखक जिसने अपने जीवन में जनवादी लोकतंत्र और धर्म-व्यवस्था का घनघोर विरोध किया भाषा के क्षेत्र में इतना जनवादी कैसे हो गया? उसके बाद के सभी विचारक उसके दृष्टिकोण का अनुसरण करते हैं। हाँ यह बात अवश्य है कि इस सम्बन्ध में भी वे (मेन्केन भी) यह दिखलाना नहीं चूकते कि कैसे बर्बर जनता ने विजय पाई है। अधिकांश अमेरिकियों ने अन्य स्थानों की भाँति इस क्षेत्र में अधिनायकवाद का विरोध किया है। वे इस बात में भी स्वाभाविकता का अनुगमन करते हैं। यदि इस प्रकार उन्होंने शिकम्मरी भाषा शुद्धि नहीं प्राप्त की तो वे शिष्टाचार को भी बचाते हैं। वही शिष्टाचार आगे चलकर प्रवासियों बाद भाषा और संस्कृति की अस्थिरता का परिचय देते हैं।

यदि शैक्षिक (academic) मान्यों का जोड़ भी दें तो नये शब्दों का मूल्यांकन करने के लिए मानकों का प्रश्न बना ही रहता है। कोई कह सकता है कि व्याकरण वाक्य रचना शैली या नये शब्दों के सम्बन्ध में कुछ परिवर्तन स काम चल जाता है। किन्तु अंतिम परीक्षा तो उनके जिन्दा रहने की है। अधिकांश नये निर्मित शब्द मर जाते हैं। जो जिन्दा रह जाते हैं उनमें अधिकांश ऊबड़-खाबड़ कपट पूर्ण या मिलावटी होते हैं। मेन्केन ने कुछ ऐसे ही मजेदार शब्दों के उदाहरण दिये हैं जिन्हें वह सुगन्धित (scented) शब्दों की संज्ञा देता है। जैसे रियल्टर रियल इस्टेट एजेंट के लिए, अण्डरटेकर के लिए मार्टिशियन या प्लंबर के लिए सैनिटरी इंजीनियर। इसी प्रकार सेल्समैनशिप में कान्टेक्ट शब्द का क्रिया के रूप में प्रयोग विज्ञापन के क्षेत्र में कॉस्मेटाइज और फाइनेंस आइड शब्द

है। इस प्रकार के शब्द अमेरिका में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बड़ल्ले से बन रहे हैं। इन शब्दों को प्रायः वे लोग अपनाते हैं जो समाज में शिष्ट माने-जाने के लिए लालायित रहते हैं। जिन्हें हम बरबस प्रयोग कहते हैं जैसे इट्स मी या दो नकारात्मकों का प्रयोग में जनता की प्रवृत्ति का परिचय देते हैं। शिक्षित-वर्ग इनका चाहे कितना ही विरोध करें साहित्य में ये स्वीकृत होकर रहेंगे।

भाषा में जो शब्द आ रहे हैं उनके तीन प्रकार कर्मो सम्बन्धी शब्द जैसे टेकनिकल पेशों के या वैज्ञानिक 2. समृद्धि सम्बन्धी शब्द जिनका निर्माण प्रायः विज्ञापक करते हैं और 3 मिलावटी (synthetic) शब्द। ये शब्द यथाशतर नये ईजाद होते हैं। मुर्गबित (aoctend) शब्द सामान्यतया इसी वर्ग के होते हैं।

प्रश्न उठता है कि कब तक अमेरिकी बोली अपनी शक्ति और विकास के सिद्धान्त की रक्षा कर सकेगी। यह तो सत्य ही है कि यह समस्त शक्ति इस बोली में है क्योंकि विश्व के कोने-कोने में इसका प्रभाव पड़ रहा है और युवक इसका अनुकरण कर रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि अमरिका के धन की कृपा ने इसे विश्व-भाषा का पद दे दिया है। विश्व भर के शिक्षितों की यह दूसरी भाषा बन गई है। जिन्होंने यह भाषा नहीं सीखी है उनकी कामना इसे सीखने की है।

किन्तु अब बड़ माध्यम (big media) साहित्यिक आविष्कारों का मुख्य वाहन हो रहा है। इस आविष्कार में एक प्रकार की कृत्रिमता आ रही है। अमेरिकी सांस्कृतिक व्यापारवाद इस पर हावी हो रहा है। सर्वत्र आपको पैसा पैदा करने की धुन दिखलाई पड़ेगी। साहित्यिक भाषा में अतीव कृत्रिमता तथा विषय और रुचि का अभाव मिलेगा।

अमेरिकी बड़े माध्यम द्वारा भाषा पर प्रभाव की मैं अतिरंजना नहीं कर रहा हूं। निश्चय ही इन बड़े माध्यमों में कार्य करने वाले लेखक घोषक नट आलोचक आदि परस्पर प्रभावित होते हैं। किन्तु भाषा के जो प्रयोग ये इनके मुंह से सुनते हैं उनका इनकी वाणी पर दैनदिन की भाषा के प्रभाव से कम ही प्रभाव पड़ता है। टेलीविजन रेडियो सिनेमा आदि में शिष्ट शब्दों पर अधिक बल दिया जाता है। किन्तु उच्चारण और इडियम तो प्रयोग और बातचीत से बनते हैं। पर आप टेलीविजन से बातचीत तो नहीं कर सकते हैं। दूसरा यह है कि ये कृत्रिम शब्द कहीं असली प्रयोगों का स्थान न ले लें। तीसरा यह है कि अमरिकी लेखक कहीं यह न भूल जाएं कि लांग स्ट्रीट की 'बाबिया सीम्स' या मार्क ट्वेन की 'हकलबेरी फिन' या जान एडी के 'फेमुल्स इन रलॅम' की भाषा में जो शक्ति है वह इसमें है कि इनमें प्रत्येक की भाषा ऐसी है जिसे लाखों व्यक्ति बोलते हैं। इस भाषा को ही कलाकार ने अपनी रचना में रखा था। वह उनके द्वारा निर्मित कोई कृत्रिम भाषा न थी। शायद जिन प्रमुख

साहित्यिक पुस्तकों की चर्चा है उनमें अधिकांश की भाषा इस प्रकार की ही कृत्रिम भाषा है। उसकी जड़ें किसी जनता में नहीं हैं।

पापुलर बनाने में कोई दोष नहीं है। भाषा की रंगीनी व्यंग या अतिरंजना तो उसके गुण हैं। आज के अधिकांश अमेरिकी लेखकों की भाषा में दोष यह नहीं है कि वे जनता की बोली का अधिक प्रयोग करते हैं बल्कि दोष है कि वे उसका कम से कम प्रयोग करते हैं।

4 दर्शक और शौकिया खेलकूद

अमेरिकी संस्कृति में आज खेलकूद का वही स्थान है जो रोम साम्राज्य के मध्याह्न में 'सर्कसों' का था। खेलकूद एक ऐसा अंग है जिसमें जनता और दर्शक दोनों समानरूप से भाग लेते हैं। प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह कितना सभ्य क्यों न हो खून के लिए चिल्लाने का अवसर ढूँढ़ता है। कुश्ती, दंगल और फुटबाल बास्केट बाल आदि के खेलों के दर्शकों के रूप में अमेरिकी इसी बर्बर भावना का तो परिचय देते हैं।

दूसरे ऐतिहासिक सभ्यताओं के मुकाबिले अमेरिकी मनोरंजन में हिंसा का अंश कम है। कार्थेज[1] या ऐज़्टेक[2] की भाँति यहाँ नर-मेध नहीं होता। लैटिन सांडों की लड़ाई नहीं होती पेरिस की तरह गिलोटिन नहीं सार्वजनिक फांसी नहीं जैसा ब्रिटेन में होता था मुर्गों की लड़ाई नहीं आदमियों से शेर-चीतों की लड़ाई नहीं। अमेरिकी सभ्यता में क्रूरता हो सकती है पर वह उसके सार्वजनिक रंगमंच में नहीं प्रदर्शित की जाती। कुश्ती बाक्सिंग फुटबाल और आइस-हॉकी में ही जो कुछ निर्ममता है वह है। कुश्ती तो अब टेलीविज़न पर एक मज़ाक बन चुकी है। इनामी लड़ाइयों में भी अब जानें नहीं जातीं। जैसे ही मनोरंजन ने बड़े उद्योगों का रूप धारण किया उसमें से निर्ममता निकल भागी। उसका स्थान शुद्ध खेल तमाशों ने ले लिया।

किन्तु इन खेल-तमाशों में अब शौकिया प्रदर्शन से काफ़ी सन्तुलन आ गया है। पहले के अमेरिका में जब काम ही जीवन का उद्देश्य था मनोरंजन बच्चों के सामाजिक उत्सवों और सीमान्त जीवन में शराबखोरी तक सीमित था। एक ऐसी संस्कृति में जिसमें खेती में चौबीस घण्टे सावधानी बरतनी पड़ती थी और कारखानों में काम के घण्टे लम्बे थे संगठित खेलकूद के लिए समय अत्यन्त कम था। खेलकूद में आदमी समय तब देता है जब उसके पास फुरसत हो और पास में पैसा हो अर्थात् जरूरी खर्च से पैसा बचता हो। औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि से काम के घण्टों में कमी भी हुई और पैसा भी

---

1 Carthaginian.

2 Aztec

हाथ लगा ।

किन्तु बड़ी संख्या में दर्शकों को आकर्षित करने के लिए ऐसे खेल भी तो हों जिनमें किसी का सम्मान दाँव पर लगा हो जिससे दर्शकों को मानसिक आनन्द मिल सके । यह तब सम्भव हुआ जब फुर्सत के सम्बन्ध में अमरिका के धनिकों ने 'अपराध' की भावना छोड़ी और उन्होंने घुड़दौड़ पालो नौका दौड़ गोल्फ आदि आभिजात्य खेलों का विकास किया । धनिकों ने जिन खेलों को सबसे पहले अपनाया वह 'बेसबाल' था । किन्तु कुछ समय तक इसे वे अपना बनाकर न रख सके । 19वीं सदी के मध्य में सबको 'बेसबाल' की धुन सवार हो गई । 1880 के आसपास तो यह एक बड़ा व्यापार ही बन गया । यही बात फुटबाल के बारे में हुई । जिसका आरम्भ पूर्वी कालेजों से हुआ था । मछली मारना शिकार, लॉन टेनिस गोल्फ सबकी शुरुआत फैशनेबुल धनिकों ने की पर ये सब बाद में मध्य वर्ग के खेल बन गए ।

वेब्लन ने अपनी 'थ्योरी ऑफ दि लेजर क्लास' में खेलकूद को ऊपरी वर्ग की वस्तु बतलाया है । मजदूर वर्ग का इससे कोई मतलब नहीं । उसकी स्थापना है कि खेलकूद निम्न मनोभावनात्मक विकास का एक रूप है । यह बर्बर शक्ति का पुनर्जीवन है । किन्तु यह सत्य है कि खेलकूद की आवश्यकता मध्य और निम्न वर्गों को जितनी है उतनी दूसरों को नहीं । धनिक तो आज भी अपना मनोरंजन लोमड़ी के शिकार नौका-दौड़ पोलो आदि से कर लेते हैं किन्तु कल जो आभिजात्य वर्ग के खेलकूद थे आज वे सामान्य जनता के खेल हो रहे हैं । गोल्फ खेलने वाले म्यूनिसिपल लिंक पर छाए रहते हैं टेनिस अब सर्वत्र खेला जाता है । घुड़दौड़ और कुत्तों की दौड़ अब सारे समाज के लिए प्रसिद्ध हो चुकी है । अब तो मध्य वर्ग वाले इन सब मनोरंजनों में काफी संख्या में सम्मिलित होने लग गए हैं ज्यों-ज्यों मध्य और निम्न वर्ग के लोगों के हाथ में पैसा आता है वे मनोरंजनों की ओर दौड़ते जाते हैं । वे इन खेलों में साहसिक क्रिया उत्तेजना गति और शक्ति देखना चाहते हैं । इस दृष्टि से दौड़ बास्केटबाल आइस हाकी का प्रचार बढ़ रहा है । तुलना की दृष्टि से तो अब 'राष्ट्रीय खेल' बासकेट-बाल लोकप्रिय होता जा रहा है ।

बड़ी संख्या में दर्शकों के खेलकूद के मानदंड के परिवर्तन होने के साथ उसकी स्थिति में भी परिवर्तन आ रहा है । जो बात बड़े माध्यमों के सम्बन्ध में हुई वही बात खेलकूद के सम्बन्ध में भी हुई । ये भी बड़ी बड़ी संस्थाओं और बड़े पूँजीपतियों के हाथों में पड़ गए हैं । अब तो फुटबाल बास्केटबाल या टेनिस के खेलों में बाहरी रूप में भी शौकिया रहना मुश्किल हो गया है । राष्ट्रीय खिलाड़ियों के आसपास तो एक पूरा घेरा बन गया है । कालेजों का फुटबाल खेल कभी शक्ति और स्फूर्ति का संगम

था। पर अब तो यह भी विशुद्ध कलाबाजी रह गया है। फुटबाल के अध्यापक पहले से ही सारी क्रमाएँ बता देते हैं। खिलाड़ी के लिए तो बस उस पर अमल करना रह जाता है। अच्छे-अच्छे खिलाड़ियों को जुटाने के लिए पैसे बहाये जाते हैं। न्यूयार्क यांकियों की विश्वविजय के पीछे अब तो 'बड़े व्यापारियों' की ही विजय है।

'फन' के उद्योगों में (बाजी लगाने को छोड़कर) अमेरिका में प्रतिवर्ष 10 बिलियन डॉलर खर्च होता है। गोल्फ और मोटर बोटिंग जैसे छोटे खेलों पर सिनेमा के 'बाक्स' आफिस से अधिक ही पैसा खर्च होता है। 'बाउलिंग' पर ही अकेले चौथाई से तीन चौथाई बिलियन डॉलर के खर्च का अनुमान है। घुड़दौड़ के आंकड़ों में महत्वपूर्ण 'बाजी' की रकम है। अनुमान है कि प्रतिवर्ष अमेरिका में घुड़दौड़ की बाजी पर 6 बिलियन डॉलर खर्च होता है। इतनी ही *बड़ी रकम बेसबाल पर खर्च होती है, विशेषकर वर्ल्ड सीरीज में। निश्चय ही* अमेरिका में पिछले समय के मुकाबिले यह रकम बहुत बड़ी है।

मजेदार बात यह है कि दर्शकों के इस खेलकूद में व्यापारिक भावना के प्रवेश का विरोध अमेरिकी जनता में नहीं देखा जाता उन लोगों ने मान लिया है कि बेसबाल फुटबाल बास्केटबाल या बाक्सिंग अब बड़े व्यापार बन गए हैं। सच तो यह है कि वे अब इसे अधिक महत्त्व भी देने लगे हैं। जब वे यह सुनते हैं कि डिमैगियो जैसे खिलाड़ी को 6 अंकों में वेतन मिलता है तो उन्हें आश्चर्यपूर्ण प्रसन्नता होती है।

ध्यान देने की बात है कि 'बेसबाल' के इकरारनामे में से रिजर्व क्लाज को निकाल देने के लिए बार-बार असफल प्रयत्न होते हैं। कहा जाता है कि यह धारा प्राक्-औद्योगिक काल की चपरासी-व्यवस्था का अवशेष है। गार्डेला *के मुकदमे (1910) में फैसला देते हुए जज ने लिखा है कि* "यदि खिलाड़ियों को अर्द्ध-चपरासी माना जाता है तो इससे क्या फर्क पैदा होता है कि उन्हें अच्छा वेतन मिलता है। केवल अधिनायकवादी ही मान सकते हैं कि ज्यादा वेतन वाले का दास दास नहीं रह जाता।" ऐसा प्रतीत होता है कि बेसबाल खेल के प्रेमियों को इस बात से कोई धक्का नहीं लगता कि उनका प्रिय खेल एक ऐसी व्यवस्था पर आधारित है जिसमें खिलाड़ी को चौपाये के रूप में ग्रहण किया जाता है। उसे अपने अधिकारों के लिए सौदा करने का अधिकार नहीं। कभी-कभी खिलाड़ियों के प्रेमी इस व्यवस्था के कारण नाराज भी होते हैं। 1956 में जब जैकी रॉबिन्सन को 'न्यूयार्क जायंट्स' ने खरीद लिया तो उसके ब्रुकलिन डाजर अनुयायियों ने या तो उसको छोड़ देने या अपना धन एक अधिक शत्रु को समर्पित करने की सोची।

अमेरिकी खेलकूद का मानसिक आधार कबीलायी और सामंती है। बेसबाल

इसका अच्छा उदाहरण है। इसके सभी प्रतीक टोटेम[1] के हैं जैसे कब टाइगर्स
इंडियन्स पाइरेट्स डाजर्स, और ब्रेव्स। इनमें कबीलों की भाँति दुश्मनी भी
रहती है। दर्शक टीमों का खेल देखने नहीं बल्कि किसी न किसी टीम क लिए
जाता है। वह अपने को एक टीम से मिला लेता है। कभी-कभी तो वह एक
खिलाड़ी से ही अपना एकात्म्य कर लेता है। जो सम्मान फ्रांस में अकादमी
के सभासदों के लिए सुरक्षित है वह यहाँ टीमों के कप्तानों को मिलता है।
वे अमर बना दिये जाते हैं।

जनता और खिलाड़ी के बीच एक शैली का सम्बन्ध बन जाता है। विशेष
कर बास्केटबाल में। प्रत्येक खिलाड़ी की अपनी एक शैली होती है। दर्शकों
की भी शैली होती है। वह अपमान की कला की विशेषज्ञ होती है उत्तेजित
करती है अपनी टीम की प्रशंसा में सीटें मारती है। दूसरी टीम को नीचा
दिखाने की कोशिश करती है। 'हाट डॉग' लेती है। सोडावाटर पीती है।

प्रत्येक खेल की अपनी कथाएँ (legend) होती हैं जो उसके सर्वोत्तम
खिलाड़ियों के आसपास बन जाती हैं। बेसबाल के मशहूर खिलाड़ियों की
कथाएँ अखबारों में बार-बार निकलती रहती हैं। कभी कभी खेलकूद के कालमों
के लेखक राजनीतिक कालमों के भी लेखक बन जाते हैं। शायद य सोचते हैं
कि राजनीति भी तो एक खेल ही है। हाँ इसमें थोड़ी बनावट ज्यादा होती
है। खेलकूद क नायक राष्ट्रीय व्यक्ति बन जाते हैं। लड़कपन में जिसे खेलकूद
का शौक लग गया उसे फिर यह शौक आगे भी बना रहता है।

प्रत्येक खेल अपने अन्दर एक उप-संस्कृति ही होता है। मानवशास्त्रियों
को इसका अध्ययन करना चाहिए। गंदी बस्तियों के क्षेत्र में बाक्सिंग और
बास्केटबाल आइरिश यहूदी इटालियन पोलिश और हब्शी लड़कों को आगे
के लिए अच्छी सहायता देते हैं। ये खेल धन कमाने और समाज में कम
सम्मान वाले लोगों क भावनात्मक क्रियाओं को सही दिशाओं में ल जाने
का भी काम करते हैं। विशेषकर हब्शी बच्चों के सम्बन्ध में तो यह बात और
भी सत्य है। ये 'बिगलीग' बेसबाल और बाक्सिंग प्रतियोगिता में तो सम्मि
लित कर लिये गए हैं पर गोल्फ और टेनिस की प्रतियोगिताओं में इन्हें अब
भी शामिल नहीं किया जाता। जो लुई और जैकी राबिन्सन राष्ट्रीय नायक
ही नहीं अपनी जाति के बलवीर्य क भी प्रतीक बन गए हैं।

एक प्रश्न जिस पर विशाल खेलकूद ने जनता का धैर्य तोड़ दिया है वह
है जुआ। कुश्तियों के नतीजों की चालबाजियों से अमरीकी पहले से ही परि
चित थे और इसलिए इसे गम्भीर खेलकूद भी मानना उन्होंने छोड़ दिया था।

---

1. Totem.

इस शताब्दी के दूसरे दशक में बेसबाल में कई बार टीमों ने घूस लेकर खेल चौपट कर दिया था। बाद में इस खेल में नैतिकता की रक्षा के लिए जज के० एम० लैंडिस के अध्यक्षता में नियम बनाकर उपाय किए गए। इस प्रकार के आन्तरिक अनुशासन से विलीन बेसबाल तो फलाफूला। 1940 के बाद कालेज बास्केटबाल में ऐसी ही घटनाएँ हुईं। सच तो यह है कि इस प्रकार का कुछ भ्रष्टाचार ऐसे खेलों में होता रहता है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

हजारवीं बार 'शुद्ध-नैतिकता' और 'पौरुष के गुणों' की चर्चा सुनने पर कोई यथार्थवादी खेलकूद का लेखक सोचता है कि कालेजों में भी बड़े दर्शकों के दबाव में अब शौकिया खिलाड़ी समाप्त ही है। प्रसिडेंस हचिंस ने कहा है कि उनका 21 वर्षों का काम अब से शिकागो विश्वविद्यालय के प्रधान के रूप में याद किया जाएगा कि मैंने इस कालेज में फुटबाल बन्द करा दिया।

बहुत-से कालेजों में गुप्त रूप से फुटबाल के खिलाड़ियों की भर्ती के लिए धन खर्च किया जाता है। उनकी शिक्षा के लिए भी इसी प्रकार गुप्त रूप से धन खर्च होता है। एक बार एक भूतपूर्व कालेज प्रसिडेंट रीड ने डेनवर बीवर में व्यंग्यपूर्वक घोषणा की गुप्त रूप से रुपये खर्च करने से अच्छा है कि यही रुपया खुलेआम अच्छे-से-अच्छे खिलाड़ियों को रकम में भर्ती कर उन पर खर्च किया जाए तो आश्चर्य है कि उनके पास इस सम्बन्ध में बहुत-से आवेदन आए। इस प्रकार की घटनाओं में परस्पर सम्बन्ध है। जब आपको अच्छा खेलने के लिए घूस मिलती है तो बुरा खेलने के लिए घूस भी मिल सकती है। आश्चर्य की बात यही है कि ऐसा करने वालों की संख्या अमेरिका में इतनी कम रहा है ?

नीतिवादियों और मनोवैज्ञानिकों ने अमेरिकी खेलों में दर्शकों की निष्क्रियता पर बहुत-कुछ लिखा है। रोम संस्कृति का जब विनाश हुआ तो उसमें भी आनन्द के लिए आनन्द की प्राप्ति का बोलबाला था और मनोरंजनों में दर्शकों का भाग निष्क्रिय ही था। यह सच है कि अमरीकी खेलकूद में केवल बाहरी मनोरंजन होता है। दर्शकों को आन्तरिक शक्ति खर्च नहीं करनी पड़ती। यह भी सच है कि अमेरिकी खेलकूद से मानसिक परिपक्वता देर में आती है किन्तु विश्व में कोई दूसरी सभ्यता ऐसी नहीं है जिसमें अमेरिका की भाँति रातों रात करमन की प्राप्ति हुई हो और यह भी किसी एक वर्ग को नहीं बल्कि सभी वर्गों को प्राप्त हुई है। प्राचीन संस्कृतियों में खेलकूद विध्वंसात्मक था। अमेरिका में खेलकूद के प्रति वफ़ादारी है। अमेरिकियों में प्राकृतिक वातावरण से हटने की जो कमी आई है उसे खेलकूदों ने पूरा किया है।

प्लेटो ने कहा था खेलकूद के माध्यम से युवक अपने नागरिक जीवन को

बनाता है।" इस दृष्टि से खेलकूद की भाँति अमेरिकियों ने राजनीति और युद्ध को भी एक खेल ही समझा है। खेलकूद में टीम कप्तान की कल्पना अब सामान्य मन में घुल गई है। अरस्तू की भाँति कोई यह भी कह सकता है कि खेलकूद का काम प्रतिस्पर्धा नहीं बल्कि रचनात्मक है। यह भी कहा जाता है कि खेलकूद ने अमेरिकी जनतंत्र को मजबूत करने में सुरक्षा वाल्व का काम किया है अन्यथा समस्त तनाव भावनाएँ फूटकर हिंसा का रूप धारण कर लेतीं।

इन सब सिद्धान्तों के परे सत्य यह है कि अमेरिकी खेलकूद समग्र संस्कृति की शक्ति और जवान बने रहने की इच्छा की अभिव्यक्ति करते हैं। कभी-कभी यह अभिव्यक्ति बदशक्ल रूप भी धारण करती है। कभी-कभी यह उन्माद का भी रूप ले लेती है। कभी-कभी 'बाक्स आफिस' और प्रेस को लुभाने की छोटी भावना प्रधान हो सकती है। कभी इसमें जुआड़ी रैकेटियर चालबाज आदि का भी सम्मिलन हो जाता है। फिर भी इन खेलकूदों में इतना अवश्य है कि इनके माध्यम से अमेरिकी दर्शकों और खिलाड़ियों की जीवनी शक्ति का परिचय प्राप्त होता है।

अमेरिकी खेलकूद की सबसे आशाजनक बात यह है कि अब जनता निष्क्रियता अपनी सीमा पर पहुँच गई है अर्थात् अब दर्शक निष्क्रिय न रहकर स्वयं शौक से खेल के मैदान में उतरने लगा है। लेखन-कला चित्रकला फोटोग्राफी रंगमंच बढ़ईगिरी कारीगरी भोजन कला वस्त्रकला की भाँति स्पोर्ट्स में भी अब शौकियापन बढ़ रहा है और अमेरिका सचमुच शौकियों का देश हो रहा है। अब बेसबाल फुटबाल और बिगलीग बेसबाल के खिलाड़ियों की भर्ती साधारण बच्चों कालेज के विद्यार्थियों और शहर की सड़कों से होने लगी है। बहुत युवा अमेरिकी को अब कुश्ती तैराकी दौड़ आदि का शौक लग गया है। इनके स्कूलों में तो हाई-स्कूल बास्कट बाल बड़ा प्रिय मनोरंजन बन गया है जिसमें अतिरिक्त संगठित खेलकूद और हँसी मजाक पर भी जोर दिया गया है जिसमें लाखों बालिग अमेरिकी शामिल होते हैं। गर्म फुरसत में समुन्द्रतट पर तैरने वालों और युव-युवकों की भीड़ लगी रहती है। पतझड़ के मौसम में आपको मध्यवर्ग के लोग भारी संख्या में खेलकूद में शामिल होने के लिए जाते दिखाई पड़ेंगे। गोल्फ के खेल का प्रबन्ध अब म्युनिस्पलिटियों को लेना पड़ा है क्योंकि उसके शौकीनों की संख्या काफ़ी बढ़ गई है। मोटरों की शक्ति से दूर-दूर के स्थानों में मछली मारना भी संभव हो गया है। संख्या की दृष्टि से बाउलिंग अमरिका का सबसे बड़ा राष्ट्रीय गेम बन गया है।

अब शौकियापन का भी अर्थ-विस्तार हो गया है। पहले शौकिया खिलाड़ी वह कहा जाता था जो खेलकूद के अपने हुनर का बदला न पा हार्दिक प्रतियोगिताओं में वह भी भाग लेता था। इस अर्थ में शौकियापन तो अब घट रहा

क्योंकि अब व्यापारवाद के विस्तार के कारण ऐसे प्रतियोगी खिलाड़ियों की संख्या में काफ़ी कमी हो रही है। अच्छे शौकिया खिलाड़ी जो अपनी फ़ुरसत का समय खेलकूद में बिताते हैं काफ़ी संख्या में बढ़ रहे हैं। इस प्रकार खेलकूद अब तनावों और मनोभावनाओं के सुरक्षा वाल्व से भी बढ़कर अमेरिकियों को मानसिक तुष्टि दे रहा है। जिन्हें कारखानों में फ़ुरसत नहीं मिलती और जो अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति फ़ुरसत के समय खेलकूद के माध्यम से करते हैं वे जनता की भावनाओं को सड़क में नहीं बहा सकते। इस प्रकार खेलकूद में शौकियापन अन्य कृत्रिम मनोरंजनों और दर्शकों के लिए होने वाले खेलों के कारण उत्पन्न और घृणा की भावनाओं को भी रोकता है।

वास्तविकता यह है कि अमेरिकी अपने खेलों में ऐसी धार्मिक भावनाएँ कभी न आने देंगे जैसे स्पेन में साँडों की लड़ाई के खेल को जीवन का प्रतीक बनाया जाता है। अमेरिकी खेलकूद की अपनी शैली है। यह प्रसन्नता की शक्ति की अभिव्यक्ति करता है न कि घातक भावना और मृत्यु की। जहाँ काम काज अपनी क्षमता और साधन शक्ति पर निर्भर हो ऐसे समाज के लिए ये खेल-कूद ही उपयुक्त हैं। इसमें यदि कोई पेशे के रूप में खेलकूद को ग्रहण करना चाहे तो पैसा भी कमा सकता है और नहीं तो उसे शौकिया खिलाड़ी रहने का संतोष तो मिलता ही है।

## ८. सिनेमा का स्वप्न और यथार्थ

इतिहास में कभी जनता के स्वप्नों को आधार बनाकर इतने बड़े उद्योग का निर्माण नहीं हुआ। आप दिन या शाम के *किसी समय एक अँधेरे थियेटर* में चले जाइए और जैसे ही वहाँ चौड़े पर्दे पर तस्वीरें गुजरने लगती हैं आप काम रति हिंसा अपराध और मृत्यु के समुद्र की लहरों पर तैरने लगते हैं। सुन्दर-से-सुन्दर लड़कियाँ रोमांटिक पुरुष अत्यन्त नई शैली के वस्त्र सुन्दर घर उभरे उरोज सब कुछ आपके लिए ही मालूम पड़ते हैं। आप घर जाकर सोते हैं तो वही सपने आते हैं जिन सपनों के आधार पर इन चित्रों का निर्माण हुआ है।

जीवन और रुचि के नए मानदण्डों ने आम जनता को इतना ऊपर उठा दिया है और अभिजात्य वर्ग का इतना नीचे कर दिया है कि अब सब सिनेमा जाते हैं। यह उतार चढ़ाव भावनाओं की दृष्टि से काफ़ी दुरूह है। उससे कहीं अधिक जितना कि सिने-निर्माता सन्देह करते हैं। वह इतना एकात्मक है कि उसे आप जीवन [illegible] की संज्ञा दे सकते हैं। इस लोक वर्ग की रुचि ऐसी है कि जिसे आप नये अमेरिकी सम्प्रदाय की रुचि की संज्ञा दे सकते हैं। वे सिनेमा इसलिए नहीं जाते कि भावनात्मक दृष्टि से उन्होंने जो खो दिया है

उसकी क्षति पूर्ति नहीं होती। बल्कि वे इसलिए जाते हैं कि वह उसका प्रति सिद्धि है जो उन्होंने अभी जीवन में नहीं पाया है। हाँ इतना अवश्य है कि इसे माना जा सकता है। इस प्रकार सिनेमा एक स्वप्न है पर पलायनवादी स्वप्न नहीं। वह महत्वाकांक्षा और सिद्धि का भी स्वप्न हो सकता है। सम्भव है कि भावनात्मक अनुभवों को छोड़ता हुआ कोई नया जीवन-स्तर को प्राप्त कर ले।

कठिनाई यह है कि भावनात्मक समृद्धि और महानता अबाध नहीं पाई जा सकती। खासकर एक ऐसी सभ्यता में जो व्यवहारवादी और धन-प्रधान है। अतः इसका वितरण वैसे ही नहीं कर सकते जैसे कि आप पेप्सीकोला बिजली बत्ती रेडियो कॉमिक पुस्तकों या सार्वजनिक मताधिकार का करते हैं। उसकी प्यास है जब सैकड़ों सिनेमाघर उस तृष्णा की पूर्ति का उपाय करते हैं तो ममता बढ़ी जाएगी ही। किन्तु ये किसी बात में पलायन नहीं कर रहे हैं। वे बाहर आ रहे हैं। अपनी टेक्नीक से सिनेमा इसे ही सम्भव करता है। कैमरा दृश्यों का चुनाव करता है कहानी आगे बढ़ती है वह भूत और वर्तमान का ताना-बाना बुनती है काल और देश से परे विभिन्न उपायों से वह समाजों का निर्माण करती है। दर्शक का मन आकर्षित रहती है देश और संस्कृति की सीमाओं को पारकर वह मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों को छूती है। सिनेमा ने हमारी कल्पनाशीलता और भाव-जगत् को जितना अपील किया है उतना अन्य किसी पापुलर कला ने कभी नहीं किया।

इसी ने सिनेमा को महत्वपूर्ण जन-कला बना दिया है। रुचि के निर्माण में पत्रों का अधिक हाथ है। रेडियो जनता तक अधिक तेजी से पहुँचता है। टेलीविजन और अधिक विस्तृत संसार को घर में ला रहा है। किन्तु चूंकि सिनेमा ही अधिक स्थायी रूप में जनता के स्वप्न और उसकी कहानियों से सम्बन्ध रखता है इसलिए उसका अपना रूप बना हुआ है। यदि टेलीविजन को यह स्थान लेना है तो उसे स्वप्नों वाला यह काम अवश्य करना पड़ेगा।

अत्यन्त टूटे-फूटे स्थान में इडिसन की नामीदार मशीनों से सिनेमा का प्रारम्भ हुआ। फिर चित्रों से समझाये जाने वाले व्याख्यानों में लेटर्न स्लाइडों के साथ यह दिखाया जाने लगा। इसके अपने स्वतन्त्र दर्शक न थे। पर शीघ्र ही इसे अपने स्वतन्त्र दर्शक भी मिलने लगे फिर तो सारे देश में इसका प्रचार तेजी से हो गया। संयोग की बात है कि इसके प्रारम्भवर्ती पूर्वी नगरों के कपड़े के उद्योगों से संबद्ध व्यक्ति थे। इनमें मध्यम वर्ग के यहूदी ही अधिक थे। ये सफलता और धन पाने के लिए लालायित थे। प्रारम्भ से ही इस ग्रिफिथ-जैसे विख्यात निर्देशकों और कैमरा तथा साउन्ड क्षेत्रों में महत्वपूर्ण आविष्कार करने वाले व्यक्तियों का सहयोग मिल गया।

*प्रारम्भ से ही इसमें नवीनता का तेजी से संचार होता रहा। प्रारम्भ के*

भावुकतापूर्ण नाटकों के स्थान पर पूरी लम्बाई की 'फीचरें' बनने लगीं। सिनेमा एक रील के 'थ्रिलर' के स्थान पर दुहरे फीचर का शाम का मनोरंजन बन गया। सितारों की प्रथा चल पड़ी। ये नायक-नायिकाएँ जनता की आराध्य बन गईं। मूक-चित्रों के स्थान पर बोलते सिनेमा का आविष्कार हो गया। वितरकों और प्रदर्शकों की पूरी फौज ही खड़ी हो गई। फिर ये चित्र रंगीन भी बनने लगे। टेलीविजन की प्रतिद्वन्द्विता में तीन आयामों (three-dimensional) की तस्वीरें बनने लगीं। पर्दे भी चौड़े कर दिये गए। इस विकास के प्रत्येक स्तर पर इस उद्योगमें 'संकट' आये। उनका सफलतापूर्वक सामना किया गया। पर हर सफलता नई निराशाओं को जन्म देती गई। इस प्रकार सिनेमा का इतिहास आपत्तियों की स्थिति से भरा पड़ा है। पर तकनीकी परिवर्तन इसे सदा बचाते रहे हैं। इसे दूसरे बड़े माध्यमों से कड़ी प्रतिद्वन्द्विताएँ करनी पड़ी हैं पर यह उन सबको सदा पीछे छोड़ता आया है। इसने सदा दर्शकों की नाड़ी पहचानी है। इसने सदा विरोधी जनता का सामना किया है जो हालीवुड को शैतान का घर समझती रही है।

'बड़े होने का अभिशाप' अन्य माध्यमों की भाँति इसे भी भोगना पड़ा है। सिनेमा उद्योग की समस्या मुख्य रूप से वितरण की समस्या रही है। इसलिए इसका अधिकतर सिनेमाघरों के नियंत्रण में रहा है। प्रथम बड़ा 'फिल्म-एक्सचेंज' 1915 में संघीय न्यायालय द्वारा बंद कर दिया गया। इस सदी के बीच में सिनेमा उत्पादकों ने सिनेमाघरों की शृंखला पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया। वे ध्वनि-उपकरणों के निर्माताओं और बड़े महाजनों के साथ मिल गए। संघीय न्यायालय ने फिर हस्तक्षेप करके फिल्म उत्पादकों और सिनेमा-शृंखलाओं को एक हद तक अलग कर दिया। उन्होंने 'ब्लाक-बुकिंग' पर रोक लगा दी। फिर भी पत्रों और रेडियो के उद्योग से सिनेमा उद्योग में फर्क है। इस उद्योग में इजारेदारी की समस्या नहीं है। यद्यपि बड़े उत्पादक इस उद्योग पर छाये हुए हैं किन्तु प्रतिद्वन्द्विता की लड़ाई वास्तविक है। इस उद्योग में 'स्वतंत्र' उत्पादकों के लिए अवसर है। हाल ही में विदेशों में बनी फिल्मों से भी मुकाबिला पड़ गया है।

सिनेमा की समस्या उत्पादकों की शक्ति या मुकाबिले में आने वालों की आवाज दबाने की नहीं है। समस्या कला और भावनात्मक स्तर की है। दूसरे शब्दों में यह मुनाफाखोरी और दर्शकों की रुचि और उनकी माँग के मूल्यांकन की है। चित्र बनाने वाले चित्रों को कला का एक रूप मान सकते हैं। किन्तु फिर भी वे इसे एक ऐसी कला ही समझते हैं जिसकी मध्यस्थता उस उद्योग से करना चाहते हैं जो इसे बनाता और बेचता है। इसकी पैदाइश चाहे जैसे हुई हो तो यह उद्योग आज अमेरिका के बड़े-बड़े उद्योगों में एक है। उत्पादकों,

निर्देशकों कलाकारों को ऊँची तनख्वाहें मिलती हैं। उत्पादन प्रोसेसिंग वितरण, विक्रय विज्ञापन के विभिन्न पक्ष इस उद्योग में लगे हैं। इसका जाल छोटे-बड़े शहरों से लेकर गाँवों तक फैला हुआ है। संसार के प्रत्येक कोने में इसे भेजने के लिए पूरा सरंजाम है।

अन्य उद्योगों की तरह इस उद्योग में भी जो पैसा लगाते हैं उनका उद्देश्य मुनाफ़ा कमाना ही है। जब अकादमी पुरस्कार जीतने वाली तस्वीर 'दि ट्रेजर ऑफ़ दि सियरा मैड्रे' एक बेटी डैविस फ़िल्म से आधा भी धन न ला सकी तो उसके उत्पादक ने निश्चयपूर्वक कहा कि 'आज से कला निर्वासित हो गई।' अब भी ऐसे कुछ उत्पादक और निर्देशक हैं जो कला के उच्च मानदंड में विश्वास रखते हैं किन्तु इस सम्बन्ध में उनका तर्क है कि अच्छी कला से भी लाभ होता है। इसलिए जब अच्छे चित्र बनते हैं—और ऐसे चित्र काफ़ी संख्या में बनते हैं—तो मालिक को यही विश्वास दिलाना पड़ता है कि इससे पैसा मिलेगा। काफ़ी सफलता मिलने पर ही निर्देशकों को ऐसे चित्र बनाने का अवसर मिलता है। हालीवुड की सबसे बड़ी समस्या रुपया कमाने और रचनात्मकता के बीच समन्वय की है। जब मालिक इसे बेवकूफ़ी समझता है मामूली मुश्किल या अव्यावहारिक इसे अपने से परे समझता है तो सिनेमा उद्योग में रुपया कमाना एकमात्र उद्देश्य के रूप में नंगा होकर सामने आ जाता है।

कलाकारों के चारों ओर काफ़ी धूमधाम है। पर यह भी सत्य है कि हालीवुड में काफ़ी मुर्दनी है। हालीवुड में उद्योग के जो गुण हैं वे सभी उद्योगों में हैं—मशीन-निर्माण मजदूरों का बँटवारा बड़े पैमाने पर निर्माण दफ़्तरशाही कर्मचारी सब इसी तरह की है। कामों का प्रत्येक स्तर पर बँटवारा है। सब कुछ मशीनी रीति से चलता है। हाँ यहाँ लोहा नहीं ढाला जाता मानव की भावनाएँ ढाली जातीं और बनाई जाती हैं। स्क्रिप्ट लेखन भी मशीनी है। इससे लेखक काफ़ी परेशान होता। उदाहरण के लिए मूल उपन्यास या नाटक को 'काटना' (स्लिकिंग) पड़ता है अर्थात् उसे सिनेमा लायक बनाने के लिए इधर उधर काटा-छाँटा जाता है चाहे इसमें मूल कृति की आत्मा ही क्यों न मर जाए। इस प्रक्रिया में उसे कई हाथों से होकर गुज़रना पड़ता है। तब उसमें सिनेमा के सब तत्त्व आ पाते हैं। माध्यम को सम्भालने लायक छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँटना पड़ता है। उनका तब तक बार बार अभिनय करना पड़ता है जब तक कि निर्देशक को सन्तोष न हो जाए। फिर उसे काट छाँटकर अन्तिम रूप दिया जाता है। फिर सजधजकर वह बाज़ार में आता है। यही वह प्रक्रिया है जिसके लिए हालीवुड की ख्याति है। इसमें यथार्थता बारीकियों का ध्यान और भी चिकनाई, गति एक कल्पित निर्देशन का अनुभव चमक और चाक्षुषता—और सबमें एकपन शामिल है।

है। उत्पादक सदा जनता के नये मूड का लाभ उठाकर पैसा बनाने की फिक्र में रहते हैं। इस प्रकार एक समय हालीवुड में बदमाशों का चक्र आया फिर बारी-बारी से अनेक चक्र जैसे नाज़ी विरोधी चक्र जी० मैन चक्र, नीग्रो और यहूदी नस्ल विरोधी चक्र, सूफियाने पश्चिम वालों का चक्र युद्ध विजय-चक्र, कम्युनिस्ट विरोधी चक्र, बाइबिल कथा-चक्र और अपराधी बालकों की समस्या के चक्र आये। किसी ने प्रचलित मूड का अध्ययन कर एक चीज निकाली। फिर नक़लची दौड़ पड़ते हैं और उस समस्या पर तब तक चित्र बनते रहते हैं जब तक वह समस्या बासी नहीं पड़ जाती। हाल में संगीत और चमत्कार का ज़ोर बढ़ा है। दोनों सुरक्षित गैर-राजनीतिक माध्यम हैं। ये दोनों जवान दर्शकों को रुचते हैं और ये ही अधिक संख्या में सिनेमा देखते हैं। लड़कियों के पैर, युद्ध के दृश्य दिल थामने वाली धुनें स्वप्नों के नृत्य सैम्सन और डलिला रोम या मिस्र के साम्राज्यों के पतन के दिन कुछ ऐसी वस्तुएँ हैं जिनके सम्बन्ध में ग़लती की संभावना ही नहीं है।

हाल में सिनेमा पर अधिक कर लगा है फलस्वरूप चित्र-निर्माण पर एकाधता कम हुई है। गिने-चुने कलाकारों और किसी बड़े डायरेक्टरों को घेर कर बहुत-सी नई उत्पादन की इकाइयाँ बनी हैं। सिनेमा उद्योग के अर्थशास्त्र में अब कम किन्तु 'बड़ी' फ़िल्में बनाने का समय है। चित्र को अब छोटे-बड़े सभी शहरों में पहुँचना पड़ता है। जिसका अर्थ है कि विज्ञापन पर खर्च हद से अधिक बढ़ गया है। मध्यम खर्च की तस्वीरों का समय अब नहीं रहा। अब स्टूडियो 'जैकपॉट' के सिद्धान्त पर चलते हैं। यदि अपनी 'जैकपॉट' पर कब्जा नहीं किया तो फिर भाग्य भी फूटी समझिये। कम खर्च वाली और स्वतन्त्र प्रयोगों की तस्वीरों के लिए अब भी गुंजाइश है। इससे यह सिद्ध होता है कि यदि तस्वीर में ऐसे गुण हों जो परिपक्व मन पर असर डाल सकें तो भी लाभ हो सकता है।

सिनेमा उद्योग में सबसे अधिक प्रगति तकनीकी क्षेत्र में हुई है। प्रकाश और ध्वनि विन्यास, कटिंग और संपादन सैटों के निर्माण के क्षेत्र में जो सफलता मिली है उसकी प्रशंसा करनी पड़ेगी। किसी काम के लिए अवसर मिले तो हालीवुड उसमें सफल हो सकता है। प्रत्येक साल-दो साल के अन्तर पर युवकों की कोई न कोई टोली हालीवुड में आ ही जाती है जो यह बता जाती है कि कैसे कम खर्च में अच्छी तस्वीर बनाई जा सकती है। किन्तु पेट में आग लेकर आने वाला वही युवक आगे व्यवहारवादी जनों के फेर में पड़कर ऊँची-ऊँची बातें सोचने लगता है और आरामतलब हो जाता है। अपनी मौलिक शक्ति के स्रोत से वह दूर जा पड़ता है और उसका अन्त उसी रूप में होता है जैसा दूसरे असफल लोगों का।

इस वातावरण में कोई आश्चर्य नहीं कि मुख्य रचनात्मकता निर्देशक (कभी-कभी निर्माता-निर्देशक) की ही है। यही प्रत्येक वस्तु का चुननेवाला, दस्तकार और समन्वयकर्ता है। निर्देशकों में मेरा तात्पर्य केवल हुस्टन जिनेमान स्टीवेंस मर्विन वायलर आदि से और उत्पादकों में आश्चर्य गोल्डविन आदि, और जमूर जैसे व्यक्तियों से है। निर्देशक यद्यपि किसी भी कला का विशेषज्ञ नहीं किन्तु वह इस सारी प्रक्रिया का केन्द्र-बिन्दु है। वह दूसरों द्वारा किये गए कामों से धागे एकत्र करके एक अभीप्सित 'मूड' और असर का निर्माण करता है। कथावस्तु और कहानी उसकी सीमाएँ, खर्च कलाकार निर्वाह शक्ति मूड भावनात्मक गुणों आदि सबका निर्णय वह करता है। कलाकारों के गुणदोष का उसे अंदाज लगाना पड़ता है। उनके स्वभाव का उनके प्रेम सम्बन्धों का वैवाहिक सिरदर्द का उसे ध्यान रखना पड़ता है। सेंसर से उसे निपटना पड़ता है। फ़िल्म को आगे बढ़ाने उसके प्रचार आदि की ज़िम्मेदारी उसकी है। उत्पादक-निर्देशक वह सेनापति है जिसे विश्वास है कि युद्ध का निर्णय उसके हाथ में है। स्काट फ़िट्ज़जेरल्ड यह जानता था जब उसने हालीवुड पर उपन्यास लिखा। उसने 'दि लास्ट टाइकून' नामक अपने उपन्यास में इसलिए केन्द्रीय चरित्र के रूप में एक निर्देशक मनरो स्टार को चुना।

हालीवुड में कर्मचारियों की दर्जाबन्दी भी एकदम पिरामिड-जैसी है जिसके दोष स्पष्ट हैं। इसमें कल्पनाशीलता के लिए गुंजाइश कम-से-कम है। फ़िट्ज़जेरल्ड ने स्टार का जो अध्ययन प्रस्तुत किया है वह अभाव है। स्टार सिनेमा का युगम है जिसमें नैपोलियन की कल्पनाशीलता है। उसका जीवन आधा गीतमय और आधा पिएट ) प्रेममय है। फ़िट्ज़जेरल्ड के मन में उसके प्रति दया है। उसे मजदूरों से कष्ट तो है ही साथ ही धनिकों के षड्यन्त्रों का भी सामना उसे करना पड़ता है। फ़िट्ज़जेरल्ड ने उसके चरित्र में एक प्रकार का आभिजात्य तथा उच्च व्यावहारिकता भरी है। किन्तु हालीवुड जीवन की जो विविधता है उसके चित्रण में फ़िट्ज़जेरल्ड असफल रहा है। इस जीवन में बड़े बड़े समीक्षा हैं जिनके चारों ओर दरबारी भीड़ दूसरों के सहारे जिन्दगी बसर करने वाले और उनके चहेते हैं। इस दरबार में आगे न बढ़ते हैं जिनमें दूसरों का शिकार करने की क्षमता हो। ये सब प्रकार के भय के वातावरण में रहते हैं। यह सारा जीवन आधा हरम और आधा जंगल है। हालीवुड का इस रूप में चित्रण अधिक सफलतापूर्वक बड शूलबर्ग के 'व्हाट मेक्स सैमी रन?' में और नैथेनियल वेस्ट के 'दि डे ऑफ दि लोकस्ट' में हुआ है।

ये जो तस्वीरें बनाते हैं उनमें एक प्रकार का 'चमक' है क्योंकि हालीवुड में तरलता और चमकदमक में कम फासला है। हालीवुड दर्शकों के मूड भी उसी प्रकार बदलता है जैसे फ़ैशनेबुल अमेरिकी औरत नए फ़ैशन बदलती रहती

सम्भव है। हालीवुड ने अमेरिकी चरित्र के प्रकारों को खोजने
सम्भव है। हालीवुड ने अमेरिकी चरित्र के प्रकारों को खोजने सम्भव है। हालीवुड ने अमेरिकी चरित्र के प्रकारों को खोजने
। किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि यद्यपि इन चित्रों में अमेरिकी
ों का प्रतिबिम्ब दिखता है किन्तु यह सच्चाई सत्य ही है।
पिटे-पिटाये मार्ग पर ही चलते हैं। ये केवल अपरिपक्व मन
। करते हैं। संस्कृति की सभी विशेषताएँ चित्रों में हैं किन्तु वे
संक्षिप्त रूप में मुलायम करके और इस प्रकार प्रस्तुत की
ऐसी निश्चित दिशा की द्योतक नहीं।

तो बात यह है कि सिनेमा में रुपये की प्रधानता है। स्काट
लिखा था कि 'उसके स्वर में रुपया था' आज भी हालीवुड के
रुपया बोलता है। हालीवुड की बोली में रुपया है। कैमरा जिस
र लेता है उसमें रुपया है। क्योंकि 'सेट' बनाने में रुपया है।
का ही 'सेट' क्या न हो। हाँ हर तस्वीर में इस बात पर जोर
है कि संसार में रुपया ही सब कुछ नहीं है। प्रेम आत्म-सम्मान
। रुपये से बढ़कर है। किन्तु हालीवुड की हर तस्वीर यही सिद्ध
रुपये के बिना कुछ भी नहीं हो सकता।

काम (सेक्स) का प्रश्न है सिनेमा में काम या प्रेम की अभिव्यक्ति
कामुकता की अभिव्यक्ति होती है। सिनेमा में सेन्सर की अपनी
। सी है। जिसके अनुसार नारी के वक्ष का अतिप्रदर्शन या
का हारिजंटल मुद्रा में आलिंगन प्रदर्शित नहीं किया जा सकता।
। कुछ प्रदर्शित होता है वह काम की उत्तेजना के लिए पर्याप्त
रण में छिपी कामुकता तो घुसकर प्रदर्शित होती है। सेन्सर
कभी-कभी उत्पादक ऐसी प्रतिमा का परिचय देता है कि
तान कह दी जाती है कि जो चित्र भी नहीं कह सकता।
गनों के मारे आकर्षण का चित्र शायद ही कभी दिखाया
र विदेशी चित्रों में देखा जाता है। यह हालीवुड में कठिन
र सम्बन्धों के प्रदर्शनों पर यही प्रतिबन्ध है। चूँकि सिनेमा
प्रस्तुत नहीं किये जा सकते बच्चों का उपयोग हास्य
ता है चूँकि पर्दे पर तलाक के दृश्य नहीं दिखलाये जाते
लों के प्रदर्शन पर रोक है विवाह की वास्तविक कठि
जाती इसलिए पति-पत्नी के या झगड़े दिखाये जा
र और इसीलिए उनका शान्त करने का जो मुख
नावटी और बेअसर होता है।

यार म फिल्मों में गहरे भावनात्मक चित्रण
सहारा लिया जाता है। चित्र तभी में म

हालीवुड की अपनी एक अलग संस्कृति है जिसे अमेरिकी संस्कृति की उप संस्कृति कह सकते हैं। इसमें भी प्रतिष्ठा और शक्ति की तहें हैं जिनकी बनावट पिरामिड की भांति है। इस पिरामिड के शीर्ष पर थोड़े-से वे लोग हैं जो स्टूडियो प्रबन्धक हैं जिनके बीच वास्तव का काम होता है। इन प्रबन्धकों में प्रत्येक के साथ कथाएं चलती हैं। हालीवुड में इनके सम्बन्ध में चुटकुले, प्रवाद और गप्पों की खूब चर्चा रहती है। इनकी ऊंची स्थिति से हालीवुड पर निराशा के बादल छाये रहते हैं क्योंकि कर्मचारी भी जब दरबारी हैं तो स्वतन्त्र समीक्षा हो ही कैसे सकती है? ये सब अपने जी-हुजूरों से घिरे रहते हैं जिनका काम है उनकी हां में हां मिलाना। स्वतन्त्र सुझावों को यहां गुंजायश ही कहां है? जब तक उनका कार्य-काल रहता है कोई अपने को सुरक्षित नहीं समझता तो प्रबन्ध के ऊंचे अधिकारी भी यद्यपि उन्हें भी उनके प्रतिद्वन्द्वियों और सेठों का खतरा बना रहता है।

जिसके हाथ कोई उसके हाथ सब कोई। इस प्रकार सिनेमा में रचनात्मकता का अन्तिम फैसला वे लोग करते हैं जो आगे की पंक्ति में हैं। इनका ध्यान सदा फिल्म के बजट पर रहता है जो लाखों डालर का होता है। जो लोग फिल्म से सम्बद्ध हैं—निर्देशक और कथा-लेखक वे भी सभी यह जानते हैं कि लाखों डालर दांव पर लगे हैं। इसलिए कोई भी कल्पना कथावस्तु या उसके निर्वाह के सम्बन्ध में खतरा मोल लेने को तैयार नहीं। 'खतरे की पूंजी' का प्रयोग जितना हालीवुड में सार्थक है उतना अन्यत्र कहीं नहीं। क्योंकि दांव पर बहुत बड़ा धन जितना लगाया जा सकता है सब कुछ लगा रहता है। यह हालीवुड की भीरुता की गांठ है। दफ्तरशाही रुपये का मानदण्ड और भीरुता ये हालीवुड की विशेषता है।

सिनेमा कालोनी में सदा अतिशयता रहती है। यहां सारी सफलता की कल्पनाएं आया करती हैं। किन्तु इस अतिशयता के बावजूद यहां सदा स्थिरता का खतरा बना रहता है। यह मेट्रोपोलिस तो नहीं है पर हालीवुड को अपने महत्त्व का भान है। पर फिर भी यह छोटा शहर है जो नगर के सामान्य जीवन से परे है। हालीवुड संसार की सबसे गुमनाम जगहों में है। इस शताब्दी के तीसे और चालीसे में कम्युनिस्टों ने इस गुमनामपन का लाभ उठाया था। उन्होंने युवक लेखकों और कलाकारों पर अपना जाल बिछाया था।

हालीवुड को अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए युवक-युवतियों को अपनी ओर आकर्षित करना पड़ता है। इनके स्वभाव में प्रायः स्थिरता का अभाव रहता है। हालीवुड में आने पर उन्हें जी-तोड़ परिश्रम करना पड़ता है। इनके चारों ओर चापलूसों का घेरा रहता है। उन्हें ऊंची तनख्वाहें मिलती हैं अपने से ऊंचों की चाटुकारी करनी पड़ती है या फिर अपने चाटुकारों से ही उनका मन

जुटने लगता है। इस प्रकार की युवक-युवतियाँ सारे अमेरिका के लिए स्वप्न लेकर आती हैं उन्हें खुद नहीं पता कि वे किसे फँसायें ? हालीवुड में दिल दो तरह से टूटते हैं एक तो वह सब कुछ जो आप चाहते हैं न मिले दूसरा वह सब कुछ पाना जो आप पाना नहीं चाहते। मिस्टर्ट सेल्डीज ने इसीलिए ठीक ही कहा कि 'हालीवुड में विपत्ति को समझना बहुत अधिक है'।

स्टार यानी कलाकार यहाँ सबसे अधिक विज्ञापित और जादूपूर्ण व्यक्ति होता है। कम ही कलाकार व्यक्ति ऐसे होंगे जिनमें मामूली से अधिक अभिनय की क्षमता हो। नायक और नायिकाएँ जिनकी सफलता मुख्य रूप से उनकी शक्ल-सूरत चाल-ढाल या बहुधा साज शृंगार पर ही आधारित होती है सिने-दर्शक जनता के हृदय पर बैठ जाती है। हालीवुड के कुछ देवी-देवताओं के नाम हैं पोला नेग्री मेरी पिकफोर्ड रूडाल्फ वैलेंटिनो डगलस फेयरबैंक्स जीनहार्लो कैरोल लुंबार्ड क्लार्क गेबल हम्फ्री बोगार्ट रीता हैवर्थ मार्लोन ब्रैंडो, मेरीलिन मनरो और हाँ इन सब में उच्च हैं चैपलिन और गार्बो। इनके बीच छोटे-मोटे सितारे हैं जो कभी चमक उठते हैं। सितारों के चारों ओर जो तड़क-भड़क है उसी ने करोड़ों के लिए हालीवुड का स्वर्ग बना दिया है।

कभी-कभी सितारों की व्यवस्था के समर्थन में कहा जाता है कि सिनेमा थियेटर नहीं है। सिनेमा वाले अभिनय जान भी सकते हैं पर उन्हें यह जानने की जरूरत नहीं है क्योंकि जिस चरित्र का वह निर्माण करता है वह स्क्रिप्ट के सहारे नहीं विकसित होता उसका निर्माण उसे अपने भीतर से करना पड़ता है यह चरित्र स्वयं उसका अपना चरित्र होता है। दर्शक इसे इसी रूप में देखता है। इस तर्क में सत्य है। यह रेडियो और टेलीविजन के विदूषकों पर भी लागू होती है। सिनेमा काल देश के व्यवधान को हटाकर स्वप्नों का निर्माण करता है। इस निर्माण में वह स्वप्न और सितारों के बीच एक भावनात्मक एकता ा स्थापित करता है। इसी से सितारों की व्यवस्था का दर्शकों और सितारों र असर होता है। इसमें एक बात और जोड़नी है। वह यह है कि हालीवुड गौरवान कलाकार केवल प्रतीक बनकर ही सन्तुष्ट नहीं होते। उनमें बहुतों ने कला की तृप्ति के लिए रंगमंच का सहारा लिया है। इसमें उन्हें आर्थिक हानि भी उठानी पड़ती है। उनमें बहुतों ने ऐक्टर्स स्टूडियो में ट्रेनिंग भी ली है। उन्होंने अभिनय के बारे में काफ़ी सोचा भी है। वे अपने आलोचकों की आलोचनाओं का भी ध्यान रखते हैं। महान् सितारे जैसे चैपलिन और गार्बो या मुनी फ्रेडरिक मार्च या एडवर्ड जी० रॉबिंसन अच्छे अभिनेता भी थे। यद्यपि गार्बो को प्रायः असफलता ही हाथ लगती थी। वह जो कुछ सफलता पाती थी उससे अधिक की ही सम्भावना रहती थी। जनता हालीवुड के देवता

की पूजा करने को कितनी उत्सुक रहती है इसका एक उदाहरण जेम्स डीन की मृत्यु के बाद उसके चारों ओर भक्ति के घेरे से मिलता है। मजेदार बात यह है कि डीन केवल कुछ तस्वीरों में काम कर पाया था कि मोटर दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो गई थी। उसमें गजब की प्रतिभा छिपी हुई थी। उसकी सफलता से सब हैरान थे। पर वह सुखी न था। धूमकेतु की भाँति उसका उदय और उसकी मृत्यु जीवन की एक प्रतीक बन गई।

किन्तु यहाँ पुरस्कार बहुत कम हैं। वे सब जो यहाँ काम करने आते हैं यहाँ से लौटकर घर वापस नहीं जाते। वे यहीं फिल्मों में एक्सट्रा का काम करते हैं। या यहीं किसी दुकान में छोटी मोटी नौकरी कर लेते हैं। आशा बनी रहती है कि कभी-न-कभी किस्मत का सितारा चमकेगा ही। उनके स्वप्न बेवकूफी से भरे लग सकते हैं, पर वे बेवकूफ नहीं क्योंकि फिल्म ही एक ऐसा उद्योग है जिसमें बिना अपना पैसा लगाए प्रतिभा चमक सकती है। किन्तु इसी एक बात के कारण यहाँ प्रतिद्वन्द्विता इतनी गहरी हो जाती है। किसी सितारे की गिरावट से अवसर और कोई बात हो ही नहीं सकती। जब जब कोई नया सितारा चमकता है इसलिये कोई दूसरा सितारा बुझने लगा होगा।

इससे स्पष्ट हो जाएगा कि हालीवुड की इतनी कम आबादी होने पर भी वहाँ इतने मनो-विश्लेषकों को अपनी प्रैक्टिस के लिए मसाला मिलता होगा? सार्वजनिक सफलता के साथ-साथ व्यक्तिगत जीवन में निराशा की भावना के शिकार प्रायः अभिनेता और लेखक होते हैं। सारे वातावरण पर 'टेंशन' छाया रहता है। अपने को चमकाने के लिए जरूरी है कि पृष्ठभाग अच्छी हो। इस लिए प्रचार उपकरण का उपयोग किया जाता है। जो लोग शक्ति के स्रोत हैं वे अवसर देने को तैयार रहते हैं बशर्ते कि उन्हें भी बदले में कुछ मिले। जो अमरीकी सिनेमा आलोचकों को अमेरिका का 'जेजबेल'¹ मानते हैं। वे भी हालीवुड के तलाक आत्महत्या पार्टियों मद्यपान प्राक्‌विवाह के यौन सम्बन्ध आदि के समाचार बड़े मनोयोग से पढ़ते हैं। हालीवुड के सामाजिक जीवन के सर्वेक्षण में लियो रास्टेन ने दिखलाया है कि यद्यपि हालीवुड में तलाक की दर अमेरिकी औसत से ज्यादा है पर वह बहुत ज्यादा नहीं है। सार्वजनिक सम्पर्क वाले अपने मालिकों के जीवन को ऐसा बताते हैं मानो वे सनडे स्कूल के विद्यार्थी हैं। और उनमें सभी प्रकार से नागरिकों के गुण कूट-कूट कर भरे हैं। पर वे यह भूल जाते हैं कि सिनेदर्शक उन्हें हाड़-मांस के जीव के रूप में ही देखना पसन्द करता है जैसे वे सिनेमा के पर्दे पर दिखते हैं।

अमेरिकी सिनेमा की यथार्थता और अमेरिकी जीवन के मनोवैज्ञानिक

---

1 Jezebel.

प्रेरकों में गहरा सम्बन्ध है। हालीवुड ने अमेरिकी चरित्र के प्रकारों को खोजने की कोशिश की है। किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि यद्यपि इन चित्रों में अमेरिकी संस्कृति के मूल्यों का प्रतिबिम्ब दिखता है किन्तु यह सच्चाई सत्य ही है। प्रायः ये चित्रण पिटे-पिटाये मार्ग पर ही चलते हैं। ये केवल अपरिपक्व मन को ही प्रभावित करते हैं। संस्कृति की सभी विशेषताएँ चित्रों में हैं किन्तु वे बना-सँवार कर, संक्षिप्त रूप में मुलायम करके और इस प्रकार प्रस्तुत की जाती हैं जो किसी निश्चित दिशा की द्योतक नहीं।

सबसे पहली बात यह है कि सिनेमा में रुपये की प्रधानता है। स्काट फिट्जेरल्ड ने लिखा था कि 'उसके स्वर में रुपया था' आज भी हालीवुड के अलापनों में रुपया बोलता है। हालीवुड की बोली में रुपया है। कैमरा जिस रूप में तस्वीर लेता है उसमें रुपया है। सर्वसि 'सेट' बनाने में रुपया है। चाहे झोंपड़ी का ही 'सेट' क्यों न हो। हाँ हर तस्वीर में इस बात पर जोर दिया जाता है कि संसार में रुपया ही सब कुछ नहीं है। प्रेम आत्म-सम्मान, प्रसन्नता ये सब रुपए से बढ़कर हैं। किन्तु हालीवुड की हर तस्वीर यही सिद्ध करती है कि रुपये के बिना कुछ भी नहीं हो सकता।

जहाँ तक काम (सेक्स) का प्रश्न है सिनेमा में काम या प्रेम की अभिव्यक्ति नहीं बल्कि कामुकता की अभिव्यक्ति होती है। सिनेमा ने सेन्सर की अपनी एक संहिता बना ली है। जिसके अनुसार नारी के वक्ष का प्रतिप्रदर्शन या पुरुष और नारी का हारिजेंटल मुद्रा में आलिंगन प्रदर्शित नहीं किया जा सकता। किन्तु फिर भी जो कुछ प्रदर्शित होता है वह काम की उत्तेजना के लिए पर्याप्त है। सिल्क के आवरण में छिपी कामुकता तो घुसकर प्रदर्शित होती है। सेन्सर की इस कड़ाई में कभी-कभी उत्पादक ऐसी प्रतिभा का परिचय देता है कि इशारे से इतनी बात कह दी जाती है कि जो चित्र भी नहीं कह सकता। सिनेमा में अविवाहितों के गाढ़े आकर्षण का चित्र शायद ही कभी दिखाया जाता हो जैसा कि कुछ विदेशी चित्रों में देखा जाता है। यह हालीवुड में कठिन होगा क्योंकि विवाहेतर सम्बन्धों के प्रदर्शनों पर यहाँ प्रतिबन्ध है। चूंकि सिनेमा के चरित्र गाढ़ बोध से प्रस्तुत नहीं किये जा सकते बच्चों का उपयोग हास्य के लिए ही किया जाता है। चूंकि पर्दे पर तलाक के दृश्य नहीं दिखलाये जाते तलाक के लिए वैध कारणों के प्रदर्शन पर रोक है विवाह की वास्तविक कठिनाइयाँ भी नहीं दिखाई जातीं इसलिए पति-पत्नी के जो झगड़े दिखाये जाते हैं वे सब बनावटी होते हैं और इसीलिए उनका शान्त करने का जो तरीका दिखाया जाता है वह भी बनावटी और बेमजा होता है।

ताम मामामी चित्रों के अभाव में फिल्मों में गहरे भावनात्मक चित्रण के लिए 'गति' (ऐक्शन) का सहारा लिया जाता है। चित्र तेजी से बदल

चलते हैं। 'कटिंग' के देखने वाले इस बात का ध्यान रखते हैं कि एक दृश्य के बाद बिना कोई व्यवधान के दूसरा दृश्य तुरन्त आ जाए। सोचने के लिए रुकने की गुंजाइश नहीं है। पर्दे पर कुछ-न-कुछ होता रहना चाहिए, जैसे किसी मकान के ऊपर से चढ़ते उतरते कूदे भाग-भाग बचना भागना समझौते भ्रम में पड़ जाना गगनचुम्बी कोलेजम के दृश्य बन्दूक से लड़ाई भीड़ का दृश्य चलती गाड़ी से कूद कर भागना जहाज टूटना आसमान में मृत्यु मोटरों से पीछा करना अप्रत्याशित ढंग से नायों का मिलना षड्यन्त्र चेहरे बदलना पहचाना जाना सत्य की विजय अर्थात् कोई-न-कोई दृश्य पर्दे पर चलता ही रहता है। अमेरिका ऐक्शन यानी कर्म के बल पर ही विजयें प्राप्त करता है। कर्म में उसका विश्वास है और इसीलिए सिनेमा से भी कर्म की आशा करता है।

इन सब वस्तुओं में हिंसा भी जोड़ दीजिए। हो सकता है कि सिनेमा संस्कृति की आन्तरिक हिंसा और खिंचाव का ही प्रतिबिम्ब हो। जब वास्तविक प्रेम और कामुकता सेन्सर द्वारा काट दी जाती है या अन्य किसी कारण से हटा दी जाती है तो उसका स्थान हिंसा ले लेती है। जब पुरुष और स्त्री के परिपक्व सम्बन्ध से किनारा काटा जाता है तो इनका स्थान 'सेक्स' की छेड़खानी ही लेती है जिसमें पुरुष का प्राधान्य होगा। पहले की फिल्मों में नारी को पुरस्कार और देवी के रूप में दिखलाया जाता था। इस परम्परा में पहला व्यतिक्रम तब आया जब जेम्स कागनी ने 'पब्लिक एनेमी' में लड़की के मुँह पर अंगूर का गुच्छा फेंका। नारी के मूल्यों से बने समाज में पुरुष के अधिकार के रूप में इसका स्वागत हुआ। हिंसा की कथावस्तु दूसरे रूप में दिखलाई जाती है जैसे कठोर माँ-बाप का अत्याचार, जेल का वार्डर या जहाज का कप्तान या गुण्डों का सरदार जिसे दूसरे को कष्ट देने में आनन्द आता है।

हिंसा को और मजबूत बनाते हैं जासूसी कहानियों के नायक। इसमें लड़की शुरू में तो विरोध करती है पर अन्त में उसकी शक्ति का लोहा मान लेती है। मृत्यु-रोमांच की फिल्मों में मुख्य वस्तुएँ हैं—चतुरता गति तेज वार्तालाप और लगातार हिंसा। फिल्मी जासूस के लिए मेधाचार्य[1] होना जरूरी नहीं। उसकी कहानी टॉम जोन्स जैसे जन्म भूले जासूस की है जो कोई बड़ी जासूसी तो नहीं करता पर यह दिखलाना पसन्द है कि जो भी सजा उसे मिले वह भुगतने के लिए तैयार है। उसे जो अभिनयशीलता देनी होती है वह भी शारीरिक ही है मानसिक नहीं। उसे ताबड़तोड़ साहसों का सामना करना पड़ता है। उसे चेतावनी मिलती है पर वह उसकी परवाह नहीं करता। वह घिर जाता है देर तक एक जगह बाँध दिया जाता है मार कुटाई सहता है अत्याचार और

1 Mastermind

भावनाएँ सहता है, मर गया है समझकर उसके दुश्मन उसे छोड़ जाते हैं इन सबको वह धैर्यपूर्वक सहता है। अंत में वह अपने आदमी को और एक अर्थ में अपनी प्रेयसी को पा ही लेता है। अपनी इस साहस-यात्रा में वह भावी जीवन मार्ग पाता है या बनाता है। प्रत्येक मृत्यु एक दुखद घटना नहीं गिनती भर है। उसकी न तो कोई मनोवैज्ञानिक जड़ है न कोई परिणाम। यह सब कुछ सपाट पर एक 'थ्रिल' पैदा करने के अतिरिक्त और किसी काम का नहीं होता।

वुल्फेन्स्टीन और लीटीज ने 'मूवीज : ए साइकोलॉजिकल स्टडी' में अमेरिकी फ़िल्मों में वस्तु का विश्लेषण किया है। उन्होंने इन फ़िल्मों में जो ऊपर दिखता है उसका नहीं जो छिपा है उसका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण बड़ी बारीकी से किया है। यद्यपि यह बात परिहास तक की सीमा के लिए खींची जा सकती है पर इसमें इस ठोस मान्यता के आधार का सम्बन्ध स्थापित किया गया है कि उत्पादक इन दिवास्वप्नों के प्रभाव में गलती कर सकता है। उस पर सेंसर का बंधन भी है और उसका स्वयं का दम्भपन भी। इसलिए जो कुछ बन पाता है वह उसके सुविचारित निर्णय का प्रतीक नहीं हो पाता। उसका इसमें नुकसान भी हो सकता है उसकी भूल भी हो सकती है। उसको बहुत-सी फ़िल्में बनानी हैं और पैसा भी। आलोचक फ़िल्म को कला मानकर उसकी आलोचना भी करते हैं। इसलिए उसका कष्ट अपार है। सेल्जनिक ने कहा कि सफलता पाने के लिए फ़िल्म-उत्पादक को 'सामान्य जनता'[2] नहीं बल्कि उसमें भी छोटे से-छोटे लोगों का ख्याल रखना चाहिए।

इसका यह अर्थ नहीं कि फ़िल्म-उद्योग ने बहुत अच्छे चित्र नहीं बनाए हैं। सच तो यह है कि यही एक ऐसी पापुलर-कला है जिसने भावी पीढ़ी के लिए अच्छी कृतियों की परम्परा बनाई है। ऐसी फ़िल्मों में ग्रिफिथ की 'बर्थ ऑफ ए नेशन' चैपलिन की 'सिटी लाइट्स', 'मान्स्यर वरडोक्स', और 'दि गोल्ड रश', वेस्टर्न्स जैसे 'हाई नून', 'बैड डे ऐट ब्लैक रॉक' कॉमेडियों जैसे 'बोर्न यस्टर्डे', 'इट हैपन्ड वन नाइट' और 'गोइंग माई वे' आदि की चर्चा की जा सकती है। जासूसी फ़िल्मों में 'दि थिन मैन' और 'माल्टीज़ फाल्कन', मृत्युकथाओं में 'डबल इन्डेम्निटी' अपराधों की तस्वीरों में 'पब्लिक एनेमी' और 'दि मन ऑफ़ शिकागो' भयानक चित्रों में 'नाइट मस्ट फाल' वृत्त चित्रों में 'दि मस्फास्ट अंपल', युद्ध चित्रों में 'हेल्स ऐंजेल्स', और 'दि रेड बैज ऑफ़ करेज', सामाजिक कृतियों में 'होम ऑफ दि ब्रव दि मन', और 'दि वाइल्ड वन' चरित्र और साहस के चित्रों में 'दि ट्रेजर ऑफ़ सियेरा मेड्र', और 'दि प्रमोशन रचीन' आदि चित्रों ने इतिहास की रचना की है। यह सूची और भी बड़ी हो

---

2 Common denominator

सकती है। किन्तु कोई भी ऐसी सूची पूरी नहीं होगी जिसमें चाल्स चिप्लन के काइम चित्र सम्मिलित न हों। उसकी कला शुद्ध जनता की कला है। उसने अपने एक संसार का ही निर्माण कर दिया है।

आश्चर्य है कि ऐसे उद्योग को जिसने इतना कुछ किया है दर्शकों की कमी के खतरे का सामना करना पड़ रहा है। हजारों सिनेमाघर हाल में ही बन्द हो गए। दर्शकों में 35 के आसपास के या किशोरवय वाले ही अधिक हैं। बहुत-से आलोचक इसके लिए फिल्म-उत्पादकों को ही दोष देते हैं। उनका कहना है कि फिल्मों का स्तर ऊँचा करने से उसे और परिपक्व मस्तिष्क के वे दर्शक भी मिलेंगे जो आज सिनेमा नहीं देखते। डेविड रीजमैन का कथन है कि इस प्रकार के लोग फिल्में नहीं देखेंगे क्योंकि उन्हें इसका चस्का नहीं लगा है। वे उसे समझते भी नहीं हैं। तर्क यह है कि अमेरिकी समाज में हाल में जो परिवर्तन हुए हैं उन्होंने रहन-सहन के स्तर में काफ़ी हेर-फेर कर दिया है। सिनेमा फिल्मों में इन्हीं परिवर्तनों को दिखाया जाता है। इसे युवक तो पकड़ लेते हैं पर अधिक उम्र वाले नहीं समझ पाते क्योंकि उनका मन तो भूत की ओर है।

मैं इस बात से सहमत हूँ कि जवान अमेरिकी केवल मनोरंजन के लिए सिनेमा देखने नहीं जाते बल्कि वे 'अंतर्वैयक्तिक सम्बन्धों'[1] के सम्बन्ध में निर्देश भी ग्रहण करते हैं। इसलिए यह और आवश्यक हो जाता है कि हम देखें कि कैसा निर्देश उन्हें मिलता है। इसमें कोई शक नहीं की भावना और विचारों का जो वर्णन् वहाँ मिलता है वह काल्पनिक है। यहाँ काल्पनिक शब्द का प्रयोग संश्लिष्ट अर्थ में ही किया जा रहा है। अच्छे उपन्यासों में व्यक्तित्व की भावना के सम्बन्ध में उन्हें जितना अनुभव होता है उतना चलचित्रों से नहीं। उपन्यासों से वे अपनी दुविधा के लिए भी सुराग प्राप्त करते हैं। मुझे सन्देह है कि फिल्मों में निष्कर्ष ही नहीं बल्कि समस्याएँ भी पिसी-पिटी होती हैं। युवकों को उनसे दुविधाएँ ही प्राप्त होती हैं। इस प्रक्रिया के द्वारा समयोपरान्त से फिल्मों और दर्शकों में भावनात्मक बराबरी हो सकती है पर यह ऐसी होगी जब दर्शक भ्रष्ट होकर ऐसी बराबरी का अनुभव हो जाएगा।

मनुष्य के स्वभाव और भाग्य के सम्बन्ध में हालीवुड का जो दृष्टिकोण है उसकी वैधता कितनी है इसका अधिक महत्व न भी होता यदि फिल्मों का जनता पर इतना व्यापक असर न होता। हालीवुड क्या और कैसे करता है, इसका संसार के करोड़ों व्यक्तियों के लिए महत्व है। हालीवुड फिल्मों का उत्पादन वितरण निर्यात ही नहीं करता है और भी कुछ करता है। लोग

1 Inter personal relations.

उनसे अपने जीवन का दर्शन प्राप्त करते हैं। स्टारों की ऐसी तहजीब बातचीत का ढंग सांसारिक बुद्धिमत्ता का निर्माण इन चित्रों को देखकर और हालीवुड के सम्बन्ध में पत्र-पत्रिकाओं को पढ़कर और उनमें छपी तस्वीरों के सहारे करते हैं। सिने-प्रेमियों के लिए 'मनोरंजन' में जादू, नैतिकता आदि भी सम्मिलित हैं। उन्हें चमत्कृत करने के लिए बाँधे गए तूमार उनका निर्माण करते हैं। गति और शक्ति जो उसे रोमांचित करने के लिए होती है वे उसके टेम्पो का निश्चय करते हैं। काम की तड़क-भड़क जो उसको लुभाने के लिए होती है वही उसके स्वप्नों को प्रखर करती है। हिंसा भी उसको 'जोश दिलाने' के लिए प्रदर्शित की जाती है वही उसे निर्भीक बनाती है।

मैंने लिखा है कि महान् चित्र बने हैं और महान् निर्देशक भी हुए हैं जिन्होंने लीक तोड़ने की कोशिश की है। मेरा दृढ़ मत है कि सिनेमा ने कला के रूप में अन्य किसी बड़े माध्यम से ऊँचा स्तर बना लिया है। मेरी आलोचना वास्तविकता और संभाव्यता के बीच की दूरी को लेकर है। किन्तु यह भी सच है कि यह दूरी रेडियो टेलीविजन में इससे कहीं अधिक है।

### 6 रेडियो और टेलीविजन घर में ही संसार

यदि सिनेमा तड़क-भड़क और स्वप्न की कला है तो रेडियो और टेलीविजन घर की कलाएँ हैं। इन्होंने प्रत्येक अमेरिकी के लिए संसार प्राप्य बना दिया है। किन्तु खेद है कि एक बटन दबा देने पर अमरीकी भी सारे संसार के लिए इन रेडियो और टेलीविजन के मालिकों की कृपा से प्राप्य हो जाता है। अमेरिकी परिवार घर के कमरे में बन्द है। रेडियो और टेलीविजन की कृपा से सब उस पर टूट पड़ते हैं। सोन आर्केस्ट्रा हाथ भावरा बूगर, कॉमेडियन दम्पति के जलपान के दो विषमनी मित्र थके तो दर्शकों के सम्मेलन विविध अभिनय गृहिणी की बातचीत समाचार समालोचक प्रोग्राम धर्मम राजनीतिक आन्दोलन हाट जाँज एवं डिस्क जोकीज (Hot Jazz and Disk Jockeys) और इस प्रकार ऊपर कल्पनातीत कोई-न-कोई उसे घर रखे होता है। कैसे-कैसे दृश्य और कैसे-कैसे स्वर उनसे बरसते हैं? इतिहास में इसकी मिसाल शायद ही कभी मिली हो।

इस विस्तार का भी एक मानवीय और सामाजिक पक्ष है। रेडियो और टेलीविजन मनोरंजन के ही साधन नहीं हैं वे अमेरिकी संस्कृति को एक सूत्र में बाँधने के बड़े तत्व भी हैं। इनसे राष्ट्र का प्रत्येक भाग एक दूसरे के नजदीक आता है। ये प्रसारण के महत्वपूर्ण साधन हैं। इनमें एक साथ करोड़ों व्यक्ति ध्यान एक ओर आकर्षित करते हैं। अमेरिकी एकाकी जीव है। कम-से-कम इन माध्यमों से अपूर्व दर्शकों तक आप पहुँच तो सकते हैं। ये माध्यम भी

सकती है। किन्तु कोई भी ऐसी सूची पूरी नहीं होगी जिसमें वाल्ट डिज्नी के कार्टून चित्र सम्मिलित न हों। उसकी कला शुद्ध अमरता की कला है। उसने अपने एक संसार का ही निर्माण कर दिया है।

मालूम है कि ऐसे उद्योग को जिसने इतना कुछ किया है दर्शकों की कमी के संकट का सामना करना पड़ रहा है। हजारों सिनेमाघर हाल में ही बन्द हो गए। दर्शकों में 35 के आसपास के या किशोरवय वाले ही अधिक हैं। बहुत-से आलोचक इसके लिए फिल्म-उत्पादकों को ही दोष देते हैं। उनका कहना है कि फिल्मों का स्तर ऊँचा करने से उसे और परिपक्व मस्तिष्क के दर्शक भी मिलेंगे जो आज सिनेमा नहीं देखते। डेविड रीजमैन का कथन है कि इस प्रकार के लोग फिल्में नहीं देखेंगे क्योंकि उन्हें इसका चस्का नहीं लगा है। वे उसे समझते भी नहीं हैं। तर्क यह है कि अमेरिकी समाज में हाल में जो परिवर्तन हुए हैं उन्होंने रहन-सहन के स्तर में काफ़ी हेर-फेर कर दिया है। सिनेमा चित्रों में इन्हीं परिवर्तनों को दिखाया जाता है। इसे युवक तो पकड़ लेते हैं पर अधिक उम्र वाले नहीं समझ पाते क्योंकि उनका मन तो शून्य की ओर है।

मैं इस बात से सहमत हूँ कि जवान अमरीकी केवल मनोरंजन के लिए सिनेमा देखने नहीं जाते बल्कि वे 'अंतर्वैयक्तिक सम्बन्धों'[1] के सम्बन्ध में निर्देश भी ग्रहण करते हैं। इसलिए यह और आवश्यक हो जाता है कि हम देखें कि कैसा निर्देश उन्हें मिलता है। इसमें कोई शक नहीं कि भावना और विचारों का जो जगत् वहाँ मिलता है वह काल्पनिक है। यहाँ काल्पनिक शब्द का प्रयोग संश्लिष्ट अर्थ में ही किया जा रहा है। अच्छे उपन्यासों में व्यक्तित्व की भावना के सम्बन्ध में उन्हें जितना अनुभव होता है उतना कहानियों से नहीं। उपन्यासों से वे अपनी दुविधा के लिए भी सुराग प्राप्त करते हैं। मुझे सन्देह है कि फिल्मों में निष्कर्ष ही नहीं बल्कि समस्याएँ भी घिसी-पिटी होती हैं। युवक को उनसे सुविधाएँ ही प्राप्त होंगी। उस प्रक्रिया के द्वारा समयांतर से फिल्मों और दर्शकों में भावनात्मक बराबरी हो सकती है पर वह ऐसी होगी जब दर्शक भ्रष्ट होकर ऐसी बराबरी के अनुरूप हो जाएगा।

मनुष्य के स्वभाव और भाग्य के सम्बन्ध में हालीवुड का जो दृष्टिकोण है उसकी चिन्ता जितनी है उसका अधिक महत्त्व न भी होता यदि फिल्मों का जनता पर इतना व्यापक असर न होता। हालीवुड क्या और कैसे करता है, इसका संसार के करोड़ों व्यक्तियों के लिए महत्त्व है। हालीवुड चित्रों का उत्पादन वितरण निर्माण ही नहीं करता है और भी कुछ करता है। लोग

---

1 Inter personal relations.

नहीं इतिहास न बदल सका। अब यह माध्यम सुस्थापित जालों[1] के हाथ में आ गया। किन्तु अन्य दो विकसित रूप—टेलीविजन और रम सचमुच क्रान्तिकारी सिद्ध हुए।

रेडियो के विपरीत टेलीविजन जब अमेरिका में आया तो निजी स्वामित्व, विज्ञापन-प्रतिभूति और सरकारी नियन्त्रण पहले से ही स्वीकृत किए जा चुके थे। इसे पहला धक्का रेडियो वालों से लगा। वे जानते थे कि टेलीविजन रेडियो श्रोताओं की संख्या में कमी कर देगा। हो सकता है कि टेलीविजन रेडियो का स्थान भी ले ले। फिर रेडियो वाले टेलीविजन के क्षेत्र में पर्याप्त पैसा लगाने के लिए बाध्य थे। प्रत्येक कम्पनी ने इस घुड़दौड़ में हिस्सा लिया क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं उनके प्रतिद्वन्द्वी इस क्षेत्र में उनसे आगे न बढ़ जाएँ। दो बड़ी कम्पनियों में रंगीन टेलीविजन में इतनी कड़ी प्रतियोगिता हुई कि इतिहास ही बन गया। टेलीविजन के आगमन के पश्चात् रेडियो सिनेमा और दूसरे बड़े माध्यमों के दर्शकों-श्रोताओं में काफ़ी कमी हुई किन्तु बाद में यह कमी दूर हो गई। फलस्वरूप आज कुल मिलाकर दर्शकों-श्रोताओं की संख्या में वृद्धि ही हुई है और यह संख्या प्रायः टेलीविजन की वजह से ही बढ़ी है।

रेडियो में विचित्र स्थिति है। प्रश्न है कि प्रोग्रामों का नियन्त्रण किस के हाथ में रहे? कहते हैं रेडियो से 4 वर्गों का वास्ता है। वे हैं प्रसारण के स्टेशन और उनकी शृंखलाएँ, रेडियो बेचने वाली कम्पनियाँ, विज्ञापन प्रतिभूति और श्रोता। ये ही सारे संगीत और कला को प्रभावित करते हैं इनमें भी आपसी सम्बन्ध की एक शृंखला है जो इस प्रकार चलती है। जब अधिक रेडियो और टेलीविजन बिकते हैं तो बेचने वाली कम्पनियों को अधिक मुनाफ़ा होता है और श्रोताओं की संख्या भी बढ़ती है। श्रोताओं की संख्या बढ़ने पर रेडियो कम्पनी को विज्ञापन से अधिक आय होती है। इसलिए दोनों को लाभ होता है। अधिक पैसा मिलने पर प्रोग्रामों के स्तर पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। अच्छे प्रोग्राम होने से—जैसे राष्ट्रपति के चुनाव के कन्वेंशनों और कांग्रेस की कार्यवाहियों के प्रसार से—श्रोताओं की संख्या और बढ़ती है। इस प्रकार यह क्रिया-चक्र चलता रहता है।

इससे श्रोताओं और विज्ञापकों के बीच के गहरे सम्बन्ध पर प्रकाश पड़ता है। रेडियो और टेलीविजन पर जो कलाएँ हैं इसलिए उनमें कोई प्रवेश शुल्क नहीं लगता। 1955-56 के आसपास पत्रों में रेडियो की व्यवस्था और फोन टेलीविजन की व्यवस्था की सम्भावना पर भी विचार हुआ था। इसलिए इस

1 Networks

परिनिष्ठित हैं। सभी एक स्वर सुनते हैं, एक मजाक का आनन्द लेते हैं। विज्ञापन का एक नारा सुनते हैं। वही तर्क बार-बार घर एक साथ करोड़ों कानों में पड़ता है। यह परिनिष्ठितता बुद्धिजीवियों और रुचि के स्तर को नीचे धकेल रही है।

रेडियो और टेलीविज़न एक ही प्रसारण कला के अंग हैं। दोनों में एक स्थान से बात प्रसारित की जाती है और लोग करोड़ों की संख्या में अपने घरों में वही बात देखते-सुनते हैं। पारेषण के लिए दोनों एलेक्ट्रॉनिक वैकुअम नली का सहारा लेते हैं। टेलीविज़न सेट भी आ गया। दोनों ही क्षेत्रों में मध्य का कोई 'घो' नहीं जैसा सिनेमा या दर्शकों के जन-समूह में होता है। चूंकि इसमें लिखित शब्द का प्रयोग नहीं होता। इसलिए पत्र-पत्रिकाओं आदि की भांति साक्षरता की भी इन्हें कोई आवश्यकता नहीं। इनका प्रवेश सब जगह हो सकता है जहां आपकी भाषा समझी जाए और चित्र देखे जा सकें। इस प्रकार ये दृष्टि और ध्वनि की कलाएँ हैं। इस दृष्टि से सिनेमा से इनकी समानता है।

किन्तु इस एलेक्ट्रॉनिक ट्यूब में जो थोड़ी-सी वस्तु ये जोड़ देते हैं। इससे घर बैठे आपका मनोरंजन हो सकता है। इसके लिए मनोरंजन के सम्बन्ध में इसमें काफी व्यापकता और चुनाव के लिए स्थान भी है। कोई प्रोग्राम पसन्द नहीं आया तो रेडियो या टेलीविज़न बन्द करने की ज़रूरत नहीं, दूसरा स्टेशन खोल लीजिए, नहीं तीसरा या चौथा कोई भी और अपनी पसन्द का सिनेमा या थियेटर या संगीत नृत्य खेल या खेलकूद जो भी चाहें देखिए, सुनिए। इस प्रकार एक तरह से रेडियो और टेलीविज़न सारी पापुलर कलाओं के समन्वय हैं। ये सारे संसार को घर में ला देते हैं।

रेडियो का प्रारम्भिक विकास 1920-30 के बीच हुआ। 1920 में हार्डिंग चुनाव का फल प्रसारित करके रेडियो अमरिका पर छा गया। पहले तो सभी कार्यक्रम जनसेवा के रूप में प्रसारित होते रहे। सन् 1930 के आसपास रेडियो की मुख्य आय विज्ञापन से थी जो अन्य माध्यमों को केन्द्रित करने की शक्तियाँ थीं वही रेडियो की भी बड़ी समस्याएँ बन गईं। रेडियो के लिए प्राप्य आवृत्तियाँ और टेलीविज़न के लिए प्राप्य चैनलों की संख्या सीमित थी। इसका कारण कुछ तो भौतिक कुछ आर्थिक भी था। 1934 में जब फेडरल कम्युनिकेशन्स कमीशन बना तो प्रसारण के तीन स्टैन्डर्ड स्वीकृत हुए—1 सिग्नल उपयोग 2 विज्ञापन प्रतिभूति और 3 व्यापक सीमा में वन नियन्त्रण। इसके बाद फ्रीक्वेंसी माड्यूलेशन (Frequency Modulation) का क्रान्तिकारी विकास हुआ जिससे कार्यक्रमों के प्रसारण में काफी सुधार हुआ और आवृत्तियों और स्टेशनों की संख्या भी बढ़ी। इसका बड़ा स्वागत हुआ। किन्तु यह ऐसा मोड़ सिद्ध हुआ।

कर विज्ञापन कर जाती है। श्रोता खीझ उठता है। इस प्रकार प्रोग्राम के प्रवेश शुल्क के रूप में जो दंड उसे सहना पड़ता है वह उसे असह्य हो उठता है। इस कमर्शियल का सबसे खतरनाक प्रोग्राम तब होता है जब कोई कलाकार किसी चीज के उपयोग उसकी खूबियों आदि पर एक 'सोलो' ही उपस्थित कर जाता है। विक्रय वार्ताओं के कार्टून भी टेलीविजन पर दिखलाए जाते हैं। डिज़्नी ने सिनेमा में जो प्रयोग किये उसका अन्त टेलीविजन विज्ञापन में हुआ है। भूतपूर्व प्रेसिडेंट हूवर 'कमर्शियलों' के विरोधी न थे। पर उन्हें भी ये प्रोग्राम असह्य लगे थे। और वे भी कह उठे थे कि 'काश! कोई ऐसा इन्तजाम होता कि किसी बटन के द्वारा श्रोता की प्रतिक्रिया भी ब्राडकास्ट कराने वालों को तत्काल सूचित कर दी जाती।'

यद्यपि कुछ लोगों की इस सम्बन्ध में ऐसी प्रतिक्रिया है। पर यह भी सच है कि टेलीविजन ने अमेरिका में चीजों के विक्रय के क्षेत्र में क्रान्ति ही पैदा कर दी है। पहली बार आप किसी चीज के बारे में सुनते ही नहीं देखते और उसकी गंध भी लेते हैं। धुलाई की मशीन हो या रसोई घर का कोई सामान बीयर हो या मोटरगाड़ी या शेविंग पाउडर, विज्ञापक अपने सामने साकार पाता है कि कम-से-कम इस टेकनिक से वह करोड़ों सम्भाव्य खरीदारों को अपनी चीज इतनी अच्छी दिखा तो सकता है।

रेडियो वाले व्यापारिकता का एक आवश्यक बुराई मानते हैं। 'कमर्शियल' को मनोरंजन के ऊपर पलने वाला माना जाता है पर सच यह है कि यह व्यापारिकता का हस्तक्षेप है कमर्शियल का नहीं। लोग इसीलिए इसका विरोध करते हैं। जब कोई किसी मन-कल्पना के भवन में बिना पूछे घुसता है तो उसका बुरा मानते ही हैं। कमर्शियल श्रोता को यह बताता है कि सारे मनोरंजन के स्रोत उसके हाथ में नहीं हैं उसको इसलिए कुछ पास से भी देना पड़ेगा।

विज्ञापक के लिए 'कमर्शियल' कार्यक्रम का तिलिस्मा नहीं बल्कि कार्यक्रम कमर्शियल का तिलिस्मा है। इसीलिए वह 'कमर्शियल' के चुनाव पर खर्च करता है और उसके सजाने-सँवारने में अपनी सारी शक्ति लगा देता है। वह इस कार्य के लिए मेधावी व्यक्तियों को किराये पर लेता है जिन्होंने पैसा खर्च करके शिक्षा पाई है। ये सम्पूर्ण साहित्य दर्शन मनोविज्ञान और कला का मंथन विज्ञापन-एजेंसी के लिए करते हैं। प्रोग्राम के बीच वे अपनी सारी योग्यता से उसकी आत्मा की रक्षा करते हैं।

श्रोता भेद और परिवर्तनशील भी होता है। सभी कार्यक्रमों के लिए टेलीविजन-दर्शक बँधे नहीं हैं। हमेशा यह खतरा रहता है कि कहीं कोई दूसरा कार्यक्रम उन्हें फुसला न ले जाए। अमेरिकी संस्कृति में समय का बड़ा मूल्य है

व्यापार को कर किसी दूसरे रूप में लेना पड़ेगा। वह विज्ञापन के द्वारा लेता है। ब्रॉडकास्ट वालों को अभी तक यह अवसर विज्ञापक अपनी शर्त पर ही देता है। उनको विज्ञापन-समय और 'कमर्शियलों' पर ही नहीं प्रोग्राम की वस्तु पर भी नियन्त्रण मिल जाता है। इस प्रकार ब्रॉडकास्ट वाले समय ही नहीं बेचते, श्रोताओं को भी बेच देते हैं।

इस प्रकार जोर देने की धुरी ही बदल जाती है। सिनेमा और प्रेस के सम्बन्ध में तस्वीरों और अखबार की वस्तु के बारे में निर्णय वे करते हैं जो स्वयं कलाकार होते हैं यद्यपि व्यापार के उद्देश्य से ही तस्वीरें और अखबार भी तैयार किये जाते हैं। किन्तु रेडियो और टेलीविजन की वस्तु का चुनाव विज्ञापन देने वाले करते हैं। उनके अपने घेरे में प्रोग्राम की सफलता का आधार कला को नहीं माना जाता। उनको इस बात की फिक्र रहती है कि अधिक से-अधिक श्रोताओं का ध्यान उनके प्रोग्रामों में लगा रहे। वे दूसरों के विज्ञापन न सुन सकें। उनके प्रोग्राम से कोई पीछे नहीं। स्टंट तो कोई हो ही नहीं। यहाँ प्रयोग की गुंजाइश बहुत कम होती है। खतरा कोई लेता ही नहीं। यहाँ फैसला कार्यक्रम के आधार पर नहीं बल्कि 'रेटिंग' के आधार पर किया जाता है। 'रेटिंग' का अर्थ है महसूल की दर निश्चित करना। यह महसूल की दर ही यहाँ प्रमुख है। सिनेमा वाले ऐसा कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं जो दर्शक का मनोरंजन कर सके। यदि वह ऐसा नहीं है तो कौन पैसा देकर उसे देखने जाएगा। रेडियो और टेलीविजन को ऐसे श्रोताओं की आवश्यकता है जो मुफ्त में देखना पसन्द करें। ताकि स्टेशन उन्हें विज्ञापकों के हाथ बेच सके। विज्ञापक तो सारा प्रोग्राम ही खरीद लेता है क्योंकि उसे उसके माध्यम से साबुन, रेफ्रिजेरेटर और कारें बेचनी हैं।

श्रोता इस मामला का सम्भाव्य क्रेता है वह 'शो' का खरीदार नहीं। सच यह है कि 'वही' इस प्रक्रिया में विक्रय की वस्तु है। जब तक कि वह विज्ञापकों के हाथ बिक सकता है इसका कोई असर नहीं कि प्रोग्राम उसकी रुचि या मूल्यों से क्या सम्बन्ध रखता है। यह बाजार की कला है जो घर में आ गई है। यह कला के रूप में नहीं बल्कि विज्ञापन के रूप में मनोरंजन है।

इसी से आप विनयवार्ता विज्ञापन प्रतियोगिता का अर्थ समझ सकते हैं जिससे सारा प्रोग्राम भरा रहता है। बड़े प्रभावशाली ढंग से बात कही जाती है और अन्त में एक नारा होता है                साबुन खरीदिए।' इस ढंग से विज्ञापक श्रोता के अवचेतन में अपने सामान को बैठा देता है। रेडियो वार्ता चल रही है    किसी किताब की चर्चा है या विश्व की राजनीति गरमाई जा रही है या किसी प्रसिद्ध व्यक्ति से 'इण्टरव्यू' चल रहा है बीच में वार्ता देने वाली महिला किसी पेटेंट सामान या घरेलू चीज की सिफारिश

कर विज्ञापन कर जाती है। श्रोता खीझ उठता है। इस प्रकार प्रोग्राम के प्रवेश शुल्क के रूप में जो दंड उसे सहना पड़ता है वह उसे असह्य हो उठता है। इस कमर्शियल का सबसे उबाऊ प्रोग्राम तब होता है जब कोई कलाकार किसी चीज के उपयोग उसकी खूबियों आदि पर एक 'सोलो' हो उपस्थित कर जाता है। विक्रय वार्ताओं के कार्टून भी टेलीविजन पर दिखलाए जाते हैं। डिज्नी ने सिनेमा में जो प्रयोग किए उसका अन्त टेलीविजन विज्ञापन में हुआ है। भूतपूर्व प्रेसिडेंट हूवर 'कमर्शियलों' के विरोधी न थे। पर उन्हें भी ये प्रोग्राम असह्य लगे थे। और वे भी कह उठे थे कि "काश ! कोई ऐसा इन्तजाम होता कि किसी बटन के द्वारा श्रोता की प्रतिक्रिया भी ब्राडकास्ट कराने वालों को तत्काल सूचित कर दी जाती।

यद्यपि कुछ लोगों की इस सम्बन्ध में ऐसी प्रतिक्रिया है। पर यह भी सच है कि टेलीविजन ने अमेरिका में चीजों के विक्रय के क्षेत्र में क्रान्ति ही पैदा कर दी है। पहली बार आप किसी चीज के बारे में सुनते ही नहीं देखते और उसकी गंध भी लेते हैं। धुलाई की मशीन हो या रसोई घर का कोई सामान बीयर हो या मोटरगाड़ी या बेकिंग पाउडर, विज्ञापक अपने सपने साकार पाता है कि कम-से-कम इस टेकनिक से वह करोड़ों सम्भाव्य खरीदारों को अपनी चीज इतनी जल्दी दिखा तो सकता है।

रेडियो वाले व्यापारिकता का एक आवश्यक बुराई मानते हैं। कमर्शियल' को मनोरंजन के ऊपर बसने वाला माना जाता है पर सच यह है कि यह वास्तविकता का हस्तक्षेप है कमर्शियल का नहीं। लोग इसीलिए इसका विरोध करते हैं। जब कोई किसी मन-कल्पना के जगत् में बिना पूछे घुसता है तो उसका बुरा मानते ही हैं। कमर्शियल श्रोता को यह बताता है कि सारे मनोरंजन के स्रोत उसके हाथ में नहीं हैं उसको इसलिए कटु पाठ से भी पढ़ना पड़ेगा।

विज्ञापक के लिए 'कमर्शियल' कार्यक्रम का तिलिस्मा नहीं बल्कि कार्यक्रम कमर्शियल का तिलिस्मा है। इसीलिए वह 'कमर्शियल' के चुनाव पर खर्च करता है और उसके सजाने-सँवारने में अपनी सारी शक्ति लगा देता है। वह इस कार्य के लिए मेधावी युवकों को किराये पर लेता है जिन्होंने पैसा खर्च करके शिक्षा पाई है। ये सम्पूर्ण साहित्य दर्शन मनोविज्ञान और कला का मंथन विज्ञापन एजेंसी के लिए करते हैं। प्रोग्राम के बीच में अपनी सारी योग्यता से उसकी आत्मा की रक्षा करते हैं।

श्रोता श्रेष्ठ और परिवर्तनशील भी होता है। सभी कार्यक्रमों के लिए टेलीविजन-दर्शन बंधी नहीं है। हमेशा यह खतरा रहता है कि कहीं कोई दूसरा कार्यक्रम उन्हें फुसला न ले जाए। अमेरिकी संस्कृति में समय का बड़ा मूल्य है

पर टेलीविज़न में तो यह और भी महत्वपूर्ण है। अनुसंधायकों ने पता लगाया है कि यदि कोई अत्यन्त आकर्षक प्रोग्राम अन्यत्र न हो तो 60 प्रतिशत दर्शक टेलीविज़न पर अंत तक कोई प्रोग्राम देखते हैं। यदि उसके बाद कोई बड़ा प्रोग्राम होने वाला हो तो यह संख्या 80 प्रतिशत तक होती है। दूसरे चैनलों से दर्शकों को खींच लाने का भी प्रयत्न होता है। इसके लिए मनोवैज्ञानिक लड़ाइयाँ लड़ी जाती हैं। सबसे महत्वपूर्ण ये कुछ मिनट होते हैं जब टेलीविज़न-रेडियो कार्यक्रम का नया समय शुरू होता है।

नमूने की प्रथा में बार-बार (यद्यपि अत्यन्त अविश्वस्त रूप में) श्रोताओं की संख्या के घटने-बढ़ने का चार्ट बनाया जाता है। 'अनुसंधान-सर्वेक्षण' इसी से सम्बन्ध रखता है। इस सर्वेक्षण में श्रोताओं की रुचि का बड़ी बारीकी से अध्ययन किया जाता है। इसी के आधार पर भावी की रुचि की भविष्यवाणी की जाती है। इस व्यवस्था का अमेरिकी माध्यमों में वही स्थान है जो रोम साम्राज्य में ओरेकल के सहारे भविष्यवाणियाँ करने वाले पुजारियों का था। उनकी भविष्यवाणियाँ भी उसी मात्रा में सच निकलती हैं। फिर भी किसी प्रोग्राम के जीवन-मरण का फैसला ये ही विशेषज्ञ करते हैं।

जहाँ तक टेलीविज़न प्रोग्रामों का सम्बन्ध है उनकी भी वही स्थिति है जो अन्य बड़े माध्यमों की है। सिनेमा की भाँति यहाँ भी रुचि का चक्र चलता है। इसी के अनुसार प्रोग्रामों की ज़िन्दगी और मौत का निर्णय किया जाता है। कभी समय था कि वाद विवाद फोरम का रेडियो के प्रोग्रामों में अत्यन्त प्रमुख स्थान था। किन्तु बाद में वैसी स्थिति नहीं रही तब यह प्रोग्राम टेलीविज़न का अंग बन गया। वहाँ उसने पत्रकार सम्मेलन का नाटकीय रूप ले लिया। समाचार समीक्षक का टेलीविज़न से अधिक रेडियो पर गुण बढ़ता है। टेलीविज़न पर उसके चेहरे पर श्रोता की निगाह जमी रहती। जिससे न उसे अच्छा लगता है न श्रोता को। वहाँ उसे अपनी समीक्षा को चित्रों से सहारा देना पड़ता है। 'अब इसे देखिए' प्रोग्राम टेलीविज़न के समाचार समीक्षाओं में सबसे उत्तम है। इसमें किसी विषय पर चित्रों के सम्पादन से पूरी बात कही जाती है। इसी कार्यक्रम में एडवर्ड मरो ने मैकार्थीवाद" कैसे काम करता है का दिग्दर्शन कराया था जो टेलीविज़न के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण प्रोग्राम हो गया है।

क्विज़ प्रोग्राम[1] के रूप में विशेषज्ञों का जो मंडल रेडियो पर विकसित हुआ था वह बाद में टेलीविज़न पर खेलों में आया। यहाँ वे विज्ञापन व पहेलियाँ बुझाते हैं जिनके हल श्रोता पहले से ही जानते हैं। कुछ समय तक इस विचार की भी धूम रही कि श्रोताओं को भी कार्यक्रमों में शामिल किया जाय। दोनों

---

1 Quiz Programs

माध्यमों में जो सबसे सफल प्रोग्राम था वह 'पुरस्कार' वाला जिसमें तथ्य के (factual) प्रश्नों पर पुरस्कार दिया जाता था। एक बार मुई कांग ने इसी प्रोग्राम के अन्तर्गत 64,000 डालर का प्रश्न रखा। यह रकम तो सचमुच बड़ी थी। कुछ समय तक इसी की चर्चा रही। पर बाद में इससे भी बड़ी-बड़ी रकमों वाले प्रश्न रखे गए। हत्या की जासूसी और अपराधों की खोज वाले प्रोग्राम टेलीविजन से अधिक रेडियो पर सफल रहे। ऐसे प्रोग्रामों में कानों पर ही एकाग्रता रहती है इसलिए इसमें अनिश्चय की भावना अधिक गंभीर रहती है। बाद में सिनेमा की जासूसी कहानियों का स्थान टेलीविजन जासूसी कहानियों को मिल गया। सोप ऑपेरा नाटक दोनों माध्यमों पर अच्छे होते हैं। वैरायटी शो का प्रोग्राम टेलीविजन पर अधिक सफल हुआ। बच्चों के लिए टेलीविजन प्रोग्राम का एक भाग ही सुरक्षित हो गया है। इनमें प्राय: कल्पनालोक की सैर और आश्चर्यजनक के प्रोग्राम अधिक होते हैं। वयस्कों के प्रोग्रामों में इनका प्राय: अभाव ही है। इन्हीं प्रोग्रामों की शृंखला में वैज्ञानिक कहानियां भी आती हैं। इनमें काल्पनिक लोक का बड़ी सावधानी से और अत्यन्त वैज्ञानिक ढंग से चित्रण होता है। 'क्विज' या क प्रोग्राम दोनों माध्यमों पर सफलता प्राप्त करते हैं। इस प्रोग्राम ने टेलीविजन में सबसे अधिक कलाकार दिये हैं जिनका वास्तविक सम्मान होता है। क्लासिकल और सिम्फोनिक संगीत भाग भी रेडियो के सफल कार्यक्रमों में है। टेलीविजन ने सबसे अधिक सफलता वृत्त-चित्रों के क्षेत्र में पाई है। राजनीतिक बातों या मेलजोल वृत्त-चित्रों में ही नहीं बल्कि चिकित्सा विज्ञान और मानसिक रोगों की चिकित्सा पर भी टेलीविजन ने बड़े अच्छे अच्छे वृत्त-चित्र उपस्थित किये हैं।

कार्यक्रमों में परिवर्तन की आवश्यकता रहती है क्योंकि मांग बदलती रहती है, रुचियां और फैशन बदलते हैं और नित नये दाम चुमते रहते हैं। मैंने विस्तार से बतलाया है कि किस प्रकार रेडियो और टेलीविजन जन-संस्कृति में समन्वय करते हैं। विज्ञान राजनीति सिनेमा थियेटर नृत्य संगीत कोई सी वस्तु ऐसी है जो टेलीविजन के पर्दे पर नहीं दिखलाई जा सकती। प्रसारण की कला का क्षेत्र आश्चर्यजनक रूप से विस्तृत है।

दोनों ही माध्यमों में जीवन (vitality) गति (pace) चाल-ढाल और टेक्नीक के सम्बन्ध में बहुत समानता है। ये स्वयं में कोई विशिष्ट कलाएं नहीं हैं पर विभिन्न कलाओं का भाव प्रभाव उपस्थित करती हैं। थियेटर, नृत्य, चित्रकूट और समाचार-वृत्त वैरायटी या जासूसी बातें जो भी हों नये माध्यम में आने पर नई समस्याएं आती ही हैं और नये दबाव पैदा ही होते हैं। इनमें विशेषकर टेलीविजन में तात्कालिकता की भी आवश्यकता होती है। टेलीविजन की विशेषता है कि उसमें दर्शक यह अनुभव करता है कि उस क्षण में उसकी

आँखों के सामने कुछ हो रहा है। इन दोनों माध्यमों में सिनेमा की भाँति यह शक्ति नहीं कि दर्शक या श्रोता समय के व्यवधान को चीरकर पीछे पहुँच सकें। न तो वह चरित्र के मन का हाल ही जान पाता है। फिर भी टेलीविज़न को यह सुविधा तो है ही कि वह सभी कलाओं को एक स्थान पर ला देता है। यह सुविधा अन्य किसी माध्यम को नहीं है।

इसका अर्थ यह हुआ कि दोनों माध्यमों के स्वामियों को विशेषकर टेलीविज़न वालों को अपने श्रोताओं को सदा नई सामग्री प्रदान कर संतुष्ट रखना ही पड़ेगा। टेलीविज़न की भूख बड़ी गहरी है। प्रतिभा कल्पना शक्ति अधिक व्यक्तियों उसको अपने क्षेत्र में व्यस्त रखना ही पड़ेगा। किन्तु इससे कलात्मक सर्जन नहीं हो सकता। प्रसारण कलाओं में पुनरुत्पादन (re-production) की अद्भुत क्षमता है। यदि इसका सदुपयोग हो तो ये संस्कृति की रचनात्मकता का विस्तार अवश्य कर सकती हैं। ये श्रोता के उपवन तक पहुँच सकती हैं और उसे प्रभावित कर सकती हैं। इतनी सुविधा अन्य माध्यमों में किसी को नहीं।

1955 के आसपास लगभग सभी बड़े सिने स्टूडियो अपनी पुरानी फ़िल्मों के प्रिंट टेलीविज़न वालों को नहीं देते थे। पर बाद में वे रुपये के लोभ में फँसा ही पड़े। अब टेलीविज़न पर पहले की सभी अच्छी फ़िल्में देखी जा सकती हैं। उनका यह भय कि टेलीविज़न पर फ़िल्मों के प्रदर्शन होने पर लोग फ़िल्में देखना छोड़ देंगे गलत सिद्ध हुआ है। टेलीविज़न पर दिखलाई जाने वाली फ़िल्मों के स्तर में भी सुधार हुआ है। भविष्य में टेलीविज़न सिनेमा को हज़म कर जाएगा ऐसा अभी नहीं कहा जा सकता। ऐसा भी हो सकता है कि सिनेमा को अपने व्यापार में टेलीविज़न से नया लाभ पहुँचे। अब वह सिनेमा-घर से सामान्य घर तक पहुँच गया है। हो सकता है कि दोनों सम्भावनाओं में कुछ-कुछ सचाई हो। ऐसा हो सकता है कि टेलीविज़न सभी माध्यमों के समन्वय के रूप में भविष्य में सबसे शक्तिशाली माध्यम सिद्ध हो और सिनेमा सर्जक रूप में अपना स्थान बनाए रखे।

सिनेमा की भाँति टेलीविज़न पर भी बड़े नामों वाले सितारों की पूछ है। इन्हें काफ़ी लम्बी और ऊँची तनख़्वाहों के ठेके मिलते हैं। टेलीविज़न के लिए सितारे के व्यक्तित्व का मूल्य है। सच तो यह है कि इन्हें 'टेलीविज़न पर्सनेलिटी' कहते ही हैं। इस रूप में सिनेमा के किसी सितारे को 'फ़िल्म पर्सनेलिटी' नहीं कहते। कारण स्पष्ट है। टेलीविज़न के सितारे घर घर में घुस चुके हैं। इनके रूप में एक नये प्रकार के नायक का निर्माण हो गया है।

1 creature not too strange or good
For human nature's daily food

यह कलाकार और उसके दर्शक के बीच एक नये प्रकार के समन्वय का
प्रतीक है बावजूद इसके कि य अभिनता बहुत कुछ कूड़ा-कचरा ही पेश करते हैं
यह समन्वय है, यह उनके छूतहे व्यक्तित्व[1] का प्रभाव है। इस प्रकार बड़े नाम
माल बेचने में विज्ञापक की सहायता ही नहीं करते बल्कि टेलीविजन पर
व्यापारिता के आक्रमण से श्रोताओं को जो मानसिक कष्ट भुगतना पड़ता है उसे
भी कुछ हद तक कम कर देते हैं।

इससे कलाकार और श्रोताओं के बीच सम्बन्ध में हास्य की महत्ता पर
प्रकाश पड़ता है। यद्यपि सिनमा में सुखान्तकियों (चैपलिन सिरीज को छोड़
कर) कम ही हुई हैं टेलीविजन तो कॉमेडियनों के बिना प्राय मर ही जाएगा।
इनमें कुछ वॉडेविले स्टेज से कुछ रात्रि-क्लबों से कुछ रेडियो से टेलीविजन में
आये हैं। जब वे टेलीविजन में पहुंच जाते हैं वे महत्त्वपूर्ण सम्पत्ति बन जाते हैं।
उन्हें अपने अनुकूल मसाला तैयार कराने के स्क्रिप्ट लेखकों का प्राय दल ही
मिल जाता है। दूसरे 'शो में श्रोता न थका जाए इसलिए उनके चारों ओर
सुन्दरियों का जमावड़ा लगा रहता है। जब श्राता ऊबने लगते हैं तो एक प्रकार
से कॉमेडियनों की सफाई ही करा दी जाती है जिसमें उन्हें अपने मजाक को
चमकाने का अवसर मिलता है। कॉमेडियन की सफलता इस बात में है कि
श्रोता सदा हँसता रहे। यह हँसी अमेरिकी नैतिकता का एक अंग बन चुकी है।
कॉमिडी की माँग के लिए कई खुलासे दिय जाते हैं। एक खुलासा यह दिया
गया है कि प्रसारण में पतलीस कहानियों को स्थान नहीं मिलता इसलिए हँसी
भावनात्मक मुक्ति का एक रूप बन जाती है। किन्तु इसके जो दूसरे खुलासे
दिये गए हैं उनमें कुछ सार प्रतीत हाता है। भावनात्मक स्तर पर एकाकी
अमेरिकी यह सोचता है कि अपनी दुश्चिन्ताओं से मुक्ति के लिए टेलीविजन का
हास्य एक अच्छी दवा है। सामाजिक स्तर पर बात यह है कि यहाँ दर्शक भीड़
का एक अंग नहीं। वह अपने परिवार के साथ बैठा है। इस परिवार या मित्र
वर्ग को एकसूत्रता में बांधने के लिए हँसी एक अच्छा तरीका है। इससे उनके
सम्बन्धों में खुलाव आता है। अंत में व्यावहारिक स्तर पर देखें तो विज्ञापक
की दृष्टि यह है कि जो माल वह बेचना चाहता है उसे आनन्ददायक वातावरण
में अपने भावी ग्राहक के सामने रखे। इसलिए टेलीविजन कॉमिडी की कला है
क्योंकि यह सामाजिक और विज्ञापन की कला है।

इसी दृष्टि से यदि प्रतिमा साहस और नैतिकता के मानदंड भी बनाएँ
तो लाभदायक होगा। संभाव्यता और वास्तविकता में कितनी दूरी है इसे सी डी
जारेस्ट ने नेशनल एसोसिएशन ऑफ ब्राडकास्टर्स को लिखे एक पत्र में प्रकट

---

1 Infectious personalities.

किया था। फ़ॉरेस्ट आडियन ट्यूब[1] का आविष्कारक है। आविष्कार की 40वीं वर्षगाँठ पर उसने लिखा था 'सज्जनो मैं आपसे पूछूँ कि आपने मेरे बच्चे का क्या किया? मैंने कल्पना की थी कि वह संस्कृति और सुसंगीत का वाहक होगा। वह अमेरिकी सामूहिक बुद्धि को ऊँचा उठायेगा। आप लोगों ने इस बच्चे को ख़राब कर दिया। आपने उसे सड़कों पर भेज दिया पैसा कमाने के लिए। उसे आज देखकर बुद्धिमान हँसते हैं।" जॉन क्रॉसबी प्रसारण के बद दोषों के सम्बन्ध में लिखता है कि "रेडियो ने अपनी आत्मा विज्ञापकों के हाथ बेच दी है। इसे आज घटिया रुचि की चिन्ता अधिक है। ऊँची रुचि की तो परवाह नहीं। वह लोभी और कायर है। यह अमेरिका की अपमानजनक तसवीर प्रस्तुत करता है।" बहुत-से लक्षण ऐसे हैं जिनसे यही मालूम पड़ता है कि टेलीविज़न भी उसी रास्ते पर चल रहा है।

प्रसारण में 'हिंसा' का किस रूप में उपयोग होता है वह इन आरोपों को स्पष्ट कर देगा। प्रति सप्ताह लगभग 80 कार्यक्रम रोमांच और जासूसी के प्रसारित होते हैं। एक ही रात में 2 करोड़ घरों में एक दर्जन मृत्युओं का नाटक हुआ। 'टाइम' के शब्दों में "ये मृत्युएँ छुरेबाज़ी ज़हर गोली मारने धक्का देने या खिड़कियों से बाहर फेंक देने और आत्महत्या से हुईं।"

बच्चों पर टेलीविज़न का क्या प्रभाव पड़ता है पूछने की आवश्यकता नहीं। 1950 में सप्ताह में 27 घंटे वह टेलीविज़न को देता था अर्थात् उतना ही समय जो वह अपनी कक्षा में ख़र्च करता है। यह शिकागो जूनियर हाई स्कूल के विद्यार्थी का है। 7 से 17 वर्ष के बच्चे औसतन 3 घण्टा समय प्रतिदिन टेलीविज़न को देते हैं। 5 से 6 वर्ष की उम्र के बच्चों में 6 में 1 ही ऐसा था जो नियमित रूप से टेलीविज़न नहीं देखता था। ये बच्चे कठपुतली या सर्कस के तमाशे या अन्तरित प्रोग्राम ही नहीं देखते बल्कि रात में वयस्कों के प्रोग्राम—हत्या डकैती मार-पीट गुण्डागिरी और अपहरण के काण्ड भी देखते हैं। इससे अध्यापकों और बच्चों के माँ-बापों की चिन्ता स्वाभाविक है। वे दुविधा में पड़ गए हैं। बच्चों को संस्कृति के इस महत्त्वपूर्ण माध्यम से दूर रखना भी ठीक नहीं फिर उन्हें इसकी सुविधा देने से उनके मन पर स्थायी असर पड़ने का भी ख़तरा है। आख़िर वे क्या करें?

चाहे अच्छे के लिए हो या बुरे के लिए टेलीविज़न अमेरिकी बच्चों के मन का निर्णायक बन चुका है। उनके मन में 'वयस्क' लोगों के सभी तत्त्व—सेक्स [illegible] भयानकता बेवफ़ाइयाँ सब भर रही हैं। कई लड़कों का इन्होंने चरित्र भी बनाया है। इसका सबसे बड़ा लाभ यह है कि बालक के कानून और

---

1 Audion Tabe

कल्पनात्मक अनुभव का विकास तेजी से होता है। इतनी तेजी से इतिहास में कभी नहीं हुआ। टेलीविजन में सबसे बड़ा दोष यह है कि इससे बच्चों का मन दुश्चिंता के गहरे भार से दब जाता और अंत में वह चेतनाहीन होने लगता है। किन्तु जो लोग यह सोचते हैं कि टेलीविजन तो बच्चों को छोटा-मोटा राक्षस ही बना देता है वे भी अपनी दुश्चिंताओं के साथ बुद्धि की पराजय ही स्वीकार कर लेते हैं। सदियों से बच्चे कुछ डरावनी परियों की कहानियाँ ही पढ़ते आ रहे थे। टेलीविजन ने हिंसक संसार की कथाएँ उनमें जोड़ दी हैं। अमरीकी पीढ़ी जो कॉमिकी पुस्तकों को पढ़ती आ रही है इस भी पार कर जाएगी। बच्चे भी वयस्कों की भाँति इनके माध्यम से बाहरी संसार का कलरव और उसकी गड़बड़ियों का स्वप्न पाते हैं। बच्चे शब्दों के माध्यम से ही नहीं चित्रों के द्वारा इसे ही देखते हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने कहा है कि अमेरिकी अपने बच्चों पर बड़ा कड़ा नियंत्रण रखते हैं। टेलीविजन वैसी परिस्थिति में हताशा और आक्रमण के विरुद्ध सुरक्षा-वाल्व का काम करेगा। कुछ ऐसे बालकों के मनोविज्ञान का अध्ययन किया गया जिनके माँ बापों ने उनके टेलीविजन देखने पर रोक लगा दी थी पाया गया कि ऐसे बालक इस प्रतिबंध से और भी चिंतित मिले।

बच्चों या बूढ़ों को प्रसारण कला से क्या सांस्कृतिक प्राप्ति हो रही है? इस सम्बन्ध में बहस आसानी से समाप्त न होगी। टेलीविजन के एक स्तम्भ लेखक हेरियेटवान हार्न ने रोना रोया है कि 'जनता की साक्षरता घट रही है क्यों क्यों पढ़ने और सोचने की पुरानी आदतें कम होती जा रही हैं टेलीविजन देखने में साथ समय अधिक देने लगे हैं। 21वीं सदी तक हमारे लोग निस्संदेह एंचे[1] गूंगे होंगे और वे अंधकार अधिक पसंद करने लगेंगे। बातचीत की कला समाप्त हो जाएगी। लोग केवल हँसी-ठट्ठ की ही बातें करेंगे। यह भी सम्भव है कि टेलीविजन-युग का पोता इसे पढ़ना भी न जान सकेगा।" बात बन्दे कम से कही गई है पर निराशाजनक है। प्रत्येक माध्यम का इतिहास है कि प्रारम्भ में उसका आश्चर्य पैदा करने वाले माध्यम के रूप में स्वागत किया गया है साथ ही उसे प्राचीन मूल्यों को नष्ट करने वाला भी कहा गया है। पर उनमें न तो मुक्ति ही मिली है न प्रलय हो पाया है। इसलिए देखना यह चाहिए कि नये माध्यमों का उपयोग उनके स्वामी और श्रोता किस रूप में करते हैं। समाज के स्वरूप और सांस्कृतिक वातावरण का भी महत्व है। हैरॉल्ड इनिस ने दिखलाया है कि प्रत्येक प्रसारण की टेक्नीक में क्रान्ति ने समाज और संस्कृति में क्रान्ति पैदा की है। इसलिए यह आविष्कार भी समाज में क्रान्ति पैदा करेगा।

---

1 Squint-eyed

सामाजिक अधिकार के क्षेत्र में पर्याप्त परिवर्तन हुआ है। जो लोग इन चित्रों के स्वामी हैं या समाज के मन और घरों में प्रवेश कर रहे हैं वे उनके मनों पर अप्रत्यक्षरूप में नियंत्रण करेंगे ही। इसलिए प्रश्न यह है कि इस शक्ति का संघटन कैसे किया जाए ?

रेडियो के निजी या सरकारी नियंत्रण का प्रश्न नहीं है। बड़े माध्यमों पर निजी स्वामित्व तो अमेरिका में स्थापित हो चुका है। अब उसके विघटन की सम्भावना नहीं है। ब्रिटेन ब्रॉडकास्टिंग का नियंत्रण एक सरकारी कारपोरेशन के हाथ है। वहाँ स्तर और रुचि की दृष्टि से इसका फल अच्छा हुआ है। किन्तु इस प्रथा के अन्दर सभी दृष्टिकोणों के प्रचार का पूरा अवसर नहीं मिलता इस बात का अनुभव किया गया है। इसमें सन्देह है कि अमेरिकी सरकार इतनी परिपक्व है कि ऐसे नियंत्रण का दुरुपयोग होने से रोक सके। 1954-55 के आसपास ब्रिटेन में भी टेलीविजन पर 'कमर्शियल' प्रभाव पड़ा। तक यह दिया गया है कि इस प्रकार की व्यवस्था में श्रोताओं को अच्छे और बुरे कार्यक्रमों में चुनाव के लिए काफी अवसर रहता है। फिर भी आज ब्रिटेन में जो इन्तज़ाम है वह कम-से-कम एक दृष्टि से अमरिकी इन्तज़ाम से अच्छा है। ब्रिटेन में बड़े पूँजीपतियों या विज्ञापकों के बीच मुकाबला नहीं है वहाँ सरकार और कमर्शियल सर्विस के बीच मुकाबिला है।

इस व्यवस्था की सबसे बड़ी त्रुटि है कि इसमें लोग ने इतना मान कर लिया है कि जनता की रुचि के स्तर का कोई विचार ही नहीं करता। रेमण्ड विलियम्स ने बड़े परिश्रम से इसकी आन्तरिक व्यवस्था का अध्ययन किया है। आपका मत है कि "रेडियो जनता की हित-सेवा में असफल है क्योंकि रेडियो पर विज्ञापकों का प्रभाव है। इस प्रभाव का फल यह है कि रेडियो या टेलीविजन पर प्रोग्राम के चुनाव में जनता का हाथ एक सिद्धान्त मात्र रह जाता है। वास्तविकता कुछ और है।" इस प्रकार उस सिद्धान्त को चुनौती मिलती है जिसमें कहा जाता है कि विज्ञापक नियमन श्रोता-जनवाद का ही प्रतिनिधि है। इस बचाव की दलील में कमजोरी यह है कि श्रोता को जो उपलब्ध है उसी में चुनाव का अधिकार मिलता है और इस उपलब्धि का फैसला विज्ञापक करता है। सिनेटर बेंटन ने सुझाव दिया था कि नागरिकों की एक समिति प्रतिवर्ष यह देखा करे कि रेडियो और टेलीविजन ने इस काम में जनता की क्या सेवा की ? किन्तु यह सुझाव अभी भी अमल में नहीं लाया जा सकता। डॉ० स्टैंटन ने सुझाव दिया था कि टेलीविजन के बारे में अमेरिकियों के प्रश्न उनके उत्तर और उनकी मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करने का प्रबन्ध किया जाए। एक तीसरा सुझाव भी था कि टेलीविजन के एक ऐसे चैनेल का विधान किया जाए जिसमें विज्ञापन हों ही नहीं। पर इस पर भी कुछ न किया जा सका। फोर्ड फाउन्डेशन की सहायता

से 'आम्निबस'[1] जैसे प्रोग्राम बनाये गए थे। इससे यह प्रकट हुआ कि व्यापारिक प्रोग्राम और विज्ञापकों के प्रोग्रामों में सांस्कृतिक अन्तर तो कम नहीं पर कल्पना का प्रभाव अवश्य है। ऐसा कुछ किया जाना चाहिए जिससे नये प्रोग्रामों के लोकप्रिय होने तक उन्हें मदद दी जाए, अव्यापारिक चैनल भी बनाये जाएँ, 'जन-सेवा के प्रोग्रामों' की नीति का कड़ाई से पालन कराया जाए, टैकनिशयनों और आम लोगों की सलाहकार परिषदें बनाई जाएँ जो समय-समय पर प्रोग्रामों के मूल्यांकन के द्वारा सलाह दिया करें तो कुछ हो सकता है।

यह एक दूसरा तरीका है यह कहने का कि यह मुख्य समस्या तो परिपक्वता की है। टैलीविजन का अमरीकी समाज के लिए जो महत्त्व है वही महत्त्व अमेरिकी समाज का टैलीविजन के लिए है। बच्चों के लिए टैलीविजन क्या करता है यह उतना ही गम्भीर प्रश्न है जितना कि बच्चे टैलीविजन के लिए क्या करते हैं। ऐसी बात नहीं कि प्रोग्राम उन्हें पकड़ने के लिए ही बनाये जाते हैं। बल्कि उनका निर्माण इस रूप में किया जाता है कि वे उन्हें रुचें। चूँकि रेडियो या टेलीविजन का आनन्द मुफ्त में अपनी जगह से बिना हिले लिया जाता है इसलिए श्रोताओं की संख्या बड़ी होती है। पर वह प्रवाहमान भी है। इसलिए टैलीविजन वालों के लिए बिल्कुल की बात भी है। श्रोता को बच्चे की तरह फुसलाना पड़ता है। बच्चों की तरह उनकी तन्मयता भी तो क्षणिक होती है। उसकी रुचि बदलती रहती है और वह घूमता-फिरता रहता है। सम्भवतः रेडियो और टैलीविजन के प्रशिक्षित मस्तिष्क और उनकी शक्ति इस बात की खोज में लगे रहते हैं कि कौन-सी वस्तु उपस्थित की जाए जो लोगों को मोह ले। वे लोग इसीलिए मन्द चौकन्ने और तनाव की स्थिति में रहते हैं। फिर ठामपन या भावनात्मक गहराई के लिए क्या गुंजाइश हो सकती है?

इस प्रकार श्रोता चुनाव के आधार पर इस प्रथा का बचाव करना एक नये और अपूर्ण बैंथामाइट कलन[2] की सृष्टि करना है। अधिक-से-अधिक लोगों को अधिक-से-अधिक आनन्द की नापतोल करने में बैंथम के प्रयत्न में कम से कम कष्ट और आनन्द की ओर ध्यान दिया था। टैलीविजन के कलन सिद्धान्त में कष्ट और आनन्द को अलग-अलग नापने का कोई मानदण्ड ही नहीं है। हाँ इसका यह अर्थ जरूर हो सकता है कि आनन्द की मात्रा कष्ट से अधिक होगी। नहीं तो कोई रेडियो या टैलीविजन क्यों खरीदता और फिर उसे सुनता। इस श्रोताचयनीयता मानदण्ड को स्वीकार करने का अर्थ है अन्य सभी मानदण्डों को तिलांजलि दे देना। यह तो ऐसा ही है जैसे किताबों के विषय में

1 Omnibus.

2. Benthamite calculus.

बहुमत की संख्या का कहना मान लिया जाए अर्थात् घटिया किस्म की पर अधिक बिकने वाली और कामिक पुस्तकों के सिर पर विजय का सेहरा बाँध दिया जाय। किताबों के संसार में कई प्रकार की रुचियाँ बरताती हैं। जब तक रेडियो और टेलीविजन में भी इस प्रकार के चुनावों का इन्तजाम नहीं हो जाता जिसमें श्रोताओं के विभिन्न स्तरों के लिए अपनी रुचि की सामग्री मिल सके कोई महत्त्वपूर्ण स्तर एकदम न छूट जाए, तब तक तो श्रोताओं के चुनाव के जन तन्त्र का कोई मतलब नहीं है।

इसलिए प्रश्न यह नहीं कि टेलीविजन का सांस्कृतिक स्तर पर क्या प्रभाव पड़ा है बल्कि प्रश्न बाकी रहता है कि टेलीविजन का सामाजिक स्तर पर क्या प्रभाव पड़ता है? अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि टेलीविजन गरीबों की 'सवारी' है क्योंकि यह उनकी मनोवैज्ञानिक आवश्यकता बन गया है। यद्यपि मध्य आय वालों में टेलीविजन सब जगह फैला है पर अल्प आय वालों में उनकी संख्या और क्रय क्षमता को ध्यान में रखकर देखें तो अनुपात से कहीं अधिक टेलीविजन मिलेंगे। यदि आप शहरों का एक भी चक्कर लगायें तो पाएँगे कि ऐसी बस्तियों में जहाँ के लोगों का आर्थिक और मानसिक स्तर नीचा है वहाँ टेलीविजन का अधिक प्रचार है। यही बात आप को हार्लेम और फिलाडेल्फिया की नीग्रो बस्तियों में मिलेगी डेट्रायट और शिकागो में भी तथा उन सब जगहों में जहाँ लोग गंदी 'खोली' में रहते हैं। मध्य आय के गृह निर्माण की व्यवस्था में मकान के साथ-साथ टेलीविजन का भी प्रबन्ध होता है। यहाँ वह घरों में टेलीफोन और रेफ्रिजरेटर के साथ ही आता है। जो लोग दिनों के समय कारखानों या दफ्तरों में बन्द रहते हैं या जो औरतें दिन में घर में रह जाती हैं उनको फुरसत का समय टेलीविजन देखने में ही गुजरता है।

जो लोग किसी भेदभाव की नीति के कारण अनेक प्रकार के अनुभवों से वंचित रह जाते हैं उनके लिए टेलीविजन एक प्रकार का नया अनुभव देता है। एक हब्शी के लिए तो टेलीविजन का सबसे बड़ा महत्त्व यही है कि जिम को जब टेलीविजन देखता है तो उसे पुलिस की तरह कोई ध्यान से नहीं देखता न पूछता ही है। जो कुछ उसे बाहरी संसार में नहीं मिलता वह टेलीविजन पर उसे पा लेता है। यहाँ तो वह किसी से छोटा होने की भावना का अनुभव नहीं करता। दूसरी बात और है विज्ञापक की दृष्टि में सभी श्रोता बराबर हैं क्योंकि वे सभी उसके संभाव्य खरीदार हैं।

यदि कोई यह कहे कि टेलीविजन का दर्शक निष्क्रिय रहता है तो यह बात तो सिनेमा या रेडियो पर भी लागू है। टेलीविजन निष्क्रिय को सक्रिय तो नहीं बना सकता पर वह सभी जमातों को एक स्थान पर जुटा देता है। यह कार्य वह इतनी तत्परता से करने लगा है कि समाज के नायक अब यह सोचने

सके हैं कि दर्शक टेलीविज़न पर खेलों को कितनी अच्छी तरह देख सकता है उतना वह खेल के मैदान से नहीं इसलिए इनके रेडियो और टेलीविज़न पर प्रसारण के अधिकार अब अधिक महत्व की वस्तु बन गए हैं।

जनतन्त्र के भावनात्मक ऐक्य पर इसका बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ेगा। अपनी आन्तरिक समस्याएँ होते हुए भी सामाजिक विशेषाधिकार के क्षेत्र में टेलीविज़न महत्वपूर्ण कार्य कर सकेगा। यह आर्थिक दूरियों को कम न कर सकेगा या पार्थक्य की दीवार भी रातोंरात न तोड़ पाएगा पर यह 'होने' का एक सामान्य भाव तो सब में समान रूप से भर ही सकता है।

## 7 अमेरिकी इडियम के रूप में जाज़

किसी जाति के संगीत नृत्य और गीत से उसकी सांस्कृतिक शैली का ज्ञान अच्छी प्रकार से हो जाता है। अमेरिकी राष्ट्रीय संगीत की शैली का सम्बन्ध 'आर्गन' से अधिक टाम-टाम (नगाड़ा) से रहता है। यह चर्च संगीत या सिम्फ़नी या सोनेटा या मद्रिगल्स या मॉरिस नृत्य की शैली नहीं है। न ओपेरा या वैसे ही है। प्रभावशाली अमेरिकी संगीत शैलियाँ हैं 'ब्लूज़' 'स्विंग' और 'जाज़'।

संगीत की अभिव्यक्ति के लिए प्रत्येक सभ्यता का अपना बाजा होता है। अमेरिकी बाजे हैं—'ब्रास' और 'परकशन' 'ट्रम्पेट' और 'सेक्सोफ़ोन' जो करुणा और विजय दोनों की समान रूप से अभिव्यक्ति कर सकते हैं, 'ड्रम' और पियानो। इन चारों बाजों में एक युवा-नारी का स्वर और जोड़ दीजिए फिर आपको अमेरिकी संगीत की मौलिक इकाई मिल जाएगी। इसी इकाई के आस पास सब आते हैं जो अमेरिकी संगीत जीवन से सम्बद्ध हैं जैसे 'नेम बैंड' नाइट क्लब ब्लूज़ सिंगर, डांस रेकर्ड, डिस्क जोकी टिनपैन ऐली डांस हाल कान्वेन्शन म्यूज़िकल कमिटी ब्यूरो, जूकबाक्स युवक संगीत प्रेमियों के बॉबी सोक्स क्लब आदि-आदि।

अमेरिकी पापुलर-कलाओं में ही संगीत में सबसे अधिक उदासी और ढीली शिथिलता और का आघात व्यक्त होता है। एक ऐसी संस्कृति में जो गमगीनी और निराशा को मनोवेग के विरुद्ध अपराध-जैसा देखती हो उसके गीतों में मातम और अप्रसन्नता दोनों की साथ-साथ अभिव्यक्ति आश्चर्यपूर्ण लगेगी। गीत और बेगार आधुनिक 'जाज़' के स्रोत हैं। किन्तु अमेरिकी लोक के इतिहास में लोक-अनुभव की अभिव्यक्ति के लिए इसका बड़ा महत्व है। इसमें राष्ट्र के निर्माण का प्रत्येक चरण व्यक्त हुआ है। प्रमाणमीत मजदूरों और सड़कें बनाने वालों के गीत, रुई चुनने के गीत (Oh, de boll weevil am a little brown bug) पहरियों के गीत बदमाश सीमान्तरों के गीत

> Roll me over easy roll me over slow
> Roll me over on my right side cause my
> left side hurts me so

इस क गीत, बगामा के गीत, पहाड़ियों के गीत, आध्यात्मिक और पापियों के गीत

> When dey let my baby down in de groun
> I couldn t hear nuffin but de coffin soun ..

> Sometimes I so up sometimes I so down
> Sometimes I so almos to de groun
> No body knows the trouble I ve seen
> No body knows but Jesus.

ये सब गीत इस दृष्टि से बड़े महत्त्व के हैं। विशेषकर मजदूरों और सीमान्तिक बैलाडों में कुछ अतिशयोक्ति भी है पर एक गहरी उदासी भी है। जहाँ भी नीग्रो प्रभाव अमेरिकी गीतों पर पड़ा है वहाँ यह उदासी आ ही गई है। मजदूरों के गीतों का उद्देश्य काम की थकान को हल्का बनाना होता है। एलान लोमैक्स ने इसे 'आध्यात्मिक स्फूर्ति'[1] की संज्ञा दी है। इसकी जड़ें पश्चिम अफ्रीका में मिल सकती हैं किन्तु इसका विकास तो अमेरिकी बागानों में ही हुआ है। इसमें आवाहन और उत्तर की शैली भी वही है जो नीग्रो आध्यात्मिकों की थी। मजदूरों का मुखिया इसमें आवाहन के रूप में पंक्ति गाता है और समवेत स्वर में उसका मजदूर उत्तर देते हैं। कई बागानों से ही यह रेल की सड़कों में गया (I ve been working on the rail roads) और दूसरा चरण दक्षिण में पहुँचा जहाँ अभी तक बेगार प्रथा जारी है और मशीनों का बोलबाला नहीं पहुँचा है।

उदासी की लय की सबसे गहरी अभिव्यक्ति 'ब्लूज़' से हुई है जिसका जन्म दक्षिण के नगरों में हब्शियों के घरों में हुआ है। ये गीत अमेरिका में अकेले दासों की उदासी से भीगे हुए हैं। इनमें उस व्यक्ति का दरद है जिसके पास फूटी कौड़ी नहीं और जिसकी प्रेयसी भी उससे छिन चुकी है। इन गीतों में करुण रुदन ही नहीं एक अपरिहत उदासी भी है जो पीड़ [illegible] भी मानती है। पहले के गीतों और बैलाडों की सभी कमी अबी में एक नई लय बज रही है। इसमें अमेरिकी संगीत की संस्कृति का रूप देने की शक्ति थी। इसी लय में भावनात्मक सदनें थी और [illegible] गीत भी। डब्ल्यू० सी० हैंडी की प्रतिभा और बेसी स्मिथ, मा रेनी, जिम्मी रशिंग, डाइना वाशिंगटन, जिम्मी हीनी ह के गानों ने इस धुन को ऊँचाई पर पहुँचा दिया। यद्यपि यह लय आज भी लोकप्रिय है—

---

1. Spiritual speed up

विशेषकर नीग्रो गायक वर्गों में—इसमें एक प्रकार की निष्क्रियता का भाव है। जाज़ में इसकी रचनात्मक लय से भी और इसका स्थान भी।

स्पूल से ही सबद 'स्प्रिचुअल' (आध्यात्मिक गीत) है। अमेरिकी नीग्रो के धार्मिक संगीत का यही सबसे सामान्य नाम है। इसका जन्म 19वीं सदी में हुआ किन्तु गोरों को मुद्दतों तक इसका पता न था। कभी यह धार्मिक गीत का रूप ले लेता है कभी 'जुबिली'[1] का और कभी आदर पूर्ण दीर्घ आलाप का जैसे (Go Down Moses और Swing Low Sweet Chariot) कुछ हद तक स्प्रिचुअल का उदय 'चर्च हाइम' से होता है जिसका संदर्भ तो यूरोपीय होता है पर वातावरण नीग्रो जन का। कुछ अर्थों तक इसका उदय अफ्रीकी संगीत परम्परा में भी है। जब अफ्रीकी दास आए तो यहाँ 'फोक हाइम' का प्रचलन था। यह 'फोक हाइम' ब्रिटेन से न्यू इंग्लैंड और न्यू इंग्लैंड से यहाँ आया था। नीग्रो धार्मिक जीवन ने इसमें 'प्रेज़ मीटिंग' और 'रिवाइवल मीटिंग' मिला दी। दोनों में 'ताल सबल' और रिंग शाउट का भी उपयोग किया गया। मार्चिंग स्ट्रीम्स ने 'जुबली' में इसका विकास चरम निकाला है (When the Saints Go Marching In)। हम इसके विकास के चाहे जितने अन्य स्रोत निकालें पर यह न भूलना होगा कि 'स्प्रिचुअल' का 'जाज़' से घनिष्ठ सम्बन्ध है। आज भी जाज़ धार्मिक स्प्रिचुअलों से भावनात्मक प्रेरणा ग्रहण करता है।

'ब्लूज़' और 'टार्चसिंगर' के गीत भी इसी वर्ग के हैं पर इनका रूप कुछ इनसे भिन्न है। इनमें जो भाव होते हैं वे कुछ निम्न श्रेणी के होते हैं। जिनमें अतीत प्रेम व घावों पर अधिक होती है। ये प्रायः किशोरों को अधिक प्रिय हैं। इनमें अकेलेपन की छटपटाहट है ("All alone on the telephone") और अपनी अयोग्यता की स्वीकृति है ("And when I tell them how wonderful you are They'll never believe me") और है अपने पर दया का भाव ("I'm nobody's baby" "I'm always chasing rainbows") ऐसे ही गीतों और सभी चीज़ों बेतुके गीतों ("Yes we have no Bananas." "Barney Google" "Mairzy Doats") अपर्याप्तता के गीतों और प्रेम गीतों अश्लील गीतों काम-भावनाओं के गीतों को मिलाकर तो गीतों के रेकर्डों का एक पूरा उद्योग ही खड़ा हो गया है। सम्पूर्ण अमरीकनों का मन के भाग में मतों इन रेकर्डों की घूम मची रहती है। इन गीतों की लय मधुर युवकों का हृदय इससे व्याप्त होती है। ये गीत उनके लिए वही महत्त्व रखते हैं जो महत्त्व बर्न्स और टेनिसन के काव्यों के बीच मध्यवर्गीय युवकों के लिए निश्चित होता था। सच तो यह है कि अधिकांश अमेरिकियों का कविता से जो परिचय है

---

1 Jubilee

यह इन्हीं गीतों के द्वारा है। इससे अमेरिकी रुचि पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

अमेरिकियों के लिए बीसे में 'रैगटाइम' और 'हॉट जॉज़' तीस में 'स्विंग' चालीस में 'बूम जॉज़' और पचासे में 'रॉक एन रोल' का अधिक महत्त्व था। इनमें लय और आलाप अधीने अविकसित रचना और टीम के भाव की प्राय स्पष्टता होती है। इनमें एक सुनियमित डायोनेसियन उत्तेजना और बारीक शोषित पाशविकतापन होता है। स्थानीय संगीतकारों की छोटी टुकड़ियों से उत्पन्न होकर यह इंडियन नाइट क्लबों संगीत गोष्ठियों टैलीविज़न रेडियो और नृत्य के रेकॉर्डों के माध्यम से जनता में फैला और अमेरिकी संगीत की लोक-भाषा बन गया। यद्यपि इसके रचयिताओं को पुरस्कार तो कम ही मिले और उनमें बहुत-से आजीवन दरिद्र ही रह गए परन्तु उनकी रचना साहित्य की भाषा से भी अधिक जन प्रिय हो गई।

जॉज़ की उत्पत्ति न्यू ऑर्लीन्स सेंट लुई शिकागो के नीग्रो के तबके के संगीतकारों में हुई है जहाँ इन्हें पृथक रहने का तो बाध्य थे पर वे बाहरी प्रभावों से पृथक रह भी न सके थे। उन पर संसार भर की संगीत परम्पराओं का प्रभाव पड़ चुका था। 'जॉज़' की उत्पत्ति अफ्रीकी ही नहीं है। इसमें अमेरिका यूरोप की लैटिन-संस्कृति और कैरिबियन संस्कृतियों का भी प्रभाव है। ऐलन लोमैक्स ने कहा है कि "न्यू ऑर्लीन्स सदियों से आइबेरियन अफ्रीकी अमूर्त पेरिसियन मार्टिनी बर्बुरियन और अमेरिकी संगीत से तत्त्व ग्रहण करता रहा है।" फलस्वरूप यहाँ संगीत का एक अजीब गड़बड़झाला रूप बना है। यद्यपि यह बात सत्य है पर यह भी सत्य है कि इस मिश्रित संगीत में प्रधान स्वर नगर हब्शियों विशेषकर न्यू ऑर्लीन्स के हब्शियों का ही रहा है। सेंटलुई और सेडेलिया के हब्शियों में सिन्कोपेटेड[1] (कुछ प्रकार निकालकर ताल छोटा करना) रैगटाइम का विकास हुआ था। इसके मुख्य तत्त्व रैगटाइम को इन हब्शियों ने 'बीटो' के हार्मनी सैड जॉज़ में बदल लिया। फिर उसमें न्यू ऑर्लीन्स की सड़कों पर आने वाले बाजे बजाने वाले बैंड की धुन शामिल कर दी। इस शताब्दी के पहले दो दशकों में रैगटाइम सिखाया पर बजाया रहा। जब बास और ड्रम के साज इसमें शामिल हो गए तो यही धीमे से जॉज़ हो गया।

जिस प्रकार कुछ वर्ष दशकों में मिसीसिपी डेल्टा के बकसापरों और बनावों जैसी अप्रत्याशित जगह में संगीत की इतनी अच्छी फसल उग आई यह एक सांस्कृतिक रहस्य ही है जिसका पता अभी तक नहीं लग पाया है। बूढ़ी बोल्डेन जेलीरोल मार्टिन लुई आर्मस्ट्रांग जैसे संगीतकारों के हाथों एक ऐसे संगीत का निर्माण हो गया जिसकी तुलना में अब तक कुछ भी नहीं बन पाया

---

1 Syncopated ragtime

है। यह संगीत अमेरिकी जीवन का एक अंग बन गया है। गोल्फ कोस्ट से यह संगीत उत्तर की ओर सेंटलुई और शिकागो और पूरब की ओर न्यूयार्क और दूसरे बड़े नगरों में फैल गया। यहाँ इसके चरम में परिवर्तन भी हुआ। ये गरीब गायक अब बड़े नाम बन गए। इनके रेकार्ड धड़ल्ले से बिकने लगे। एक नई आर्थिक शक्ति पैदा हो गई जिसने संगीत को राष्ट्र-भर में विक्रय की वस्तु बना दिया। अब यह असभ्य संगीत मुक्तिदाता बन गया। 'हाट जाज' 'कूल जाज' बन गया।

संक्षेप में यह अमेरिका में जाज की आधी सदी का इतिहास है। किन्तु इसमें यह नहीं बतलाया जा सकता है कि अमेरिका में कितनी गहरी प्रतिद्वन्द्विता संगीत की शैलियों में रहती है। संगीत के ये युद्ध स्थानीय मारकाट के कारण ही नहीं बल्कि 'जाज' के स्वाभाविक स्वरूप के कारण भी थे। प्रारम्भिक 'जाज' में संगीतकार से अधिक महत्त्व गायक का था। गायक किसी भी लय में गा सकता था और जो कुछ बाजे से निकलता वह रूपान्तरण का एक आश्चर्यजनक कर्म ही था—जादू की एक अफीम गोटा-कारी जो इन्द्रियों को मतवाला बना दे और जी को तरसा जाए। यह सब कुछ अत्यन्त स्वाभाविक था जो वाद्ययन्त्रों और गायक के स्वर में तादात्म्य आने पर अनायास हो जाता था। चूँकि जाज शीघ्र लुप्त हो जाने वाला क्षणिक संगीत है इसलिए उसे पकड़कर स्मृति में सुरक्षित रखना पड़ा है। इसलिए रेकार्डों का इतना महत्त्व है जिसमें श्रेष्ठ जाज बाँधकर सुरक्षित रखा जाता है। फिर जैसा कि सम्प्रदायों में होता है कि कब किसने किसके साथ कैसे गाया पर बहस छिड़ जाती है। अत्यन्त अल्पकाल में ही जाज का एक इतिहास और उसकी एक परम्परा बन गई है। जिसमें कुछ महान्-विभूतियाँ और अनेक बड़े नाम हैं।

अमेरिकी युवकों का प्रीराफेलाइट भाईचारा[2] जितना हाट और कूल जाज में मिलेगा उतना कविता, चित्रकला या उपन्यास में नहीं। इस बानगी में अधिकांश अमेरिकियों का वास्ता हैरी जेम्स से अधिक, हेनरी जेम्स या विलियम जेम्स से कम था। युवक अमेरिकी जितनी रुचि बासि और गार ट्रम्पटवादकों सेक्साफोनिस्टों या पियानोवादकों में लेते थे उतनी कविता या दर्शन में नहीं। यह सारा जोश प्राचीन ईसाई चर्चों की याद दिलाता था। गहरा वादविवाद इस बात को लेकर होता था कि कौन-सी शैली आस्तिक है और कौन नास्तिक। पर सभी एकमत थे कि मुक्ति जाज के पथ में ही मिलेगी। सेंटलुई और न्यू ऑर्लीन्स के मतानुयायियों में गहरी प्रतिद्वन्द्विता इस बात को लेकर थी कि सम्प्रदाय का जन्म कहाँ हुआ है? दोनों नगरों को लेकर

---

2 Pre-Raphaelite Brotherhood.

कथाएँ भी चलने लगी थीं। प्रत्येक कलाकार के अपने-अपने भक्त थे जो उसे सबसे बड़ा मानते थे। इनमें इस प्रश्न पर क्लबों और समाज गोष्ठियों में गहरी बहसें भी होती थीं। इन कलाकारों की भक्त वैसे ही चर्चा करते थे जैसी कभी सन्तों को लेकर होती थी।

जॉज के इन सन्तों की पंक्ति में एक कमनीय व्यक्ति है जिसे भक्त-जन बिक्स के नाम से पुकारते हैं। मध्य-पश्चिम के इस युवक का पूरा नाम था लियान बिक्स बीडरबैक। इसने मिसिसिपी में एक नाव पर अपने लड़कपन में जॉज सुना था। इसकी भेंट लुई आर्मस्ट्रांग से हुई। इसने शीघ्र ही अपने को 'ह्वाइट' जॉज का अगुआ बना लिया। 28 वर्ष की आयु में ही इस युवक की मृत्यु हो गई। इसके संगीत से लोग इतने प्रभावित थे कि जैसे मे इसके भक्तों का एक सम्प्रदाय ही बन गया था। शिकागो के दक्षिण में हब्शियों के घरों में बिक्स जाता जहाँ उसने जू किंग ओलिवर के ट्रम्पट वादन और बेस्सी स्मिथ के ब्लू सिंगिंग को आत्मसात किया। वह 'जाम-सेशनों' और 'कटिंग प्रतियोगिताओं' में भी शामिल होता था। न्यूयार्क में वह पाल ह्वाइटमैन के बैंड में भी रहा। हार्लेम में भी उसने काफी समय गुजारा। यहाँ जाति की सीमाओं को तोड़ने वालों में वह अगुआ था। किन्तु अधिकांश रूप से वह संगीतज्ञों का ही गायक रहा। उसकी शक्ति और उसका यश आज एक मानदण्ड बना गया है। उसकी महत्ता तान के फैलाव में या गीत के आवेश में नहीं बल्कि स्वर की शुद्धता में थी। यह बाल्डविन हाफमन के शब्दों में बताना जो कुछ वाद्य-यन्त्रों को देती है उसका धर्म था। फास्टर ने कहा है कि संगीत के आलोचक का काम साहित्य के आलोचक से भिन्न है। वह गायक को यह नहीं बता सकता कि क्या करो न यही कह सकता है कि वह कहाँ जा रहा है। इससे जॉज के आलोचकों की स्थिति की कठिनाई का पता चलता। जब फैट्स वालर से जॉज की परिभाषा के बारे में प्रश्न किया गया तो उसने कहा 'मेरे मालूम, अगर तुम यह नहीं जानते कि यह क्या है तो टाँग न अड़ाओ।'

सचमुच कला के लिए यह आदर्श माध्यम है जो जनप्रिय संस्कृति का ही अंग नहीं है बल्कि सौन्दर्य के पारखियों और बौद्धिकों का भी धन है। पहले सामान्यजन और गम्भीर कलाकार की भाषा में दूरी थी। किन्तु अब तो इनके बीच दूरी व अपरिचय का अन्तर कम गया है। किन्तु जॉज और स्विंग के सम्बन्ध में यह बात उतनी लागू नहीं है। यही वास्तविक जनप्रिय कला का आधार है। बाख के युग में बाख और अन्य गुमनाम संगीतकारों की भाषा एक थी। आज कोई भी चतुर जिगड़ पाल हाथ है और यह उसे गालन्ति बजाता रहे—तो वह भी उसी वर्ग का है और उसी भाषा का प्रयोग करता है या कोई बड़ा गायक

इस संगीत के साथ जिन गीतिकाओं का सम्बन्ध है वे मामबार और बेहूदी होती हैं। पर प्राय उनमें एक भयंकर हास्य और उग्रता तथा करुण आभाप भी होता है। अमेरिकी 'हाट' संगीत नृत्य के लिए नहीं होता इसके विपरीत पापुलर राग नाचने के लिए होते हैं। सच तो यह है कि जॉज क प्रसिद्ध कलाओं में नाचने के लिए फ़र्श होता ही नहीं। अब प्राय जॉज कंसर्ट हॉलों मे गाया जाता है। यहाँ नृत्य होता ही नहीं।

फिर भी जॉज में एक आन्तरिक प्रलाप है जो नृत्य से इसका सम्बन्ध जोड़ता है। वहाँ शब्दों से अधिक अंग चालन से आशय अधिक स्पष्ट होता है। नृत्य वास्तविक रूप से दूर जा पड़ता है। सुन्दरतम नृत्य प्रवहमान और स्वाभा विक होता है। पुराने अमरिकी नृत्य सामूहिक होते थे। आधुनिक बालरूम नृत्य तो युग्म-नृत्य है। किसी लड़की के साथ नाचना कोर्ट शिप का आवश्यक अंग है। इसमें दूसरों को पहचानने की भी जरूरत नहीं। किन्तु जब संगीत अपनी सीमा पर पहुँचता है तो फिर रूप टूटता है और सब साथ मिल जाते हैं। संगीत कार भी कुछ नया सामयिक तत्त्व पैदा करने की होड़ में रहते हैं। जब जाम सेशन अपने चरम पर पहुँचता है तो नर्तक वादकों को धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने उनको बड़ा उत्साहित किया। अमेरिकीजन पापुलर नृत्य और संगीत में सामूहिक प्रशंसा और धर्म के देसी इडियम के जितने पास होते हैं उतने जीवन के किसी रूप में नहीं।

अमेरिका म नृत्य का इतिहास भी इसी आभिजात्य और जन-कला क भेद को स्पष्ट करता है। एशिया और अफ्रीका के अन्य धर्मों के विपरीत ईसाई धर्म में धार्मिक अवसरों पर नृत्य पर प्रतिबन्ध है। अमरिका कट्टर ईसाई है इसलिए यहाँ धर्मों की नीति पर उतना ध्यान नहीं दिया गया। सीमान्त नृत्यों ने काफ़ी समय पूर्व यह बन्धन तोड़ा किन्तु जब अमेरिकी विद्यार्थियों न क्लासिकल और प्राच्य धार्मिक नृत्यों को फिर स लाज लिया तो अमेरिका म भी नृत्य आभिजात्य कला मान ली गई। इसके पुनर्जन्म में इसाडोरा डंकन रूथ सेंट डेनिस और मार्था ग्राहम का बड़ा हाथ था। इन्होंने नृत्य को एक इण्टरप्रेटिव आधुनिक कला[1] का रूप दे दिया। किन्तु जब तक बैले और लोकनृत्य में घुलमिल कर यह बात 'म्यूज़िकल' में सम्मिलित नहीं हो गया नृत्य का सामान्य जनता म कोई प्रचार न था। इस दृष्टि से 'ओक्लाहामा' सबसे क्रान्तिकारी म्यूज़िकल था।

बिखरे और देखने में बेमेल तत्त्वों को लेकर संस्कृति की प्रतिभा कैसे एक नये तत्त्व को लेकर संस्कृति-रूप का निर्माण करती है इसका एक उदाहरण

1 Interpretive modern dance art.

अमेरिकी म्यूजिकल है। इसमें एक हल्का आपेरा जिसमें एक हल्की और छोटी सी कहानी रहती है प्रचलित गीतों का एक तारतम्य और स्थानीय लोक या आंचलिक तत्व पर आधारित एक थीम जैसे होता है। रंगमंच के संगीत पर भी जॉज कितनी गहराई से प्रभाव डाल चुका है इसका उदाहरण नृत्य और संगीत 'पोर्गी एंड बस' जैसे हल्के आपेरा में मिलता है। लगता है कि अमेरिकी भावी संगीत पापुलर रंगमंच और उसके नृत्य आपरा और जॉज के रूपों की ओर जाएगा न कि सिम्फोनी[1] जिसमें खास गंभीर संगीतकारों की ओर।

ऐसी बात नहीं कि अमरिका में गंभीर संगीत का मूल्य नहीं है। रेडियो टेलीविजन और हि फि' रेकर्डों के माध्यम से क्लासिकल परम्परा की कतिपय श्रेष्ठ कृतियां काफी प्रसिद्ध हुई हैं। इस पचासे में वाद्यवृन्द की दृष्टि से अमरिका में स्वर्णकाल था। प्रायः बड़े नगर में एक सिम्फोनी आर्केस्ट्रा था। जहां कहीं अच्छे आर्केस्ट्रा आए उनको सुनने के लिए पर्याप्त लोग इकट्ठे हुए। इसके कई कारण हैं। इस समय अमेरिका में लोगों के पास काफी पैसा है। फिर फासिस्टों के अत्याचारों से पीड़ित होकर बहुत-से कलाकार यूरोप से भागकर अमेरिका आये हैं। किन्तु मुख्य कारण यह था कि अमेरिका में मध्यवर्ग में संसार की संगीत परम्परा के प्रति जागरूकता पैदा हो गई है। जिससे अब लोग संगीत में रुचि लेने लगे हैं। संगीत क्षेत्र में पहले जो स्थान मिलान म्यूनिख ड्रेसडन वियना बर्लिन एम्सटर्डम और प्राग का था अब वही अमरिका का है। इस सबका परिणाम यह हुआ कि अब अमेरिका के संगीतकार अपने को हीन समझने लगे हैं। कुछ समय तक यह भी कोशिश रही कि देसी वस्तु को लेकर देसी संगतकारों का एक स्कूल बनाया जाए। पर यह कोशिश बेकार रही क्योंकि देसी संगीत बनाया नहीं जा सकता। अमरिका के संगीतकारों की शिक्षा स्त्राविन्स्की हिंडमिथ और स्कोनबर्ग के नीचे हुई है। सदी के तीसरे दशक से बहुत-से युवकों ने नादिया बाउलेंजर के पेरिस स्टूडियो में भी शागिर्दी की है। इस दशक में कोपलैंड और बार्बर सेशन्स और पूर्मा पिस्टन और रौपेरो आदि के नामों की चर्चा रही। इनकी कला महान् अमेरिकी परम्परा में है।

अन्य जन-कलाओं की भांति जॉज की भी नकल की गई। कई 'गंभीर' संगीतकार हुए जिन्होंने स्टीफैन फॉस्टर की नकल करने की कोशिश की। पर वे प्रायः हास्यास्पद ही सिद्ध हुए क्योंकि उनमें अनुभूति की गहराई का नितान्त अभाव था।

जॉज अमरीकी संगीत की अपनी देन है। सच तो यह है कि सभी पापुलर समारोहों में जॉज सबसे अधिक देखी है। न्यू आर्लीन्स के अपढ़ गायकों

1 Symphony

से निकलकर यह उन युवकों के पास पहुँचा जिनकी शिक्षा-दीक्षा अपने समय
के तानसेनों से हुई थी । अमेरिकी संस्कृति सदा इस संगीत म मुखर थी ।
इसकी लय अमेरिका की अपनी लय है । उसका सारा श्रेय हब्शियों को देना भी
ठीक नहीं है । यद्यपि उसमें उनका प्राधान्य अवश्य है । यह बहुजातीय संस्कृति
की कृति है । आज तो यह अमेरिका ही नहीं पश्चिमी यूरोप एशिया और
कम्युनिस्ट देशों में भी पहुँच चुका है ।

जॉज और स्विंग 'राक एन रोल'[1] भी (यह एक तात्कालिक मनफेर है
जिसके अपने पुजारी हैं पर जॉज के प्रेमी इसे पसन्द नहीं करते) अमेरिकी
जीवन के तनावों की अभिव्यक्ति से कुछ अधिक हैं । ये परमाणविक संस्कृति
के अकेलेपन और मन टूटने की प्रक्रिया व्यक्त करते हैं । आज मनुष्य मनुष्य
के बीच जो अलगाव पैदा हो गया है ये उसे ही भरते हैं ।

पारम्परिक आभिजात्य संगीत (traditional elite music) अपने श्रोताओं
को निष्क्रिय बनाता है। किन्तु पापुलर संस्कृति का संगीत उसे अपने में सम्मिलित
कर लेता है । उसे गतिशील और सामुदायिक क्रिया के नजदीक ले आता है ।
जन्म के समय पारम्परिक संगीत भी ऐसा ही था—या कहें कम-से-कम 17वीं
सदी तक सभी संगीत सामुदायिक और सामयिक था । या तो वह धार्मिक था
या घरेलू । इसमें संगीतकार गायक और श्रोता सभी भाग लेते थे । कतारों में
बैठकर संगीत सुनना बेहूदी कल्पना थी । अमेरिकी आधुनिक नाटक और संगीत
ने इस स्वत: प्रसूत और भक्ति के भाव को ग्रहण कर लिया है ।

3 मकान, शिल्पांकन और कला

अमेरिकी संस्कृति औद्योगिक संस्कृति है । औद्योगिक संस्कृति से आशा
यह की जाती है कि वह भूत की आभिजात्य कलाओं जैसे चित्रकला और
मूर्तिकला रंगमंच वास्तुकला और शिल्पांकन आदि को ऐसा रूप देगी जो
मशीन किसी वस्तु को दे सकती है । अधिकांश रूप में अमरिका में यही हुआ
भी है ।

शिल्पकला एक ऐसी कला है जो कि उपयोग में नहीं आती । क्योंकि आज
के जीवन में इसका कोई मूल्य नहीं । नीलघाटी की सभ्यता में मुकटीज में
या भूमध्यसागरीय देशों की सभ्यता म यह बड़ी महत्त्वपूर्ण कला थी ।
मूर्तियों क प्रदर्शन के लिए सार्वजनिक स्थान सार्वजनिक भवन और अवसर
तथा ऐसे दर्शकवर्ग की आवश्यकता होती है जिन इन दोनों से प्रेम हो ।
अमरिकियों ने कभी ऐसे ही सार्वजनिक स्थानों के चारों ओर नगर बनाए थ ।

1 Rock n roll.

सभ्यता में इसे प्रमुख चाक्षुष-कला[1] बनना ही था। कैमरा साथ में लिए आज अमेरिकी अपने देश में ही नहीं सारे संसार में जाते हैं। असंख्य फ़ोटो क्लब हैं, फ़ोटो-पत्रिकाएँ हैं, वार्षिकियाँ हैं और इसकी असंख्य प्रतियोगिताएँ होती हैं। ब्राडी जैसे व्यक्ति इस कला के अग्रदूत थे। स्टीग्लित्ज़ जैसे इसके पैगम्बर हो गए हैं। आज फ़ोटोग्राफ़ी से लोगों को उतनी ही रुचि है और लोग इस पर उतना ही धन खर्च करते हैं जो कभी चित्रकला या मूर्तिकला पर करते थे। 'लाइफ़' और 'लुक' जैसे पत्रों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि संसार भर के फ़ोटोग्राफ़र न्यूयार्क की ओर धन और पुरस्कार के लिए देखते हैं। उनके हाथों फ़ोटोग्राफ़ी चित्रकला बन गई है। कला के रूप में आज भी संस्कृति के मुख्य ध्येय—मानवीयता, नाटकीय क्रिया (dramatic action), गतिशीलता (dynamism), धरातल (surface) और गति (movement) की अभिव्यक्ति होती है।

मुख्य होने वाले थियेटर पर काफ़ी खोज की गई है। कहा गया है कि यूरोपीय थियेटर में पेरिक्लियन या एलिज़ाबेथन काल या इब्सन, चेखोव, स्ट्रिंडबर्ग और शा के काल की तुलना में अमरीका में इतनी रचनात्मक प्रतिभा के दर्शन नहीं हुए हैं। इतर पारम्परिक आलोचना तो है ही कि अमेरिकी थियेटर का आधार बड़ा संकुचित है। यह 'ब्राडवे' में केन्द्रित है, जो एक शहर का एक क्षेत्र है। इसकी अर्थव्यवस्था बड़ी दुरूह है। इसमें काफ़ी पूँजी लगाने की आवश्यकता होती है, दृढ़ यूनियनों से सख्त ठेके करने पड़ते हैं। ऐसे 'हिट' बने यह सदा आवश्यक रहता है। समालोचकों का एक छोटा-सा दल सारे रंगमंच पर हावी है। यह अपरिचितों के प्रति कुण्ठित रहता है। रंगमंच अमेरिका में मध्यवर्गीय कला है। इसमें प्रयोग को बहुधा स्थान नहीं मिलता। कुछ निश्चित सूत्र हैं और नारे हैं जिनको लेकर नाटक देखा जाता है। अन्त में यह भी कहते हैं कि रंगमंच की सामग्री के लिए उपन्यासों की ओर जाना पड़ता है और दूसरी ओर यह सिनेमा का भी करते हैं।

इन सब बातों में सत्य चाहे जो भी हो इतना तो है कि ये सब बातें वस्तु की तह तक नहीं पहुँचतीं। मेरी राय में थियेटर को मुख्य होने वाली कला होना चाहिए पर वह है नहीं। बीच में इसने यूजीन ओ॰ नील, तीसे में ओडेट्स, मरोन्तन, विलियम हेम्पेन और लिलियन हेलमैन, चालीसे और पचासे में टेनेसी विलियम्स और आर्थर मिलर जैसी सृजनात्मक प्रतिभाएँ हुईं। इसके अतिरिक्त [illegible] राष्ट्रीय मोर्चे में भी पर्याप्त अच्छी प्रतिभाओं के दर्शन

प्रश्न है ये फोटोग्राफी का मुकाबला नहीं कर सकते थे। ऐसे प्रतिद्वन्द्वी से अपने को
अलग करने के लिए चित्रकारों ने प्रतीकवाद (symbolism) और अभिव्यक्ति
वाद (expressionism) का सहारा लिया। फ्रांस और जर्मनी में इस शैली के
कतिपय अच्छे चित्रकार हुए। यह शैली अमेरिका में कुछ देर से पहुँची जो काफी
अभिप्रायवादी (purposive) और आशावादी (optimistic) है। स्लोन और
हार्स का यथार्थवाद फूला और यह स्वाभाविक भी था कि ऐसी समृद्ध अर्थ
व्यवस्था में धनवान और उनकी नारियों का चित्रकार अमेरिकी शक्ति और
उनके आश्वासनों के चमकते धरातल पकड़ता। जब आलोचकों ने स्थानीय
शैली के अभाव का रोना रोया तो कुछ कवी, बेंटन जैसे चित्रकारों ने अमेरिकी
'लोक वस्तु' को लेकर उसकी रचना भी की। किन्तु इनकी प्रतिमाएँ भी
अमेरिकी चरित्र के धरातल तक न पहुँच पाईं।

आवश्यकता इस बात की थी कि चित्रकार अपने अन्तर के माध्यम से
अमेरिकी सभ्यता के अन्तर को टटोलता। इसके पहले की पीढ़ी में हार्टली
मैरिन मोरर और वीवर जैसे चित्रकारों ने यह किया था। चित्रकला में ऐसा
हुआ कि प्रान्तीय आत्मचेतना का भार हल्का हुआ। यूरोप में सूक्ष्म साहित्य का
यही स्रोत था। आज जब अमेरिकी फूहड़ स्कूली बच्चों की तरह नहीं है जब
शक्ति चिन्ता और फ्रायडी कल्पना पश्चिम से समुद्र पार आ चुकी है और
चित्रकार कैनवास को निरर्थक आकृतियों और भड़कीले रंगों से लीपने में
अपराध का अनुभव नहीं करता अमेरिकी चित्रकला अपने को पा सकी है।
अमेरिकी चित्रकार ने अब काल और देश से परे प्रतीक रूप में अमेरिकी शक्ति
की अभिव्यक्ति का 'इडियम' पा लिया है। चित्रों की प्रतिकृतियाँ भी भारी
संख्या में बन सकती हैं। इसलिए चित्रकारों की संख्या भी काफ़ी है। नये
सम्पत्ति अब अपने घर सजाने के लिए उनकी कृतियाँ खरीदते भी हैं। नये
मध्यवर्ग ने अब रुचि और प्रसन्नता के नये स्तर खोज निकाले हैं। यद्यपि
अधिकांश प्रतिकृतियाँ प्राचीन कलाचार्यों की ही हुई हैं पर अमेरिका आज
अपने चित्रकारों की कृतियों को भी काफ़ी जानता है। अब बड़े डिपार्टमेंट स्टोरों
में चित्र भी प्रदर्शित होने लगे हैं। अमेरिकी चित्रकला को आर्थिक आधार भी
मिल चुका है।

फोटोग्राफी के सामान्यवाद ने चित्रकला और मूर्तिकला दोनों को बहुत
हानि पहुँचाई है। कोडिया और सिनेमा और टेलीविजन के लिए भी फोटोग्राफी
की जाती है। 'शटर' हटाइए और मैग्नेटिक प्लेट पर तुरन्त तस्वीर बन गई।
कला के रूप में कैमरा एक तरह ईमानदार, प्रवहमान गतिवान पुनरुत्पादन की
अनन्त क्षमता वाला पारेषणीय, काल और देश का विजेता है। एक टेक्निकल

किन्तु अब सार्वजनिक जीवन कम होता जा रहा है। बगीचे और आँगन तो अब भी होते हैं। इनमें एक में सैनिकों की और दूसरे में न्यायाधीशों की मूर्तियाँ भी लगाते हैं किन्तु यह अब एक आदतवश या अकर्मण्यता है किसी विश्वास के कारण नहीं।

लिंकन मेमोरियल में लिंकन की एक मूर्ति है। ऐसी ही छिटपुट मूर्तियाँ और भी मिल जाएँगी जो विश्वास के अपवाद स्वरूप प्रतीत होती हैं। आज के मूर्तिकार की आय फुवारों और लान के मकानों की मूर्तियों या अमूर्त के चित्रण वाली मूर्तियों के निर्माण से ही है। मूर्ति का निर्माण बड़ी संख्या में नहीं होता न उसका बड़े माध्यमों के द्वारा प्रचार ही होता है। इसलिए यह उतनी पापुलर (लोक-प्रिय) कला नहीं है जितनी अन्य कलाएँ। अमेरिका में आज अच्छे अच्छे पहलवान हैं और सुन्दर से सुन्दर नारियाँ भी जिनकी मूर्तियों की प्रशंसा होती। किन्तु मूर्तिकला जनकला के रूप में फोटोग्राफी का मुकाबला नहीं कर सकती। पत्र-पत्रिकाओं में पहलवानों के गतिपूर्ण चित्रों की भरमार रहती है जिन्हें देखकर अधिकांश अमेरिकी मूर्तिकला को गतिहीन कहते हैं। इसी प्रकार टेलीविजन फिल्म पत्र-पत्रिकाओं में सुन्दरियाँ के विभिन्न मुद्राओं में चित्र दिखते हैं। इसीलिए संवेदनशील मूर्तिकार, चित्रकार की भाँति मानव-शरीर के प्रतीकात्मक और अमूर्तन की ओर मुड़ गया है। इसका जो फल हुआ है उसकी पुष्टि में तर्क देने की आवश्यकता नहीं। किन्तु इतना तो मानना ही पड़ेगा कि आज के मूर्तिकार के सांस्कृतिक अनुभवों और भूत के मूर्तिकार के सांस्कृतिक अनुभवों में बहुत बड़ी दूरी है।

अमेरिका में ऐसे चित्रकार काफी बड़ी संख्या में हुए हैं जिनके पास पर्याप्त प्रतिभा थी। इनकी शैलियाँ भी कई प्रकार की थीं। किन्तु इन्हें अच्छे दर्शक और अच्छा वातावरण न मिला जो उन्हें प्रोत्साहन देता। मध्ययुग और पुनर्जागरण काल के इटालियन और फ्लेमिश चित्रकारों के पास चित्रण के लिए ईसा की कथा थी। ऐसी कोई कथा भी तो इन चित्रकारों के पास नहीं है न उनकी भाँति सिस्टाइन चैपल[1] जैसा कोई भवन ही इनके पास है जिसकी दीवारों पे अपने चित्रों से रंग देते। आधुनिक युग में फ्रांस बेल्जियम स्पेनियार्ड इटली में चित्रकला के महान सम्प्रदाय हुए हैं। पर इन सम्प्रदायों के चित्रकार आज की सुधारवादी प्रोटेस्टेंट धर्म से अलग हो गए थे। इन्होंने उस धार्मिक परम्परा का बचा-खुचा भाग आत्मसात कर लिया। इसलिए चित्रकला में प्रकृति-चित्रण और दृश्यों की ओर रुझान हुआ। किन्तु यहाँ तक विषय के प्रति ईमानदारी का

1 Sistine Chapel.

हुए। 40 वर्षों का यह इतिहास बतलाता है कि अब प्रान्तीय नगर से थियेटर मात्र वहाँ पहुँच चुका है यह केवल एक घटना ही नहीं है बल्कि यह भी सिद्ध करता है कि रंगमंच में इस शताब्दी में पर्याप्त अमेरिकी शक्ति की अभिव्यक्ति हुई है। उतनी ही जितनी उपन्यास में। कोई भी रंगमंच का तटस्थ इतिहासकार यही कहेगा कि इब्सन स्ट्रिंडबर्ग और शा के बाद नाटकीय रचनात्मकता का केन्द्र समुद्र पार ब्राडवे में चला गया है। ब्राडवे कभी यूरोप के निर्णयों पर ही चलता था। अब वह लंदन और पैरिस का मुकाबला करता है। कह सकते हैं कि इनके लिए भी वह ईर्ष्या की वस्तु बन गया है।

यदि रंगमंच सिनेमा और टेलीविजन से जुड़ गया है तो यह उसकी कमजोरी नहीं है। सच है कि हालीवुड और मेट्रिसन एवेन्यू उसके नाटक खरीदकर उसका शोषण कर रहे हैं प्रतिभाशाली नाटककारों को वैसे ही किराये पर ले लेते हैं जैसे विजेता रोम वाले यूनानी बुद्धिवादियों को दर्शन और कला सिखलाने के लिए खरीद लेते थे। किन्तु हालीवुड के रुपये के बावजूद कोई पूछ सकता है कि मुख्य धारा कौन-सी है और कौन-सी उसकी सहायक। नाटक में एक सम्पूर्णता है जो सिनेमा या टेलीविजन में नहीं। नाटक लेखक अभिनेता और दर्शक की सम्पूर्णता यहाँ मिलती है।

जब कई कलाएँ मिलती हैं जैसे नाटक सिनेमा और टेलीविजन तो वे परस्पर प्रभाव डालेंगे ही और इससे एक-दूसरे को लाभ भी पहुँचेगा। आश्चर्य की बात है कि जब अमेरिका में सिनेमा और टेलीविजन का प्रचार हुआ तभी नाटकीय रचनात्मकता भी रही। मेरे कहने का अर्थ यह नहीं कि केवल ये ही शक्तियाँ काम कर रही थीं। किन्तु यह सत्य है कि इनसे इस रचनात्मकता में मदद मिली। जब लेखक को यह पता है कि उसकी कृति ब्राडवे के एक सीमित क्षेत्र से करोड़ों दर्शकों तक पहुँच सकती है तो उसे प्रेरणा और उत्साह मिलता ही। एक बात और है—लेखक के लिए सब माध्यमों से अधिक महत्त्व रंगमंच का है। जब तक नाटक को जनता महान् कला नहीं समझती महान् रंगमंच सम्भव नहीं है।

न्यूयार्क थियेटर के अधिकांश प्रयास 'ऑफ ब्राडवे' में होते हैं। यहाँ के थियेटर छोटे और कम शिष्टाचारी होते हैं। इनमें भीड़ भाड़ कम और निर्माण खर्च भी कम आता है किन्तु 'ब्राडवे' में केन्द्रीयता से कोई हानि नहीं है, जैसा बतलाया जाता है। एलिजाबेथियन ट्रेजडी के समय में लंदन में भी ऐसे ही सौ मे ब्याज में अभाव था। एथेंस में भी ऐसा ही हुआ। ब्राडवे में देश के सभी भागों से नाटकों के दर्शक आते हैं। इसी के छोटे प्रतिरूप 'लिटिल थियेटर' दर्जों में मिलेंगे। ऐसे दस दुरूह जगहों में भी मिल जाएँगे। ब्राडवे का आकर्षण कुछ अर्थों में हालीवुड से भी गहरा है। थियेटर उन लोगों का आश्रय है जो

सभ्यता में इस प्रमुख चाक्षुष-कला[1] अंगमात्र ही था। कैमरा हाथ में लिए आज अमेरिकी अपने देश में ही नहीं सारे संसार में जाते हैं। असंख्य फ़ोटो क्लब हैं फ़ोटो-पत्रिकाएँ हैं वार्षिकियाँ हैं और इसकी अनन्त प्रतियोगिताएँ होती हैं। आरी जैसे व्यक्ति इस कला के अग्रदूत थे। स्टीगलिट्ज जैसे इसके पैगम्बर हो गए हैं। आज फ़ोटोग्राफ़ी से लोगों को उतनी ही रुचि है और लोग इस पर उतना ही धन व्यय करते हैं जो कभी चित्रकला या मूर्तिकला पर करते थे। 'लाइफ़' और 'लुक' जैसे पत्रों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि संसार भर के फ़ोटोग्राफ़र न्यूयार्क की ओर धन और पुरस्कार के लिए देखते हैं। उनके हाथों फ़ोटोग्राफ़ी चित्रकला बन गई है। उन में कला के रूप में आज भी संस्कृति के मुख्य ध्येय—मानवीयता नाटकीय क्रिया (dramtic actoin) गतिशीलता (drnamism) धरातल (surface) और गति (movement) की अभिव्यक्ति होती है।

लुप्त होने वाले थियेटर पर काफ़ी शोक की गई है। कहा गया है कि यूरोपीय थियेटर में पेरिक्लियन या एलिजाबेथ काल या इब्सन चेख़ोव स्ट्रिंडबर्ग और शा के काल की तुलना में अमेरिका में इतनी रचनात्मक प्रतिभा के दर्शन नहीं हुए हैं। फिर पारम्परिक आलोचना तो है ही कि अमेरिकी थियेटर का आधार बड़ा संकुचित है। यह ब्राडवे में केन्द्रित है जो एक शहर का एक क्षेत्र है। इसकी अर्थव्यवस्था बड़ी दुस्सह है। इसमें काफ़ी पूँजी लगाने की आवश्यकता होती है ट्रेड यूनियनों से उचित ठेके करने पड़ते हैं। शो 'हिट' बने यह सदा आवश्यक रहता है। समालोचकों का एक छोटा-सा दल सारे रंगमंच पर हावी है। यह अपरिचितों के प्रति रुष्ट रहता है। रंगमंच अमेरिका में अपव्ययी कला है। इसमें प्रयोग को बहुधा स्थान नहीं मिलता। कुछ निश्चित सूत्र हैं और सितारे हैं जिनको लेकर नाटक खेला जाता है। अन्त में यह भी कहते हैं कि रंगमंच को सामग्री के लिए उपन्यासों की ओर जाना पड़ता है और दूसरी ओर यह सिनेमा का भी करद[2] है।

इन सब बातों में सत्य चाहे जो भी हो इतना तो है कि ये सब बातें वस्तु की तह तक नहीं पहुँचतीं। मेरी राय में थियेटर को लुप्त होने वाली कला होना चाहिए पर वह है नहीं। बीसे में इसमें यूजीन ओ॰नील तीसे में ओडेट्स सरोयान लिलियन हैलमैन और सिडनी किंग्स्ले चालीसे और पचासे में टेनेसी विलियम्स और आर्थर मिलर जैसी सृजनात्मक प्रतिभाएँ हुईं। इसके अतिरिक्त संगीत कॉमेडियों और सांगीत ऑपेरा में भी पर्याप्त अच्छी प्रतिभाओं के दर्शन

1 Visual Art.
2 Tributary

हुए। 40 वर्षों का यह इतिहास बतलाता है कि अब प्रान्तीय नगर में थियेटर आज वहाँ पहुँच चुका है वह केवल एक घटना ही नहीं है बल्कि यह भी सिद्ध करता है कि रंगमंच में इस शताब्दी में पर्याप्त अमेरिकी शक्ति की अभिव्यक्ति हुई है। उतनी ही जितनी उपन्यास में। कोई भी रंगमंच का तटस्थ इतिहासकार यही कहेगा कि इब्सन स्ट्रिंडबर्ग और शा के बाद नाटकीय रचनात्मकता का केन्द्र समुद्र पार ब्राडवे में चला गया है। ब्राडवे कभी यूरोप के निर्यातों पर ही आता था। अब वह लंदन और पेरिस का मुकाबला करता है। कह सकते हैं कि इनके लिए भी वह ईर्ष्या की वस्तु बन गया है।

यदि रंगमंच सिनेमा और टेलीविजन से जुड़ गया है तो यह उसकी कमजोरी नहीं है। सच है कि हालीवुड और मेडिसन एवेन्यू उसके नाटक खरीदकर उसका शोषण कर रहे हैं प्रतिभाशाली नाटककारों को वैसे ही किराये पर ले रहे हैं जैसे विजेता रोम वाले यूनानी बुद्धिवादियों को ज्ञान और कला सिखाने के लिए खरीद लेते थे। किन्तु हालीवुड के रुपये के बावजूद कोई पूछ सकता है कि मुख्य धारा कौन-सी है और कौन-सी उसकी सहायक। नाटक में एक सम्पूर्णता है जो सिनेमा या टेलीविजन में नहीं। नाटक लेखक अभिनेता और दर्शक की सम्पूर्णता वहाँ मिलती है।

जब कई कलाएँ मिलती हैं जैसे नाटक सिनेमा और टेलीविजन तो वे परस्पर प्रभाव डालेंगे ही और इससे एक-दूसरे को लाभ भी पहुँचेगा। आश्चर्य की बात है कि जब अमेरिका में सिनेमा और टेलीविजन का प्रचार हुआ तभी नाटकीय रचनात्मकता भी रही। मेरे कहने का अर्थ यह नहीं कि केवल ये ही शक्तियाँ काम कर रही थीं। किन्तु यह सत्य है कि इनसे इस रचनात्मकता में मदद मिली। जब लेखक को यह पता है कि उसकी कृति ब्राडवे के एक सीमित क्षेत्र से करोड़ों दर्शकों तक पहुँच सकती है तो उसे प्रेरणा और उत्साह मिलता ही। एक बात और है—लेखक के लिए बड़े माध्यमों से अधिक महत्त्व रंगमंच का है। जब तक नाटक को जनता महान् कला नहीं समझती महान् रंगमंच सम्भव नहीं है।

न्यूयार्क थियेटर के अधिकांश प्रयोग 'ऑफ ब्राडवे' में होते हैं। यहाँ के थियेटर छोटे और कम खर्चीले होते हैं। इनमें भीड़ भाड़ कम और निर्माण खर्च भी कम आता है किन्तु 'ब्राडवे' में केन्द्रीयता से कोई हानि नहीं है जैसा बतलाया जाता है। एलिजाबेथियन ट्रेजडी के समय में लंदन में भी ऐसे ही छोटे से स्थान में जमाव था। एथेंस में भी ऐसा ही हुआ। ब्राडवे में देश के सभी भागों के नाटकों के दर्शक आते हैं। इसी के छोटे प्रतिरूप 'लिटिल थियेटर' नगरों में मिलेंगे, ऐसे कम दुरूह जगहों में भी मिल जाएँगे। ब्राडवे का आकर्षण कुछ अर्थों में हालीवुड से भी गहरा है। थियेटर उन लोगों का आश्रय है जो

बड़े माध्यमों से तंग है। नाटककार इसमें गहराई की थाह लेता है। इसमें जरूरी नहीं है कि वह अमेरिकी जीवन के आशावाद या सतही मूल्यों की ही अभिव्यक्ति करे। यहां उसे बड़े निर्माताओं या श्रोताओं का मुंह जोहने की भी जरूरत नहीं। वह कम दर्शकों की संख्या के लिए लिखता है इसलिए वह प्रतिचक्रात्मक शक्ति[1] का एक अंग बन जाता है। वह पुरानी प्रवृत्तियों को उलटकर नई प्रवृत्ति की रचना करता है। वह अग्रदूत बन सकता है जिसका अनुगमन बड़े माध्यमों बाद करेंगे।

अमेरिका में रंगमंच फला-फूला है और फलता फूलता रहेगा क्योंकि बड़े माध्यमों को यहीं से सामग्री मिलती है। उपन्यास की भांति प्रेरणा शक्ति और व्यक्तित्व के विवेचन का यह सर्वोत्तम माध्यम है। इसमें शक्ति और तनावों का चित्रण और भी गहराई से होता है।

अमेरिकी गृह-वास्तुकला के क्षेत्र में आज दो असमान शक्तियों में संघर्ष है एक ओर है उपयोगिता और सौन्दर्य के समन्वय का भाव तो दूसरी ओर है निर्माण-संहिताएं, जमीन, सामान और मजदूरों के ऊपर ऊंचे व्यय तथा परिवहन को नष्ट करने के उपाय। ऊंची आय वालों के वर्ग में पिछली शताब्दी के अंत में न्यूपोर्ट और सैराटोगा स्प्रिंग्स में बने भवन न्यूयार्क और शिकागो के औद्योगिक सम्राटों के महल रुचि की दृष्टि से इतिहास बन गए हैं। आधुनिक मानदंडों से इनमें कुछ आडम्बरपूर्ण प्रभाव होंगे किन्तु शताब्दी के अंत में हंट, मैकिम, स्टैनफोर्ड ह्वाइट, प्लैट और हेस्टे बुड ने जो काम किये हैं वे वास्तुकला के इतिहास में बड़े मनोरंजक हैं। ठीक है कि प्रदर्शन के लिए भी प्रयत्न हुआ है। औद्योगिक सम्राटों ने जब धन कमाया तो उन्हें इसका प्रदर्शन भी करना था कि उनके पास धन है। किन्तु इनमें सुरुचि को उतना स्थान नहीं मिला। क्योंकि इन महलों में उपयोगिता और सौन्दर्य के बीच कोई समन्वय ही नहीं हो पाया है। हाल के वर्षों में आडम्बर में कुछ कमी हुई है और अब सम्पूर्ण जीवन की भांति वास्तु क्षेत्र में मध्यवर्गीय वर्गों की अधिकता है। अमेरिका के टाइकूनों या हालीवुड के सिनेमा कलाकारों के मकानों में अभी भी दिखावट मिलती है। किन्तु अब गृह-वास्तुकला को मुख्य रूप से प्रभावित करने वाले मध्यवर्ग के परिवार ही हैं जो यह चाहते हैं कि मकान ऐसे बनें जो आरामदेह हों और उनकी [illegible] के प्रतीक हों। मजेदार बात यह है कि अमरीकी मशीनों, औजारों, मोटरों, कुर्सी, रसोई के इतने [illegible] हैं पर वे वास्तुकला के क्षेत्र में विभिन्न शैलियों की ओर झुक रहे हैं। इससे जीवन और अपने बारे में उनके जो भाव हैं उनकी अभिव्यक्ति होती है।

---

1 Countercyclical force

प्रेरणा के लिए बहुत-सी पुरानी शैलियाँ हैं जो अपने समय और स्थान की दृष्टि से महत्त्व रखती थीं। न्यू इंग्लैण्ड के उपनिवेशकाल की डिजाइन बड़ी सादी थी। यह उनके निवासी नर-नारियों के ईश्वरीय नियमों से शासित जीवन का प्रतीक थी। चाहे फार्महाउस हो या नगर का घर, चर्च या स्कूल न्यू इंग्लैण्ड वासी के बढ़ई के काम में एक अनगढ़ता थी। उसके घर के फर्नीचर में भी यही बात थी। बड़े और सुन्दर क्लिपर जहाजों जैसे डोनाल्ड मैकके में यह विशेषता खासकर दिखती है। ये जहाज डिजाइन-क्षेत्र में अमरीकी सफलता के अच्छे उदाहरण हैं।

दक्षिण भागों का भी भवन निर्माण का अपना ढंग था। इसका सबसे अच्छा वास्तु कालोनियल शैली का था जो अठारहवीं सदी के वर्जीनिया मेरीलैंड और कैरोलिनास विलियम्सबर्ग के पुनर्निर्माण और वर्जीनिया के कालोनियल मकानों में जिनमें वाशिंगटन का माउंट वर्नन का मकान भी शामिल है इस शैली को देखा जा सकता है। धनी और कई बागान के मालिकों ने यूनानी पुनर्जन्म की शैली के खंभों वाले बागानों के मकान बनवाये थे। वे मकान लकड़ी और स्टक्कों की ईंटों[1] के बने हैं। दक्षिण में प्रवासियों ने स्पेन की शैली में और अटलांटिक किनारे पर लोगों ने इनिगो जोन्स और क्रिस्टोफर रेन की नकल पर मकान बनवाये थे। इनमें इंग्लिश और स्पेनिश तत्त्व स्पष्ट हैं जो स्थानीय वातावरण के अनुरूप ग्रहण किए गए थे। यह क्षेत्रीय शैली तो आज तक चली आ रही है। पश्चिमी शैली ने अमेरिका को बीसासा जैसे मकानों की शैली दी है। इसमें एक देहाती वास्तु और बाहरी सादगी के साथ-साथ आराम का सम्मिश्रण किया गया है।

मैंने गृह निर्माण के क्षेत्र में अमरीका का एक मनोरंजक देन का वर्णन छोड़ दिया है। वह है 'साल्ट बाक्स'। इसका प्रारम्भ मध्य-पश्चिम में 1830 के आसपास हुआ था। इसका सम्बन्ध 'बैलून-फ्रेम' से था। मकान के मौलिक ढाँचे के निर्माण का यह नया तरीका था जो तेज हल्का कम खर्च आँधियों का सामना करने वाला और [illegible] था। इसका संगठन और उपयोगिता बीसवीं सदी तक भी चली आई है। छोटे नगरों के मध्यवर्गों के मकानों में इस शैली के दर्शन अब भी होते हैं। इस शैली के मकानों के रहने वाले पीढ़ियों से यह जानते ही नहीं कि उन्हें कहाँ बसना है। इनके मकान ऐसे नहीं होते जो कई पीढ़ियों बसने के काबिल हों या जिन्हें सम्पत्ति माना जा सके। जो कुछ सामान आसपास मिला उसी से ये बना लिए जाते हैं। अमेरिकियों ने अपने मकानों में उपयोगिता का बड़ा ध्यान रखा है। जब वे धनी हो गए

1 Stuccoed bricks.

तब भी उन्होंने मकान बनाने में मुख्य सलाह इंजिनीयर से ही ली। फिर यहाँ कहीं रूप रंग देने के लिए 'आर्किटेक्ट' से काम लिया। इस प्रकार अमेरिकी भवन निर्माण इंजिनीयरी और वास्तु के दो चरण माने जाते हैं। यद्यपि यह विभाजन झूठा ही है। सन् 1030 के बाद के दशक में एक नई शैली चली जिसे अन्तर्राष्ट्रीय शैली कहते हैं। इस शैली में ज्यामितिक रेखाओं और कोणों लोहे और कंक्रीट के प्रबन्ध पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इस शैली ने बड़ी बड़ी सरकारी आयोजनाओं को जन्म दिया। इस शैली के लोगों ने रूप और उपयोगिता के सम्बन्ध पर विशेष जोर दिया है। इसके विरोधी मजाक उड़ाते हुए कहते हैं कि हाँ मकान ऐसा हो मानो रहने की मशीन। सच भी है। इन उपयोगितावादियों ने ऐसी अरुचिकर शैली का विकास किया है जिसमें बहुतों को आराम न मिल सकेगा। विशेषकर इस शैली के हिमायती मकान तो बड़ निकम्मे हैं। उधर फ्रैंक लॉयड राइट अपनी कवित्वपूर्ण भाषा में कहता है कि मकान के अन्दर बाहर और आसपास के वातावरण में सम्बन्ध होना चाहिए। पहर रंग की लकड़ी ईंटों खुरदरे पत्थरों का इस्तेमाल होना चाहिए। मकान आसपास की प्रकृति में बढ़ा प्रतीत हो। वह आदमी की रोजमर्रा की आवश्यकताओं से अधिक उसकी आकांक्षाओं की चर्चा करता है।

आधुनिक प्रचलित शैलियों के मिश्रण की हैं। औपनिवेशिक जाजियन अभिजी-पश्चिमी सभी शैलियों के मेल से बनी शैली। मकान में उसी सामान का उपयोग किया जाता है जो आसपास आसानी से मिल सके। फिर भी वे मकान रहने के काबिल हैं और अमेरिका की मिलीजुली संस्कृति को अभिव्यक्त करते हैं।

सबसे बड़ी बात यह है कि 18वीं शती के अन्त में यूरोप में 'जनता के लिए मकान' की जो आवाज थी वह अमरिका में पूरी हुई है। यहाँ व्यापारी मजदूर किसान अपने परिवार के लिए मकान का मालिक होता है। बड़े शहरों का विकास होने पर मजदूरों और कर्मचारियों के लिए गन्दी बस्तियों में मकान की समस्या पैदा हुई थी। इसका कारण बड़ी संख्या में लोग गन्दी बस्तियों में रहने को बाध्य थे। इसका उत्तर बड़ी संख्या में उपनगरों में सस्ते मकान बनाकर दिया गया। इन मकानों में आवश्यकता वाली सभी वस्तुओं की व्यवस्था की गई। जैसा पीटर ब्लेक ने 1010 में कहा था कि एक परिवार के लिए मकान बनाने पर उतना ही खर्च आता है जितना कि एक मोटर खरीदने में। आज एक मकान पर एक मोटर से दस गुना खर्च बढ़ता है। मोटर बनाने में काफी बढ़ी है और मकान पर न न काटी छोटा। इसका अर्थ यह हुआ कि औद्योगिक क्रान्ति से मकानों के निर्माण के क्षेत्र में उतनी सफलता नहीं प्राप्त की है जितनी वह उत्पादन के उद्योगों में।

ये कम गर्व के मसाल ही आधुनिक नगर निवेश को खण्डित करते हैं। अमेरिका के बड़े शहरों में यातना तभी आती है जब एकाधिक दृष्टि से सवारियों के कम और कम आय वाले रिहायशी खंडों की मांग करते हैं और इस प्रकार सारी निवास-व्यवस्था ही बदलनी पड़ती है। सवारियों की भीड़भाड़ के कारण भी शहरों के बसने की योजना बनानी पड़ती है। अब पर पुराने और बेकार हो जाते हैं तो शहर के उस पूरे भाग को ही गिराकर वहाँ योजनानुसार बस्ती बसाने की आवश्यकता आ पड़ती है। वहाँ शहर पुरानी केंचुल छोड़कर नई केंचुल धारण कर लेता है।

महान् वास्तुकला का आधार विश्वास है। अमेरिकियों ने अभी ऐसे किसी घरेलू जीवन की विधि का निर्माण नहीं किया कि जिस पर विश्वासों की जड़ जम सके और एक नई वास्तुकला का निर्माण हो सके। उनका अपनी टेक्नोलॉजी में विश्वास है। इसे जरा दूसरे ढंग से कहें तो कह सकते हैं कि अमेरिकी जन ने उपभोग और सुलभ जीवन की कलाओं में अधिक सफलता पाई है। इतनी सफलता वहाँ जीवन का उद्गम स्थिर करने में नहीं मिली है। अब उन्होंने उत्पादन से सम्बन्ध रखने वाले भवन जैसे कारखाने, दफ्तर, जल विद्युत् बाँध बिजलीघर या सड़कें बनाई हैं तो इनमें अधिक सचाई रही है बनिस्बत उनके रहने के मकानों के।

जैसे लकड़ी के मकानों के 'बैलून फ्रेम' होते हैं वैसे ही कारखानों और दफ्तरों के निर्माण में अमेरिकियों ने स्टील फ्रेमों का आविष्कार किया है। इसका भी प्रारम्भ शिकागो में हुआ। शिकागो का भारी भाग जलने के बाद पुनर्निर्माण हुआ था। वहाँ नये विचारों के प्रयोग का अच्छा अवसर मिला। जिसे अमेरिकी वास्तु का रैनेसां कह सकते हैं, उसका प्रारम्भ शिकागो में ही हुआ। वहीं व्यापारिक 'स्काई स्क्रेपर' के ढाँचे की खोज की गई और लोहे के ठठरों को पत्थर और सीमेंट से भरा गया।

जान रस्किन ने अपनी 'सेवेन लैम्प्स ऑफ आर्किटेक्चर' में अधिकार के बड़े दीप' की चर्चा की है। अमेरिकी स्काई स्क्रेपर उसका अच्छा उदाहरण है। स्काई स्क्रेपर में उस वस्तुत्व की मान्यता है जो प्रत्येक अमेरिकी शहर में शहर भर के मकानों से ऊपर अमेरिकी औद्योगिक प्रतिभा के स्मारक के रूप में खड़ा रहता है। यह शिकागो का 'ट्रिब्यून' टॉवर भी हो सकता है या राकफेलर सेंटर या एम्पायर स्टेट या न्यूयार्क में क्रिस्लर बिल्डिंग या सान फ्रांसिस्को में 'म्यूचुअल' बिल्डिंग भी। यह किसी व्यक्ति, परिवार या संस्था की शक्ति का प्रमाण होता है। सिद्धान्त रूप में इसका उद्गम न्यूयार्क शिकागो क्लीवलैण्ड डट्रायट जैसे बड़े नगरों में बहुमूल्य जमीन का किफायत से उपभोग करना होता है। किन्तु डिट्रॉयट टेक्सास या ओकलाहोमा जैसी जगहों में जहाँ जगह की कमी

संभव नहीं। बीस मंज़िले भवन देखे हैं वे बतलाएँगे कि सीमेंट लोहे के इतने तंग स्थान में ऐसे उपयोग से तनिक घटी नहीं बढ़ी ही है। स्काई स्क्रेपर में गोथिक शैली का एक टावर होता है जो 'स्टेपर' की आकांक्षा का प्रतीक होता है। यह 'स्टेपर' की आकांक्षा न्यूयार्क में भी हो सकती है जहाँ जगह की तंगी है और किसी टेक्सास के नगर में भी जहाँ जगह की इफ़रात है।

अपने नगरों के समाचारों में भी जहाँ प्रत्येक फुट ज़मीन का महत्व है, प्रकाश की समस्या होती है। नगर की नई प्रवृत्ति जो अन्तर्राष्ट्रीय शैली से प्रभावित है आस-पास की खुली ज़मीन का महत्व स्वीकार करती है। इस खुली ज़मीन के कारण ही तो ज्यामितिक डिज़ाइनें दीखेंगी। ऐसा प्रतीत होता है कि अब अमेरिकी अपने बारे में इतने आश्वस्त हैं कि उन्हें अपनी शक्ति प्रदर्शन के लिए 'सेटिंग' की आवश्यकता है। यही बात उनके पुलों के ऊपर भी लागू है। विशेषकर हडसन के ऊपर जॉर्ज वाशिंगटन ब्रिज में। पुल के दोनों किनारों पर दो मीनारों की योजना थी जो अलंकरण के रूप में रखे गए थे। किन्तु पुल की रचना की डिज़ाइन ही इतनी आकर्षक थी कि जनता के विरोध के कारण ये मीनारें अपूर्ण ही छोड़ दी गईं।

स्काई-स्क्रेपर में ऊँचाई से अधिक कुछ और है। इसमें संरचना (structure) की किफ़ायत और रेखाओं की सादगी है जो अमरिकी वास्तु की विशेषताएँ हैं। आधुनिक कारखानों पुलों पार्क-वे मोटर सड़कों मछली घरों (aqueducts) नदियों के नीचे सुरंगों रेल-स्टेशनों हवाई अड्डों अस्पतालों के सम्बन्ध में भी यही बात लागू है। चाहे सरकारी हों या निजी इन भवनों में वे सभी कार्य होते हैं जिनका अमेरिकी दृष्टि में महत्व है। किन्तु कालेजों और स्कूलों के सम्बन्ध में हम उसी रूप में यह बात नहीं कह सकते। न चर्चों और कैथड्रलों के बारे में ही। प्राचीन न्यू इंग्लैण्ड के देहाती चर्चों में सादगी दीखती धर्म और जाति में समन्वय का भाव था। उनके मुक़ाबिले आज के गिरिजाघर खोखले दीखते हैं जिससे प्रतीत होता है कि अमेरिका के अपने देवता इनमें नहीं बल्कि कहीं और रहते हैं।

रस्किन की भाँति मेरी मान्यता है कि वास्तुकला में झूठ नहीं छिप सकता। निर्णायक भवन वे हैं जिनके पीछे कोई विश्वास है। लकड़ी पत्थर और लोहे से कोई जाति जिस शैली का निर्माण करती है वह शब्दों संगीत रेखाओं या रंगों के द्वारा की गई अभिव्यक्ति की भाँति एक आन्तरिक अभिव्यक्ति का माध्यम है।

औद्योगिक भवन से ही संबद्ध औद्योगिक डिज़ाइन है। प्रारम्भिक प्रवासी जिस सादगी के साथ अपने दैनिक उपयोग की वस्तुएँ बनाते थे, आज के अमेरिकियों ने ... [illegible] ली है। बीच में यह सादगी ...

हो चुकी थी। उत्तराधिकार के मुकाबिले 'देसी' परम्परा का गुणगान करते हुए जॉन ए० कोवेन हावेन ने रिवोल्यूशनरी राइफल उस काल के हल रेल के इंजन सीने की मशीन माडेल टी फोर्ड आदि के गीत गाये हैं। निस्सन्देह ही अब अमेरिकी आत्मचेतनता के प्रति आसक्त न हों और कला की चिन्ता न करें तो उनकी औद्योगिक डिजाइनें सर्वोत्तम होती हैं। इसी प्रकार मशीन-संस्कृति में पलकर वे मशीन निर्मित वस्तुओं को हेय दृष्टि से देखें तो मानना पड़ेगा कि उनमें चारित्रिक खामियाँ हैं। उनकी प्रतिभा ऐसी दस्तकारी में रुचि नहीं लेती जो पीढ़ियों-दर-पीढ़ियों चलती है। अमेरिकी मशीनें बनाने में सफलता प्राप्त करते हैं। इन मशीनों से परिनिष्ठित सटीक और साफ़ डिजाइनों की चीजें निकलती हैं। जिनका अपने उद्देश्य के मुताबिक उपयोग होता है। अब इसके लिए तर्क देने की आवश्यकता नहीं है कि मशीन से जो कुछ निकलता है वह उपयोग और सौन्दर्य की दृष्टि से घटिया नहीं होता है। और कि जब बड़े पैमाने पर चीजें बनती हैं तो उनका वैविध्य नहीं जाता रहता।

इसे सिद्ध करने के लिए प्रमाण सबको मिलेंगे जीवन के हर क्षेत्र में। अमेरिकी वास्तुकला को स्थायी देन है रसोईघर और स्नानघर। दोनों में स्वास्थ्य के लिए सफ़ाई और उपयोगिता का ध्यान रखा गया है। इसी प्रकार औद्योगिक डिजाइनकार का एक नया पेशा बन गया है जिसका काम बड़े पैमाने पर निर्मित वस्तुओं और उनके बन्धनों (packaging) को आकर्षक रूप देना है। परिणामस्वरूप सिगरेट के पैकेज साबुन और सूप लपेटने के कागज चाकू कांटे मोटरें भोजनघर की कुर्सियाँ धोबी मशीन टाइप राइटर, रेडियो टेलीविजन शराब की बोतलें रिफ्रीजिरेटर, वेस्ट बास्केट पेराम्बुलेटर आदि कितने आकर्षक दिखलाई पड़ते हैं।

अमेरिकी मोटर उद्योग माडेल-टी फोर्ड के समय से आज काफ़ी आगे पहुँच चुका है। आज कोई भी मोटर-उद्योगपति इस कल्पना से ही घबड़ा उठेगा कि कार डिजाइन दो या तीन साल से अधिक चल सकती है। हर साल का माडल पहले से अधिक शानदार और भड़कीला होना ही चाहिए। यह स्थिति ऐसी है जैसी औरतों के फैशन की। कपड़ों की ही भाँति मोटर अपने मालिक के व्यक्तित्व के अनुकूल होनी चाहिए। मोटर या ऐसी हो जो काफ़ी दिन न चले। उसे भी कपड़ों की भाँति बदलना चाहिए। अमरीकी कार की लम्बाई चौड़ाई और अतिरिक्त आकर्षक इंजनों की क्षमता बड़प्पन का द्योतक है न कि सामान्य उपयोग की। यह उस सभ्यता का एक चरण है जो लाभ को अर्जित कर सकती है और लापरवाही को आवश्यकता समझती है।

मोटरों से अधिक सुन्दर हवाई जहाज की डिजाइनें होती हैं। इनके

प्रत्येक हिस्से का निर्माण इस दृष्टि से होता है कि जहाज की गति बढ़े और यात्री अधिक सुरक्षित और विश्वस्त हो सकें। इसमें अलमारें या आवश्यक फैंसी नहीं होते। फिर भी शायद इसी कारण हवाई जहाज इतना सुन्दर बनता है जैसा डिजाइनों के इतिहास में कभी न बना हो। मोटर और हवाई जहाज में एक महत्वपूर्ण अन्तर यह है कि मोटर सार्वजनिक उपयोग के लिए बनती है जबकि हवाई जहाज सबके लिए नहीं बनाया जाता। उत्पादन से ही मोटर के लिए बिक्री की गति का फैलना होता है। हवाई जहाज में माँग की पूर्ति के प्रबन्ध की समस्या होती है न कि माँग बनाने की।

इसलिए जो कुछ देसी है वह अच्छा है ऐसा नहीं माना जा सकता। यहाँ देसी शब्द का प्रयोग 'वर्नाक्यूलर' के अर्थ में हुआ है जिसका तात्पर्य शैली के क्षेत्रों में जनतंत्र और टेकनालोजी के तात्कालिक यथार्थ से होता है। डिजाइन क्षेत्र में जब रुचि के तत्त्व घुसते हैं तो सदा शास्त्री में ही उसका अन्त नहीं होता। जब देसी शैली आभिजात्य शैली के मात्र आडम्बर तत्वों के विरुद्ध जेहाद छेड़ती है तो अपनी शक्ति और प्रत्यक्षता के कारण वह सफल भी हो सकती है। किन्तु जब इसमें आभिजात्य कला की नकल होने लगती है जैसा जीप को छोड़कर अन्य कारों में होता है तो वह अपने सिद्धान्तों से ही च्युत हो जाती है। अन्त में देसी शैली तब और विपत्ति में पड़ती है जब वह देसीपन के झूठे मानदण्ड लेती है। अन्तर्राष्ट्रीय शैली के अपने गुण और दोष भी हैं। किन्तु यह कहने से कि यह यूरोप से उधार ली गई है इसके महत्त्व को कम नहीं किया जा सकता। अमेरिकी कला भवन और डिजाइन ने सदा ही विदेशों से प्रेरणा ग्रहण की है। उन्हें भी बदले में कुछ दिया है। विदेशी कलाकारों और डिजाइनकारों का अमेरिका में स्वागत होता है। इससे उनके अपने कलात्मक निखरते हैं। यद्यपि कुछ लोग विदेशी प्रभाव को देखकर नाक-भौंह सिकोड़ते हैं किन्तु यह स्थायी नहीं है। यद्यपि मशीनी वस्तुओं की डिजाइनों के क्षेत्र में अमेरिकी में जो कुछ हुआ उस पर गर्व किया जा सकता है पर अभी तक यह अच्छी बात रही है कि सांस्कृतिक दृष्टि से अमेरिका ने अपने को एकदम अलग नहीं कर लिया है।

## ९ लोकतन्त्रीय संस्कृति में कलाकार और श्रोता

अमेरिका में प्रायः नये माध्यमों पर दोषारोपण कर देते हैं। किन्तु कोई किसी भी वस्तु है यह कहना नितान्त बेवकूफी है। हालीवुड की छाया में [illegible] बन रहा है। कभी कभी [illegible] इससे हालीवुड [illegible] भी [illegible] बनाता प्रतीत [illegible] रक्षा की [illegible] ही हो जाता। [illegible]

में नाइट बेसबाल और कन्सर्टहाल या जासूसी और उपन्यास में कोई शत्रुता नहीं है। टेलीविज़न की छाया सिनेमा रेडियो और पुस्तक प्रकाशन पर पड़ती प्रतीत होती है किन्तु ये एक-दूसरे के दुश्मन नहीं हैं। ये कलाएँ किसी एक ही शक्ति के स्रोत से नहीं बढ़तीं। यदि जनता एक को पसन्द करती है तो उसका यह अर्थ नहीं कि और शेष कलाएँ सूख जाएँगी। इसमें कोई शक नहीं कि कुछ नई पापुलर कलाएँ पड़ोसियों को कुछ नीचा ज़रूर दिखाती हैं पर सभी शास्त्रीय कलाएँ भी अपनी जवानी में ऐसी ही थीं। सच तो यह है कि बॉक्स रेडियो और टेलीविज़न तथा पेपर बैक और दृश्यकलाओं ने परस्पर एक दूसरे को प्रेरणात्मक शक्ति ही दी है।

सही प्रश्न यह नहीं है कि कौन-से माध्यम के श्रोता अधिक हैं। आज लोगों के पास फ़ुरसत सीमित है। इसलिए सम्भव है कि टेलीविज़न के दर्शकों में अत्यन्त बड़ी संख्या में वृद्धि होने से सिने-दर्शकों की संख्या पर बुरा प्रभाव पड़े। किन्तु इस प्रतिद्वंद्विता और माध्यम के बौद्धिक और सौन्दर्य बोधी मानदण्डों में होने वाली प्रतिद्वंद्विता में फ़र्क है। यह भी संभव है कि यदि अमेरिकी रेडियो अपने संगीत समाचार समीक्षा राजनीतिक विवाद आदि तक ही अपने को सीमित रखे तो उसे अधिक सफलता मिल सकती है। सिनेमा वाले यह जान लें कि वे सेक्स और हिंसा के प्रदर्शन या तत्काल वृत्तचित्रों के निर्माण में टेलीविज़न का मुक़ाबिला नहीं कर सकते और फिर वे मनोभावों और चरित्र के चित्रण तक अपने को सीमित रख लें तो वे टेलीविज़न के लिए उसी प्रकार प्रेरणात्मक शक्ति देने लगेंगे जैसा पहले थियेटर सिनेमा को देता था। अमेरिका में श्रोताओं और दर्शकों की संख्या इतनी अधिक है कि ये बड़े माध्यम आर्थिक दृष्टि से भी अच्छी तरह फलफूल सकते हैं।

इस प्रकार बड़े श्रोता (Big audience) की आवश्यकता मैं नहीं मानता। पर मैं यह भी नहीं स्वीकार कर सकता कि वे कलाएँ मरती हैं जिनके श्रोताओं की संख्या बड़ी है। इसको स्वीकार करने का अर्थ यह मानना होगा कि अधिक प्रचार कला का शत्रु है। कोई यह विश्वास कर सकता है कि सामान्य जनता में दूर तक प्रवेश करने पर कला के मानदण्डों में शैथिल्य अवश्य आ जाता है। 'जितना ही दूर तक प्रचार होगा कला उतनी ही पतली होती जाएगी।' किन्तु मशीन की भाँति इस दृष्टिकोण को अपना लेने पर सिनेमा-जैसी कला की रचनात्मकता के विस्मरण कर देने का भय है। यह दृष्टिकोण आश्चर्यजनक रूप से जनता-विरोधी है। इसमें एक भय है कि किसी कला के प्रचार से उसका गुण नष्ट हो जाता है। यह भय अमरीकी साहित्य और कला की आलोचना के क्षेत्र में मिलता है। इसकी तुलना हम अपमान के भाव से ही की जा सकती है जो बड़े आडम्बरों वाले शास्त्रीय कलाओं के प्रति अपने मन

में रखते हैं। यह अपमान और भय का भाव समाज को दो भागों में बाँट देता है—(1) बड़ी संख्या में श्रोता-दर्शक और (2) छोटी संख्या में श्रोता-दर्शक। इस प्रकार दर्शकों और उनके सृजन के पालकों के बीच एक खाई बन जाती है।

यदि कल्पना महान् हो तो पापुलर कलाएँ भारी जनता के आधार से शक्ति ग्रहण कर सकती हैं। ये केवल मानवता के मोटे तत्त्व लेकर ही चाहे तो बड़ी संख्या में श्रोता या दर्शक प्राप्त कर सकती हैं। चित्रकला का उदाहरण में तो पाएँगे कि अमेरिका में इस कला के ग्राहक कभी भी अधिक न रहे। इसे दो रोगों के कारण यह कष्ट भोगना पड़ा—एक थे इसका सर्वीसापन और दूसरा इसकी दुरूहता। रुपया इकट्ठा कर लेने पर अमेरिकी धनियों के अस्थान यूरोप पहुँचे वहाँ उन्होंने यूरोपीय कलावीथिका को छान डाला और पुराने कलाचार्यों के चित्र मुँहमाँगे दाम देकर खरीद लिए। अब वे मरहूम उस्ताद आर्थिक वैभव की वस्तु बन गए। ये चित्र संग्रहालयों या धनिकों के मकानों की शोभा बढ़ा रहे हैं। किन्तु ये चित्र जीवन से दूर पड़ गए हैं इसलिए इनकी ओर कोई ध्यान नहीं देता। चित्रकार भी शासन और सूक्ष्म बोध के एक युग को छोड़कर अपने दर्शकों से अलग हो गया है। वह उन्हें घृणा की दृष्टि से देखता है जहाँ उनकी पहुँच नहीं है।

कलाकार और श्रोता के बीच की इस दूरी का कारण मशीन को बतलाया जाता है जिसने बाजार की भ्रान्ति पैदा कर दी है जो कला को भी एक समान समझती है। यहाँ कलाएँ ऐसी हैं जिनका एक से अधिक उत्पादन नहीं हो सकता जैसे चित्र और मूर्तिकला वहाँ भी हस्तकारी के युग में ही हैं। चित्रकला के क्षेत्र में पुनरुत्पादन की टेक्नीक ने बिना नीलाम के म्यूजियम की स्थिति सार्थक कर दी है। लिखित और उच्चारित शब्द तो आज प्रेस फ़िल्म और मेकेनिक की बदौलत अनन्त प्रतियों में प्राप्त किए जा सकते हैं। मशीन ने संगीत के प्रकार साहित्यिक कलाकृतियों के सस्ते संस्करणों के वितरण और सिनेमा के रूप में एक साथ हजारों स्थानों पर एक ही नाटक के अभिनय को सम्भव कर दिया है।

कला के वितरण की समस्या अब सुलझ गई है। समस्या केवल रचना रचना की समस्या भी है। मेरी राय में अमेरिका में समस्या कला के प्रचार की नहीं बल्कि कलाकार के अपमान की है। आपके पढ़ने वाले सम्पन्न अमरीकी कलाकार को बाहरी मानते हैं। वे उसे आदर नहीं मानते। अधिक-से-अधिक वे उसे एक मसखरा मानते हैं जिसे संस्कृति बर्दाश्त कर सकती है। कभी अमरीकी कलाकार को आत्मनिर्भरता और स्वाधीनता से मुक्ति के लिए अमरीकी संघर्ष करना पड़ा था। आज उसे कला की महत्ता उस संस्कृति में अपने को स्वीकार कराने के लिए करना है जो पैसे का मूल्य अधिक समझती है। इसमें

कभी-कभी वह विदेशों में भाग जाता है विशेषकर फ्रांस या इटली में जहाँ के
सामाजिक वातावरण में स्वीकृत होकर वह फल-फूल सकता है। यूरोप की
धार्गिवंगी अमेरिकी कलाकार के काम की शक्ति हुई है किन्तु उसके प्रति
समर्पण खतरनाक भी सिद्ध हुआ है। किन्तु अमेरिकी कलाकार पक रहा है।
कुछ ने तो समन्वय की शक्ति भी पा ली है। अब वे अपने वातावरण से कट
कर नहीं बल्कि उसी में अपनी टोह ले रहे हैं।

अमेरिका में अनुरूपता (Conformity) या दबाव गहरा है। यही कारण
है कि कलाकार एक कठिन परिस्थिति में गुजर रहा है। जब वह इससे संघर्ष
करता है तो खतरा यह रहता है कि उसे किसी संघ आदि का सदस्य होना
पड़ता है और वहाँ पर वह एक सीमित संसार में जिसकी वह भाषा भी नहीं
जानता फँस जाता है। सांस्कृतिक परिवर्तन इतनी तेजी से हो रहे हैं कि
कलाकार उनसे पग मिलाकार नहीं चल पाता। इसी प्रकार वह अपनी ही
संस्कृति व विशाल आधार को भी नहीं पचा पाता। फलस्वरूप वह जीवन के
एक अंश के चित्रण से ही सन्तुष्ट हो जाता है। किन्तु इस चित्रण और उन
सांस्कृतिक मूल्यों में वह समन्वय नहीं कर पाता जिनका निर्माण उसने किया
था। कवि या चित्रकार किसी घटना को संपूर्ण का प्रतीक मानकर चित्रण
कर सकता है पर शीघ्र ही वह यह पाता है कि प्रतीकवाद को संभालने में
प्रकृतिवाद से भी अधिक कठिनाई होती है। वह किसी स्थान विशेष पर अपने
को केन्द्रित करता है जिसके बारे में वह सोचता है कि वह उसे सम्भाल सकता
है पर स्थान विशेष तक सीमित रहने से रचनात्मकता की समस्याएँ सीमित
नहीं हो जातीं। यहाँ भी असफल होने पर वह पापुलर कलाओं की ओर मुड़ता
है। कभी कभी तो कलाकार इन सब प्रक्रियाओं से होकर गुजर जाता है।

आकर्षण की सबसे प्रबल शक्ति बड़े पुरस्कार हैं। जितना ही बड़ा श्रोताओं
का वर्ग होगा उतना ही बड़ा पुरस्कार भी होगा। आज 'हाईब्राउ'[1] के लिए
जितनी घृणा अमेरिका में है उतनी अन्य किसी के लिए नहीं। उसके प्रति सबसे
बड़ा आरोप यह है कि वह अपने को जनता यानी वास्तविकता से दूर रखता
है। यह पुरस्कार पाने का आसान तरीका यह है कि सभी वर्गों की संस्कृति में
सपाटता को सहायता देने वाले तत्व उभाड़ जाएँ। इसमें किसी भी गुण
होती है।

यदि कलाकार पर्म-संस्कृति को सौंपकर-बड़े पुरस्कारों का मोह छोड़कर
जीना चाहता है तो उसे दूसरी कठिनाई का सामना करना पड़ता है जो है कला
के दफ्तरशाही (bureaucracy) की। उसे अपने अनुयायियों के द्वारा मिलने वाले

1 Highbrow

साथ ही प्रशंसक मिल जाएँगे। इसी प्रकार फ्रैंक मायकरिट के प्रशंसक सस्ते जासूसी के पन्ने चाटते हुए मिल जाएँगे। वर्ग-व्यवस्था की तरलता, सामान्य अनुभव की बाहार और बड़े माध्यमों के प्रसार से रुचियाँ स्थिर नहीं हो पातीं। ऊँची रुचिवालों में हो अब दो वर्ग हो गए हैं जैसे एक पुरानी रुचिवाले और दूसरे नई रुचि वाले। पुरानी ऊँची रुचि वाले पापुलर संस्कृति से घृणा करते हैं। हो सकता है कि ऊँचे खानदान में जन्म होने के कारण वह इसे देहाती समझते हों या फिर मार्क्सिक होने के कारण वह इसे पूँजीवादी सभ्यता भ्रष्ट रूपमा मानता हो। नया ऊँची रुचि वाला सुशील परम्परा और मार्क्सवाद दोनों छोड़कर पापुलर संस्कृति को अपनाता है। उसे इसमें वही मिलता है जो

ग रहकर पापुलर संस्कृति को अपनाता है। उसे इसमें वही मिलता है जो

[illegible] सदी के बौद्धिकों को 'नोबुल सैवज' में मिलता था।

ऐसे लक्षण दिखते हैं कि सच्चे देसी को बनावटी भीड़ की भाषा में प्राप्त ... कलाओं के सर्वोत्तम से या जा सकेगा और सर्वोत्तम देसी का आभिजात्य ... आलोचकों को इस वास्तविकता से ... होगा। किन्तु ऐसी परिस्थिति में ... बेमजा और मुनाफ का ... सामना करना पड़ेगा जिसमें बड़े माध्यम को कुछ सरपट ... मिलावट करेंगे। रेडियो ... उसकी ओर मुड़ेंगे। प्रेसों के मालिक अपने माल में ... कर देंगे। किन्तु आलोचक ... के मालिक कल्पना का अपने घरे तक ही सीमित ... कलात्मक-विकास करते ... हताश होकर चुप नहीं बैठेगा। वह पापुलर संस्कृति का ... पुरानी ऊँची रुचिवाला देखेगा।

किन आडियंस अर्थात् बड़े पैमाने पर श्रोताओं में ... तब वह देखेगा कि ... आलोचक ... नई ऊँची रुचिवाला गुण देखता है। आलोचक ... श्रोता भी विकास करते हैं। वह ... बड़े पैमानों पर श्रोताओं में से ही महान ... ऐसे बौद्धिक वातावरण का निर्माण ... सम्भावना तब तक पूरी नहीं होगी जब तक कि ... सम्भावनाओं में विश्वास नहीं हो जाता जिसमें उसकी आलोचना होने पर भी ... सिनेमा और टेलीविजन को प्यार प्रकट किया जाता है। चूँकि युवक-युवतियाँ ... नहीं करेगा। किन्तु अपने में आकर्षित होती हैं केवल इसलिए वह इनसे घृणा ... अधिक महत्व न देगा। या सजीवता के दर्शक के रूप में वह इस तथ्य को भी ... अपने श्रोता होते हैं। वह यह मानेगा कि प्रत्येक प्रकार की पापुलर संस्कृति के ... वह अमेरिका भाषा वह उनको आकर्षित तो करेगी पर उनकी होकर न रहेगी। ... उसका विश्वास होगा की बारीकियों और उसकी समृद्धि का सम्मान करेगा। ... सामान्य अनुभवों की अभिव्यक्ति कि प्रत्येक सामान्य भाषा में अभिव्यक्तियों के ... से पूरा न करेगा क्योंकि की सामर्थ्य है। वह कला के क्षेत्र में प्रयोगवादियों ... वह कल्पना का अनुभ... कल्पना को एक नोम की आवश्यकता होती है जिसमें ... 'पापुलर कलाओं' में जिससे ... कर सके। पुरानी डिबियाओं के सामान इस ...

वह ... होगा।

अपना सिर उठाये जैसे किस रूप से वह अपनी सामग्री ले या कौन वर्ग उसको
स्वीकार करता है ? जैसे ज्वायस कीड़ों-मकोड़ों की भाषा लेकर एक ऐसी दुरूह
कला का निर्माण करता था जिसे कम लोग ही समझ सकते थे वैसे ही
अमेरिकी भाषा ने दिखला दिया है कि वह शिक्षित वर्ग की सीमित वाक्य रचना
लेकर भी मूर्त और अपने प्रकार से उसे प्रस्तुत कर सकती है। अमेरिकी जैसे
ने सेंट पीटर्सबर्ग और वियना के अभिजात समाज के पारस्परिक नृत्य-रूपों को
ग्रहणकर आत्मसात किया और उसे ऐसा रूप दिया जो अमेरिका की जन
संस्कृति का विशिष्ट रूप बन गया। चूंकि इन रूपों में अमेरिकी अनुभव का
पसीना लगा है इसलिए सामान्यतः इन्हें आभिजात्यों की देन समझकर इनका
अविश्वास नहीं करते। न तो अभिजातवर्ग ही इसे देहाती समझकर इससे घृणा
ही करता है। ऐसी रचना में इसलिए सभी वर्ग खास आनन्द का अनुभव करते
हैं। ये कलारूप विदेशों में भी स्वीकृत होते हैं क्योंकि इनमें उस जमीन की सुगंध
होती है जहाँ से ये आते हैं। ये सांस्कृतिक बन्धनों और विभाजनों को तोड़ते हैं।

इस सार्वभौमिक के ढाँचे में अमेरिकी देसी कला (vernacular) की अदाएँ
विभिन्न कलाओं में प्रकट होती हैं। इस प्रकार लोकतत्वों और वाणी के बीच एक
का नाता और अस्तुति के दर्शन होते हैं। अमेरिका में सम्पूर्ण पापुलर कलाओं
में देहातीपन और शहरीपन का मेल मिलता। ऐसा कम संस्कृतियों में ही
मिलता है। इसका उदाहरण ब्लू गीतों और जॉज में मिलता है जिसकी सारी
वस्तु और रंगीनी तो प्राक् औद्योगिक समाज की जनता की है किन्तु इसमें जो
ताल है वह बड़े शहरों के तनाव की अभिव्यक्ति का है।

मार्क्सवादी समाजवादी यथार्थ से भिन्न आश्चर्यजनक ढंग से अमेरिकी
पापुलर संस्कृति वर्णनात्मक प्राकृतवाद (naturalism) से दूर रहती है। सतह
पर तो यह भी यथार्थवादी प्रणाली अपनाती है किन्तु यह यथार्थ से सारांश लेने में
सफल होती है। हॉलीवुड व कीस्टोन काप्स और चार्ली चैपलिन से मार्क्स ब्रदर्स
तक और रंगमंच में भी प्रारम्भिक टामू मिन्स्ट्रल प्रदर्शनों से लेकर टेनेसी
विलियम्स की काव्यात्मक अभिव्यक्तियों तक यही हुआ है। जीवन से सारांश
चुनने की यही क्रिया फिल्मी म्यूजिकलों जैसे स्काई स्क्रेपरों (वास्तुकला के ये
चौड़ ही हैं) तथा विचित्रता में भी मिलती।

अमेरिका में रुचि को लेकर विभिन्न वर्गों में वाद विवाद होते हैं किन्तु
यह उन्हें टुकड़-टुकड़ कर देती है। सच तो यह है कि अमेरिका में वर्गों की
भांति रुचि भी मिली जुली है। कहते हैं कि एक भारी भरकम जस्टिस होम्स एक
बार एक भोंडे (burlesque) देख रहे थे बीच ही में घुटनों पर अपनी मारकर
पड़ोसी से बोले 'भगवान हमें ऐसी निम्नरुचि से बचाएँ।"

अमेरिका में मार्को डेमन पोगो और एबनर के भाषा-वर्णनों के एक

जनवादी सौन्दर्यबोध की यह आखिरी कसौटी है । इसका समानान्तर जनतंत्र की राजनीति और अर्थशास्त्र में भी मिलेगा । कोई भी नहीं कहता कि आमदनी या अधिकार का कोई सामान्य स्तर होगा किन्तु जनतंत्र का तकाज़ा है कि प्रत्येक मनुष्य के समग्र व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने के लिए उसे सामान्य राजनीतिक और आर्थिक अवसर तो देना ही चाहिए । इसी प्रकार जनतंत्री सौन्दर्यबोध बौद्धिक और रुचि के मानदण्डों का समतलीकरण न होगा । किन्तु कला के क्षेत्र में किसी स्थिर अभिजातवर्गों के सिद्धान्त को भी न माना जाएगा । उन सभी अनुभूतियों का स्वागत किया जाएगा जिनमें कला की सार्वदेशिक भाषा का प्रयोग हुआ है । किसी भी स्थानीय वस्तु का इसलिए मूल्य नहीं होता कि वह अमरीकी है बल्कि उसका इसलिए मूल्य होगा कि वह सामान्य अनुभूति का अंग है । वह भावना की सामान्य भाषा में प्रकट की गई है । उसमें श्रोता और पाठक रचनात्मक पद्धति का मूल और उसका ग्राहक दोनों हैं । इस अर्थ में जनवादी सौन्दर्य बोध जनवादी एथनिक की भांति व्यक्तित्व को सम्मान देता है।

विदेशियों के मन में अमेरिकी पापुलर संस्कृति का जो चित्र होता है वह यथार्थ से काफी दूर होता है । कम्युनिस्ट 'पतित' अमेरिकी जाज भ्रष्टाचारी प्रेस 'पलायनवादी' सिनेमा और कोका कोला के साम्राज्यवाद के विरुद्ध प्रचार करते हैं । उनका उन पर प्रभाव भी पड़ता है जो अमेरिका और उसकी जनवादी अनुभूति के प्रति सहानुभूति नहीं रखते । किन्तु अमेरिकी स्वयं ही इस क्षणिक दौर के बारे में चिंतित होते हैं । विदेशी संस्कृतियों ने अमेरिकी सिनेमा को स्वीकार और आत्मसात भी किया है । उन्होंने सैनिकों यात्रियों और पुस्तकों से अमेरिकी स्लैंग भाषा भी सीखी है । वे जाज और दैनंदिन जीवन की किताबों से गहरे रूप से प्रभावित भी हुए हैं । अमेरिकी उपन्यासकारों और नाटककारों का भी प्रभाव उन पर कम नहीं । अमेरिकी संस्कृति में जो गुण सार्वदेशिक है उसका विदेशों पर प्रभाव पड़े बिना रह ही नहीं सकता ।

सिनेमा जाज या साहित्य का अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध में 'हथियार' के रूप में जो महत्व है उस पर उतना बड़ा अधिक और जोर आज अमेरिका में दिया जा रहा है । इसके लिए सेंसर का आश्रय लेना या कलाकारों का नेतृत्व करने का विचार करना भ्रमपूर्ण होगा । सिनेमा का महत्व इसमें नहीं घट जाता कि इससे कम्युनिस्टों को अमरीका पर छींटाकशी करने का मसाला मिलता है । जाज का जन्म स्टोरीविल के वेश्यालयों में हुआ—यदि कोई इसे मज़ाक अमेरिका की निन्दा करता है तो इस ऐतिहासिक तथ्य को कम मिटाया जा सकता है । कला के राज में ईमानदारी पर शीतयुद्ध का प्रभाव न पड़ना चाहिए । यदि आतुर कलाकारों से अमेरिकी अनुभूति की उन्नतिशील प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति गहरी और सारगर्भित हुई तो इससे निश्चय ही अमेरिका का नाम पहुँचेगा ।

●

